ISSN 2229-547X

'विदेह' ३५१ म अंक ०१ अगस्त २०२२ (वर्ष १५ मास १७६ अंक ३५१)

(विदेह www.videha.co.in)

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

ऐ पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। कॉपीराइट (©) धारकक लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ, अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नै कएल जा सकैत अछि।

(c) २०००- २०२२। सर्वाधिकार सुरक्षित। विदेहमे प्रकाशित सभटा रचना आ आर्काइवक सर्वाधिकार रचनाकार आ संग्रहकर्त्ताक लगमे छन्हि। भालसरिक गाछ जे सन २००० सँ याहूसाइटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, स्रोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर) केर रूपमे इन्टरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि। ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ "विदेह" पड़लै।इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

(c)२०००- २०२२। सर्वाधिकार लेखकाधीन आ जतऽ लेखकक नाम नै अछि ततऽ संपादकाधीन। विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

रचनाकार अपन मौलिक आ अप्रकाशित रचना (जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक गणक मध्य छन्हि) editorial.staff.videha@gmail.com केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमें .doc, .docx, .rtf वा .txt फॉर्मेटमे पठा सकै छथि। एतऽ प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका ऐ ई-पत्रिकामे ई-प्रकाशित/ प्रथम प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

ऐ ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै। तेँ रॉयल्टीक/ पारिश्रमिकक इच्छुक विदेहसँ नै जुड़थि, से आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र (सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि। ISSN: 2229-547X

Videha e-Journal: Issue No. 351 at www.videha.co.in

अनुकम

२. गद (पृ. १-५२५)

२.१.क्नमष्ना करष अक्त व खा (ािराक्ष्क उपह्यास)-तेसर खेप (पृ. २-१६)

२.२.रबीहर नारायर क्नश- मातृभूक्न (उपह्यास)-आगा (पृ. १७-२०)

२.३.गजेहर ठाकुर- गढ़-नाक्रकेल उपह्यास-यीक पक्हल उपह्यास "सहसाीरा" क बाद दोसर उपह्यास- द .... फाइल्स (आगा) (पृ. २१-३५)

२.४.गजेहर ठाकुर- दूटा बीहक्न कथा (पृ. ३६-३७)

२.५.परा झा- वभीरर के चक्रा क्नार (मैक्थली गल्प) (पृ. ३८-४२)

२.६.संतोर कुमार राय 'बटोही'- 'मंगरौना' (ािराक्ष्क उपह्यास)-आगा (६आ७) (पृ. ४३-४९)

२.७. को भारदाज- क्नछु बीहक्न कथा, क्नछु लघुकथा, एकटा दीघक्नथा आ एकटा उपह्यास (पृ. ५०-४६३)

२.८. गजेन्द्र ठाकुर- मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड कन्वर्टर-तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रान्सलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली (खण्ड १-४) (पृ. ४६४-५२५)

३. पद (पृ. ५२६-५८१)

३.१.राज कि ार कश- भैआरी (पृ. ५२७-५३४)

३.२.गजेन्द्र ठाकुर- ि ुनः ि पक मृत्युदर्ण ि ि बक्ल (पृ. ५३५-५४४)

३.३.आि ीर अनक्यह्हार- दू टा गजल (पृ. ५४५-५४६)

१. गजेन्द्र ठाकुर- संघ लोक सेि ि आयोग/ क्बहार लोक सेि ि आयोगक परीि ि लेल मैक्थली (अक्ि ि ियषआ ऐक्च्छक) आ आन ऐक्च्छक क्ि िरिय आ सामान्य जान (अंगेजी माध्यम) हेतु साक्मगी (पृ. ५४७-५८१)

२. गद्य

२.१.विभूति आनन्द- दिवस नव नव (धारावाहिक उपन्यास)-तेसर खेप

२.२.रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)-आगाँ

२.३.गजेन्द्र ठाकुर- गढ़-नियमकेल उपन्यास-तयीक पहिल उपन्यास "सहस्रबाढ़नि" क बाद दोसर उपन्यास- द .... फाइल्स (आगाँ)

२.४.गजेन्द्र ठाकुर- दूटा बीहनि कथा

२.५.परमेश्वर झा- विभीषण के चतुर चातर (मैथिली गल्प)

२.६.संतोष कुमार राय 'बटोही'- 'मंगरौनि' (धारावाहिक उपन्यास)-आगाँ (६आ७)

वि मिष्ठा करष

अक्नि वि खा (धारा िवहक उपन्यास)

तेसर खेप

पू षिकथा - पूव षाक क्ष ि उर्मिी स मिल ि होयबाक सन्दे ि रम्भाक मुख स सुवि पुर रि ा पसन भय जाइत छथ्य ।

आब आगाक कथाक अ ि लोक ि कर ।

ि ील अ ि न्त आका ि क पागर मे पूव षाक चाद अप ि पूर षज्योत्स ि ा पसार ि सु ि ाभित छल । ि ुभ चाद ि ा समस्त पृथ्वी ि क आचर पर अप ि ि ुभ आलोक पूर षसहृदयता सS दा ि करैत छल तारा झुण्ड बाक्ह दीा ि वलक दीप स ि झलमल झलमल कS अप ि पसनता देखबैत उतफ्फुल्ल मग ि भय वि चरर करैत रहैथ । अ ि न्त आका ि मे उतफ्फुल्ल रज ि ी ि छटा देक्ख रज ि ी सेहो पेम मे मग ि छली । रज ि ी अप ि वा ि यतम रज ि ी ि क मुस्का ि पर वि मुग्ध पेम रस मे ऊब डूब होइत अप ि ा के बि सराइत अप ि पसनता सम्पूर षजगत पर उदारता स पसार ि जाइत छलैथ्य । मुदा एक पार ि ी एह ि ा छलथ्य ज ि का पर एक्ह पसनताक कवि यो धव पभा ि क्ह परल रहैन्ह। ओ म ि ो ि मो ि का ि ित छलैथ । रज ि ी अप ि वा ि यतम सग वि हसैत छली मुदा ओ पार रज ि ीक हसीक चोट सS तरपैत छलाह । रज ि ीक उतफ्फुल्लता पसनता ओक्ह पारीक ि सि ि सि मे काट स ि चुभईत छल । ओ पार ि ी छलैथ पुर रि ा जे एक्ह पूव षाक रा ि त अप ि पेयसीक पतीक्ष सरस्वि ती ि दीक कछार पर सन्ध्या काल सS करैत आब पायः वि रा ि हता ि भय गेल छलाह । अप ि पेयसीक वि रह दुःख हु ि का दु ि आक्ख सS अवि रल

बहैत जाइत छल । रजिनी-रजिनीिकि क्षलि हुिक पेम विदन्ध हृदय के सुिगैत क्षिगारी के लपलपाइत जीला बिि देिि छल । ओ आब पूरषविराि भय गेल छलाह ।

हठात मधुर सगीत ्विि पिि सग लहराईत हुिका करषोचर भेलैन्ह । करर रस स ओत पोत ओ ्विि पुरिाक ्यािि अपिि क्षदवि आकवरषा कयलक ।

िदीक ओक्ह पार मधुर सिर मे गायिि एिि लास्य मुरा मे उिर्िी देखेलैक्थ । िितल मन्द मलयाविल के सुगन्ध स पुररिि अक्भभूत भS गेलाह । उिर्िी विकिट उपक्स्थत भय गेलीह,दुिूिक दृवि क्षलल । क्कछु काल धक्र दुिू ओक्हिि विःिब्द ठाढ़ रहलैथ ।

किि काल धक्र दुिू गोटे विःिब्द ठाढ़ रहलैथ फेर पुररिि अपिि दुिू बाक्ह पसारिि दउरलैथ आ उिर्िी के आक्लंगि बद कय लेलैथ । उिर्िी सेहो हुिका स आबद अपि सुक्ध-बुक्ध क्षसक्र गेलैथ । कतेको काल धरी दुिू पारी अक्हिि एक दोसर स आबद अपि आक्ख मुिि कल्पिि लोक मे विचरर करैत रहलाह । पथमतः उिर्िी मौिि भङ्ग केलैथ ।

उिर्िी- "क्षये अहा एतेक अधीर क्कयेक होइत छी"?

पुररिि- "ई अहा हमरा सS क्कि अपि हृदय स पुछू उिर्िी"।

उिर्िी- "अहा के एिि हमरा लेल उन्मत भेिइ उक्चत क्कि क्कछु क्षंता अपि पजा जि के सेहो कर"।

पुररी- "हमरा स आब हमर अपि क्वंता कएल कि होइत अछ्छि तS पजाक क्वन्ता कोिि क भS सकत"?

"ई बात त अहाक िीक कि कहल जायत"|

"हम आब िीक िि अधलाह क्वछु कि बुझैत छी, हमरा मात अहा स मतलब अछ्छ क्वये"|

"स्त्रीक पेम सि थिषय होइत अछ्छ, ताक्ह स ओ वि शिसिीय िही अछ्छ"।

"होइत हेतीह मुदा हम अहा के एहि कि बुझैत छी । अहा हमरा लेल सिषिा वििीता आ कतषय परायरि पतीक र प मे रहलहु"|

"क्वये हम कतषय बन्धि मे बन्हाइल इन्रक हाथक एकटा क्वखलौिि मात छी"।

हम बुझैत छी क्वये, मुदा अहा सि गिषके ठोकर माक्र हमरा लग आक्व त सकैत छी"?

"कि क्वये इहो असभि अछ्छ वि धाता हमर रचिि सि गिषमे रहिि लेल केलैक्थ अहि पूजा पथ एिि पुण्य कायषकय सि गिषपाप्त कय सकैत छी । तखवि अहा के हमरो पाप्त कय सकैत छी । मुदा हमरा पृथिी पर आक्व पेम करििक अक्धकार कि अछ्छ" |

"एहेि बात कि बाजू क्वये, की आब हम सतत अहाक वि रहािि मे जरैत रहब"?

"ह हमर अहाक पेमक यैह भवि तव्य अछ्छ । ल पृथिी आ सि गिषक क्वलि असम्भि क्थक । पृथिी ििसी चाहैथ तS ओ अपि पुण्य सक्वत

कय करैत छथि जाहि सँ स्वर्ग जा सकैत छैथ । मुदा पुनः पुण्य क्षय भेलाक पश्चात हुनका पृथ्वी पर वापस पठाओल जाइत अछि । स्वर्ग सँ इन्द्रक आदेश पर लोक कल्याण हेतु कोनो देवता अथवा हमहुँ आबि सकैत छी। परञ्च ई एहि गेल इन्द्रक इच्छा पर निर्भर अछि"| हम अथवा की कोनो अन्य देवता एहि लेल स्वतन्त्र नहि छी"|

एकर अर्थ भेल जे अहाँ एखनहुँ इन्द्रक इच्छा सँ हमरा लंग ऐलहुँ अछि"|

कतेक अनुनय विनय केलाक उपरान्त हमरा अहाँ सँ भेट करबाक अनुमति भेटल अछि"|

"आब फेर हम कथी कर अहीं बताऊ प्राणेश्वर अहाँ बिनु हम जीवित नहि रहि पायेब"|

"अहाँ धैर्य धारण करू प्रियतम । धर्मपूर्वक राज्य सञ्चालन करैत जाउ सँ पुनः धर्म सञ्चित भेला उपरान्त अहाँ के स्वर्गक प्राप्ति होयत आ पुनः अपन सभक मिलन होयत एकर अतिरिक्त अन्य कोनो विधि नहि अछि अपन सभक मिलन केर"|

पुरुरवा उर्वशीक जघन स्थल पर अपन मस्तक राखि ओतहि विश्रामक मुद्रा मे लेट गेलथि आ हुनकि अपन हाथ मे लैत कहय लागलखिन -

"उर्वशी अहाँ हमरा छोड़ि कऽ नहि जाऊ । हमर करुण दशा पर दृष्टिपात तऽ करू आ हमर विनती पर ध्यान दिअय प्राणेश्वरि । हम अहाँक विरह मे विक्षिप्त भेल रहलहुँ एतेक दिन" ।

ओह राजि अहा कविक राखु । अहा बुझू हमर बात । हमर सीमा विधाकृत अछ । अहाक ई िरीर कर भङुर अछ, आ हम अमत्यष अथकहु । ससार मे सभ जीिक रचिा ईशर के दारा एक विंिर कायषक पूत्षहेतु कएल जाइत अछ । एक क्षर क भाििक उदेग मे हम अहाके अपि हृदय समपषि कय देलहु । परंच विधि रचल लेख छल जे भरत मुविक कृपा स सम्पन भेल । अहा एतबक्ह मे अपिा के संतुि माि । सिगषधरा सS कनहु पेम िक्ह कय सकैत अछ । एक्ह दूिक मेल िक्ह भय सकैत अछ कदावप िक्ह"|

"ओह उषिी छो ू एक्ह सभ बात के हमरा पेम पयोध मे अपिा के विस्मृत करय दय"|

हा वायतम ई पूरषचन्रक धिल राक्त मे अपि दुःख वासवर पकृतक सग अपिाके एकाकार करिाक समय अछ ।

पेम-वाल पकृतक सावि्य मे अलौकक होयत एकर कोिा उपमा सम्भ िक्ह अछ"|

दुि पारी पारी पेमक आिग मे एकदोसर सS आबद विस्मृत भेल कतेको काल धवर रहलाह ।

रजिा पृथिीक आविंगि कय कखवि पस्थाि केलीह जात िक्ह भेलवि । जखवि उरा राििक लज्जा जवित रक्ताभ कपोलक दिि पाचीक पागर मे होमय लागल तखवि अलसायल आख हठात फुक्ज गेल । ओ उक कय अपि चार कात दृवि पात केलैथ मुदा आशय उषिी कतहु िक्ह भेटलखि । ओह उषिी के िक्ह पाब ओ पुिः दुःखी

भय गेलाह । किछु आगू बालुका राशि पर हुनिका किछु सन्देश लिखल देखेलैह । ई देखि ओ प्रसन्न भय गेलाह । लिखल छल -

"आब पुनः एक विषवाद अपन सभक मिलन होयत परञ्च एतय नहि, अपन मिलन होयत "कुरुक्षेत्र" मे नदी रहत पूर्ण प्रवाहक । एतेक नदी उपयोग अपन बीतल समय के स्मरण करैत करब अहीक प्रतिक्षा ...."|

(अनुवर्तिस)

(पाठकक सुविधा लेल पूर्व प्रकाशित भाग-१ आ २ सेहो निचा देल जा रहल अछि- सम्पादक)

पहिल खेप

सिन्धुक हरवताभ आचर अनन्त आकार, प्रकार, रंग, बहुरंगक पुष्पसँ सज्जित देखविहारके विमुग्ध करैत छल । विशाल वृक्षि लतागुल्मसँ आच्छादित गन्धमादन पर्वतपर स्थित कुमार कनिआ ओहुना अद्वितीय छल तावहपर चन्द्रमा दीघाकार वृक्षक सुगन्ध अलौकिक संगीतीय आदिक अभिभूत करैत छल । समीपस्थ पर्वतसँ कलकल निनाद करैत गिरैत उतरैत झरना अपन मधुर संगीतमय आवाजसँ वातावरणके वलिकरता प्रदान करैत छल । किछुए दूरपर बहुत नदीक उदगम स्थल छल जे आगू गेलाक बाद विशाल जलधारामे परिवर्तित भऽ गेल छल, ओकर दुग्ध-धवल फेनिल जल क्षीरसागरक भ्रान्ति उत्पन्न करइत छल ।

ओक्ह िदीक तटपर एक गोट पुरर बहुत कालस अन्यमिस्क सि बैसल छल । एहेि विजि स्थािमे ई के थ्यक? की कोि योगी? सामान्य जि एहेि विजि पान्तमे कोि पयोजि सs अवछ । ओ कखि-कखि एकटा पस्तरक छोट-छोट-खण्ड उठा िदीक पाइिमे फेकय आ पाइिमे उठल लहक देखवि हिसै, पुि: गम्भीरताक आिरि ओकर मुख-मण्डलपर व्याप्त भय जाई ।

ओकर अस्त-व्यस्त केि गुच्छ बद्ध कs जटाक रप लय लेि छल । दाढ़ी एि मोछ सेहो बद्ध कs साधु सि बुझि जाइत छल । िरीरक स्िस्त जीरषिरिषमक्ि अिस्थामे ओक्ह पुररक दुभान्यक गाथा सुिबैत छल । आब ओ पुरर कंक फेक्क फेक्क शान्त भय गेल, तखवि ओ हठात पाइिमे उतक गेल आ अपि दुि हाथे पाइिके उछालैत पक्हले विहुसल ......फेर हसल........ हसैत चक्ल गेल । ओकर हसी अब भयङ्कर अटटहासमे पवरिवतति भय गेल छल ।

हसैत-हसैत ओ पुरर िदीस बाहर विकक्ल तीतले कप िमे एक वदिमे दौ गेल । ओकरा देवख पतीत होइत छल जेि ओकरा वचरकालसs कोि वयजिक पतीक्ा छल जेकर आिक सन्देि सुवि ओ सिगतमे पेम-विहल भय वमलि हेतु भागल जाइत होय । कतेको काल धक ओ ओक्ह िपान्तमे अपक्सयात भs दौत रहल आ फेर एक पस्तरविला सs चोक्टल भय तृरच्छाक्दत भूवमपर खवस परल । कतेको देरतक ओ भू-लुंवठत रहल । संभितः ओ चेति हीि भय गेल छल ।

मन्थर गक्तस बहैत पिि तीिस्तीिसौ तीिबर भेल जाइत छल । िभि श्यामिरी घिस आच्छाक्दत होमय लागल। अििाित जलद कुमार िभमे विचरर करय लागल । ओ जलद कुमार सूयसेिसिग िका-छुपी

खेलय लागल । आप सूर्यदेवकेँ एकटा चञ्चल कुमारसँ हारि-मानि लुकाय परलैन्ह । सूर्यदेवकेँ नुकाइते वातावरणमे पूर्णरूपेण अन्धकार परिव्याप्त भय गेल ।

पहिले पृथ्वीक आचरपर गुलाब जलसँ पाइनिक फुहार पड़ल....... फेर मोट-मोट जलकण खसल एकर बाद मूसलाधार वर्षा प्रारम्भ भय गेल । सम्पूर्ण वनप्रान्त जलप्लावित होमय लागल ।

एतेक बरा जलसौ प्लावित होइतो ओ भूलुंठित पुरुष ओहिना भूमिपर परल रहल । बुझाइत छल जेना ओ कोनो विचारमे लीन होय । आब वर्षा प्रायः समाप्तिपर छल परञ्च ओकर पुरुषक शरीरपर वृक्षक पातसs खसि-खसि एखनो वर्षाक जल-पतन चलि रहल छल ।

हठात ओकर पुरुषक आँखि फुजल ओ किछु काल भूमिपर ओकर मुरामे रहितहुँ अपन चारु दिस आश्चर्यसौ देखलक फेर ओ उठि कs ठाढ़ भेल । ओ व्याकुल भय करुण विलाप करय लागल । ओकर विलापक मध्य किछु अस्पष्ट ध्वनि मुहसँ बाहर ओकर जन-शून्य वातावरणमे पसरैत रहल । - "हाय प्रिये | अहा कतs चलि गेलहु, अहा किएक हमरा छोड़ि गेलहु । अहा घुरिकs त आउ कनि, देखू अहा बिना हमर हाल केहेन भेल अछि । देखू अहाक प्रतीक्षा करैत-करैत हम पूरा भीजि गेलहु । प्रिये अहा आबि जाऊ, अहा हमरा छोड़ि कs नहि जा सकैत छी । अहा कतs नुकायल छी, हम अहाके तलाश करैत व्याकुल छी । मुदा हम छोड़ब नहि हम अहाक तलाश करिये धरि लेब" ।

एहि भाँति विलाप करैत ओ एम्हर-ओम्हर घुमैत आगा बढ़ैत रहल बहुत काल धरि । एक गुफाके बाहर राखल एक विशाल प्रस्तर-खण्डपर

ओ बैक्स गेल संभतिः आब ओ आर चलबामे असमथषछल मुदा ओकर रदि थमल क्हि | चलैत रहल ....चलैत ....रहल ।

(अ्ि तिषो)

<u>दोसर खेप</u>

पूषिकथा - एकगोट व्यथित बेकल पुरर बरसात मे वभजइत कति ि मे जाइत अछ आ एकटा गुफा लग बैक्स क्ससैक क्ससैक कs कति अछ ।

आब अवाला भाग

काति काति ओ पुरर थाक्क कs विढाल भs गेल । आब बकि एकपैक्रया रस्ता पर विरदेश्य फेर स विदा भs गेल ।

कछु देर ओक्हि भटकैत रहल तखवि ओ एकटा घगिर झा लग ठाढ़ भs गेल । ओक्ह झारक ओक्ह पार एकटा पोखक्र छल जाक्ह मे खूब रास कमलक फूल क्खलल छल । ओक्ह पोखक्रक सच्छि विमिक्ष जल मे कछु सुन्दर रमरी जलकी़ा मे विमिर सीि रत छलैथ । ओ सभ एक दोसरा पर आजुर मे भक्र भक्र पाइि फेकैथ संगही अपि सुकोमल गौर रिषरीरक सफाई से हो करैथ । कछु रमरी मधुर सरि मे गीत सेहो गाति रहैथ । कछु रमरी सीि कs जल सs बाहर विकक्ल रहल छलीह हुकि सुकोमल गात, अलौकक सौदयष भरल मुखमण्डल, आ रेमिी श्यामरिी कुन्तल रावि कोिि ऋक्र मुविकि तपस्या भङ करिि मे पूरषसक्म छल, मुदा ओ युिि पुरर हुकिर सौदयषसs अपभावति अन्यमिस्क सि झुरमुटक विरिसौ देखैत रहल, जेि ओकरा ओक्ह जमघट मे कोिि एक विरि

व्यक्तित कि तलाि होइ । ओ पूरष ितिक्यत भय अपि खोज पूरष दृवि ओक्ह सुन्दरी बाला सभ पर कस्थर केि रहल । ओकर मुखमण्डल पर विराि व्याप्त होमय लागल । एहि पतीत होइत छल ओकर तलाि विफल भऽ गेल छल । ओ कुहुक्क उठल । ददषभरल आह ओकर आत्मा स बहरायल । ओकर मुखमण्डल पर विराि व्याप्त भऽ गेल । ओ एक पस्तर खण्डक सहारा लय अधषविमीक्लत िति सऽ एक न्यि पुष्प के विहारैत रहल । ओ िील पुष्प अत्यन्त सुन्दर छल । ओक्ह पुररक मुखमण्डल के देक्ख बुझाइत छल जेि ओक्ह पुष्प स ओकरा क्कछु विर लगाि होइ । ओक्ह पुष्प मे ओकरा अपि पेयसीक दषि होमय लागल । ओकरा बुझि गेलैक जेि ओ पुष्प क्कह, िील पवरधाि धारर केि एक सुन्दर रमरी ओकरा समक आक्ब गेल होइ । ओ आभासी रमरी युकि के देक्ख विहक्स उठलीह । युकि अपलक दृवि सऽ विहारैत रहल रमरी के । िील पवरधाि सऽ सुिोक्भत रमरी एि पतीत होइत छलैक जेि श्याम घि काि मे विदुत् पस्फुक्टत भय गेल होय । कल्पािलोक मे विचरर करैत युकिक मोि अधैयष होमय लागल । अपि पेयसीक अग पत्यङ्क सुमधुर कल्पाि करैत विमिि भऽ रहल छल । ओ अपि पेयसी के अक्लंगगबिद करि हेतु उक्द्गि भय अपि दुि विािल बाहु पसारि दौ परल । ओ पमत सि दौ ल जाइत छल मुदा एक िलखण्ड सऽ ठोकर लगला स ओ भू-लुक्ण्ठत भय गेल | ओकर कल्पािलोक विक्छन भय गेल छल । ओ विक्प्त सि विलाप करय लागल - हा क्पया अहा कतऽ चक्ल गेलहु, हमरा एि छोव क, हम अहा क्बिु क्कह रक्ह सकैत छी आक्ब जाऊ। विरह िदि सऽ व्याकुल ओ पुिः उठल मुदा अपि के सम्हाक्र क्कह सकल, मूक्छषत भय भू लुक्ण्ठत भय गेल । ओक्ह युकि के विलाप दूर तक गुवित भेल छल । पुिः ओकर

खसाकि तीरिआजि पोखरि मे जलक्रीड़ा मे विभिन्न रमणी सभ के आकर्षित केलक । ओ सभ एक दोसराके पशपूर्षक दृर्वि स देखऽ लगलीह । बुझाइत अछि कोनो अभागल पेम विदिन्ध अछि|

एक सुन्दरी कहलैन्थ । दोसर सखी कहलखिन - तो सभ एतहि रहऽ हम देखिन अबैत छी| देखऽ सखी विलम्ब किए करह, किए त हमरा सभ के स्वगिषलोक जाइ मे बहुत विलम्ब भय जायत|

एक अन्य रमणी बाजि उठलीह । किन्ह किन्ह हम शीघ्र आयब ता धरि तो सभ पतीक्षा करह । कहैत ओ रमणी छिदक उदगम दिशा दिशि दौड़ गेलीह । हुनकर दृर्वि चेतनाहीन युकि पर परलैन्ह तऽ ओ फीर कऽपुनः तालाब दिशि दौड़ गेलीह । सेकिजत ओतह एकटा पुरुष चेतनाहीन अवस्था मे छथि, हम कमल पत मे जल भरि लऽ जाइत छी । जलक बून्द ओकरा सचेत करए मे संभवतः सफल होई| लेकिन तो ओकरा सचेत करए लेल एतेक पयासरत कथिएक छह रम्भे? तो किए बुझबह| जीव मातक कल्याण केनाइ हमर सबहक अपन परम् कर्तव्य हेबाक चाही, हम ई मानैत छी, तो सभ ई बात किए मानैत छह की? कहैत ओ पाइन लऽपुनः दौड़ गेली चेतनाहीन युकि दिस । अई सखी कही तोहर मोन सेहो त हमर सभक समय सखी उर्वशी सन कोनो युकि के पेमपाश मे आबद्ध किए भय गेलह? जाइत जाइत रम्भा के ई शिकायत करणगोचर भेलैन्ह मुदा ओ किछु पत्युतर देनिह भागल भागल ओतहि पुरुष के समीप पहुचलीह आ आजुर स पाइन ल-ल ओकरा मुख पर छीटऽ लगलीह । ओ युकि के मुख मण्डल के ध्यान पूर्वक देखलीह आ करुणा विगलित भ गेलीह । की पेम मे एहेन अवस्था भ जाइत छैक? सहसा युकि के आखि फुजल आ ओकर दृर्वि रम्भाक मुखमण्डल पर परल । कखरुक

मुस्काि ओकर मुख पर दृवि गोचर भेल, पुिः ओ हरबरायल सि उक्ठ क बैक्स गेल आ कहय लागल - क्हि क्हि अहा हमर पेयसी क्हि क्थकहु । हम अहाक विरह मे क्याकुल क्हि छी । हम अहा के क्हि क्वन्हैत छी । हमर क्पया त उर्षिी क्थकीह । उर्षिी ....उर्षिी.... उर्षिी ....उर्षिी.... सिगषक सभ अप्सरा स सुन्दर.....विीता..... आ ... आ... आ....|

क्कछु सोचैत युकि पुिः मौि धारर कय लेलक । रम्भाक मुख पर मधुर हास्य पस्फुक्टत भय गेलैन्ह । ओ विहुसैत बजलीह - ओ..... आब हम क्वन्हलहु अहा पुररिा छी, सोमर्िकि सूयषराजा, पुररिा|

युकि आशयषचक्कत भय सुन्दर रमरी के देखलक फेर आदरपूषिक कहल - ह देर्िी, अहा ठीके क्वन्हलहु । मुदा अपिकि सत्कार हेतु एतह हमरा लग क्कछु सामगी क्हि अक्छ । तथाक्प हमर विमि आगह अक्छ अपिि एक्ह क्तराच्छाक्दत भूक्म के आसि गहर कर| रम्भा संकोच पूषिक ओतक्ह भूक्म पर बैक्स रहली । रम्भा क्कछु छर पुरिाकि पुररोक्चत सौदयषके विमुग्ध भय देखैत रहली, मुदा पुरिाकि दृवि क्हिका क्दक्स क्हि छलैक्ह । ओ रम्भाक सौदयषस चुटक्कयो धक्र आकृि क्हि भेल छलाह । रम्भा उर्षिीक पक्त पुरिाकि अपक्तम पेमक पिक्सका भS गेलीह, आ मोिि मोिि ओ उर्षिीक चयि के सेहो पिंसा केलक्थ । सिगषलोकक कठोर अिुािसिक्पयता पर हुिका क्खनता सेहो भेलवि जेक्ह काररर उर्षिी के पुररिा सS दूर होमय परलवि ।

रम्भा उर्षिी आ पुरिाकि सम्बन्ध मे सोचैत विचारमनि छलीह क्क पुररिा के धीर गम्भीर आिाज सुवि क्चंहुक्क उठलैथ - अपिकि पक्रचय सुन्दरी?

मान्यरि हमर िमि रम्भा अवछ, हम सिगषलोकक अप्सरा वथकहु | हम अपि सखी सबहक सग कुमार िि मे

सिाि हेतु अयलहु अवछ|

अच्छा ¡ हमर उर्षिी सेहो आयल छवथ की? - पसनता स उताहुल होइत पूछल पुररिा ।

-िवह ओ िवह आयल |

रम्भाक सक्षिप्त उतर सs पुररिाक उल्लवसत मुखमण्डल पर उदासीक गहि लेपि भs गेल । हमर वायतमाक की समाचार अवछ?

िँिह जे अहाक अवछ । वमनता एतबवह अवछ जे ओ िारी होमय के कारर अपि दुःख केकरो पर पकट िवह कs सकैत अवछ, संगवह सिगषक अिुिासि मे वबद वियमपूिषक सभ काज अन्यमिस्क भय पूरा करैत अवछ|

िारीक धैयषवहमालय सि अवडग होइत अवछ । हुिकर अन्तःस्थल मे दुःखक शोत पस्फुवटत भेल होय, विरहाविि स हुिक हृदय विदग्ध रहवि, मुदा ओ ऊपर सs लज्जाक वहम स आच्छावदत रहैत छैथ । सियं लाकरा, पतारारा, अपमािक उल्कापात के सहैत जीिि पयंत्त दैिक कठोर अिुिासि मे अचल अवडग रहैत छैथ । रम्भा आ पुररिा दुिू उर्षिी के विरय मे सोवच दुवखत भ गेलैथ । पुररिा तs उर्षिीक समाचार पावब आरो दुःवखत भs गेलाह, आब हुिका वकछु पुछबाक साहस िवह रहलैक ।

मौि भग करैत रम्भा बाजली - आब अपिहु पेमक ई खेल बन्द कर राजि|

-हम..... हम ... िह्न कनहु िह्न । हमर मोि आब आि कोिि बात मे िह्न लागैत अिछ । हमर जीिि कि उदेश्य

आब मात उिर्विीक पेम मे विदिन्धि भS हुिकर अिन्तिम पतीक्षा रिह्न गेल अिछ|

रम्भा- ई बात उिचत िह्न अिछ िृपि शेष । अहा राजा छी, पजा पालि पमुख कतर्षव्य होइत छैक कुिल राजाक|

पुररिि- हम आब राज्य सञ्चालि मे असमथर्षभS गेल छी देिि । ई काज आब हम कोिहुिि िह्न कS सकब|

कहि राजा कविकाल धिर मौि रहलाह । पुिः िकछु स्मरर करैत ओ बािज उठलाह - आब हमरा उिर्विी सौ पुिः कहिया साक्षात्कार होयत । ओ हमर पदरत्यागक एक िरषपशात् पुिः भेट होयबाक बात कहि रहैथ|

-हा राजि आगामी पूरिमा के िदि सरसिती िदीक तट पर ओकरा स अहाक पुिः भेट होयत|

राजा पुररिि एिह सुखद समििद के सुिि अत्यन्त पसन भेलाह । ओ उपहार सरिप रम्भा के िकछु देबाक हेतु अपि दृिि हुिका िदिि घुमौलाथ्ि, परंतु महाि आशयर्षस्थाि िरक्त छल । ओतह मात राजा के अन्य कोई पािी िह्न छल। पुररिि विहिस उठलाह । विहसैत सिितः बाजलैथ - ओह ई अप्सरा सभ कतेक विचित होइ छथ्ि,

अपि इच्छा भेल तऽ कतहु पकट भय जाइत छथि आ फेर अपि मोि होइतिह अदृश्य भऽ जाइत छथि|

(अिि तिमे)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)-आगा

रबीन्द्र नारायण मिश्र- मातृभूमि (उपन्यास)-आगा

८

जयन्त जानकी धामसँ कतेको विषयमे पारंगत भए गाम घिपस आबि कौशिक मयादाक पालन करैत जीवन निर्वाह करए चाहैत छलाह। ओ पाठशाला हुनकर शिक्षक कै पुस्तकसँ चलि रहल छल। तकरे आगा बढेबाक हेतु ओ कालिकान्तक आग्रहके अस्वीकार कए देने छलाह। ओ पाठशालाके विकसित कए आधुनिक सुविधा संपन्न विश्वविद्यालय स्थापना करए चाहैत छलाह जतए आधुनिक विज्ञानसँ लए कए भारतक प्राचीन संसकृतिक ज्ञान विज्ञान सु लोकनिके उपलब्ध हेतनि ।

जयन्त क शारदा कुंजमे शिक्षा-दीक्षा पूर्णभए गेल छनि अछि आ आब ओ अपन मातृभूमि घिपस हेताह से समाचार कालिकान्तक कान धरि सेहो पहुँचल। कालिकान्त जयन्तक विद्वताक चर्चाबहुत सुनने रहथि आ हुनकर इच्छा रहनि जे ओ हुनकर राज-पाट सम्हारथि।

जखन दूत सभसँ मिलकछु नहि भेल तँ एक दिन कालिकान्त स्वयं चुपचाप जयन्तसँ भेट करए बिदा भेलाह। नदीसँ सटल आश्रममे अपन आचार्यगणसंग शास्त्र चर्चामे जयन्त लीन छलाह। आश्रमक विद्यार्थी दतचित भए हुनका लोकनिक पारस्परिक संवाद सुनि रहल

छि ाह। कतहु कोनो पकारक गम्मीमीमिध नम्ह छि । ओम्ह मनाशिब्द िताारिणमे काि ीकान्तक पदचापसँ एकाएक सभक ध्यान ओमहर चमि गेि । आचायर्णी उम्ह कए ठाढ भए गेि ाह।

"अपने म्हकएक कष केि हुँ। समादम्हतहुँ। हम सि यं अपनेक दरबारमे आम्ब जइतहुँ।"

"आचायर्णी के सादर पणाम। असि मे हम जाम्ह काजे अएि हुँ से समादे नम्ह भए सकैत छि, ताम्ह हेतु हमर आएब अम्नाियणछि।"

"से की? एहन कोन बात भेि क जे अहाक सि यं एतए आएब जर री भेि? की हमरा िकम्नासँ कुनु अधमण भए गेि? की हमर आशमक मि दाथीसँ म्हकछु रु म्ट भए गेि म्न अम्छ?"

"ई सभ म्हकछु नम्ह भेि अम्छ।"

"तखन अपने कष म्हकएक केि हुँ? ई आशम तँ अपनेक कृपासँ चमि रहि अम्छ। अपनेक पूि म्वा िकम्न अत्यंत उदारताक पम्रचय दैत एकर स्थापना केि ाह आ कतेको मेधाि ि मि ध्याथीके आशय दए मि दा िभ करओि म्न। एम्ह आशमक परंपरा बनओने रखबामे अपनेक महान योगदान अम्छ। ते अपने म्नसिंकोच कहू जे हम सभ कोन तरहे अपनेक आजाक पाि न कए सकैत छी।"

"आजाक तँ कोनो पशे नम्ह अम्छ आचायर्णी!"

आचायर्णी बकर-बकर काि ीकान्तक मुँह तकैत रम्ह गेि ाह। म्हकछु बुझएमे नम्ह आबम्न जे आम्खर बात की अम्छ? म्हकछु अंदाज नम्ह िमा रहि छि म्न। काि ीकान्त आशमक चार कात म्नहाम्र

रहि छथि। आश्रमक समस्त विद्यार्थी सभ तेजोमय रहथि। ललाटपर तृपुंड लगओने, कुशक आसनपर विद्यमान समस्त विद्यार्थीपर हुनकर ध्यान गेल। ओ जे चाहैत रहथि, किन्तु नजरि तकैत ओ चुपचाप पैरे एतए धरि चलि आएल रहथि से नहि भेटि सकलन। "ओ कतए छथि?"- कान्तिकान्त मोने-मोन सोचैत रहथि।

"आश्रमक कोनपर नदीसँ सटल एकटा तेजस्वी युवक निरंतर वेद मंत्रक सस्वर पाठ कए रहल छथि। हुनका कान्तिकान्तक आगमन आ तदुपरंत आचार्यसंग भए रहल वार्तालापसँ किछु मतलब नहि बुझा रहल छन्हि। ओ तेजस्वी बालक के छथि? कहीं ओएह तँ नहि छथि?"- कान्तिकान्त मोने-मोन सोचि रहल छथि। मुदा समाधान नहि होइत देखि ओ आचार्यसँ स्पष्ट कहि देलखिन -

"आचार्यजी! अपने हमर वंश परंपरासँ पूर्णपरिचित छी। फेर हमरा लोकनिक शुभचिंतक छी। जँ अपनेसँ नहि कहब तँ कहबै ककरा? आ बिना अहाँक कृपाके एहि समस्याक समाधान नहि भए सकैत अछि।"

"अपने आज्ञा तँ देल जाए। हम सभ एकर सहर्षपालन करब। ई तँ हमरा लोकनिक अहोभाग्य होएत।"

"आचार्यजी! अपने तँ महाज्ञानी छी। अपनेके की नहि बूझल अछि। तथापि अपनेक आज्ञानुसार हम अपन मंतव्य स्पष्ट करैत छी।"

एतबा बाजि ओ आचार्यसंगे बात भए गेलाह आ एकात पाबि हुनका कहि देलखिन-

"आचायजी! हमर राजपाट बहुत पसरल गेल अछि । असगर हमरासँ सम्हरल नहि रहल अछि । हमर एकमात्र संतान चंद्रकला सेहो आब छोटगर नहि छथि। जयन्त चंद्रकलाक हेतु उपयुक्त बर बुझाइत छथि । जँ ओ तैयार भए जाथि तँ हमर चिंता कम होअए । दुनू गोटे मिलि कए हमर राजपाट सम्हारत तँ हमर समय नीकसँ कटि जाएत ।"

"हम एहि समस्यासँ वाकिफ छी। अहाक लिक सभ हमरासँ एहि विषयपर कै बेर चर्चा केने छथि मुदा जयन्त सविता उपयुक्त होइतहुँ अखन विआह करबाक हेतु उत्सुक नहि छथि। हुनका माथमे अपन गाममे पाठशाला स्थापित करबाक धुन सवार छनि । कहैत छथि जाबे से नहि होएत हुनक जिनगी सविता व्यर्थ होएत । ते ई काज ठामहि रहि गेल ।"

ई सभ गप्प करैत-करैत आचायजी कालिकान्तक संगे जयन्तक लगीच आबि गेल रहथि। कालिकान्त सेहो हुनका संगे-संगे जयन्तक पाछामे ठाढ भए गेल छथि। यद्यपि कालिकान्त आचायजीक संगे जयन्तसँ सटल ठाढ रहथि मुदा ओ आँखि मुनने तेना ने ध्यानमग्न रहथि जे आचायोके हुनका टोकबाक साहस नहि भेलनि। कालिकान्त एहि बातके बुझलनि आ आचायजीसंगे ठामहि वापस भए गेलाह। मुदा कुट भनि वापस जाइत काल हुनका बेर-बेर ओहि तेजस्वी युवकक ध्यान अबैत रहलनि।

(अगिला अंकमे)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गढ़-िविरकेल उपन्यास-तयीक पहिल उपन्यास "सहसिरा" क बाद दोसर उपन्यास

गजेन्द्र ठाकुर

द .... फाइलस (आगा)

१

हमर िमि छी... ... .आ गाम ''गढ़ िविरकेल''

ि‍क दि ऑफिससँ दस बजे रातिमे घुरलहुँ त डेरा पहुचैते बेटी सिगित केलक। बुझा गेल जे र सल अछि। पुछिलए जे की भेल त ओ मोि पा लक जे अझुका सिमा देखबाक पोगाम छलै। हमर एिह जिबिपर कि देरी भऽ गेल अछि आ थाकल छी, ओ सोफापर मुह घुमा कऽ बैसि गेल आ कथुक उतरे िदिअए। किवयाके कहिलयिन्ह जे कालि सिमा चलै चलब से िहेतै कारर ८-११ बलाि त खतम भऽ गेल हेतै। ओ बेटीसँ पुछि कऽ ओतिहयेस कािकर कऽ कहलिन्ह जे अहा अझुका पॉिसस केिरहिए। ह पॉिसस त केिरहिए, तकरा पूरा त करैये पड़त। फेर मोि पड़ल जे सरकार िइट ि देखेबाक अिमित थियेटर सभके देि छै, से आइ कालि ११ स २ बजेक ि सेहो देखि सकै छी। ''बूक माइ ि'' साइटपर ऑिलाइि टिकट कटेलौ आ से देखि बेटीक र सब खतम भेलै। बेटा, किवया आ मा तीि गोटे तैयार भऽ जाइ गेला आ सिमो जे पव लागल सेहो सिगर। सालमे एके दू टा ि िक सिमा बि छै बॉलीिडमे।

दू बजे रातिमे सिमा देखि कऽ घुिर रहल छलौ, रस्तामे गाि िक

लाइट एकटा ब़ का होव्डिंगपर प़ लै, आ ओहि बहुत रास होर्डिंग अबैत गेल।

ओइ होर्डिंग सभपर राज्यक महिला मुख्यमंतीक कनि अगरायल सनि अभयमुराबला फोटो छलै। ओनि त बेटीस बेनि रनिंग कमेण्ट्री हमही करै छी, रस्ताक सभटा चीजक विस्तृत विवरिर दैत गाड़ी चलबै छी, कखनि काल जखनि दुनू हाथ छोड़ि व्यवस्सा आगू बढ़बै छिऐ त ओ टोकितो अछि आ स कक सभटा कार्टून, रेड-लाइट, गीनि लाइट, जेबा कॉसिंग, सभटा ओ बुझबऽ लगैए। मुदा ऐ होर्डिंग सभके हम अनठा देलिऐ ई सोचिकऽ जेज कहबै त उनटे सुनि देत जे ई सभ हमरा बुझले अछि। मुदा ऐबेर से नि भेल। निसा खोलि कऽ ओ अचरजस हमरास पुछलक-

“ई ककर फोटो छिऐ डैडी?”

“ईहो नि बूझल अछि, फलनि दीदी मुख्यमंतीक फोटो छियनि ई”।

“मरि गेलखिन्ह की? कहिया?”

कनि काल त हमरा बुझबामे नि आएल आ जखनि आयल त ततेक हसी लागल जे गाड़ी चलेनाइ मुश्किल। मा कविया आ बेटाके कहलियन्हि जे ई किताबमे पढ़ैए जे मुइलाक बाद ब़ का फोटो आ मूर्तिषबनि छै से एकरा भेलै जे मरि गेलीह मुख्यमंती आ स्कूलमे एको दिनकि छुटी नि भेटल। मुदा आइ कावि त विजक्तेमे ब़ का फोटो आ मूर्तिषसभ बनिऽ लागल छै। हमरा संगे सभ पेट पकड़ि कऽ हसऽ लगला। बेटी हतपभ सभके देखैत रहल। तखनि हमर फोनकि घण्टी बाजल आ हम जेबीस फोनि विकालिक्हिये रही तखनि ओ हमरा दिसस

इ िरा कऽ कय स्टीयरिंगपर ्याििेबा लऽ कहलक त हम गा ीके स कक कात लगा कऽ गा ी ठाढ़ कऽ लेलौ।

"सूतल छलौ की, उठा देलौ।"- फोिमेस अबाज बहराइए।

"ि, एते जल्दी कहा सूतै छी, कक कोि जररी गप अछि?", दू बजे रािक कऽ ऑकफसक हाककम कािकाजेक फोि ककए करत, से जकरा इंस्टंक्ट कहै छै तकहि पुछा गेल छल।

"एम्सक रॉमा सेन्टर आबि सकै छी, आउ त फेर आगा गप हेतै"।

डेरा पहुकच, कप़ ा बदकल कऽ ऊबरके बजबै छी, अपि गा ी लऽ जायब त पाकककंग भेटत आकक ि से सोकच कऽ। गेटपर उतकर कऽ जखि रॉमा सेन्टरक भीतर जाइ छी त अबाज अबैए-

"सर, एम्हर छी हम"। हमर इंस्पेक्टर सहैब गालके हाथस साटि हमरा ोर करै छकथ।

"अहू एतै छी, हाककम बजेि छकथ, ते हम आयल छी"।

"हमरे दुआरे बजेि छकथ, अटैक कऽ देलक गुण्डा सभ"।

"कतऽ, कोि?"

ओ अपि गालपरस हाथ हटबै छकथ त गाल दू टुक ी दुि ककस भेल देखाइत अछि।

हमर "हा, हा"कहला उतर ओ ध़ फ ा कऽ अपि हाथस गालके

साक्ट लै छथ्थ।

हम कहै छथिन्ह- "अखनि केँ रहू, अहाके अपनि गाल देखा निपव रहल अछि ते अहाके पता नि अछि जे ....."। चुप भऽ जाइ छी।

"कते कालस एतऽ छी?"

"एक घण्टास छी। जखनि आइ.जी., डी.आइ.जी. सहैब सभ कनि काल पहिन एला तखनिसि कनि ऽयानि देलकहे। ईहो सभ की करतै, देखै नि छथिऐ भी "।

एकटा डॉक्टर हुनिका बजाके लऽ जाइ छथिन्ह एकटा कोठलीमे। ओइ कोठलीक बाहर सभ हाकिम जमा छथ्थ, सभ गम्भीर मुरा बनि छथ्थ। लोकल थानि बला सभ सेहो आबि गेल अछि। थानि बला सभ सहक्ट कऽ हमरा लग आबि गेल।

दरोगाजी हमरा अपनि मोबाइल विकालि एकटा नि.डी.ओ. देखबै छथ्थ।

"देखू ऐ गुण्डा सभके, हमरेपर पाथर फेकि रहल अछि"।

हनिलदार सहैब क्टपलथ्खन्ह जे ओइ सारके हुजूर जेल पठा देलथ्खनि, सभटा गजेरी-चरसी सभ छै। कोनि डरे-भर नि होइ छै। हुजूरे कऽ मोटरसाइकिल थानिपरस चोरा लेलकन्हि, तकर अखनि धरि पते नि चलल छै।

हम दरोगाजीस पुछलियन्हि- "अहाके की लगैए, की ई लॉ एण्ड ऑडरक गप छै आकि ऑफिसक काजस एकर कोनि सम्बन्ध छै"?

ओ कहै छथ्थ जे मामलामे पेच छै। तहकीकात त जबरदस्त ढंगस

हेतै। मुदा ओ सेहो कहै छथि जे मोटा-मोटी ई "लॉ आ ऑडर्स"क समस्या छिऐ। मुदा देखू तहकीकातमे की निकलैए...

इंसपेक्टर सहैबक गाल सीबा देल गेल छन्हि। इन्सपेक्टर सहैब हमरा कहै छथि जे गाल त दू टुकड़ी भऽ गेल छलै से हुनका बुझले नै छलन्हि, सीलाक बाद डॉक्टर अएलाह देखैले छलन्हि से देखि कऽ पता चललन्हि।

सभ हाकिम अपन-अपन घर दिस बिदा भेला। सरकारी गाड़ी इंस्पेक्टर साहैब कऽ लऽ गेलन्हि आ हम ऊबरके फोन लगेलौ।

... ...
... ...

अवाला दिन भोरे-भोर ऑफिस गेलौ त अदली इनरामे कहलक जे एकटा इन्फॉर्मर आयल अछि। हम कहलिऐ जे ककरोस भेट करा दैलाऐ, एतेक गोटे ऑफिसमे अछि त कहलक जे कहैए जे अहीस भेट करत, कहैए जे हमर इलाकाक हाकिम छथि, अनकापर ओकरा भरोस नै छै।

"हमर इलाकाक छी? कतुका छी? नाम-गाम बता देलक की?"

"नाम त नै बतेलक मुदा कहलक जे गामक नाम कहि दियौन्हि हाकिमके, अपने बजा लेता। गामक नाम जे कहलक से निश्चिते.... कहिदन त ... "गढ़ निकरकेल"!"

२

कएक बर्ख बीतल गेल, डेटा, डेटा, डेटा...

बैलेंस शीट, एक्सेल फाइल, फेक अकाउण्ट, फेक इनभ्वाइस..

फेर सभ फेक अकाउण्ट लेल एकटा कन्सोलिडेटेड इनभ्वाइस..आ तइस बनि रायल बैलेंस... आ से डेटा गेल चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट लग। आ तखन बनि ऑडिटेड बैलेंस शीट.. पक्का बला!

“एतेक सामग्री अहाँ लग अछि, अहाँ कोनो पैघे लोक छी, कारण कोनो संगठित छोट-छीन लोकक हाथमे एतेक डेटा नै एतै। गढ़-विकेल एकटा रहस्य छै आ ई रहस्ये अछिऐ ई दुनिया”।

“हमहूँ छी एकटा रहस्ये। गढ़-विकेलक कर्जा हम सभटा गप कहब, कछुओ नुकाएब नै अहाँस, से समए आएत। एकबेर जखन शुरू कऽ देलौं अहाँ ई काज, तखन हम विश्रान्त भऽ गेलौं। हमरा बुझल छल जे अहाँ ई डेटा देखबै त ओ बुझबो करत आ कनि, आ ज बुझि कय डेरा बा भाकि जाय। आइक बाद हमरा आ अहाँक भेट नै हएत, कोनो सूचना आदान-प्रदान आइक बाद आब डाकर्षि बिटा पर हएत”।

... ...

आ ओ चल्ल गेल।

ओकरा जिताएब हम।

ओ जीतत त जीतब हम।

एतेक सूचि, एतेक धकर खकस गेल लोकक सूचि?

सूचि आ डेटा बवि गेल अछि ब़ का खेल। सभके बूझल छै सभटा गप आ सभ गबदी मारि अछि बैसल।

डर..

कयो एकर कारर घर्-दार-पवरिरके बचाएब कहैए, फैमली बला छी, अपि ि त पवरिरक कचन्ता त करैए प़ त, त अपि लेल ि पवरिरक लेल डेराइत छी... ओकरा की छै, ि आगू िथ ि पाछू पगहा...

आ कयो-कयो होइत अछि बताह, ि अपि कचन्ता आ ि पवरिरक.. बौआइत छै ओकर पवरिर...

कयो कि कालमे थक्ह जाइत अछि कयो कोि पैघ दुघटिाक बाद थम्हैत अछि आ कयो कछुअ भऽ जाउ थक्हते ि अछि... आ एहि लोक सभ अछि जकरा संग दुघटिा होइते ि छै.. से ओ कए थम्हत.. बुझाइ छै जे ओकर ब़ कत्त होइत छै अधलाह काज केि..,.

लावा रहल अछि जे कोि अन्हार तरहव मे उतरल जा रहल छी, सीढ़ी िचा वदकस जाइ छाइ, पवहि कि-मि इजोत, फेर झलफल, फेर राकत सि अन्हार आ फेर अन्हार गुज-गुज, आवापरक खापव क अधोभाग...

इजोत कोि आस ि? आ ज आवा जाएत इजोत त भऽ ि जाइ आन्हर...

इजोतस डेरा रहल लोक?

अन्हारेमे लावा रहल छै मोि आक्क लगा रहल अक्छ मोि...

आ जे अक्छ बताह?

िविितक रङ देखा पव रहल अक्छ डेटामे, िविित-िविितामे... मुदा िविितक रङ सेहो कारी, अन्हार-गुज्ज... िविित त होइत अक्छ लाल टुह-टुह... मुदा ऐ डेटाके हमरा लग अबैत-अबैत देरी भऽ गेलै.. लाल-रङ बेसी गाढ़ भेि कारी भऽ जाइ छै, आ देरी भेि सेहो...

देरी कएए भेलै? बताह लोकक कमी त कक्कयो ि छलै ऐ लोकमे... मुदा लगैए जे आब भऽ गेल छै, आ से ि रक्कतै त एतेक िविित युक्त डेटा, एतेक मातामे कोिि थक्कया जइतैक? आ ज रहबो कक्रतैक त तकर रङ लाल रक्कतैक, गरम रक्कतैक, कारी-पप़ ी प़ ल ि रक्कतैक।

सीढ़ी पहुक्च गेल अक्छ तरहव मे... तेहि ब्लैक-होलमे जतऽ जा कऽ सभ कक्छु गुरतािकरषक अधीि भऽ जाइत अक्छ, जकर म् य वक्कित आकृक्त अक्छ जन्म लऽ लेि, डेराओि आ ्िविि उत्पन्न करैत... जेिि समुरमे उठल अक्छ चकाित...

सभ आकृक्त घेर लैत अक्छ हमरा... पक्कि हमर गप सुिि त पक्कि हमर... हॉस्पीटलमे जे हालत होइत छै डॉक्टरक, रोगी सभ जखि घेरि रहै छइ ओकरा... ओतऽ त रोगीक सङ ओकर पकाििरक लोक सेहो रहै छै, मुदा एतऽ त मात रोगीये टा छै..

३

पहिल फाइल

“सभ मानैए जे एकटा दैवीय विधान होइ छै, सभ तरहे ठीक, सभस बेसी जानिकार आ सभस बेसी विवेकशाली, जकरामे कोनो अविश्वास नै होइ छै, जे सभ ठाम अनुभव कएल जा सकैए आ जे सभ बौस्तुक जाता अछि। मुदा फेर दुनू विधानक कोन तरहे व्याख्या हएत? फेर कोना होइए दुनू कृत्य, कएए होमए दैत अछि ओ ई दुष्कृत्य”?

अन्हारस निकलल रहल ई अबाज, दविधाक एकटा समस्याके अकानैत अछि। नाम छिऐ गोप कुमार।

“सभ हमरे दोखी मानैत अछि, मुदा दोखी कइएक तरहक होइत अछि, एकटा होइ छै गैंगस्टर, एकटा विप्लव आ एकटा आतंकवादी आ एकटा हमरो सभ सन लोक”।

“तीनूमे हमरा लेखे कोनो अन्तर नै छै, जे राज्यक विरुद्ध शस्त्र उठेलक से भेल दोखी, आ तकरा भेटतै सजा”।

“मुदा ज गैंगस्टर कहए जे ओ देशभक्त अछि आ अहाके विप्लव आ अतंकवादीक विरुद्ध अपन सहयोग देतअए, तखन”?

“तखन ओकर सहयोग लैत छी हम, मुदा ओइस ओकर केलहा माफ नै होइ छै। ह, ओकरा पशातापक एकटा अवसर भेटै छै। आ से त विप्लवी आ आतंकवादीके सेहो भेटै छै”।

आ ओ कथा शुरू करैत अछि, सत्यकथा। मानवक समस्त प्रकृतिपर

विजयक पशात, मानिकि मानिसि संघरषक कथा। दोसर महाभारतक पारम्भ, निश्चाक कुरुक्षेत्रक युदस्थलपर। देखा चाही कतेक विअम टुटैत अछि ऐ महाभारतमे, कतेक नि विअम बनैत अछि ऐ कीताक। कएकटा आनिक संचार होइत अछि आ कएकटा विरानिक। गढ़ निविरकेल बला ओ इन्फॉमेष फेरसँ हमरा भीतर कृषक चपलता आबि देने अछि।

“जे अहा करबै सएह सही हएत आ जकर अहा विरोध करबै से गलत हएत”। यएह कहि रहल गढ़ निविरकेलक बक्सनद्वा आ यएह कहि रहल अछि गोप कुमार।

हमर बु‍ड़ाइ कऽ कय जानि लऽ जाइ जो- हम सोचैत छी।

“बुड़ाइ नि अछि ई। दुनि निकलतक कोनि तरहे व्याख्या हएत? बुझू जे ई छी पारबध जे अहाके अतए आनि गेल अछि। सनिषानि, सनिविकलमानि आ सभठाम उपस्थित निकलक अछैत दुनि निकलतक व्याख्याक दार खुजत”।

हमर सोचलाहो गपक उतर दऽ रहल अछि गोप कुमार। ई एकटा निनि अनुभूत अछि हमरा लेल। आइसँ पहिने हमर सोचलाहा गपक उतर सपिमे बा अदषचेतानिस्थामे कोनि निकलत दऽ दइ छल। अदष चेतानिस्थामे मानि जखनि हम सोचब बन्द करैत छी, थाकत जाइ छी जे आब एकर उतर नि भेटत, तखनि कइएक घण्टाक बाद कोनि रैकलक जाममे बा क्सनिमा देखैत काल बा खाइत काल, कइएक बेर सरल समाधानि भेटि जाइत अछि। सपिक समाधानिके त हम दैनिय हस्तक्षेप मानित छलौ मुदा अदषचेतानिस्थामे भेटल सरल समाधानिके निरहमे अपनि ताकल समाधानि मानित छलौ। आर त आर अदष

चेतािस्थाके चेतािस्थे माँित छलौ िरहमे। मुदा सपि कालक बढ़ैत सरल समाधाि अदषचेतािस्थाके पकरभाकरत केलक आ अदष चेतािस्थामे भेटल सरल समाधाकिे सेहो दैीय हस्तकेप क्सद केलक।

''मुदा हमरा सभके क्सखाओल जाइत अछ जे ठाढ़ ाक, गोर-ािर आ ािगर लोक ीक, ज ककरो सभ अंग सही छै तखि ओ असुन्दर अछ। आ ज कोि अंग सही ि छै, कोि पअए छै, त ओकरामे दुिता भरल हेतै। आ ज ओकर मोि खराप भऽ गेलै बा बेमारी भऽ गेलै त सुन्दर-असुन्दरक भेद आ पअए केर अकारकत िताि बा पूिषजन्मक कोि दोख आब जेतै। से हमरा सभके एक दोसरास तुलि करब क्सखाओल जाइत अछ। ओ तोरास कम सुन्दर बा बेिी सुन्दर। ओ तोरास बेिी बलगर बा कम बलगर, बेिी काजुल बा कम काजुल। हमर देि दोसरा देिस कमजोर बा मजगूत, हमर संस्कृक्त दोसरस ीक बा अधला। मुदा ज अहा दोसर संस्कृक्त, दोसर ािक-मुहबला लोकक सम्पकषे आयब त अहाके लागत जे ई सभ झुटेक भेद अछ, ओहो अहि सोचैत अछ। ज कयो सुन्दर-असुन्दर अछ बा बेिी-कम काजुल आ ज तकर कोि िपािके सत्य माियो ली त ओइमे अहाक कोि योगदाि?''

''त तकर कोि उपाय? स्कूल कॉलेजमे ािमाकिस लऽ कऽ ािकरी-चाकरी, कृकष-उदोग सभ ठाम ीक-अधला कोि तय-तमना हएत, तकीक उत्कृि अछ बा ि तकर कोि िधारर करब''?

''तुलि अपािस कर , अिकास ि, कािि आ आइ, पुराि आ ाि, अपि आ अपि देि-समाजक तुलि अपिस। आ से ि केि क्हंसाके

अहा ि रोकक सकब”।

“अहा त कंसा छोव देब, मुदा ज अहाक पक्त कंसा हएत त से केि रोकब”?

“ज अहा अपिस अपि तुलि करब बा जखि अहा अिकास अपि तुलि करब त अहा देखब जे पहल क्स्थक्तमे धिात्मक िृद्धि हएत, िीक भाि रहलापर पगक्तमे कोिि बाधा ि होइ छै। दोसर क्स्थक्तमे अहाक पगक्त ऋरात्मक िृद्धि बाक्धत करत, अहा मात दोसराक अिुसरर करब, ओ जे रस्ता िधाक्रत करत तहीपर अहा आगा बढ़ब। अहाक रस्ते जखि अिकिर अक्छ त कखिि ओइमे ओ खधाइ खुिि देत आ अहाक पगक्त बाक्धत कऽ देत। आ सएह भेल ऐ पहल फाइलमे... ... .

.... एकटा कम्पिीमे हम काज करैत छलौ। पढ़ क्लक्ख कऽ िकरी भेक्ट गेल। आ ई कम्पिी बडड िीक लागल। एतेक सुन्दर िबसाइट छै एकर। िबि टेकोलोजीक सभस आधुििक सिरिपक उपयोग केि अक्छ। कम्पिीक िियमे जािकारी लेबाक हुअए त एकर िबसाइटपर जाउ, मल्टीििििल कम्पिी, सत्य हरिचन्द्रक कम्पिी संस्कररर, मोि पसन भऽ जायत। ऑिफसो चकमक। ओिि हमर गामोपर साफ-सफाइ जबरदस्त छल, मुदा ओतऽ अंगिमे माय बाढ़िि सिस आ दलािपर बाबू खर ास जे काज करै छला से एतऽ कमचारीक एकटा ििगष करैत छल। चतुिषक मल्टीििििल संस्कररर ऐ बहुरंगी कम्पिीमे छल। क्डसीप्लीि त पूरा, अिुिासि देिके महाि बिबैत अक्छ से त कतौ क्लखल ि छलै मुदा चार िगक कमचारी एक दोसरास छोि आपसोमे गप-सप्प कम्मे करैत रहक्थ। कक्छु त काजक बोझक दुआरे आ दोसर कोिि सूचि-लीक होयबाक बा िि्दा िकाइतक आरोप

लगबाक डरक दुआरे। मुदा ओइ डरके वडसीफ्लीकि ामि देल गेल छल।

सालक अन्तमे सभक कएल काजक समीक्षा होइ छलै, तही समीक्षाक आधारपर दरमाहामे बढ़ोतरी होइ बा ि होइ छलै, मुदा ककरा कतेक भेटलै से एक-दोसरास गुप्त रखबाक ितषरहै छलै। आ ि साल फेरस िर ... भवर साल मेहक्ति कर , ओइ सालक-अन्तक कायष समीक्षा लेल।

भागा-दौ ी दोकाि-दौ ी सि। सभ क्दिका काज। कोि पवरयोजि केि बति, पी.पी.टी. एक्सेल सीट, बार-पाइ चाटष् पोजेक्ट पपोजल, भागा-दौ ी। सेमीिर राषरीय आ अन्तराषरीय वविशदालयमे, हािडषमे सेहो।

४

सत्य हवरचन्र-कम्पिी आ हमर कंरी-हेड पभाकरि सुन्दरम

हमर कंरी-हेड केर भारर भेल रहै ओतय, सत्य हवरचन्रक कम्पिी संस्कररक जे विरिर अन्तजालपर रहय तहूस बेिी िीक विरिर। अमेवरका त बाबू अमेवरका छलै, एहेि-एहेि सत्य हवरचन्र-कम्पिी सभ, एक-दूटा ि हेजक हेज रहै, सभ एक-दोसरास बेिी ब़ का सत्य-हवरचन्र कम्पिी। एकटा गप ओइ क्दि सेहो हमरा टोकारा मारि रहय- सेमीिरक कएक टा सत्य-हवरचन्र कम्पिीक क्तिा सेमीिरमे कहि रहथ- "अमेवरकाक बाहर सेहो हम िवतकताक पालिक पयास करै छी मुदा अमेवरकामे त हमरा सभक अिवतकताक पक्ष 'ूिन्य-सक्हषरुता' अछि"। मािे?...

पभाकरि सुन्दरम रहथि हमर िि कंरी हेड। आ हम गोप कुमार। हमरा दुि गोटे संग बहुत रास लोक गेल रहथि ओइ सेमीिरमे। ऐ याताक बाद हमर वजिगी पी.पी.टी. एक्सेल सीट, बार-पाइ चाटष्र पोजेक्ट पपोजलस आगा बढ़ैबला छल। कम्पिीक दूटा टेरीटरी छै, पहल छै ओतऽ जतऽ छै हािडिषविशविदाल से छै "'िन्य-सक्षर्ुता" बला केत्त आ हमर देिमे कम्पिीक जे िखा छै आ जतऽ हम काज कऽ रहल छी से अछ "िक्तकताक पालिक पयास"बला टेरीटरी।

पभाकरि सुन्दरम हमरास क्हल-बक्ल गेल रहथि। हमर काज करबाक गक्त आ काजक गुरिता रहै आक "िइ िि" कहबाक हमर आदक्त। आक कोिि काज एला पर खाइतो काल खेिइ छोव हाथ धो कऽ ओइ काजके कइये कऽ आ तखिि फेर खेिइ पर बैसबाक आदक्त। आक कोिि काज आगा लेल िि छो बाक आदक्त। आक "ह" आ "िि" केर भेदक पूरषजाि आ "ह त ह" आ "िि त िि" बला आदक्त। आक कोिि काज ठीक छै आ कोिि काज िि तइ मे कोिि तरहक कोिि अस्पिता िि हेबाक गुर। आक घरक आ ऑक्फसक कायक्षे फराक-फराक रखबाक हमर आदक्त। आक ऑक्फसक लोकस गॉविप िि करबाक हमर आदक्त..

पभाकरि सुन्दरमके सम्भिति: हमर चाहपर गप-सरका बला गुपस हमर दूरी बेिि पक्सन पृ लक्ह, कारर हमर बॉसक बॉसस ओ हमर ऐ सभटा गुरक चचषकेलक्ह, मुदा अक्त्तम गुरपर बेिि जोर देलक्ह।

आ भारत घुक्ते हम सोझे कंरी हेड पभाकरि सुन्दरमके क्पोटषकरय लगलौं।

पभाकरि सुन्दरम छल ओ िमि जे ऐ कम्पिीके कतऽ स कतऽ लऽ

अलिक। एि.आइ.टी. क्वार अनिन्तपुरम् स बी.टेक आ आइ.आइ.टी. मरासस एम.टेक छल पभाकरि सुन्दरम। भारतक ''इन्फ्रास्ट्रक्चर बूस्ट''मे ओकरा ऐ कम्पनीमे आिल गेल रहै, एकटा पैघ पैकेजपर। ई अमेरिकी कम्पनी भारतके काज क्सखेतै, कोनि काजक गुर-दोख देखल जाइ छै, कोनि स कपर आ फैक्टरीमे दुघटना कम कयल जाइ छै। कोनि समयपर काज कयल जाइ छै।

(अिनिताप्त)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गजेन्र ठाकुर

दूटा बीहवि कथा

१

पि चि

दल्लीमे एकटा पि चिमे गोि रि भाइ पक्सद सि ामीजी बाक्ज रहल रहथ्थ-

“हम बहुत दि कि बाद पि चि कऽ रहल छी, कारर एम्हर हम पटि ा गेल रही। ओतऽ एकटा मोहल्ला छै राजेन्र-ि गर। ओतऽ भारतक पहल राष्रपक्त राजेन्र पसादक पि ंसिक लोकवि वि ाि स करैत छथ्थ। ओतऽ एकटा पि चि मे ई पश उठल छल जे... ...”।

गोि रि भाइके पछाक्त हम पुछलयक्ह- “गोि रि भाइ, हम पटि ा ि गमे २० बखषरहलौ मुदा ई त हमरो ि ँ बुझल छल जे ओतुका राजेन्र-ि गरमे राजेन्र पसादक पि ंसिक लोकवि वि ाि स करैत छथ्थ। आ अहा त धाि कटाबै लेल गाम गेल रही तखि ई पटि ाबिला पि चि पसंग कहया भेलै...!”

“हौ बुझहक, ई सभ ि ँ कहबै त ई सार पंजाबी सभ क्क एकोटा पाइ देत।”

२

गछल गप

“गोरि भाइ, विगत कहै छला जे अहा गछलाहा कोनो बौस्तु नै देलयन्हि, हम घटक रही आब ओ जखनि देखू हमरा हुथैत रहै छथि।” घटक महराज गोरि भाइस पुछलन्हि।

“यौ, ओइ धुड़मिे हम की-की गछलयन्हि आ की-की नै गछलयन्हि से-कक हमरा मोनि अछि। ओ कहैत गेलाह आ हम ह-ह करैत गेलौ।”

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

पणि झा

विभीषण के चमत्कार व्यक्तित्व (मैथिली गल्प)

किछ आमभावना(perception) कि सब के बीच अनेरे पचलित रहई छैक जेना नरेन्द्र मोदी के बात बात पर कोसनाई, राहुल गाधी के बात सुनने, ओकर बात के बात बुझने ओकरा पप्पू कहनाई, अरविंद केजरीवाल के बात बात के एना गम्भीरएनाई जेना कि ओ महानकर पाहून होय। एहने टेड मे से एकटा टेड छैक विभीषण जी के देशरोही आ गद्दार कहनाई। जे कि हमरा लिखे एकदम अनुचित आ अदूरदर्शी सोच छैक। जे कि वैसयावि रामचन्द्र जी के नै मानई छैक हुनका सब के त खैर किछ नै कहि जा सकई अछ मुदा जे कि जानबूझकरमान राजा राम के मानई छैथ, हुनकर अनुयायी आ उपासक छईथ (किछु विशाकायत के संगो) ओ सब ओय विभीषण पर कोना के आंगुर उठाबै छईथ से नै जानि जनका साक्षात भगवान राम आपन मित्र आ बराबरी के दर्जा देने छलाह! आ वास्तविकतो यैह थीक नै त कि मेघनाद आ कुम्भकर्णके बजाय विभीषने के ने पुतला जराबल्थन। किन्तु एहन बात नै छैक। वास्तविकता त ई छैक जे रामेशरम मे विभीषण जी के मंदिरो छैक।

विभीषण जी सम्पूर्णखन देश आ न्याय के पक्ष मे छलाह। एकरा किछ उदाहरण से बुझल जा सकई अछ:

जखन सूपनखा अपन मानजी सँ आिथणआ पम्तशोध ि ि रािण के दरबार मे ओकरा एकटा अनािश्यक युद के ि ि भड़काब' आयि छीिह आ अपन डाह के शान कर' ि ि हुनका मोन मे सीता के ि ि ािसा आ मोह भम्र रहि छीिह तखन मिभीषण रािण के सिाह दैने छिाह जे मामािा के म्बना ठीक-ठीक बुझने एकटा पबि योदा से बैर ठानब राज्य के महत मे नै थीक, मकए त रामजी के िंका पर चढाई के कोनो इरादा नै छि।

जखन रािण सीताजी के हम्र के ि आनिक तखनो मिभीषण जी एकटा सच्चा महतैषी मंरी के र प मे रािण के स्री मयादा के पाठ पढबैत चेतेिमखन जे परदारा हरण अधमण थीक, पाप थीक। ई कुि आ देश दुनू के किंमकत करे बिा कृत्य अछ। तै रािण के सीताजी के ससममान िापिस राम जी िग पहुंचा देबा के चाम्हए। मुदा अपन सिाथणआ सता आ शमक्त के अहंकार मे डूबि रािण के मम्स मे कहा ई सब बात ढुकिय!

जखन रामजी के सेना िंका पहुँच गेि छि तखनो मिभीषण देशाम्हत मे रािण के बुझेिमखन जे राजा के मानजी महत आ इच्छा के पूम्तण के ि ि देश के अनािश्यक युद मे झोकनाई आ ओई कारण होमय बिा नुकसान के खतरा मे ठेिनाई सिथा अनुम्चत थीक। तै, देश के म्बनमतिब के नुकसान से बचाब' ि ि आ स्री मयादा के रकाथण रामजी से संम्ध क मिय'। मुदा ऐ पर रािण हुनका मतरस्कृत क के देशम्नकािा द देिक।

राजा आ पईघ भाय से मतरस्कृत भेिा आ देशम्नकािा के सजा पाबय के बादो मिभीषण जी अपन देश के मिषय मे म्चंमतत रहिाह

आ अपन म्हतैषी के सा िह पर रामजी से संम्ध कर' ि ि पहुँच जाय छईथ जे हे मयादापुरषोतम अहा के बैर त रा णि से थीक ने, तै कृपा क के ओकरे से युद कै ि जाय आ िंका ि सी के अना श्यक नुकसान जुम्न करबई। म भीषण जी के ि ि देश से मत ि ब देश के भूम्म, देश के ि ोक, देश के संसाधन छ ि नै की राजा के म्नजी स ि थिण आ म्नजी सोच। रा णि के मृत्यु के बाद ओ रामजी के संम्ध अनुसार िंका के राजा बनय छईथ आ िं बा समय तक ओत' सुशासन के संग राज के ि ह।

दोसर म श युद के समय भारत के म म्टश राज के म्ख ि ाफ नेताजी सुभाष चंर बोस सेहो एम्हना आजाद म्हन्द फौज ठाढ केने छ ि ह आ ि ड़ ि छ ि ह जै से भारत देश आ भारत'क ि ोक के अ `ग्ज़ी राज से मुम्क्त भेटय आ कुनु बेहतर ि ोकताम्त्रक व्य स्था एत बनी सकय।

ऐ से ई पमाम्णत होय छैक जे म भीषण जी एकटा देशभक्त आ मयादाम्प्रय व्यम्क्त छ ि ह। आ राजा के आ ि ोचना से ि क राजा के पम्त म रोह सब के पाछू हुनकर मंशा देशम्हत आ मयादा से जुड ि छ ि । हा मुदा ई त छैहे ने जे क ि ंक से म्कयौ नै बच ि अम्छ जखन मयादापुरषोतम स्यिं नै बम्च सक ि ह त हुनकर म्र कत' से बचताह, स ि ईत म भीषण जी पर देशरोह आ कु ि रोह के क ि ंक ि गाय ि गे ि । तै भेड़चा ि मे या कोनो पोपगेडा के तहत केकरो गदार या देशरोही कहबा से पम्हने दू म्मनट रम्क के अ श्य सोचबाक चाम्हए जे जेकरा पर आरोप ि गा रह ि छी ओकर कृत्य की थीक आ ओकरा पाछा मंशा की थीक।

देशरोह के आरोप केहन खोखि थीक से देखि के बाद आब कुिरोह पर चचा क ि। ममि त रपे ओ अपन कुि के िक (भाई, भतीजा) सब के नाश के एकटा पईघ कारक बनि ह। मुदा मकए? मकएमक नारी तजण आ स्री मयादा के मिरद आचरण कर बि अपन समाग सब के सेहो मिरोध करबाक साहस हुनका मे छि ईन्ह। सामामजक आ मानिय मयादा के मिरद आचरण करई बि अपन समाग के पक्ष ओ पकपात नै करे छथीन अमपतु पमहने ओ हुनका सब के बुझेबाक पय् करे छईथ, हुनका सन्मागण पर िब' के पय् करे छईथ। आ नै मानि पर अपन समाग के भी पाप के समुमचत सजा मदयाबई छथीन। आई हम देखई छी जे अक्सर देश मे नारी के मिरद होय बि अपराध मे अपराधी के घर'क िक, मरस्तेदार, पाटी के िक सब ओकर अपराध के जामनतो ओकरा संगे ठाढ भ क ओकरा बचाबई छैक। तिमान मे देश आ समाज मे नारी के पम्त बढइत अपराध के ई एकटा पमुख कारण थीक। सेगर, मचन्मयनन्द, आशाराम, रामरमहम, आमद एहेन सैकड़ो उदाहरण थीक। सिईत आई समाज मे मिभीषण सन उदाहरण के आिश्यकता थीक मक यमद समाज मे एहेन अपराध आ कुकृत्य आहाके अपन पमरिर के िक भी करय छईथ त हुनको मिरद अहा ठाढ भ सम्क से साहस अहा मे होय। आब अम्हं बताऊ जे एहन साहस के काज सराहनीय थीक मक मंदनीय!

ओना त पूिनुमान यैह छि जे युद मे राम जी के मिजय हेतई, एना मे हुनका से संमध क के एक तरहे देखि जाय त मिभीषण जी महमिपूणि त्तस्य के कुि के नाश हेबा से सेहो बचा नेने छि ह। मकछ िक िकण िगाब' के कम मे कहय छईथ जे मकयौ मिभीषण नामो नै राखय छै। से हे आदरणीय िक सब से त िक सुगीि आ

जामति सेहो नाम नै राखय छैक। नाम त एकटा चिन छैक जे जुग अनुसार पचानि मे रहे छय। एक समय मे सबसे पचमति रामे नाम आब कतेक िक अपन बािक के राखय य?

अंमाम बात मुहािरा पर आबाय छी। ‘‘घर’क भेदी ि‍का डाहई’’ मुहािरा के अथणभेि मक यम्द अंदरे के आदमी भेदी मनकमि जाय त ि‍का सन शमनशाि‍ी राज सेहो ढमह जाय छैक। तै शासक के अंदर के िक मे एतेक असंतोष नै पनप’ देबाके चामहए जे ओ शरु के अहा’क भेद बता दै।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

संतोष कुमार राय 'बटोही'

'मंगरौना' (धारावाहिक उपन्यास)- आगा (६आ७)

<u>६</u>

कलियुग मे सभ कियो अपन नीक देखैत छथिन्ह। नीक लोक के बड सताउल जाएत छै। ककनिया, जाति, आओर ज़मीन-जमीन केर बटवारा सभ सS पैघ अधकपार कयैए। संतोख के जिनगी मे बड दु:ख छलैन्ह। व्यासजी के कोनियाही बेमारी छलैन्ह। भाई सभ अधपागल, दोसरक गप्प सुनियार भौजै छलैन्ह। जखन संतोख इंटर मे पढैत छलाह त हुनकर मैझली भौजाई विचारलीह जे एकरा नहि पढ़S देबै। हमर स्वामी के कमेलाहा पर इ डाकटर भS जेताह, मूरख के लाठी बीचे कपार। फेर की भेलै ? ओ खियालदह के गाड़ी पकड़ि कS कलकता पहुच गेलीह। मंगरौनी के मरद अपन कनिया के गुलाम।

संतोख कुनहि धरानी आई एससी मे दरिभंगा मे सी एम साइंस कॉलेज मे नामाकन लेलाह आओर पढ़S लगलाह। आई एससी केलाह। घरक गरीबी आओर आगा पढ़बाक कोनहु चारा नहि छलैन्ह। बाबूजी फुसियौह के व्यासजी! कमसीन व्यासजी ! हुनकर माए आओर बहिन काज कS हुनका पढ़ौलकैन्ह। माए के दोसरक घर मे कुटौन-पिसौन करS पड़ लैन्ह।

बहि के उमर बेसी भ' रहल छलैन्ह। हुिका स छोट चचेरी बहि केर ब्याह भs गेलैन्ह। व्यास जी बेमार भेलाक बाद 2001 मे गुजैर गेलाह। धमषिक काज छयैए, परञ्च कमषस मुह िह मो क चाही। ओ पार उतैर गेलाह। अपि लीला समाप्त केलाह। 2002 मे संतोर केर ब़ भाई अपि बेटी केर ब्याह कs लेलैत। बहि हुिकर बेटी स पैघ छलैन्ह। कलयुग मे सभ आचार-विचार पर जेि डोम मूक्त देि छै ! घोर कलयुग !!

पुतक की कमषहोएत छै, सेहो लोक िसैर रहल छथन्ह। एकर सबूत 'िदाशम' अछ। व्यास जी के गाव क धोती तक हुिकर ब़ ल का छन लेलकैन्ह। व्यास जी धोती, गमछा आद उतैर कs ब़ ल का के सोझा मे फेक देलकीह। चाक टा दिरथ के एको टा िह काम के। भूख आओर पै के अभाि मे दाई-दार िह भेलैन्ह। आओर ओ बेमार भs गेलाह। माता के की मतलब होएत छै से संतोर के जाया मे िर खललैन्ह। पै स बेसी जररत विचार के अखि होएत छै। विचार स जग जीत सकैत छी।

मंगरौि मे पैर खीचािहर बेसी अछ। राजिक्त पुरख बेसी छथ। गाम बौरा गेल छै। जेकरा जे मोि से करैत छथ। 'विािचार' िद गाम स विपता भs गेल छै। सभ कयो िदाि भs गेल छथ। गप्प छो ि मे गोि झा के मातामह भs गेलाह अछ। सभ कयो। दार के ठेका गाम मे चल रहल अछ। समाज, पििर, व्यक्त सभ कयो दािहीि भs गेलाह छथ। मुहा-कटुर, गुहा-वाजजर आम गप्प भs गेल छै। भाई-बहिक िरश्ता खत्म भs गेल छै। समाजक पषा दाऊ पर लागल छह, परञ्च अइ गप्प स िकको कछु

मतलब नहि छन्हि। सभ कहैत छथि - '' अपन माथा साहौर-साहौर कर ।"

गाम निहर भs सकैत अछि ? परञ्च संस्कार के निहरी नहि होमs देल जाउ। मनुखि के मनुखि बुझल जाउ। कचटंगबाजी समाज के कलहीन कs सकैत अछि। बेसी स बेसी लोक करजान भs सकैत अछि। सत्य कुंठित भs सकैत छै, परञ्च सत्य के जीत हेबे करतै - 'सत्यमेव जयते' । सामाजिक समरसता के कृत्तमता खतम कs रहल छै।

गाम मे फुसियौह के राजनीति भs रहल छै। पद के की गरिमा होएत छै, जिम्मेदारी की होयत छै से बुझिविहार कियो नहि छथि। बस, हुनिका अपन पेट भरनिक चाही आओर सभ किछु जाउ भा मे। गाम मे सभ किछु मे राजनीति केविहार सामाजिक मेलजोल के खतम कs रहल अछि। बव दुखक गप्प छियैय जे गाम मरि रहल छै। कियो देखविहार नहि छै।

संतोर को गरीबी मे जन्म भेलन्हि। हुनिकर बाबू जी गुमान मे छलाथि जे चारिटा पुत अछि। परञ्च विदान रहितौह ओ अपन संतान के नीक संस्कार देन मे असफल रहलाह। तकरे परिनाम भेलन्हि जे चारि टा बेटा रहैतहु हुनिकर अकाल मृत्यु भेलन्हि।

हुनिकर तेसर बेटा दसमी पास कsकेs कौलकाता मे काज करs रगलाहा। जान के अभाव मे एन पारिवारीक विखण्डन के कारने ओ पथ स भटैक गेलाह आओर 'डोली मोडल' स ब्याह केलाथि। काली

मंदिर मे मंगरौनि के कछु बागा ै िला लोकनि मिल कs कनि के ब्याह करि देलकन्हि। ब्याहक कयेकै सालक बादो हुनिका मुसकयो निह वारलन्हि। 'डोली मोडल' के ओ छोव देलखिन्ह।

न्हिकर देखादेखी हुनिकर भतीजा िीतीि आओर अवमरेक केलाथि । दुन्र भैय्यारी बनि दहेज के 'लि मैरीज' केलाह। देहज-पथा के खतम कके मिसाल देलाथि। हुनिकर माए-बाप के मोनि लगले रहि गेलन्हि जे बेटा को ब्याह धूमधाम स करताह। बकरी बकरी होएत छै ; सूअर सूअर । से समाज के बुझs पृ तन्हि। वजनिगी अनिमोल होएत छै। बेपटरी पर रेलगा ी नहि चलि सकैत छै।

गामक छौ ा िहर जाकs 'इंटरकास्ट मैरीज' कs रहल छथि। निदक रिषमेविस्था आओर जानि-पथा के तोव रहल छथि। आब कुनिहु रोक-टोक निह छै। वजनिका जे मोनि होएत अछि से कर । गाव खोलि कs िचू ; निह देखल जेतन्हि त वजनिका िरम हेतैन्हि , ओ आवख बन कs लेताह। घोर कलियुग बीत रहल अछि ! मंगरौनि बताह भs रहल अछि। भाग खा कs ; गाजा पीबि कs आओर दार पीबि कs लोक बौरा रहल अछि। युनिजनि भोला बाबा बनि रहल छथिन्ह। आक-धतूर खेि आम गप्प भs गेल छै।

गामक िरम बनिका रहल अछि - "न्झुनि-न्झुनि बनि चदरिया ।" परेम के खुलेआम पदनि भs रहल छै। देह के ुिमाईि खुलेआम भs रहल छै। इतिहास मे ीक छनि दर षहुइए इ कोनिि करकs चाही। युनि धरम के पति आगह भ रहल छथि। ओ करम स दुर बनिि

जा रहल छथि। जे कर्तव्य स विमुख हेताह ओ कपाट जेताह। घर टा कि पक्षया ा किया रहल अछि।

७

'घरक भेदिया ंका डाह' इ कहबी ठीके सही छै। दुनियाँ नीक नहि छै। बहुत ठकनाहर ाकिम छथि। पर च किछु नीको ाकिम छथि। मंगरौना गाम मे भमानमान के कोनहुँ इतिहास मे नाम नहि छै। शि ृ कि बेचनाहार सभ के अइ गप्प पर ध्यान दोकि छ ैह। सभ केयो अपन पूर्वजक के खोजि सकैत छथि। तपण केनिहार सभ सँ विशेष मा दिन हेबाक चाही जे कम-सँ- कम सात पुश्त धरि नाम याद रहक चाही।

गाम मे बूढ-ृ दा के देखनिहार बहुत कम रह ैे। अपन बेटा-पुतौह बूढ माए-बाप के नहि देखि रह छै। आइ दुगा स्थान मे धीर राम भेटाह।

हम पूछलि यन्हि, " की समाचार अछि ?"
ओ कह ाह, " की कहू बउा , केयो नहि देखनिहार अछि। देखैत छियैय - एकटा आँखि खराब भ गे अछि। तीनो छौड़ा मे सँ केयो नहि देखा दैत अछि। बूढाड़ी मे मार-पइर के मरि जायब। इएहे रहि गे आब जिनगी मे।

मुइा पर ाक कंटाहा आओर पुरोहित के कतेक दान करैत अछि। पर च जि ा पर दुखे-दुख। केयो देखनाहर नहि। समाज आओर परिवार आब मरि रह अछि। संवेदना आब हरा गे छै। सभ केयो

हबड़-हबड़ मे िागि छम्थि। कम्थि के हबड़-हबड़ छै जे अनबुझ अम्छि। माए-बाप तड़म्पा रहि छम्न्ह आओर अपने एश-मौज मे िागि रहम्त छम्थि। इएह कमियुग म्छयैय। म्जअि मे गुहा भता मरि मे दूदा भता।

रामपरी कम्हियो सासु के सेिा नम्हि केिाह, पर च मुइिा पर हुनकर सारा पर जुड़ी-शीति मे जि चढाबैत छम्थि। म्जन्दा मे सासु के झोटा उखैर ििकै। मंगरौना ममर रहि अम्छि; धधम्क रहि छै मंगरौना । मुइिा पर जबार न्यौता देिाह सँ म्कछु नम्हि होएत। माए -बाप सँ बम्ढ कs म्कछु नम्हि होएत छै।।

गाम गाम नम्हि रम्हि गेिै। गाम शहर भs रहि छै। शहर जका आचार-मिचार छौर भs रहि छै। इज्जत के गुँह-गोबर भs रहि छै। आँम्ख कन्हा केने रहs पड़ैत छै। डीजे मे 'ििि पॉप' िाि गीत बजिा सँ सभ म्कयो देखार भs जाएत छम्थि। होएत छम्न्ह धोती- कुरता फाम्ड़ कs नाची। िििि के भमर देह गुदगुदी होएत छै। होएत छै कखन बर आ के गाड़ी मे सँ कूम्द कs कुरता फाम्ड़ म्दयै। रौशन तs डीजे गाड़ी पर चम्ढ कs गरदा उड़ा देिकै। इ भेिै नाच ! िबड़ा नाच ! हाथ के तेना घुमबै छै जे ओ म्बरजू महराज के फेि कs देतै। इ की भेिै - मामर फँम्स गेिै। गामर-गराबैि भs रहि छै।

" तोरा माय .... ।"
" तोरे बम्हन.... ।"

ाठी मनकै गेि - मार त मार सार के...।
प ाम्स्टक के कुसी एक- दोसर के देह पर तोम्ड़ रहि छम्थ नचमनाया सब। ब्याह मे इ सभ आइ-कामि हेबे टा करैत छै। बरयाम्तया सभ दार पीब कS शेर भS जाएत छम्थ। दोसर गाम जाकS म्हम्रंग - मामम्रंग केि क म्कक दे घुस्सा...दे घुस्सा... दे ाठी...दे ाठी ।चार नाि म्चत ! शेर बकरी भS क मामनायैत छम्थ।
ाहि रे ! डीजे ीर !

मामम्थि ा संस्कृम्त मे छेद भS गेि अम्छ। पारंपम्रक ब्याह पदम्त समाप्त भ रहि अम्छ।मिम्ध-मिधान मे कटौती भS रहि छै।

(अि ाति षो)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

केि भारदाज- (आइ-कार्वि कम्पाला, युगाण्डामे)

कछु बीहर्वि कथा, कछु लघुकथा, एकटा दीर्घकथा आ एकटा उपन्यास

ओ बच्चा (बीहर्वि कथा)

कक्मटमेट (बीहर्वि कथा)

मि:गंध (बीहर्वि कथा)

सोच (बीहर्वि कथा)

गलत वरिष (बीहर्वि कथा)

खाली हाथ (बीहर्वि कथा)

िबका धर्वक (बीहर्वि कथा)

कस्मत (बीहर्वि कथा)

पेम विाह-िब पयोग (बीहर्वि कथा)

दही िली बुढ़ी (बीहर्वि कथा)

भुत-बंगला (बीहर्वि कथा)

म् यस्थ (बीहर्वि कथा)

गामक माइट िसीब िवि (बीहर्वि कथा)

कन्यादा ि (लघुकथा)

पछता ा (लघुकथा)

उपराग (लघुकथा)

अए ा (लघुकथा)

हत्यारा (लघुकथा)

हुब्बा (लघुकथा)

इच्छा (लघुकथा)

क्ला ि एडक्ला ि (लघुकथा)

अप ि लोक (लघुकथा)

बर्ख ी ि (लघुकथा)

टीस (लघुकथा)

व शि ासघात (लघुकथा)

पापक फल (लघुकथा)

हाथक लकीर (लघुकथा)

छका-पुरार (लघुकथा)

सरपाइज (लघुकथा)

अफेयर (लघुकथा)

केतकीक व्यथा- की कहू कथा (लघुकथा)

उठऊआ बियाह (लघुकथा)

ब़ का घरक बहुरिया (लघुकथा)

दरबार (लघुकथा)

समयक चक (लघुकथा)

बदलल बेबहार (लघुकथा)

अिघोल (लघुकथा)

देहक िह (लघुकथा)

लछमी बहुरिया (लघुकथा)

अजादी (लघुकथा)

गोलकी र`मक चश्मा (लघुकथा)

अंत (लघुकथा)

फैसला (लघुकथा)

आत्मन्लावि (लघुकथा)

खेलौिा (लघुकथा)

कल्पािस (लघुकथा)

बच्च्िाक बचि (लघुकथा)

रखबार (लघुकथा)

चंसगर (लघुकथा)

दोरी के? (लघुकथा)

बतक्खया गाछी- (लघुकथा)

डालडा पसाद (लघुकथा)

की सोचल- की लीखल- दीर्घकथा (पहिल आ दोसर भाग), (अंतिम भाग)

पैबंद- उपन्यास (पहिल स सातम भाग), (अंतिम भाग १-२)

ओ बच्चा (बीहनि कथा)

कनछु लोक जीनि मे एहि होइत छइ जे कनियो काल मे अप्पनि छाप छोव जाइत छइ। उनिकासऽ आहाकऽ कम्मफटषलेनि कम्मे काल मेभऽ जाइत अच्छ।एनि बुझाइत जे कक्हयाकऽ पुरानि पक्रव्यत छी।कतउ कनछु छइ जे खीचैत छइ एक दोसर के।विस्मृत्त मे ओ चेहरा अबइत रहइ छइ।

ओही मेसऽ एककऽ विरिय मे कहइ छी। बच्चा मे संबंधी कत गेल रही ओत ओइ बच्चासऽ भेट भेल। ओ उमर मे हमरासऽ पैघ रक्हतो, हमरा पैघ जेका आदर क्दअय। हमरा देखते ओ बच्चा खुनिभऽ जाय। अप्पनि सब संगीसऽ हमरा भेट कराबय।तक्हया ओतेक धनिक गरीब त निनि बुक्झयइ, मुदा ई बुक्झ गेल रक्हयइ की ओ पक्रिरकऽ आव्यथक हालात ठीक निनि छइ। हम जखइनि ओकरा संग ओकर घर जाइ त ओकर पुरा पक्रिर खुब मानि करय। अतेक मानि, अप्पनि गाम मे निनि भेटय ताक्ह लेल बेनियेनिक लागय। ओ बच्चा हमर संबंधी कतकऽ हाट-बाजार ,टहल- क्टकोरा सेहोकऽ क्दअय।हाट जायकऽ काल मे हमहु ओकरा संगे जाइ त ओ बड खुनिभऽ जाय।जेतबा स्मृत्त अच्छ, ओ कनछु सामानिक खरीद मे ग़ ब़ ी करय, मुदा निनि हमरा खराब लागय आ निनि हम अप्पनि संबंधीकऽ कनछु कक्हयइ। कारर ई छल जे ओ बच्चा ओइ पाइसऽ अप्पनि घर खाक्तर कनछु सामानि खरीदइ छलइ। दोकानिदार आ ओकरा मे इनिरा मे गप्पभऽ जाइ। हमरा पाहुनि बच्चा कक्ह कनछु चाकलेटदऽ क्दअय। हमरा जन्तानि, हमर संबंधीकऽ सेहो ई गडबडी बुझल छेलइनि, लेक्कनि कनयो कनछु निनि कहइ।गाम घर मे बाबू-भइयाकऽ बच्चा ओतेक अनिनिक्सत निनि क्क दोकानिसऽ

सामाि आइि दय। िकर चाकर भेटाइ कमभऽ गेल छलइ। ओही व्स्थक्त मे ईएह बच्चा पर सबके आस। ई त एक गुर भेल। दोसर जे ओ पढ मे सबस तेज सेहो छल। लेकक्ि जे बच्चा दोकािसऽ सामाि आिऽ काल अतेक सज्जि, उएह बच्चा संगी संग खेल मे सबसऽ दबंग। खेल मे ओकरे चलती छलइ- किी उम सेहो बेिी भेिइ एक कारर। कहबाक जे कयेक टा ओकर र प आ हम ओकर संग आिन्दसऽ क्तबइ छलौ।

समय अप्पि रफ्तारसऽ चइल रहल छल। कयेक बरख कऽ बाद जखइि फेर हम ओइ गाम गेलौ आ ओकर पुछारी कयलौ त पता चलल क्क ओ बच्चाकऽ क्दलकऽ बीमारी छलइ आ ओकर मृत्यु तीि बरख पक्हिहेभऽ गेलइ। हम सुइिकऽ स्तब्धभऽ गेलौ। हम संबंधीसऽ पुछलइि क्क ईलाज िि कराओल गेलइ। जिाब भेटल- खाय पर आफत छलइि, ईलाज कतऽ सऽ करयक्ताि।हम १/२ क्दिक बादय गाम िपस आक्ब गेलौ। कतऽ हम सोचई छेलौ क्क ओ बच्चा अप्पि माय बापकऽ कि दूर करत, त कत ओ बच्चा सबकऽ छोि कर चइल गेल।गरीबक क्जम्मेदार बच्चा।

भगिािसऽ विीती जे ज्यो जन्म दइ छक्थि त जीिि सेहो क्दयउि।

कम्मटमेट (बीहनि कथा)

कम्मटमेट शब्दकऽ युवा सब सलमान खानकिऽ डायलॉगसऽ जोड़ि कऽ गाहे-बगाहे उपयोग करइत छथि। आइ हम एक टा मैथिल मध्यवर्गीरीकऽ कम्मटमेटकऽ बारे मे लिख रहल छी। हाल तक मिथिला मे संयुक्त परिवार बहुल मे देखल जाइत छल। संयुक्त परिवारकऽ अपन किछु सीमा , अनुशासन आ गरिमा होइत छइ जे कयेक बेर विकास विरोधीभऽ जाइत छल।

कथाकऽ किरदारकऽ काल्पनिक नाम हम राम बाबू रखइ छी।आजादी पूर्वकिऽ समय छल।

राम बाबू सुभ्यस्त गृहस्थ संयुक्त परिवारकऽ छलाह। घरक सामुहिक खर्चासऽ कलकत्ता मे पढलाह उपरात सरकारी सेवा मे कार्यरत छलाह। हुनकि सहोदर छोट भाइ आ पितियौत भाइ दुनु एक रंगाहे विद्यार्थी छलाह । एके संगे मैट्रिक पास केलाह। आब समस्या ठार भेलइ कि आगु के, की, कोना।फैसला भेलइ कि चुंकि राम बाबूकऽ बाहर पठाकऽ घरक सामुहिक आमदनीसऽ पढाओल गेल छइनि, ताहि लेल अइ बेर आगुकऽ पढ़ाइकऽ मौका उनकिर पितियौत भाइकऽ भेटतइनि। आ पढ़ाइकऽ खर्च राम बाबूकऽ देबाक छइनि। राम बाबूकऽ विचार छलइनि जे दुनु भाइकऽ आगु पढाओल जाय। मुदा उनकिर मत पर सहमति नहि भेलइनि। राम बाबूकऽ सहोदर अनुजकऽ अंग्रेज सरकार मे नौकरी जोइन कर परलइनि। ओ चाकरियोकऽ ग्रेजुएट नहि करा सकला अपन छोट

भाइ के। मुदा ताबे समय अपने आपसऽ कम्प्रोमाइज कयलाह कि हम अपना भातिजकऽ जरूर ग्रेजुएट करायब। घरक फैसलाकऽ अनुसार क्रमयौत भाइकऽ ग्रेजुएट करेलाह, आ ओ भाइ सेहो सम्मानित पद प्राप्त कयलाह।

राम बाबूकऽ अइ बीच अपन परिवार बढलइन। तखन ओ भातिज की भतीजीकऽ सेहो पढेलाह आ ग्रेजुएट बनेलाह। ई भेलइ कम्प्रोमाइज। हालाकि राम बाबूकऽ जीवन काल बेसी दिन रहलइन, मुदा परिवार खातिर हुनक त्याग आ योगदान अनमोल छइन।

आब जे हमर कहबाक आशय अछि जे अतेक त्याग की हमरा सब मे अछि?

हम अपना कमाइसऽ इच्छाकऽ विरुद्ध क्रमयौत भाइकऽ पढबइकऽ खर्च उठा सकइ छी?

परिवारकऽ अनुशासितऽ एना पालनऽ सकइ छी?

कम्प्रोमाइजकऽ पुरा करबाक इच्छा कतेक अछि?

संयुक्त परिवार एना चलइ छलइ। त्याग पर परिवारकऽ गरीमा टीकल रहइ छलइ।

आइ त कमउआ कनिको सुनिताह अपना खर्चकऽ बारे मे।ओइ मशीनीकऽ हमर मिनि। हमर संबंधी सब बुझ्झ गेल हेताह।

मि :गंध (बीहवि कथा)

कयेक लोक युिि स्थिा मे बहुते सामाविजक रहइ छवि, मुदा बाद मे एकाकीभऽ जाइत छवि। ओही मेसऽ एक छवि- राम बाबू। आब विल्ली मे रहइ छवि। बहुत कम अबरजात गामघर स। भगििती सब कछु देलविख गामो मे, मुदा कयो देख बाला ि वि। भम्म प़ इ छइि, घर - दुआर। जतऽ गाम- समाज के,के कहय, दुर दुरकऽ संबंधी सब परल रहइ छल, ओत कयो साझ देबबाला ि वि।

हमर ओ संबंधी ि वि, अि ंबंधी छलाह। हुि कि चला- चली हम देखि छवियि।ओ व्यवित एि असगरआ कवअए भऽ गेलाह। हमर विजासा बढइत गेल। एकसऽ एक विखस्सा हुि कि र खवबर स ि भािकिऽ विल्लीकऽ मैविथल समाज मे फैलल अवछ। कयो कहइ छइ जे हम गेलौ भेट करऽ त हमरा रामबाबू कहलाह- ई विल्ली छइ । अतऽ एक साझ लोक खुआ त दइ छइ, मुदा रहअकऽ ि वि दइ छइ। हम सुविते घुरी गेलौ। बरका छवि त अपि ि के। हमरो सारकऽ विल्ली मे कोठा-सोफा छइ। हम ओत चइल गेलौ। अवहि ि दस मूंह- दस गप्प।

जखइि मूल कारर पता लागल, त सोचऽ पर वि िि भऽ गेलौ कीकऽ विजम्मेदार।

रामबाबू ि ि विभाग मे पैघ अवधकारी छलाह। सब विअयद-बाद, गौआ, संबंधी,ईस्ट वमत, जे आगह केलकइि , छोट वछि सरकारी ि ौकरी विदयेलवकि। ईहो कहू, कवि को कयो दरबारी केलक, कछु ि कछु भेटलइ। तावि लेल बुढ़ी दाई माई सब रामबाबूकऽ खुब आि ीर

दइ छलखिन आ कियो बेटा, कियो जमाय, कियो नाती, पोता, भावा किऽ नौकरी खाकऽ रहल छथि। रामबाबू अपना संग एक टा ललका डायरी रखइ छलाह। कहि किर नाम डायरी मे लिखा गेल- बुझु नौकरीभऽ गेल। उनकर पद त बढइत गेलइन लेकिन बाद मे सरकारी तंत्र मे आयल परिवर्तन आ नीतिगत सुधार नौकरी लगबऽ मे असमर्थऽ गेलाह। बड जन- पहचान छलइन। ओतबे खाई जे मोछ मे निन लागे- ई कहावत पर चल बाला। जई हिर गेलाह, सामाजिक कार्यमे भरपूर योगदान कयलाह।

रिटायरमेंटकऽ एक साल पहिने किछु वियारी यूनियन उनकर खिलाफ ब़ का आन्दोलन केलकइन। ओइ मे किछु लोक माईकलऽ क उनकर घर पर गाड़ - गुफ्ता सेहो देलकइन। अकर नितृत्व उनके दारा लगाओल नौकरी हुनके दोसर टोलकऽ गौआ करय छल। ओकरा नौकरी ओ बहूत कठिनाईसऽ दियौने छलाह- ओकर मसोमात दाईकऽ आगह पर। ई सबकऽ पाछु किछु लाबी काज करय छल- आ मोहरा बिका कामरेड हुनके लगायल लोक छल। ई घटना उनका अन्दरसऽ तोड़ देलकइन। फेर उनका मन्दिर गंध लागऽ लगलइन। ओ कह लगलखिन की जेकरा आहा किनिन निक मानि करबइ, ओ कमसऽ कम गाड़ नहि पढत।

आब समाज ई सामने अइछ कि एकर जिम्मेदार के। अतेक सामाजिक लोक एहन एकाकी किअए भेल-जिम्मेदार के।

जीवन मे ज्यो उपकृत कवियो छी, त उनकर खिलाफ नहि जाऊ। समाज मे उपकारी समाजिकऽ कम्मे लोक बचल छथि। ओहो विमुखभऽ जयताह त सब सामाजिक व्यवस्था ग़ ब़ ा जाइत।

सोच- (बीहनि कथा)

पहिने राज, दरबार आ जमीदार सबकऽ कृपासऽ आम लोक उपकृत होइत छल। जेना स्कूल, कालेज, धर्मशाला, मंदिर,खेलक मैदान, मेला, पढ़ निहार बच्चाकऽ वजीफा, पूजा, रामलीला, ब्रामा कलाकारकऽ कार्यक्रम सब अछि। लेकिन इ किछ कृपासऽ बेसी विकृतिकऽ व्यवस्था, गाम-घर मे फैलल अछि। सच्चाई पता नहि। आब ओइ स्थान पर अधिकारी आ किछु नेता/नेती छथि। नेता सबहक अपन अतेक टा पेट जे ओ भरतइन तखइन ने समाजकऽ सोचताह। बचलाह अधिकारी सब।एक टाकऽ सोचऽ कऽ दूनि कोर आहा सबकऽ साझाकऽ रहल छी। किछु गोटेकऽ बुझलो होइत।हमर किरदार रामबाबू (छद्म नाम) छथि।

राम बाबू भारत सरकार मे नीरषपद पर छलाह। एक बेर कोनो काज मे गाम गेलाह। दु दिनभिऽ गेलइन, कियो गंउआ भेट करऽ नहि अयलइन।कान ठार भेलइन। हमेशा लोकसऽ घेरल रहअ वाला लोक।पता लगलइन जे दिल्ली मे उनकर घर पर गेलाह पर उचित व्यहिहार हुनका संग नहि कयल गेल छलइन। जाइकिऽ दुख भेलइन। ओ अपन सबहक कतऽ गेलाह आ दिल्ली आबऽ कऽ नीति देलखिन। आब की छल। फिर भेल लोकक रेला। मिथिला मे बेरोजगारी सब दिनसिऽ महामारी। कियैक त काज आ खेलकऽ सेहो छोटका बरका मे बाटल। दिल्ली मे उएह काज करताह मुदा दरभंगा मे कोना।

रामबाबू एकटा कर्मचारीकऽ लगा देने छलखिन- मैथिल सबहक सत्कार मे। अपनहु खोज-खबर रखइ छलखिन। नौकरीकऽ पत्थाशी सबकऽ पहिले दिन स्मान निर्देश मे कह लेल जाइत

छलइ। ठीक छइ ौकरी ीक- बेजाय, आगु- पाछु भेटत, मुदा ताबइत आहाकऽ शम करऽ परत। बहुत मैथिल शमकऽ ामे पर परा जाइत छलाह। जे बचई छलाह, हुिका सबकऽ झा, खुरपी, कोदाइ, झरिक थमा देल जाइ छलइ। पकसर ब़ की टा छलइ आ आगंतुक मैथिल ओहोसऽ बेि। खुब तरकारी उपजई, बकाइ आ सरकारी एकाउंट मे जमा होइ। जे काजक ामि लइते भाइग जाइ छलाह ओ खुब ि तेल लगाकऽ खािस करय छलाह। जे सब टीकलाह, सबके ौकरी भेटलइ। एक आर खास गुर छलइ जे छुटीकऽ कि ओ सब आगंतुकक संगक भोज करय छलाह।

अइ काज करेबाक पाछु जे सोच छइ ओ परम्य छइ। हुिक कहब छलइ जे ई सब बइसकऽ खाली खेताह से राष्ट्रीय क्षत्त छइ। ककछु ओ उत्पादकता होबाक चाही। कहुं सब खाली बइसकऽ समय िव बताऊ। ई आहाक िव राष्ट्रक क्षत्त अइ।

हमरा तरफसऽ हुिक सोचकऽ सैल्यूट।

गलत विरोध (बीहनि कथा)

रामबाबू दिल्ली मे सरकारी अस्पताल मे डाक्टर छलाह। ओतेक सामाजिक त नहि मुदा कियो पहुंच जाइ छलइन्हि त किछु मददकऽ दइत छलखिन्ह। सबसं पैघ ई विशेषता छलइन्हि जे काज करथिन्ह नि की नहि, बोली मधुर छलइन्हि। मोहि जशा जेका फीस देलोह पर उचित कथा नहि कहइ छलखिन्ह। अपन समाज मे बोली बानीकऽ लकऽ नीक इज्जत छलइन्हि। रामबाबूकऽ एक टा संतान छलइन्हि। नाम छइन्हि - विजया। आब त धीयापुता कम्मे होइ छइ आ जे छइ से महा दुलार। एकलौताकऽ त बाते अलग। ज्यो माय - बाप पाइ बाला, त ओ आबेनि अलगेसऽ देखाई छइ।

एक दिन रामबाबू लग गामक बगलक गामक एक गोटे देखबऽ एलखिन्ह। गप्पकऽ कम मे चर्चा भेलइ की उनके गामक रमनि नामक बच्चाकऽ दिल्ली मे MAMC मे नाम लिखेलइ अछि। रमनिके पिताकऽ अवस्था- पात बेनी नहि छइन्हि। आरो बच्चा सब पईढ लिख रहल छइन्हि।ओ चाहइ छथि की कियो रमनिके पढाइक भार गछि लियाय आ बियाहक खर्चकऽ दिअयह त ओ कथाकऽ लेताह। रामबाबू जखइन्हि दरभंगा मेडिकल कॉलेज मे पढइ छलाह त उनकिर एकटा संगीकऽ अहीना बियाह भेल छलइ। बड ठसकबाजी मे ओ संगी बियाहक बाद रहअ लागल छेलाह। बाद मे सासुरे वाला ओकरा सरकारी नौकरी बिहारे मे लगा देलकइ। रामबाबूकऽ ई कथा ठीक बुझेलइन्हि। आ ओ ओइ सम्भ्रात व्यक्तिकऽ गप्प बढबइ

लेल कहलखिन। बिबाहक खर्चक ऽ अथर्षसामिनिलाक ऽ है क्सइत पर विभष्ब करइत छइ। जेना तेना बिबाह विक्शात भेल। घी कत हरायल, रहरी दाइल मे। रामबाबू एक टा संतानिक ऽ लेल पुरा खर्चकयलाह।

बिबाह तभ ऽ गेल। मुदा रमनि आ क्रयाक ऽ सोच मे कतउ मेल निर्विन। क्रया बिबाहक ऽ सामाक्जक समझौता बस मानिव छलीह। समाजक रीति-रिविाजि कमजोरक ऽ लेल होअइ छइ- ई हुनिक मान्यता छल। समाजक ऽ लेल रमनि आ क्रया दम्मक्ति मुदा असल मे दुनि अलग । रामबाबू सब देखइत बुझइत छलाह। अप्पनि संतानिक ऽ जविवित छलाह। ई भरोस छलइनि जे सब ठीकभ ऽ जेतइ।

इमहर रमनि MBBS केलाक बाद MD कर ऽ लागल छलाह।क्रया सेहो गैजुएशिनक ऽ संग स्ती निकायक ऽ एक्कटविस्टभ ऽ गेल छली। ओ अपनिक ऽ सेहो सामाक्जक विसंगक्तक ऽ विकार मानिव छलीह। हुनिक कयेकटा क्रपोटषअमेक्रकाक ऽ जर्षिल मे छव्म चुकल छलइनि। मानिवधिकार पर आगुक ऽ पढ़ाइक ऽ निस्ते छात्रिकृत संग निजीफा सेहो भेटलइनि। ओ अमेक्रका चइल गेलीह। ओतइ एकटा आर एविवयाई मूलक लोक स ऽ हुनिक विचार क्मलइ छलइनि। आ बाद मे पढ़ाइक ऽ बाद दुनि संगे रहअ लगलीह। रमनि सेहो MDक ऽ बाद ब्रक का अस्पताल मे कन्सलटेन्टभ ऽ गेलाह । नीक दरमाहा भेटई छलइनि। आब रामबाबूस ऽ माक्सक पाइ लेनिई छोव देनि छलाह। रमनि आ क्रया दुनिक ऽ माय- बापक ऽ असक्लइत कमोबेनि पता चइल गेल रहइनि। उपाय की। जखनि कखनि रामबाबूक ऽ कनिया क्रयाक ऽ फोनि करक्थिनि त क्रयाक ऽ

पक्हल जबाब जे रमकिऽ छोव कऽ ज्यो कि ि आर गप्प अइ त ओ कर। माय लग आर कि ि गप्प वि छलइ ि। बहुत साहसकऽ क रम ि, क्रया लग तलाकक पस्ता ि पठेलाह, मुदा क्रया ईहो लेल तैयार वि ि। दु ि पक्र ि र लोकक व्यंन्य बा ि सहइत छल। क्रयाकऽ रामबाबूकऽ ध ि सम्पक्त कऽ सेहो कि ि क्लप्सा वि ि। रामबाबू साल दु साल पर कवि या संग अमेक्रका जाइत। कछु समय क्रया संग क्रातबइत आ ि पिस क्दल्ली आइब जाइथ। ओ अप ि किऽ ई बेमेल क्रबाहक दोरी मा ि वि छलाह।

बहुते आगह पर क्रया तलाक पर सहमक्त देलक्खि आ रम ि किऽ दोसर क्रायाह एकटा जुवि यिर डाक्टरसऽ भेलइ ि। रामबाबू अइ क्रायाह मे अप ि हु ि क्रमल भेलाह। रामबाबू क्रटायरमेटकऽ बाद अप ि किऽ व्यस्त राखइ लेल एक टा पाईक्टि हाक्स्पटल जाय लगलाह। रम ि सेहो ि ब क्जगी ि ि र करबाक लेल लन्द ि किऽ अस्पताल ज ि इ ि केलाह ताक्क इक्तहास पीछा वि करय ि।एक टा गलत वि रषा दु पक्र ि रकऽ दे ि वि कालाकऽ देलक।

अइ लेलकऽ दोरी। माय - बाप त ि के सोचइत अक्छ- संता ि किऽ ि स्ते मुदा ....हो ि किऽ आगे ककर चललइ अक्छ।

खाली हाथ (बीहनि कथा)

रामबाबू पगकाि ील वारहथ छलाह।दु टा बेटा छलइि। दुि किऽ पढ़ाइ बढ्ढयासऽ होइि, अपि ाकिऽ ओही लेल झोंईक देि छलाह। विमलाकऽ ि ािमी स्कूल मे दुि बच्चा पढलकइि। सोइच सकइ छी कक काि वियक्तत आमदि ीकिऽ ई काज कतेक कठ्ि। इमहर उमहरसऽ जोर तोरकऽ क काज करय छलाह। सालो भरी अही मे लागल रहइ छलाह। कखि ा बच्चा सबकऽ लकऽ विमला जाइत छइत त कखि ालिऽ क अबइ छथ्थ।हरदम जतरे मे रहइ छलाह आ खाली हाथे। कविया ओतेक सक्कय ििि छलखि जे ओहो कखि ा असगर विमला चइल जइतइथ। आइ कावि त माय सबकऽ ई काभाग छइ। मजबुरी ि ििैक, से सि ाि ििि। कयेक बेर त रेलि व्टकट ि्िंग मे रही गेलइि, तखि ा बच्चा सबकऽ कि ि ा क्दकत ििि होबऽ देलखि। जुि ििि छलाह।

गाम- घर मे सब कहइि जे अपि ा अतृप्त इच्छाकऽ बच्चाकऽ मा्यमसऽ पुरा करइत छथ्थ। सत जे हुआय। विमलाकऽ बाद क्दल्ली विशविदालय मे बच्चा सब पढ़लकइि। ब़ का बेटा दोसरे पयास मे संघ लोक सेि ा आयोग मे उतीरषभेलाह आ IPS मे चयि भेलइि। रामबाबूकऽ तपस्या पुरषभेलइि। जे समाज मजाक उरबइत छलइि, आब ओकरा खाक्तर सबसं सफल लोक छथ्थ। बेटा सेहो घरक क्स्थक्तसऽ अि ागित छलइि।ओ रेवि ाग मे जाइते, रामबाबूकऽ छोट भाइकऽ पाइ पठबऽ सऽ मुक्तकऽ देलकइि। बेटा पर बडड कथा सब आब लगलइि। रामबाबूकऽ बेटा अि ििक्षत छल। रामबाबू सब ब़ का लोककऽ छोअइ कऽ सामान्य पक्ि ार मे कुटमइती कयलाह। उकिर अपि ा दि षि छलइि

जे बेटाकऽ विबाह अपनिसऽ आव्यथक आधाररसऽ न्युि मे करी त पुतोहु मानि देत। सब ठीक चइल रहल छलइि। पुतोहुसऽ सेहो रामबाबू पुरा पसन छलाह। पारवािरक पक्तष। बेटाक लगभग आदिष विबाहकऽ बाद आर बढ़ गेलइि।

अहि बीच मे ककर निजर लाइग गेलइ। रामबाबूकऽ बेटा जे वजला पुविलस कप्तानिभऽ गेल छलाह, एक दि लैण्ड माइन्स विस्फोट मे घायलभऽ गेलाह। दिल्ली रेफर कायल गेलइि, मुदा बइच नि सकलाह। अस्पताल मे जाबइत भती छलाह त मंती अविधकारीकऽ लाइि लागल छलइि। टीिी बला सब रामबाबू आ हुनिकर पुतोहुकऽ हमेिा देखबइत छलइि। लोक सब इनिका सबकऽ जानिऽ लगलइि।

बेटाकऽ मृत्युकऽ बाद रामबाबू गाम आइब गेलाह। सरकारीआ गैर-सरकारी तरफसऽ बहुत रास पाइ उनिकर पुतोहुकऽ खाता मे जमाकऽ देल गेल। पुतोहु जे काजक बाद िहर गेलीह से फेर निि अयलीह। रामबाबू उनिका बजबऽ गेलाह मुदा ओ निि अयलीह।उल्टा विकाइत। िहर बाला सब उएह पाइकऽ हिसाब लगबऽ मे लागल। एक टा पेरोल पम्प सेहो भेटलइि। किछु दिनिक बाद एक भलमानिुरकऽ संग पुतोहुकऽ सेहो दोसर विबाहभऽ गेल इि। रामबाबूकऽ किनिा खबर निि। लोककऽ अनिुसार, पाइकऽ लोभ मे ई विबाह भेलइत अछि। बेटाकऽ यादकऽ अंितम विििनि सेहो खत्मभऽ गेलइि।

जे रामबाबू बेटाकऽ मृत्युकऽ बादो साहस रखनि छलाह से आब टुइट गेलाह। अधविक्षिप्त जेकाभऽ गेल छलाह। सरकारकऽ केहनि कानिुनि जे माय बाप अपनि सिषिनि बेटा पर न्योछािरकऽ

क्दअयह, ओकरा संताकिऽ सम्पक्त मे कर्िि भाग वि। आवश्यक्क क्स्थक्त त ततेक पातरभऽ गेलइि जे दोसरो बेटाकऽ सब छोअइरकऽ िपिस गाम आबऽ परलइि।

रामबाबूकऽ जीर्ि फेर खाली हाथभऽ गेलइि।

िबका धर्वक (बीहर्व कथा)

रामबाबू (छद िम) टुटल जमीदार पर्वरिरसऽ छलाह। ओही समय मे गाम घर छोव कऽ महानिगर अयलाह, जक्षया घरक आवश्यक क्स्थक्त केहि होइ, वजी कम्पानी मे चाकरीकऽ िकसऽ र्वि देखल जाइ छलइ।बाप कहलर्खि जे आहाकऽ जेते पाइ ओ कम्पानी िला देत, ओइस१०० टका बेिर्ी हमही देब। सच्चाई ई छलइ कक जथा- जर बेचकऽ ही सब कक्छु होअइत छलइ। मुदा एक टा टिि छलइ। सब होइतो रामबाबू क्टिही बक्सालऽ क गामसऽ क्षादा भेलाह।ओ बुक्झ गेल छलाह जे ई हिा-पानिसऽ कक्छु होबऽ िला र्वि छइ।

अपाि अिभि ि अ् ययकिऽ आधार पर आगु बढ़इत गेलाह। एक तरहसऽ काक्तकारी कदम उठेला। महािगर मे पक्हि एक टा छोट घर, फेर बाद मे पैघ घर लेलाह। सामाक्जक ि सास्कृक्तक काज सब मे सेहो सहभावाता छलइि। क्यिहाक्रक लोक छलाह। गाम समाज मे सेहो यि छलइि।

आब देखू बदलाि। दु टा बच्चा छलइि। बेटा IIT आ IIM केलाक बाद कम्मे समय मे ओइ पद पर पहुंच गेलइि, जईसओ सेिविृित भेल छलाह। गौरिवक्ति छलाह। बेटा अपि संगीसऽ अंतजातीय र्विाहकऽ लेलकइि। पुतोहु, बेटोसउच्च पद पर छलइि।DIG(double income group)भऽ गेल छलाह।आब सब कोई कोठी मे रहअ लागल छेलाह। भक्सिया आ खबाक्सि दुि छलइि। बेटा पुतोहुकऽ अलग अलग गाि डाईिर छलइि।

रामबाबू सपतीक अइ बदलल व्यस्थक मे डुबी गेल छलाह। जे कक्कयो काजबालीकऽ जोरसऽ बक्जतो िव छलाह से आब सब पर रौब दाब करऽ लागल छलाह। अपिकऽ आब स्टेटस िला बुझअ लागल छलाह। सब जगह िव जाइत छलाह। बेटा सेहो पुरिका समाजसऽ पुरा कइट गेल छलइि। अंतजातीय विाह मे इ होअइ छइ जे ओकरा समाजक जर रत िव बुझाइत छइ। चयवित लोकसऽ अबरजात छलइि। पुरिका लोकसऽ दुरीभऽ गेलइि।

आब देखू बदलइत बदलइत केहिभऽ गेलाह।िबि दुवया मे दुि बेगत. इम गेल छलाह। बेटीकऽ विाह अपि समाज मे कयि छलाह। कतेक बरख बाद बेटी जमाय सब अयलइि। ओ सब खाक्तर सिि अिि छलइि। रामबाबू ,हुिक कविया आ पुतोह सब खुि भेल- सिि देख क, मुदा बेटा ओ सिि(टाई-वाि) बक्हिकऽ सीधा िपसकऽ देलक्खि जे हम आब टाई िव पक्ह इ छी। भाइ ई िव देखलक्खि कक बक्हि भाइकऽ अफसर बुक्झकऽ कतेक िकसऽ मंथिकऽ क अिि रहइि। रामबाबू आ हुिक कवियाकऽ अतेक साहस िव जे बेटाकऽ कछु बुझईबक्ति।सब हंसकऽ गप्प बदइल देलकइ। िकर चाकरकऽ संग रहबाक कारर भािि िन्य सबभऽ गेल छलाह।

आब बेटीकऽ िपस अपि िहर जयबाक छलइि। स्टेिि जाय खाक्तर डाइिरकऽ फोि केलक्खि आ कहलक्खि कक एक गेस्ट आयल छक्थ, उिका काि ९ बजे स्टेिि छोि बाक अक्छ। बेटी ई फोि परहक गप्प सुइि लेलक्खन्ह। माय सेहो सुिलक्खि।घर मे चुप्पीभऽ गेल। माय माहौलकऽ हल्लुक करय लेल कहलक्खि-

जे छथि, जेहि छथि, आहाकऽ बापे छथि, कतेक दिन जीता, बडड उत्साह मे छलाह, की कहू।राइत भर बेटी परेशान, जे बाप एक आजि पर हाजिर, उनका लेल हम गेस्ट कथियाभऽ गेलियइन। अंत मे विषयपर पहुंचली कि ई सभकिछु किनि- किनका धनिकक शान छइ।

बेटी माय मे की समझौता भेलइन, से ककरो किछु बुझल। रामबाबू सुतले छलाह आ बेटी सपरिवार टैक्सी बजेली आ साते बजे भोर मे सबके सुतले छोड़ कऽ स्टेशन लेल बिदाभऽ गेलीह।

क्रस्मत (बीहवि कथा)

ई ७०कऽ दिकक वखस्सा अइछ। रामबाबू (छद िमि) जक्ष्या पटि विशिविदालय पढअ गेल छलाह त हुिका बाबूजी (वपता) मोटरसाइक्कल कीकिऽ देलक्खि। तक्ष्या ओ असकर छलाह क्लास मे जे मोटरसाइक्कलसऽ अबइ छलाह। ओिि बेिि दुर कालेजसऽ डेरा िवि छलइि। एकटा क्दखाि छलइ , मोिि मायिकऽ तैयार िवि जे ई क्रजुलखचषछइ। क्रल्मी हीरो जेका देख मे सेहो छलाह, ओक्ष्ि स्टाइल िला कप़ा लता आ िकै। क्सगरेटसऽ गोल गोल धुआं विकालबा मे पारंगत। पाइ कतऽ सऽ अबइ छइ, से बुझबाकऽ फुसषि ककरो िवि। पढ़ाइ कहूि चलइत रहइि। BSc करइत करइत एक अक्षधकारीकऽ कन्यासविाहि सेहोभऽ गेलइि।

जखइि कवि या सासुर बसलीह त असक्लइत पता चललइि। इमहर रामबाबू सेहो घीच घाचकऽ MScकऽ लेलाह। आब पटि मे रहीकऽ की करताह।हुिकि बाबु जीकऽ आरो क्जम्मेदारी छलइि। बक्ष्हकि विाहि, भाइ सबहक पढाइ आ दहेज मे आयल जमीकिऽ मोकदमा। सब मे खचे खचा। रामबाबूकऽ कवि या विरिषि केलीह जे अइ जहाजसऽ विकिली। मुदा जायब त जायब कत। अतेक योग्यता िवि जे कोिि अफसरीकऽ िकरीभऽ जाइ।व्यिसाय मे एक बेर हाथ पका चुकल छइ, ताक्ष्ह लेल इहो आप्सि िवि। दुटा संताि सेहोभऽ गेलइि अही बीच। रामबाबू अइ सबस अिविज बाबू साहेब बिि पटि मे रही रहल छलाह।

कवियाकऽ िही रहल गेलइि। जखइि रामबाबू गाम अयलाह त सब पता लगलइि।आब क्सफावरि पर िकरीकऽ सेहो समय चइल गेल छलइ। तक्हयो हुिक वाता अप्पि एकटा संबंधी आ अव्धकारी , जे राजस्थाि मे पदस्थावपत छलाह,कऽ बेटाक लेल क्चटी क्लखलक्खि। रामबाबू ओतऽ गेलाह आ तृतीय िगषमे िकरी जीइि केलाह। कक्छु क्दिक बाद पविार सेहोलऽ गेलाह। ई िकरीकऽ ओ मोिसऽ कइयो स्िीकार िवि केलाह। केिि करतैथ, अखइि तकहक जीिि. इसी मे बीतल छलइि। अिसाद मे रह लगलाह। अव्धकारी सबसऽ लइ लइ छलाह। तखिि दुि बेटाकऽ सबसं महंग कािन्िट स्कूल मे पढ़ेलाह। अप्पि अइ क्स्थक्तकऽ लेल अप्पि बाबु जीकऽ क्जम्मेदार माििऽ लागल छलाह। गाम घरसऽ पुरषर पेर कइट गेल छलाह। ई माक्िसक अिसादक असर एक टा बेटा पर सेहो परलइि। पढ़ाइ मे िीक रहलाहक बािजूद जयपुरकऽ स्िीक्मंगपूल मे बेटाक लाि भेटलइि।ई घटिि पुरा तोड़ देलकइि। ६ महीिकऽ बाद मामुली जरबोखारसरामबाबूकऽ विधिभऽ गेलइि।

समय खराब होइ छइ त चार कात स। दोसर बेटा छोट छलइि। ओ जखइि BAकऽ लक त, अिुकंपा पर ओकरा िकरी कवियाक्दयेलकीि। जे पाइ सब भेटलइि ओ बेटाकऽ द देलक्खि। कक्छु बरख त सब ठीक छलइि। बाद मे पुतोहुसऽ िवि बिलइि। हारऽ िली रामबाबूकऽ कवियाि िवि। पेिि त भेटते छलइि। सरकारी क्िाटष त बेटाकऽ िमिभऽ गेल छलइि।ओ क्कराया पर घर लेलीह आ बेटा पर केस केलीह। अतेक जल्दी फैसला थो बे होइ छइ। आब ओत रहअ मे ठीक िवि बुझेलइि। िहर सासुर सब जगह खबर कयलीह, कतउसऽ उत्साहजिक

र बाब िव भेटलइ ।

िपस पट ि मे जई मका ि मे रामबाबू विदाथी समय मे रहइ छलाह, ओ मका ि टुइटकऽ अपाटमेट बइ ि गेल छलइ। मका ि माल्लककऽ पिरवारकऽ सोलह टा मका ि कसा मे छलइ। रामबाबू ओइ पिरवारसऽ सम्पकषमे छलाह। ओही पुरिका संबंधकऽ मयादाकऽ आदर करइत मामुली िकराया पर रहबाक घर देलकइ। ओही मे रही रहल छिथ। भाइ, देिर आ िविद सबकऽ पट ि मे आइकऽ समय मे घर छइ, मुदा मुंहछुआइ ि कयो रहक लेल िव कहलकै। ईएह िकस्मत छइ।

पेम र्वाह- नि पयोग (बीहर्नि कथा)

राम बाबू कहकलेल किील छलाह।किालतसऽ आमद क्षियेे बराबर। मकाि कारायासऽ बक्ढ़या र्वयिमत आमदीिभऽ जाइत छलइि। खेत - पथार सेहो पयाप्त छलइि। गाछी सलाि बेच कऽ सेहो क्यक्कि पाइ आइब जाइ छलइि। छोट िहरकऽ ब़ का लोक छलाह। र्वाह सेहो ओइ समयक सासदकऽ कन्यासऽ भेल छलइि। ईहो पक्रचय, पक्तष। बढ़ेि छलइि।दु टा कन्या आ एक टा बेटा छलइि। पक्रिार मे सब कायो एकसऽ एक सुन्दर। पाइ अपि-आप मे सुंदरता छइ। खायल पीयल घरकऽ सदस्यकऽ सुन्दरता दुरऽ सऽ देखाअ जाइ छइ। सुकुमार सब अतेक जे आंगुर घोइप क्दयउ त िक्र त बहरेबाक अंदेिा।एक टा बेटीकऽ क्वबाह िीक दाि-दहेज दकऽ पुरा िाि िौकतसऽ क चुकल छलाह। जमाय डाक्टर छलइि। बेटाकऽ पढ़बक लेल क्दल्ली पठा देि रहइत।

छोट िहर मे ब़ का लोकक धीया पुता सब पढ़ मे लुक्तये होइत छइ। इकिर छोटकी बेटी जक्हि पढ़ मे िीक, ओक्हि सुनर आ संस्कारी सेहो। मैक्र क मे क्जला मे टौप केलाक बाद को- एड कालेज जाय लगलइि। पढ़ाइकऽ दौराि एकटा संगीसऽ क्कछु र्विर दोस्तीकऽ जािकारी भेलइि।पहल ल़ का तरफसऽ छल। छोट िहर मे ई सब बात जल्दी फैलइ छइ।क्मथला मे पक्हि र्विर दोस्तीकऽ कखिि सहरषस्िीकार र्वि कायल जाइ छलइ।

रामबाबू सुलझल लोक छलाह। ओ एक क्दि ओइ दोस्त जे एकटा पोफेसरकऽ बेटा छल, कतऽ गेला। कहलक्खि जे हम आहा सबकऽ जर्वि छी। आहा आगु पईढ़कऽ क्कछु बइि जाऊ,

हमरा आहाकऽ पक्षरिसऽ संबंध जो कऽ लेल तैयार छी। ई पस्ताि ओइ विदाथी मे ब़ का बदलाि अलिक।अकर बाद ओ विदाथी कमिि मे लाअइग गेलाह। आगु बइढ़कऽ ीिक पद पाप्त कयलाह। दुिकऽ कबाह भेलइि। सम्पक्त ओ विदाथी रिीय पािसविक अध्धकारी छथ्थ आ रामबाबूकऽ कन्या जािल - मािल पतकार।

रामबाबूकऽ िबि पयोगकऽ िहर मे खुब ओइ समय मे चचा भेल आ हुिक विरषासऽ सािभाविक आकरषकऽ सुखान्त मे बदलल गेल।

दही ािली बुढ़ी (बीहिर् कथा)

गामक अलग लोकाचार छइ। बयसक किाा बंधि विे। ज्यो छइ त ओ संबंधक।दही ािली बुढ़ी।ओकऽ छलीह। कऽएए अबइ छलीह। कतऽ सऽ अबइ छलीह। कक्या एतीह। कखि जयतीह। कछु ककरो िवे बुझल आ ओइ पर अजीब चुप्पी। िवे कक्यो अबइत देखकलयइि आ िवे कक्यो जाइत। तक्या कारर िवे पता चलल, आब हमरा जन्ता्ि ओ साझक बाद अबइ छलीह आ फरीच होबऽ सऽ पक्ि चइल जाइ छलीह- त कोिा देखइतैत। तक्या रहस्य छल। ओ बंगली पर बइसल भेटई छलीह। गोर धबधब, उजजर सा ी, चमकइत आंईख आ छोटकी मोटरी संग मेएक मटकुर दही। हमरा उकिर संग िीक लागय। ओ हम सब बच्चाकऽ देखकऽ खुिभऽ जाइत छलीह। हमरा सबकऽ व्खस्सा सुिबइ छलीह। हुकिर सब व्खस्सा मे मा-बेटा, पुक्लस दुआरा विदोरकऽ पकरािई, केस चलािई आ अंत मे जज साहेबकऽ व्हाइकऽ फैसला, घर िपस गेािई, दही- ्मठाई बंटािई रहइ छलइि।

२/३महीिा पर ओ अबइ छलीह। उकिर आिल दहीकऽ सिाद हरदम मोि मे रहइ छल आ उकिासऽ बेिी दहीकऽ इंतजार रहइ छल। पुछला पर कहइ छलीह- हमर महीस खाली हव्रयर घास खाइत अक्छ। ओकर देल दुधकऽ हम अलग तरहसऽ दही पऊरकऽ आहा सब लेल आिवे छी। िीक कोिा िवे होइत। उकिर मोटरी मे चु ा, सतुआ सब खायकऽ िस्तु रहइ छलइि। ओ घरबइया पर विभष िवे छलीह, तखिा खेािई उकिा लेल बंगली पर पठा देल जाइ छलइि। ओ ओत सुरक्क्त राइत क्तबऽ अबइ

छलीह।

वजजासा कयलाह आ कफिुसकी सुइकिऽ अतबा पता लागल जे दुरसऽ अबइ छव्थ।इकिा बडड जर जमीि छलइि।क्दअयदी पक्हि क्दििि मोकदमा फेर कयेक टा फौजदारी।बुढ़ीकऽ घरबालाकऽ ईएह मोकदमा मे हत्याभऽ गेलइि।बेटा छोटे छलइि। ताबइत ओ घरसऽ बाहर वकिललो विि छलीह। बेटा जखइि पैघ भेलइि तखिि व्पताकऽ आरोपीकऽ हत्याभऽ गेलइ। पुव्लस सीधा ओकरा पकड़ि कऽ जेल पठा देलकइि। आब एकलौता बेटा हत्याकऽ मोकदमा मे जेहल मे छइि।ओ बेटासऽ तारीख पर भेट करय लेल अबइ छव्थ। दू मटकुर दही(बेटाकऽ वाय)लऽ क अबइ छव्थ। एक मटकुर बेटाकऽ द दइ छव्थि आ दोसर हमरा सब लेल। तक्हया जेहल मे खेिाई व्पािाई जाइ छलइ। उकिर बेटा दुआरे, सब हमरो सबकऽ डराबय उकिा लग जयबा सं।हम सब तइयो जाइ। कखिा डरक भाि मोि मे विि आयल।

कक्हयो ओ बड खुि रहइत आ कक्हयो गंभीर।

उकिा पुरा उम्मेद छलइि जे बेटाकऽ क्रहाइभऽ जेतइि।जीिकि उदेश्य सैह छलइि। ब़ का िकील सेहो रखिि छलीह।क्वखस्साकऽ लब्बोलुआब उएह जे वदोिर बच्चाकऽ क्रहाइ ि ओकरा संग मायकऽ घर िपिसी।बाद मे उकिर अयिाई बंदभऽ गेलइि।

पता चलल की बेटाकऽ आजन्म जेहलक सजाभऽ गेलइ आ भागलपुर जेहल पठा देल गेलइ।उकिर मुस्की संग क्रहाइ िला क्वखस्सा आ दही, दुि ओक्हि स्मृव्त मे अव्छ। पता विि ओइ फैसलाकऽ ओ कोिा सामिा कयलीह।

भुत- बंगला (बीहनि कथा)

सब भुत- बंगलाकऽ सविशेष इतिहास रहइ छइ। कहियो ओकरो चला-चली छलइ। आइ कियो देखऽ बाला नहि। जेकरा जे मोनि करय छइ, से बंगलासऽ उठा कलऽ जाइ छइ- ठसकबाजी संग। एहि कारणे भऽ गलइ। कियो साझो देबऽ बाला रहितइ त भुतबंगले नहि कहइतइ।

अइ बंगलाकऽ मालिक बिहार सरकार मे मध्यम स्तरकऽ अधिकारी छलाह। हुनकि बाबूजी सेहो असगर, आ ओ सेहो असगर भाइ छलाह। बाकि बहुत की टा जायदी। सरकारी अधिकारी बनिला पर किछु खास मोजर नहि देलाह। अपनाकऽ अंगेज सरकारकऽ अधिकारी जका बुझइत, मुदा जायद सब इहिका किछु बुझइत नहि। अधिकारी छलाह त कियो विरोध खुइलकऽ नहि करयि, साथो नहि दइथि। ओझा खातिर गामबला बताह, आ गामक लेल ओझा शिला स्थित।

सबसं हइटकऽ बंगला, पोखरा-पाटि सब बनिला। गामो मे अंगेज शिला टोप आ भर आ सिगरेट पीबइ छलाह। मौका बेमौका सिगार सेहो दइ छलखिन। अतेक शिसिऽ रहितई, कतेको लोककऽ परेशानि करय छलइथि। एक टा बेटा आ बेटी छलइथि। बच्चे मे तीर-धनुर खेल मे इहिकर बेटाकऽ तीर बहिकिऽ आंखि मे लाइग गेलइथि। बेटीकऽ एक टा आंखि पाथरकऽ लगाबल गेलइथि। बेटा तखनि शिथ खेला कि ओ डाक्टर बइनि बहिकिऽ आंखि बनिताह। काल कमेर बेटा डाक्टरभऽ क अमेरिका चइल जाइ

छइि। पुतोहु बाहारक एकटा स्टेटक बेटी छलइि।ि ऊधो को लेिि, ि माधो को देिि। बेटी पोफेसरभऽ गेलइि, मुदा अविािवहत।अपाि सम्पत्तकऽ बेटा-बेटी मे बराबर बटलाह आ बेटीकऽ बाकस बिलाह। ततेक पगतिील छलाह जे कयो इिकर कन्यादाि मे म्‍यस्थता केबे िवि केलकइि। बहुत बाद मे बेटी अपि बाबाह केली, मुदा बाबाह िवि चइल पेलइि।संबंध समझौता छइ, ई कयो बुझबे िवि केलकइ।अइ बाबाहसऽ एक टा बेटा भेलइि। ई बच्चा िािि लग रहइ छलाय। एतऽ तक सब ठीक।

कयेक बरख बाद बेटाकऽ मातृभूमि पेम जगलइि आ ओ गाम अयलाह। बाबुजी- बच्चिकिऽ आगह पर िजिदीकी िहर मे िवसंष होम खोलिाईकऽ विरिष कयलाह।विधाताकऽ कछु आर मंजुर। गाम आयल छलाह, कछु जमीिकि विािद सेहोभऽ गेल छलइि, हृदयाघातसऽ परलोक चइल गेलाह। पुतोहु पुरा पोस्टमाटषकऽ िविडयोगाफी (जे अमेिरका मे मेिडकल क्लेमक लेल जररी छइ) करेलीह आ जे अमेिरका गेलीह, घुइ कऽ िवि अयलीह। उतरािधकारी बेव्टयेकऽ सब बुझइि।आब बाकी वद्अयद सब ऊछनर मचेिाईं िुर केलकइि। असगर सबहक सामिि करय छलाह। बेटाक मरलाक बाद बरखक भीतरे अपिि सिगिषवसधाइ गेलाह। बेटी पोफेसरीकऽ िकिरी करयथ या िहरक झंझट सब देखइत। बेटा सेहो लायक िवि भेलइि। समस्या से जुझइत संघरषिील बेटी बाद मे व्ह़ व्ह़ ा आ अििसादक चपेट मे आइब गेल छलीह। अही वस्थित मे जािह कालेजकऽ कििटष मे रहइ छलीह, ओतइ एकराइत सुतले रही गेलीह। ओतुके समाज दाह-संस्कार करेलकइि।गाम मे कतेक वदिकि बाद लोक बुझलकइि जे विकि मृत्युभऽ गेलइि। बेटा विपता।

आब भेल गामक खेल। कतेक केयरटेकरभऽ गेलाह।जे कक्कयो ओही बंगला मे गेलो विि छलाह,आब ओइ पर खुटा गाइ देलाह। सब कदअयदी दाििदार सब पक्कि अन्हार मे, बाद मे कदििदहा` समाि सबलऽ जाय लगलाह। अंत मे चौखट केिर तक सबलऽ गेलइ। आब ओ बंगलासऽ भुत बंगलाभऽ गेल छइ। बच्चा सब ओइ पक्कसर मे खेलऽ जाइत छइ त माय कहइ छइ जे ओइ मे विि खेलाऊ, ओतऽ भुत रहइ छइ। आब ई भुत बंगला कहाइत अक्छ।

म् यस्थ (बीहवि कथा)

रामलाल गाम मे धाही बाला लोक छल। बाबू भैया बाला गाम मे चलती ओकरे। ककि को पाइ चाही, रामलाल। जमीि बेचबाक हो, रामलाल।रोपिी- दौिीकऽ लेल जि चाही, रामलाल।जमीि भरिा रखबाक काल, रामलाल।दुध-दहीकऽ काज जग परोजि मे, रामलाल। बकरयाती मे खबास मे खास दरबार मे, रामलाल। जमीि बंटाई देबकाल, रामलाल। गाछी बेचऽ काल, रामलाल।घरहट लेल, रामलाल। मावलक कहइ लेल कयेक लोक, मुदा मिजिर सबहक रामलाल।

कपि ा लता ओकर साफ आ चकचक, कवयो मावलकसऽ कम िवि, बेवसये कहू। कखिा ओकर चेहरा मवलि िवि।सबहक समस्याकऽ समाधाि ओकरा लग। कतेकोकऽ बेटीक वबयाहक लेल पाइकऽ व्यवस्था ओ कयि छल गाम मे।ओ गामक धुरी छल। सामावजक समरसता मे ओकर बडड योगदाि। ओिा ओकर समाज, पीठ पाछु वखनावि करय, मुदा पभाि मे कििा कमी िवि।ओ मिाकऽ दइ त कवयो जमीि बटाई लेल तैयार िवि। पंचइती मे अहम स्थाि। चुिाि कवहयो िवि ल़ ल,लेवकि मुवखयासऽ बेिी दम। पाटी-पॉवलवटक्स मे बेिी वदलचस्पी िवि, लेवकि हंसुआ गेहूंकऽ भीतवरया समथिक। अपिा बेटाकऽ ओ पढ़ा वलखाकऽ मिुक्ख बिबऽ चाहइ छलाय। ओकरा अिुसार ओकर समाज गरीबी, अवि क्षा आ िािाक कारर मिुक्ख िवि अवछ। ओ बेटाकऽ बाबू भैया संग रहइ लेल कहइ छल।

जाबइत ओ लोककऽ जर रत छल, महत छलइ। बाद मे बाबू सब अप िकरी खाक्तर गाम छोव, महागिर ओगरऽ लगलाह।खेती अप केिई या त लोक छोव देलक या हुंडा परदऽ देलकइ।खाली बइसल गाम मे सब पोपटी डीलरभऽ गेल।ओकरो समाज मे सब बाहर वकिइल गेल। कयो ककरो बात मावि लेल रारी वि। सब कहइ जे रामलालकऽ सब डील मे क्सस्सा भेटई छइ तखि िल- क्टिपाल िला धोती कुता मेटिि करइत अछ।

रामलाल देहसऽ कक्षयो काज केलक वि। बी पी एल, ए पी ल, लाल काडष़ मिरेगा तक्षया छलइ वि। एके बेर मिजिरसऽ ओ मजदूरभऽ गेल। घरामीकऽ काज मे शम कम छइ।बयस बढला स, देह से हो खइस गेल छलइ।सैह काजकऽ क पेट पोसई छल। बेटा सेहो जेकरा बृ का सब सीकार वि केलकइ आ ओकर समाज मोिसिऽ अपिलकइ वि, ि करऽ लागल।ठीक जखइि रहय त राज क्सस्तीकऽ काज करय। संगहकऽ सिभाि ओकर समाज मे छलइ वि, एहि क्सथक्त ओकरभऽ जेतइ से कयो सोचबो वि कें छल। बाद मे लोक ओकर पुरा क्दि यादकऽ क कयो भलमाि्र कछु काजदऽ दइ। रामलाल ततेक सिवमाि छल जे कक्षयो ककिोसऽ कछु मंगलक वि। गुमिमी मे अक्षि चइल गेल दुविया सं। म् यस्थक भुक्सका समाज मे खत्म भेलाक पक्षले वकार रामलालभऽ गेल।

गामक माइट ििसीब िवि (बीहवि कथा)

कच्छु लोक हर हालात मे खुि रहइत अइछ चाहे कतबो परीक्षा भगिि लेइथ। ओही मेसऽ एक छलाह रामबाबू। जखइि होि सम्हारलाह त सात टा दुध दइत महीस छलइि, मुदा घर मे चाऊर िवि। बन्धी सजल दलाि पर, लेक्कि घो ा बुढ़ायल। जमीि पर असामी सबहक कब्जा, कच्छु उपजादऽ दइ-ओकर मरजी। कहक लेल बाििि बीघा मे पुक्दि, असक्लइत कच्छु आर। माय-बाप दुक्षिकि सामि करबाक लेल अफीमक सेिि करऽ लागल छलक्खि। कहक लेल सब कक्यो अप्पि, लेक्कि अपिपि कक्किो मे िवि।

ई अपिपि भेटलइि मौजे पर जे चमाइि खबाक्सि छलइि, ओकर बेटी सं। अपि गामसऽ बेिी, मौजे पर रहअ लगलाह। एक काि, दु काि, धीरे धीरे लोक बुक्झ गेलइ। रामबाबू एक बेर कक्षि कक्षयाह घुरायल सेहो गेलाह अही चमाइकि अपिपिकि हल्ला काररे। फेर दोसर गाम मे कक्षयाह भेलइि। सच्चाईसऽ दुि संबंध वििभेलाह। कतबो संबंधी सब कहलक्खि गाम छोवि िहर आऊ, िवि गेलाह। जीिि यहा मरिि यहा- कहक्ति

कच्छु समय बदललइ त ििमि गामक लेल मौजे परक सब जमीि बेचकऽ बस कक्िलाह।बससऽ ििमि त भेलइि, लेक्कि घाटाक सौदा भेलइि। एक टा फायदा भेलइि जे बस माक्लककऽ कौिि बस मे क्टकसकऽ पाइ िवि लागइ छइ, जाबइत जीलाह, रिि मे घुमलाह आ बइसऽ कऽ सीट सेहो भेटलइि।

उकिर बोली बाि एहि मीठ, जे लोकसऽ हमेि व्यरल रहलाह। कतबो भान्म बाम भेलइि, संयम िव छोरलाह। कक्हयो क्किकोसऽ व्खक्सयाकऽ िव बजलाह। पाइकऽ काज त पाइये करतइ। आमदिकऽ जक्रया छलइि पुश्तैि जायदादकऽ उलटफेर।दोसरोकऽ जमीि गोलकऽ दइ छलक्खि।भोजभातक क्करीस्त्तक एक्सपटषछलाह। धि घटइत गेलइि, माि मे कक्यो कमी िव।ई सब भेल उकिर बोली बािक काररे।क्कयो चारक्य कक्ह देि त क्तारक्मतभऽ जाइ छलाह। बेटा सब पढ़ी क्लखीकऽ बाहर चइल गेलइि। रामबाबूकऽ कतबो कहलकइि, िव गेलाह। गामसऽ एहि लगाि। अपि शादक पाइ आ पुरक्हतक दक्करा सेहो अलगकऽ देि छलाह। संस्कारक लेल जमीि अलगसऽ रखि छलाह जे बेटा सारा पर मंक्दर बिताह।

समयक चक देक्खयउ। मृत्युसऽ कक्छु क्दि पूिषबेटा ईलाजकऽ िमि पर अपि लगलऽ गेलइि। ओतइ दाह-संस्कार आ क्कया कमषकेलकइि। गाम मे जे रामबाबू जमीि अपि क्चताक्ल खाक्तर रखि छलाह, बेटा बेच लेलक्खन्ह।अकरे कहइ छइ माईटो िसीब िव। जे गामक संबंधकऽ भइ जीबि क्भेलाह उकिर अंत एहि।

मु कि केि (लघुकथा)

रामबाबू भारत सरकार मे पैघ पदसऽ सेविनिृति भेलाक बाद क्दल्ली मे रही रहल छलाह। कनछु क्दि पूषि क्दल्ली मे उनकासऽ भेट करऽ गेलौ। बड खुि भेलाह। हुनक धीया- पुताकऽ हाल चाल पुछला पर ओ त मौि छलाह मूदा हंक्सते हुनक शीमती जी जे कहलीह से अहुं सब सुइि क्लयअ।

क्खसस्सा आगु बढ़ाबऽ सपक्हि क्हनक घर पक्रिरकऽ बारे मे करि बुइझ क्लयअ। रामबाबूकऽ तीि टा बेटा छलइि। जेठ बेटा कविनक बेिी पगक्लिल छलक्खि। ओ पक्हि क्लि इि, बाद मे अपिासऽ संताि विि करबाक ििदा देलाक बाद विवक्हत जीिि अलग रहीकऽ क्लतबइ छक्थ। दोसर बेटा विदेि मे रहइ छलइि आ ओतइ स्र क दुघटिा मे अकाल मृत्युभऽ गेलइि। तेसर बेटा जे डाक्टर छलइि,के जक्लदये िक कुल-िील देखकऽ मैक्थल पक्रिर मे विािह करा देलक्खि।

तेसर बेटा - पुतोहु संगही रहइ छलइि।एक टा पोता सेहो भेलइि। सब दुख क्लसइ़ कऽ रामबाबू पोता संग खुिीसऽ समय क्लतबइ छलाह। की भेलइ, से ककरो विि बुझल, एक क्दि छोटका बेटा कैक्रयर आ िीक मौका बताकऽ बम्बइ सपक्रिर जायकऽ अिुमक्त मंगलाह।घर मे मातम जेका हाल भऽ गेल छलइि। हाक्र कऽ

रामबाबू पकस्थिकासऽ समझौताकऽ क अिमकतदऽ देलक्खि। फोि पर पोतासऽ भोर साझ गप्प सप्प होअइत छलइि।

एक क्दि पुतोहुकऽ फोि सासकऽ एलइि जे मु िकऽ ीक क्दि तका दइ लेल। रामबाबूकऽ कविया तुरंत पकाडत जीकऽ बजा क, तीि टा क्दि तकाकऽ पुतोहुकऽ बता देलक्खि। आब रामबाबू सब तैयारी मे लाइग गेलाह क्क फला फलॉकऽ बजेबइ, एिा भोज करब...। मोि मोि क्लस्ट बजट सब बिा िि रहइत।

रोज दुि बेगत मे घमथिष होइि जे ओकरा बजेबइ। ओकरा िवि। फलाकऽ मूंहछुआि कही देबइि।ओहो तऽ जिऊ मे अहीिा कहि रहइत। रोज दुटा िम जु इि आ एक टा कटइि। क्कछु अपि लोककऽ ओक्हिा िातोदऽ देि छलक्खि।अपि सोइच सोइच कऽ राम बाबू दुि बेगत रमि चमि करइत छलाह। कविया जखइि तखइि कहइ छलक्खि जे आहा बेिा मधुर िवि खाय लागब। हम त पाहुि मे क्यस्त रहब आ आहा अपि मौका सुतारऽ लगइ छी। चीिा आहाकऽ बहुत बढ़ल अइछ। राम बाबू कहलक्खि जे पक्हल पोताकऽ मु ि होइत आ हम मधुर िवि खाई, से िवि भऽ सकइत छइ।

कविया बजलक्खि- बेिा िवि खायब।

अंत मे दुि गोटे मे समझौता भेलइि जे एकटा भोर आ एकटा साझ मधुर खेताह।

रामबाबूकऽ कवियाकऽ तऽ चीीिकऽ बीमारी िवि छलइि। ओ कहलक्खि जे हमरा मधुर खाइत देख कऽ आहा डेकसी िवि करऽ लागब।

अक्हिा गप सरका दुि मे होइत रहइ छलइि। जे बाजा भुकी बन भऽ गेल छलइि, से कतऽ दि कबला गेलइि।

जखइि मोि िवि लगइि, मु िकिऽ चचा िुर कऽ लइ जाइ छलाह।

अही बीच बम्बइसपुतोहुकऽ फोि सासकऽ एक क्दि अयलइि जे मु ि िला केिकिऽ केिा भसबल जाइ छइ ?

सुीिकऽ दुि गोटे स्तब्धभऽ गेलाह। सास, पुतोहुकऽ विध्रि बता देलक्खि।मोकि मििरथ मोि रही गेलइि। पोताकऽ मु िकिऽ मििरथ।

ई सब कहऽ मे कविको रामबाबूकऽ कवियाकऽ चेहरा मक्लि िवि भेलइि। हंक्सते कहक्लह- ईएह हाल छइि। आब की गामबाली आ की भदेि। सब एके। कक्हकऽ ठहका मारक्लह।

कन्यादाि (लघुकथा)

आइ फेर मुरली क्मसरक घर मे मातम बला हाल छइि। सब चुप। ाित बैसल।एिा बुझाई जे क्कयो मइ गेल छइ। मरला पर तऽ क्बलाप होइ छइ, आ क्बलाप चुप्पीकऽ कटि घु इ छइ। अतुका चुप्पीकऽ कोिा थाहे िवि लगइ छलइि रामजी बाबु के। आि बेर घर मे घुक्सते देरी सब धीया-पुता गोर लगइ छलइि आ घेर कऽ बइस रहइ छलइि। अइ बेर क्कयो गोरो लागऽ िवि एलइि, बइसऽ कऽ बात त दुर। मोि भेलइि जे एखिि घुइ जाय के।फेर क्बाि कारर जिि घुरिाई उक्चत िवि बुझा परलइि।ओसारा परसएकटा आराम कुसी अपि घीचला आ बइस रहलाह।

रामजी बाबु संबंध मे मुरली क्मसरक ससुर लगइ छलक्खि। दुि गोटे एके िहर मे काज करय छलाह, तै अपेक्ष बेिा रहइि। गाम सेहो दुिकऽ लग पास छलइि तै अबरजात बेिा। किा काल मे मुरली क्मसरकऽ कवि या सक्ता, जे रामजी बाबुकऽ भतीजी भेलक्खि, भीतरसएलीह आ पैर छुईब कं गोर लगलक्खि। खुब सौभाग्यिती होऊ-के आिाीिद रामजी बाबु देलक्खि। भतीजीकऽ िरसडबडबायल आंईख देख कऽ बुझा गेल छलइि जे ओ हदय मजगुत कऽ कऽ एलीह अइछ। किा काल मे बच्चा लोटा मे पाइि अिलकइि। धीरे धीरे माहौल हल्लुक भऽ रहल छलइ। रामजी बाबु खेहल मेहल लोक छलाह तै अपि बजबासबेिा सुिबा पर जोर देि छलाह।एहि क्स्थक्त मे मोिकि भरास वकिलऽ कऽ

जगह देि छलाह।

दु घंटाक करीब बीत गेल छलइ। रआबजाक ललका िरबत पी चुकल छलाह। आब चाह बइि रहल छलइि।सब बात खुइल कऽ सोझा आइब चुकल छलइि। मुरली क्सर अपि बेटीक कथा क्स्थर कऽ चुकल छलाह। टकाकऽ वाितीकऽ दसे क्दि बाचल छलइि। जमीि बेचऽ गाम गेल छलाह। ओतऽ औि पौि दाम पर लोक जमीि लेबऽ चाहइ छलइि। सब खगता बुइझ गेल छलइि।अही जमीिक भरोसे ओ होबऽ बाला कुटुम्बकऽ पाइ गछि छलक्खि। आब त सब ग़ ब़ ा गेलइि। पोवििडेट फंडससब पाइ गाम मे जिऊकऽ मे खचषकऽ चुकल छलाह। ततेक ि लंफलंफा गऊंआ सब कऽ देि रहइि जे अखिा हथपईच बचले छलइि। बाकी जे रहल सहल छलइि से बच्चा सबहक पढ़ाइ आ बेटीकऽ कथाकऽ दौरहट मे गंिा चुकल छलाह।

मोि क्सजाजसमुरली क्सर अपिकऽ छोट वि बुझई छलाह।क्करािकऽ िकिरी रक्कतो, धीया पुताकऽ अंगरेक्जया स्कुल मे पढ़ेलाह। कक्कयाससुवि छलक्खि जे जमािा बदलऽ बाला छइ। िक पढ़ल क्लखल बुच्चीकऽ क्वयाह मे आब गिऽ वि प़ तइ।ओ बेटा-बेटीकऽ कक्कयो दु रंग वि केलाह। उिका कवििया काकी कहबो करय छलक्खि जे बेटीकऽ पढ़ाइ पर अतेक पाइ क्कअए फेकइ छह। सरकारी स्कूल मे िमि क्लखा दहक आ ओइ पाइकऽ जमा करह। गीिती काल काज एतह। मुरली

मसरकऽ तक्या ई बात बुढ़याकऽ फुंस लगइ छलइि।कहथि- "काकी सब अपि अपि भाग लऽ कऽ अबइ छइ। जमाि बदइल रहल छइ। पहि बरागत, कन्यागतकऽ पाइ दइ छलखि। फेर दि बदललइ आ कन्यागत, बरागतकऽ पाइ वाि लगलखि। आब फेर दि घुरतइ, बरागतकऽ वाि ती करऽ पृ तइि।"

ई त छलइये जे कयो वािय, वाि ती हेबे करतइ। मुरली मसरकऽ पुरा भरोसा छलइि जे अपि बुच्चीकऽ ओ िकसपढ़ेला लखेला अइछ, ऊपरसघरो िमी छइि, कुल-िलकऽ त कहबो िव करी, सब बृ का घर मे कुटमैती, तै कथा मे दकत िव हेतइि

सब गलतफहमी धीरे धीरे दूर भऽ रहल छलइि। सब जगह बोली लगइ छलइ। कोि ि कोि काररसई हुईस जाइ छलाह। कतउ ससुर अफसर िव होबाक कारर, त कतउ पाइ कम गिबाकऽ कारर, कतउ दुर होबाक कारर त कतउ लग होबाक कारर, कतउ िहर मे पढ़बाक कारर त कतउ महािगर मे िव पढ़बाक कारर, कतउ बेिी पढ़ल होबाक कारर त कतउ कम पढ़ल होबाक कारर, कतउ स्कि सिजेबाक कारर त कतउ मोटर मे जयबाक कारर।

अइ स्थत मे एक जगह मोि मिा कऽ कथा स्थर केि छलाह। पाइ कौ िकऽ बेबसथा लेल गाम गेल छलाह- ओतऽ सब

अटकऽ पट भऽ गेलइ। दु चाइर संबंधी लग हाथो पसारलाह, ओतउसखाली हाथ भेटलइ। आब बचल छलइ ई हिरक "घर"। बडड ि ि आ ैकिसमुरली बसरक बाबु ई जमी कीि कऽ घर बि छलथि। पुरा घर त कच्चा माइट आ भीतक बि छलइ, जकरा कालकमेर पका ईटा मे मुरली बसर अपि कमाइसबदलबे छलाह।

घर पर पढ़ल वलखल गुरल बुच्चीकऽ देखइ छथि। ककरो संग हाथ तऽ वि पक ा देथि। मुरली बसरकऽ घर मे घुसते आंगिसपुछलथि जे भऽ गेल होइत पाइक बेबसथा।

ई सुवते सऊंसे देह मे आइग लाइग गेलइ- "गाम मे सब मौकेकऽ ताक मे अइछ। माइटक मोल सब माइग रहल अइछ। उपरसबंटिरा िला कागज मे सेहो किछु कमी छइ। जेकरा दु टकाकऽ औकात वि, ओहो वकरंग वभरंग देखा रहल अइछ। सब गामक घर घरारी बेच लेब तखि वाितीकऽ पाइ वि पुइ रहल अइछ। "

फेर चीकरइत बजलाह-" की करयई। बुच्चीकऽ माइ वदअय। जहर माहुर खुआ वदअय।"

बुच्ची दोसर घर मे बाछाि पर जा कऽ कविित पइ रहलीह।

सवरता एक बेर घरिलाकऽ देखऽ जाइत छइथ,फेर दोसर

घर मे बेटीकऽ सम्हारऽ जाइत छथ्थ।

चार तरफ अन्हार देखा रहल छलइि। कतउसकोिा बोल भरोस सेहो िवि। िहरे सासुर सब लेल बेटीकऽ माय भेिं " अछोप" भऽ गेल छलीह। सब एिाई गेिाई छोव देिं रहइि। लोककऽ डर होइ क्क कही क्बयाह मे पाइ ि माइग लइस िा कतउ जायकऽ तऽ िवि पइ जाय।

एहि समय भऽ जेतइ से सक्रता सपिा मे िवि सोचिं छलीह। तीिा भाइकऽ एतऽ राईख कऽ पढ़िं छलीह। चाइर टा देिर अतइ पईढ़ लीख कऽ आइ पाइ बला बिल छइथ। ई सत छइ जे घर साक्बकक छइ, मूदा बाकी सब खचषत उएह करय छलीह।

आइ देखू क्कयो झाक्खयो पारऽ िवि अबइत अइछ। बुझाइत छइ जे बेटीकऽ जन्म देिं दोरी भऽ गेलीह। आइ रामजी ककाकऽ देख कऽ सक्रताकऽ कोढ़ फाइट गेलइि। कहलक्खि - "सबहक बेटीकऽ क्बयाह होइत छइ,हमर बेटी की कुमाईरे रहत। आहा हमर भाइ सबकऽ कक्ह देबइि जे उिका सब लेल हम मइ गेल क्छयइि।"

रामजी बाबु कहलखिन- "आइ तक की एहिना भेलइ अइछ। ब्याह, जन्म, मरन सब उपरसँ लिखा कऽ अबइ छइ। घबराऊ नहि, कन्यादान हेबे करतइ।" बोल भरोस दऽ कऽ ओ विदा भेलाह। फेर अपन गाम मे सरिताकऽ भाइ सबकऽ जिम्मेदारीकऽ अहसास करयेलखिन।

अइ बीच मे समय पर पाइक व्यवस्था नहि होबाक कारन स्थगित भेल कथा ग़ड़बड़ा गेलइन। सरिता बडड दुखी भेलीह।

सरिताकऽ भाइ सबकऽ बहिनिक घरक परिस्थितिकऽ जानकारी नहि छलइन।उनका सबकऽ ईएह बुझल छलइन जे ईएह सब मीनमेख निकाइल कऽ कथा निश्चित नहि करय छइथ। आब सब अइ विषय पर अपन जिम्मेदारीकऽ संग फुरसये सही, गंभीर भेल।

अही बीच मे बगलेकऽ गाम मे एकटा सेनिकऽ अधिकारी लड़काकऽ कतउ ब्याह निश्चित भेल छलइ। लड़का छुट्टी लऽ कऽ गाम आइब गेल छल।कोनो कारनसँ ल की बाला ई कथासँ मुकरि गेलइ।आब सेना अधिकारीकऽ घरवाला सब लड़कि कथा ताकऽ लागल। कोनो तेहन कथा नहि भेटलइ। छुट्टी खत्म होबऽ बाला छलइ। हाइरे कऽ मुरली बाबू लग कतऽ कथा पठेलकइन.........दस दिनक भीतर ब्याह दान भेलइ आ बर-कनिया बिना जानिगी चिन्हे करबाक लेल अतऽ सदाक विदा भेल।

सक्रताकऽ आब कहबी पर पुरा क्वसा िस भऽ गेलइ- क्वयाह, जन्म आ मरर उपरेसक्लखा कऽ अबइ छइ।

अइ कन्यादा िसउ िका सर समाजक असली चेहरा देखबाक अ ि भ भेलइ। जाबइत काज र्वि पृ इ छइ, सब ि के रहइ छइ।

आइ फेर रामजी बाबु आयल छथ्य। ललका िरबत पी चुकलाह। मुरली क्वसर,सक्रता आ बचल पाहु परख सब उ िका घेर कऽ बइसल छइ। चाह जलखइ सब आइब रहल छइ। हंसी ठहकाकऽ फुलझ ी सब छुइट रहल छइ। रामजी बाबुकऽ याद पृ ई छइ जे एकटा ओ मातम बाला क्वद छलइ आ एकटा ई क्वद छइ। बजलाह- " सब क्वद एक ि होत हो रामा।" जीतल काज क्वा पाइये भेलइ।

कर्व िया काकीकऽ मुरली क्वसरक गप्प आइयो मो छलइ- सब बच्चा अप्पा अप्पा भाग लऽ कऽ अबइ छइ। एहि ि क कथा मुरली क्वसरकऽ हेतइ, से सब अचंक्वत अइछ। ईएह छइ "कन्यादा"।कहक लेल दा, ई त अइछ जीि क असली जा।

पछताि (लघुकथा)

आइ पुरा डीह टोल मे चहल पहल छइ। रिे बिसरक पोता महेर विदेिसआइब रहल छइि। ओ गाम मे कुलदेीकऽ पातइ सेहो देतइ। सब इंतजाम बात भऽ गेल छइ।ओ पक्िहिेसकविया काकीकऽ बेटाकऽ बैक एकाउंट मे पाइ पठा देि छइ। आब देरी छइ त बस ओकरा पहुंचबाक।भइ डब्बुक तसमई बिल छइ। पुरी छिी रहल छइ। रसगुल्ला पक्िहिे बजारसआइब गेल छइ। कयेक बेर लोककककऽ वाििती भेल छइ। सब मुी पाछु दु टा कऽ रसगुल्ला आयल छइ। ज़ दा आम सेहो कटा कऽ राखल छइ। थो` काल पक्ि फोि आयल छलइ जे ओ पहुंचऽ बाला अइछ।पुरा हुइल माल मचल छइ। कियो ओकरा देखिहो िवि छइ। फेसबुक पर किछु लोक देखलकइ आ िटिसएप पर गप्प स का भेल छइ। मऊगी महाल मे बेिी बेगरता छइ।

कोइलख िली कहलकि -उकिर कविया सेहो संग छइि।

ओइ पर धमौरा बाली क्टपलकि- ओ तऽ आि जाइत छइ।

राीपुर िली कहलकि- आहाकऽ त सब बुझल अइछ। कक्ियो भेटो भेल अइछ? बजेबो केि छल?

धमौरा िली - हमरा कअए बजैत। हम तीि मे की तेरह मे। वजिकासअपेक रहइि, ओ ि जेताह। हम त जे सुिल से कहल। हमरा तीि पाच िव रहइत अइछ। किको ीक लागय त लागय, अधलाह लागय त सेहो हमरा िव परिह। दु कौ अपि घर मे ओ बेि खेतीह।

जबदौल िली बजलीह- छो ु ई जाइत आ अिजाइत बाला गप। गाम मे त आब अिजाइत कवया सब आइब गेल छइ। ओ सब तं सद वदेि मे रहइ छथ। सबकि बाहरे बाहर पढ़ई आ रहइ गेलाह। आब की कोि घर बाचल अइछ। रामजी आ सीताजीकऽ की एक जाइत छलइि?

बस िर भऽ गेलइ। सब गामक अही तरहक विह आ िबकी कवया सबहक चचा।कयो आटा साइि रहल अइ, कयो परथि दऽ रहल छइ, कयो मैि मे कंजूसी िव करबाक लेल कह रहल छइ, कयो पुरी बेल रहल अइ, कयो वाटी बि रहल अइ, कयो पुरी छाइि रहल अइ। सऊंसे टोलक स्तीगर अपि लागल अइछ। आखर ईएह खािदािक लोक आइब रहल छइ।कवया काकी सबकऽ थम्हि छथ।

ताकते मोटरकऽ हाििषबजलइ। सब माथ पर िआ लइत दलाि

कर्दि लपकल।

देखते अंदाज लाइग गेलइ जे महेर, उकिर कवि या आ कोरा मे बच्चा छइ। महेरक चेहरा अमि ि रक्तान्तरक जेका छलइि।" देह पर भुलकी रोईया"- ई डीह टोलक कान्हासी छइ। महेन्द्रकऽ देखते बुझा गेलइ जे ओ अइ परिवारिक क्रस्सा अइ।

महेन्द्र आ उकिर कवि या सबके गोर लागऽ झुकलइ, तखि झट दं सुगाि िली कहलखि- पहि भगि ती घर चलु। उका गोर लवायउ, फेर सबके लगइत रहब। कयो भागल िवि जाइ छइथ। सुगाि िली मौका देख कऽ अपि बुझियारीकऽ दाि जता दइ छथि।

जतऽ भगाि भगि तीकऽ बात बीच मे आइब जाइ छइ, ओतऽ मऊगी मेहर वि रोध िवि करत। सब हा मे हा कलेलक आ वि दा भेल भगि ती घर।

पुराि घर सबहक चौखट बेि जगह िचे रहइ छइ। कवि को ्याि इमहर ओमहर भेल की माथ मे चोट लागल। आब खााि-पाि पर बेि ्याि लोक बच्चेसदेबऽ लगलइ या। िवि तं पहि ई छह फीटा लोक कहा होइ छलइ। घरक चौखट वारहथक लंबाईसचाइर

आंगुर बेिी रहइ छलइ।अतउ भगिती घरक चौखट कम्म ऊंच छलइ।पुरिा बारहथ छोटे ऊंचाईकऽ हेताह। ईहो भऽ सकइ छइ जे भगिाि भगिती लग माथ झुका कऽ जाइ, तै जाइि बुइझकऽ दरिज्जा छोटे रहइत होइ। जे भी सच होइ, िबि लोककऽ माथा मे चोट लइगते टा छइि।

पहिहे महेन्द्रकऽ चेता देल गेलइि जे माथ झुका कऽ जायब। तखिि पाछुससरया बाली बजलीह- अतेक काल थम्हलऊं त कििी आरो थम्ह जाऊ। पातइ चढ़अ क्हयउ, तकर बादयभगितीकऽ गोर लागु।

ईहो पस्ताि एकमतसपाक्त भऽ गेल। आइ कयो ककरो िरोध िवि कऽ रहल छइ। कही कोिा िचार दी आ ओ िवि मािल जाय। तखइि तऽ बेजती भऽ जाइत। महेन्द्रकऽ किया की बुइझ लेत?सब अपि अपि िल्यु बढ़बऽ मे लागल अइ।

आब पातइ क ओकयाि ि्र भेल । इमहर खुसुर फुसुर चइल रहल छल। जे सब महेरकऽ कियासकि दुर मे छलीह ओ सब आंईखे आंईख मे सब गप्प कऽ रहल छलीह।आंईख सऽ ओकर एक्सरे क्लया रहल छलइ।

आरो टोलकऽ बच्चा आ पुर ख पातर सब बहरी मे जमा छल। पातइ भेल। परसादी बंटायल।

रमेि क्सर बजलाह- ई बंगक्लया कतऽ कऽ रसगुल्ला छइ।

महेि र बाब देलक्खि- हं। हमरा कतऽ त ओकरेसअबइत अइछ।

रमेि क्सर- आब बंगक्लयोकऽ ओ बात ि वि रहलइ अइछ। ओकर बाप जे बि बिइ छल- "अदुत"।

तखि जीि न्र बजलाह- कका रहअ क्दयउ। हम सब त अकरे क्मठाई खाइत बढ़लऊं अइछ। जखइि ओकर बापकऽ बि ायिल खेि हे ि वि छी, तऽ चचा कऽ कऽ की फायदा।

रमेि क्सर- कमाल करय छं तो सब। तु ि वि खेलह त ओइ मे हम की कक्रयह। हम खेि छी, तै बजलऊं। तोहर बाप तऽ रोज साझ मे बंगक्लया कतऽ जाइते छलखुि।

जीि न्र- देखू बाप पर ि वि जाऊ। हम आहाकऽ देखइ छी, आइ

काइल बात बात पर आहा बापकऽ बीच मे घुसा दइत छी। कका छी तै। िव तं हम देखा दइतऊं।

रमेि क्षसर- तुं की देखेबह। हम तोरासपुईछ कऽ बाजब! एलाह आय ब़ का। तोहर बापकऽ त मुंह हमर सामि खुक्जते िव छलइि। ई दु टा पाइ ठीकेदारी मे कमा लेलाह अइछ त हमरे सीखबइ छइथ जे की बाजु आ की िव बाजु।

जीिन्द्र- देखू कका हम अंक्तम बेर आहाकऽ कव्ह रहल छी।आब अततः भऽ रहल अइछ। हमर संयमकऽ परीक्ष िव क्लयह।

ईएह गमा गमी भऽ रहल छलइ। बेचारे महेर अपक्सयात भऽ सब देख सुइि रहल छलाह। जोरसबहस सुइि आंगिसकविया काकी दौ लीह। फेर थो थाम लागल। सब परसादी खेलक। कक्छु लोक विदा भेल आ कक्छु बइसले रहल।

महेन्द्रकऽ ई महािगरक " रोडरेज" जका लगलइि। कर मे कराक भऽ जाइ छइ। अखिल ईई होइत होइत बचलइ।

महेन्द्र ताबइत देखइत छइथ जे रमेि क्षसर आ जीिन्द्र कोिि गप्प

पर कोनो मे ठार भऽ कऽ ठहका मारि रहल छइथ। महेन्द्र त बहसक बिच्च सुअइत कऽ घबरा गेल छलाह। बाकी लोक खाक्तर धनि सनि। सब सामान्य भऽ गेल छलइ।देख कऽ बुझेबे किनि करीतय जे अखनि मारा पीटीकऽ निबत एतऽ भेल छलइ।

महेन्द्र अतुका लोकक आबेनि देख कऽ अचम्भुत भऽ गेल छलाह। ओ अपनाकिऽ अइ भी क क्हस्सा बुझअ लागल छलाह। कवियै काल मे ओ ओतऽ घुइल चमल गेल छलाह। बुझेबे किनि करय जे पक्हले बेर ओ अयलाह अइछ।ओ कतऽ सअक्नातैथ। उकिर चाता हरेन्द्र चासर, अंकम बेर बाबा रिन्द्र चासरक शाद मे आयल छलाह। ओइ समय महेरकऽ जन्मो किनि भेल छलइनि।

आक्खर कोनि एहनि टीस छलइ जे हरेन्द्र चासरकऽ अपनि चातृ भूचासविरक्त भऽ गेल छलइनि।

बात तक्हयाकऽ छइ, जक्हया असली मे जमीदारी चइल गेल छलइ मूदा खूकि जमीदारी किनि गेल छलइ। ई खुकि जमीदारीसक्क किो हत्याक बात किनि छलइ, अकर अथषछलइ - " फुक्सयाही नानि "। ई रिनि बाबुकऽ सब कक्छु लऽ कऽ डुबा देलकइनि।

िरिे बाबुकऽ ब्याह अपिासपैघ जमीदारक बेटीसभेल छलइि। िरिे बाबु दु भाइ छलाह। छोटे मे टुगर भऽ गेल छलाह। जेठ भाइ चमि बाबु इकिर पालि पोरर केलक्खि। िरिे बाबु अपि भाइ भौजाइकऽ परम भक्त भऽ गेल छलाह।ई भक्तिकऽ कछु लोक आि रंगदऽ देि छलइि। िरिे ब्सर आ उकिर भौजीकऽ संबंध पर कयेक टा खिस्सा कहािी उकिर सासुरो मे घुमइत लुटि बाबुकऽ कािि तक पहुंच चुकल छलइि। िरिे बाबुकऽ कवियाि के, अतेक भाइ भौजाइकऽ आगापाछु घुमिाईि ीक िवि लगइ छलइि। उकिा अिुसार आहाक भाइ त घरक धिसिआहाकऽ पलला पोसला। अहुंकऽ त आधा क्सि्सा भेल। अइ मे उपकार की?सत की छलइ, ई तऽ उकिर सबहक संग दुवियासर्वदा भऽ गेल छइ।

अक्हि छोट छीि गप्प पर टेिि मेंिि होइत छलइि। एकबेर िरिे बाबुकऽ कवियाि अपि तीिि टा छोट छोट संतािि संग िहिर गेल छलक्खि। वदिागरी लेल खबास गेलइि। िरिे बाबुकऽ ससुर लुटि बाबु वदिागरीसमिि कऽ देलक्खि। फेर की छलइ। िरिे बाबुकऽ चटसउकिर भाइ दोसर ब्याह करा देलक्खि।अइसलुटि बाबुकऽ अपि िािि मे गुस्ताखी लगलइि। ओ अपि बेटीकऽ ओतइ बसा लेलाह। चाइर बेटा आ एक बेटी छलइि। ओ अपि बेटीकऽ बेटा बुइझ पाचम क्सि्सादऽ देलकिि।पाचम क्सि्सा बक्तिम छलइ, क्लखतम िवि।

रिरि बाबु क्कर क ाि मे आइब कऽ दोसर क्वयाह कऽ तऽ लेलाह लेकि अपि पक्हल कवि या आ बच्चा सबकऽ क्वसइ वि सकलाह।

जमीदारी त पक्हिहे खत्म भऽ गेल छलइि। ऊपरसअइ तरहक पक्रिरिकऽ क्छन क्मन होइत देख कऽ रिरि बाबु अदषक्किम्त जका भऽ गेल छलाह। सब

संपइत सब विलाय लागल छलइि। ऊमहर िहर मे संपइतक बल पर हरेर आ आर बच्चा सब िक पढ़लकइि क्लखलकइि। बापक जगह त आर क्कयो वि लऽ सकइत छलइ।ई कमी ओकरा सब क्दि लगले रहलइ। उपरस" भवाि मािकि" तगमा।लुटि बाबु जाबइत जीलाह ताबइत त पाचम क्हस्सा भेटलइि। बाद मे माम सब क्दअयद बइझ परेि ाि करऽ लागल छलक्खि। हरेर बाद मे विदेि मे िकरी करऽ लगलाह।उकिर आर भाइ सब सेहो जतऽ जतऽ िकरी केलाह, लालाभाइ जका ओतइ बइस गेलाह। आपसी कोि हेमक्हेम भेबे वि केलइि।

हरेर अइ सब दुखक कारर अपि क्मता रिरि बाबु आर कका चमि बाबुकऽ बुझई छलाह। क्कछु बरख बीतला बाद रिरि बाबु त अपि सासुर एिाई गेिाई ्रि कऽ देि छलाह लेकि उकिर कवि या फेर कक्हयो सासुर वि गेलीह। सऊतीि तर बसिाई उकिा मंजुर वि छलइि। तक्हया दु तीि क्वयाह सामान्य गप छलइ। लेकि ओ बडड सक्कमािी छलीह। ओ रिरि बाबुकऽ जीबइत सासुर विये एलीह। जखइि रिरि बाबु मरलाह त ओ उकिर शाद

मे एलीह। हरेरकऽ जेठ बेटा होबाक कारर बापक मुखाक्नि किऽ अधिकार भेटलइि। माछ मासक परात जे हरेर, उकिर भाइ सब आ माय िहर घुरलीह, से फेर कहियो सासुर िव गेलीह।

हरेरकऽ ततेक ि कुंठा घेरि रहइि जे ओ मातृक मे सेहो मायकऽ मरलाकऽ बाद माम सबससंबंध िव वि भा सकलाह। सब भाइ सब मिल कऽ जमीि जथा बेच लेलाह।ओइसओतुका समाज सेहो इिका सबकऽ वि इस देलकइि। पैतृकक आवश्यक व्यवस्था िरेि बाबुकऽ मरलाहकऽ बाद जजर्ष भऽ गेल छलइ। अइ पच्च ासबचऽ लेल ओ सब अपिाकिऽ अलग थलग कऽ लेिि छलाह।बाकी भाइकऽ त िव लेकिि हरेरकऽ कवियाकऽ बडड मोिि करयि सासुरक गाम जयबाक, लेकिि हरेर कहियो अिुमित िव देलखिि। हरेरकऽ कवियाा मरऽ काल अपिि बेटा सबकऽ कहलखिि जे आहा सब अपिि कुलदेिीकऽ दििि जर र कऽ लेब, भऽ सकाय तऽ ओतऽ पातइ देब।

जीििि उतार चढ़ािि संग चइल रहल छलइि। आपसी सामंजस्यकऽ अभािि परििार मे देखाइत छलइि। कीयो म्ध्यस्थ करऽ बाला िव छलइि। मुंडे मुंडे मतर्भिन्ना बाला हाल छलइि। हरेर आ उकिर भाइ सबकऽ कियो सीखेबे िव केलकइ जे कका काकी , गाम घर आ सखा संबंधी भी किछु होइ छइ। ओ सब संबंधी बुझबे िव केलकइ। माय आ भाइससबहक कुचेिि सुििलकइ। ईएह

सब मोि मे भरलइ आ ककरो पक्ष ममतकि भाि िव पिपलइ।

समयक अपि बहाि होइ छइ। उिकर पैतृक पक्ष िर बहुतही आगु बइढ़ गेल छलइि। हरेरकऽ घर मे पद आ पैसा भेलाक बाि जुदो भाबंि िव बुझा रहल छलइि।

महेन्द्रकऽ उएह मायक गप्प सुतला मे झकझो इत रहइ छलइि। आब गाम जायसरोकऽ बाला क्षता हरेर सेहो िव जीबइ छब्थि। गाम आइब अपिकऽ बीच पाइब महेर सब पक्षलुका गला वकिी क्षसइ गेल छइथ। अफसोस होइ छइि जे मायक जीक्षते क्षअए िव एलाह।

आइ िव एला गेलाक काररं बहुत रास संबंध मे गाठ पइ गेल छलइ। आब सब गाठ खुइल गेल छइ। आब अफसोस ईएह होइ छइि जे क्षयैक ि एकटा ठाि उिको अपि पैतृक गाम मे छइि। जखिं अकर चचा होइ छइ,रिं क्षसरक अइ घरक पुतोहु , जे आब कवया काकी भऽ गेल छब्थ, क्षिकर काि ठार भऽ जाइ छइि जे कही ई क्षअयद बइि संपइत ि बंटा क्षलयाय।ई सोक्षते सब आबेि फुरष भऽ जाइ छइि।होइ छइि जे कही ई रहअ लेल तऽ िव आयल अइछ। जायकऽ चचा िव कऽ रहल अइछ।क्षअयद बाद त चढ़ेबे करतइ। हमर संपइत बंटबाईये कऽ माि ति। ईएह सब सोक्षते छलीह की तखिं मोटर फेर

आइब गेलइ।

महेन्र मोटर मे सपवरिर बइसल अपि डीह टोलकऽ देखइत जा रहल छलाह।ओकरा अपि कतताक विरष पर पछतािि भऽ रहल छइ। एकटा कादागरी सिक छोट बातक कारर ओ अपि खािदािसकइट गेल आ झुठक िािक बकल िदी पर चईढ़ गेल।पछतािि तऽ िरि कासरकऽ सेहो भेल छलइि दोसर कायाहक बाद, लुटि बाबुकऽ सेहो भेल छलइि बेटीकऽ घर उजरलाकऽ बाद, हरेरकऽ सेहो भेल छलइि सबसं कटलाकऽ बाद। आइ महेरकऽ पछतािि भऽ रहल छइि, सबसं जुि लाकऽ बाद।

पुराि कहबी छैक- "अब पछतािि होत क्या, जब कचव या चुग गइ खेत", एहि लेल कहल गेल छइ।एहि आबेि त अपिसिभेट सकइ छइ, विदेि मेकऽ केकरा कचन्हइ छइ। ओतऽ तऽ आबेिकऽ मोल छइ। भारी मोिसिमहेर घुइ रहल छलाह। अइ संग संग ककछु विरष सेहो लेबाक भािि अबइत जाइत रही रहल छलइि।

<u>उपराग (लघुकथा)</u>

दमि बाबु आइ बीसो पच्चीस बरखक बाद बच्चि कि सासुर एलाह अइछ। कतऽ सऽ अक्कातैथ। बच्चि अपि िहर मे डेरा पर रहइ छलीह। पच्छि बच्चिाई क्मसरकऽ जतऽ जतऽ बदली होइि, ओतऽ रहइ छलीह। बाद मे जखइि बच्च्या सब पैघ भेलइि त ओकर पढ़ाइ दुआरे राक्चये धअ कऽ रहलीह। बहिाई अपि असगरे बदली बला िहर मे रहइ छलाह। जखइि िहर लग रहइि, तऽ िइि. इब मे राची आइब जाइ छलाह........मूदा बाद मे जखइि बदली दूर भऽ गेलइि.........तखइि दरमाहा लऽ कऽ महीिि महीिि राची अबइत छलाह। कि त होइि लेक्कि धीया पुताकऽ पढ़ाइ आ भविष्यकऽ लेल माय बापकऽ त्याग तऽ करहे प़ तइ।अच्चिि क्दि क्कातइत छलइि।

दमि बाबु क्सन्दरीसइंजीवियरंग केलाक बाद बाहर विकइल गेल छलाह। कोिि भी जग परोजि मे िक्मल वि होइ छलाह। आइ जेका सस्त हिाई याता तक्चया वि रहइ। दमि बाबुकऽ सोच छलइि जे जतबा आबऽ जाय मे खचा होइत, ओतबा जे घरबइयाकऽ पठा देबइ त बेिी मदद हेतइ। िर मे तऽ संबंक्चयो सबकऽ डालर भेटइि त िक लगइि। क्कको दमि बाबुसकोिि विकाइत वि छलइि। जक्चया ओ क्दल्ली अबइ छलाह......सब सगा संबंधी भेट करऽ अबइि। सबकऽ जाइत काल क्कछु ि क्कछु दमि बाबु देबो करक्ति। खुब जि छलइि। बि बि कुटुम्ब

सब सेहो डालरकऽ चकर मे भेट करऽ अकाते छलइ।सब ठीक चइल रहल छलइ।

दमि बाबुकऽ कादेि कक्कयोसर्वि सोहाइ छलइ। दु टा पाइ बेिी भेटलइ, तै ओतऽ गेल छलाह। बाद मे धीया पुता आ आंगि सं, भारत घुरबाक तैयार वि भेलकि, तै ओतइ रही गेलाह। जखि बच्चा सब व्यविस्थत भेलइ, भारत घुरबाक सोचऽ लगलाह।बहुत रास बदलाविकऽ बारे मे पढ़इत सुवित रहइ छलाह। अइ बीच मे बक्कि सेहो एकक्कि बडड उपरागसभरल क्वटी पठेलक्खि-

"तुं सब ब़ का लोक भऽ गेल छअ। हमर कोिा काज/ करदेिता मे वि उपवस्थत भेलह।गाम मे घर बिलिऊं सेहो वि देखबाक सेहंता भेलह। हमरा तोहर डालर वि चाही। हम तऽ पक्कहिे तोहर पठाओल पाइकऽ घुरेबाक चाहइ छलऊं..... मूदा तोरा तकलीफ हेतह, तै वि िपस केक्लयह। बक्कि लेल भाइकऽ काज मे सदेह ठार रहिाई , सबल बिबिइ छइ। हम सब कोिा क्मखारी छी जे पाइ पठा दइ छअ। कक्कयो तोरा छगुन्ता वि भेलऽ जे भवाि जमायकऽ देखी.....बक्कहि पुतोहु आ पोता पोतीसभेट करी। ओकरा आइब कऽ जे आिीिद देबऽ , ओइसबइढ़ कऽ कछु वि छइ। क्मसर तोहर दुक्खताह रहइ छथुि, से तऽ बुझले छह। आब गाम मे ओतेक दिाई - दार वि भऽ रहल छइि। आइब कऽ भेट कऽ जहुि। हमर क्मयाहक बाद तोहर जन्म

भेल छह। अपि बच्चा जेका तोरा मार्वि छलकुि...... से तो अबरजात बने कऽ देलह। हमरा पाइ कौ ी र्वि चाही। क्सरकऽ पेिि तऽ हम खचे र्वि कऽ पबइ छी। पाइ बक्चये जाइत अइछ। पर्क्ी त बच्चा सबहक पढ़ाइ-क्लखाईकऽ काररर हाथ वकिस्त भऽ गेल छल। तै तोहर पढ़ाइकऽ खचा र्वि उठा सकक्लयअ। मुजौि बाला तोहर ससुर ज्यो पढ़ाइयक खचा उठेलकुि तऽ बदला मे एहि सुनर हमर भाइ सि जमाय भेटलइि। बेिी सासुरकऽ लटर िटर मे र्वि प़ अ। बस एक बेर आइब जाह।देखबाकऽ बडड मोि कऽ रहल अइ।"

ईएह क्चटी पढ़लाकऽ बाद दमि बाबु बक्हकि सासुर आयल छलाह।बाहरो रहलाकऽ बाद दमि बाबु मे लंफलंफा र्वि आयल छलइि।ओ अखिी गाम एलाह पर पैसेजर रेि मे चढ़ई छलाह। गामसतऽ दुईये टीिि पर उकिर बक्हकि सासुर छलइि।कतेक बेर ओ आयल गेल छक्थ। बडड भी जखइि रेकि बोगी मे भऽ जाइ छलइ त ओ पौदाि पर लटईक कऽ जाइ छलाह। ज्यो एक रेि छुइट जाइ त दोसर रेि कखइि आइत, ओकर कोिी ठेकाि र्वि छलइ......ओहोसबेिी जे ओइ मे अइ रेिसिकम भी हेतइ, तकर कोि गारंटी। क्कछु भऽ जाइ, दमि टीिि पर रेि र्वि कक्हयो छो़ लाह। एकबेर त रेि छुइट गेला पर ओ च़ुचि या एहि कोिी पाबइि मे सिािकि मोटरी कहिा पर उठा कऽ रेकि पटरी धेि धेि बक्हकि सासुर चइल गेल छलाह। बाद मे बुझला पर गाम मे सब क्वग़ ििहो रहइि अइ लेल। तक्हया एते कहा सोचाई छलइ।जायकऽ अइ त जायकऽ अइ। जे सिािरी भेटल,

पक ु आ पहुंच जाऊ। र्वि कछु भेटल त " चरर दासक कार" छइये। अइ कारक ओ खुब उपयोग करय छलाह। ओ पैरे चललासउ किा " चीर्ि"कऽ बीमारी र्वि भेलइि। अखिा उएह पक्लुका आत्मर्विशास पर कतउ आ कखिा र्वदा भऽ जाइ छक्थ।

बक्कि सासुर मे बतायल गप िप सब आइ मोि पड़ रहल छइि।उकिर बसरक माय (बक्कि सास) बडड क् गर रहक्थि। तक्या जे बुढ़ी क् क होइ छलइ, उकिा सब इंक्दरा गाधी कहइ। एक बेर गाम मे कोिा गप चललइ त दमि बाबुकऽ भावाि कहलक्खि - " हमर बाबी लग बंदुक छइ। आहा सबकऽ उकिर डर र्वि होइया। हमर मा त बाबीसखुब डराई छक्थि।"

दमि बाबु भावाकिऽ बयसकऽ छलाह, मूदा छलाह त माम। ओ चटसबजलाह- " हमरा लग तोप अइछ। जा कऽ कक्ह दयउि अपि बाबी के। हम सब र्वि डराई छी।"

तक्या दमि बाबु तोप देखिहो र्वि छलाह। गाम मे सुक्थि जे तोप, बंदुकसभइ गर तऽ बाईज देलाह।

कछु महीिकऽ बाद जखइि बक्कि सासुर गेलाह तं ओ बुढ़ी सास इंक्दरा गाधी एलीह। कहलक्खि-" ईएह तोपबाला पुर ख छक्थ। अइ बेर इकिर बाछाि राइत मे हमरे घर मे कऽ देबैि कर्विया।हम देखइ छयइि इकिर तोप"।

आब डरक मारे सकदम छलाह बच्चा दमि। बुझ्झ गेलाह जे भवाि, इमहरसऊमहर बात केलाह अइछ। गामक सुिल फकरा याद आइब गेलइि- "धी, जमाय आ भवाि, ई तीि वि अपि"। ओ त जे छइ से छइ, अखइि ई बुढ़ीसकोि विबटल जाय।आब राइत होबऽ मे बेिि देरी िव छलइ। डरक मारे दमकि हाल पातर भऽ रहल छलइि। खि ब्मसर लग जाइथ, खि बक्सि लग जाइथ, हम त मजाक मे कहक्लयइि। हमरा लग कोिि तोप िव अइछ। लेकिि एतऽ पाहुिकऽ सुिविया के। सब इिकर गप सुइि कऽ मुक्स्कया रहल छल।अगर बुढ़ी राइत मे बंदुक विकाइल लेतीह त दमि की करताह। ऊयाह क्वंता बेग़ ता मे क्वा खेहिे दलाि पर सुइत रहलाह। बाद मे लोक उठा कऽ खुयेलकइि। बुढ़ीसबाद मे दोस्ती भऽ गेल छलइि। ओ कहक्थि जे आक्खर उिकर बेटाक सासुर मे एकटा िर जन्म लेलक जे रबाब देलक। बच्चा दमि अपािकऽ िर बुइझ गाििक्त होइत छलाह।

खक्टया पर प़ ल दमि, कि ऊंघाइत छलाह।

ताबइत सुिवित छइथ जे बक्सि बाईज रहल छलक्खि- " कोि काज छलइ रेिसिऐबा के। उपरसअतेक दुर पैरे। हरही सुरही सब तं मोटरसऽ अबइत अइछ। हमर अफसर भाइ पैरे आइब गेल। आब तोहर देह पक्हलुका थो` छह। बडड थाईक गेल छह।पड़ रहअ।जखइि साझु पहर उठबऽ त एक बेर क्वनी दाईसभेट कऽ क्लयहुि। तोरा बडड मोि पा इ छथुि। मोि जु ा जाइ छइ जखइि िहरक लोकक सासुर मे िक लेल चचा होइ छइ।

कामनी दाईकऽ िमि लइते दमि बाबुकऽ अपि हुिका संग कातायल कद्दि याद आइब गेलइि। बच्चि कच्छ रहल छच्थि- कामनी दाई अपि जीबि इज्जतकऽ संग अइ गाम मे काता लेलीह। कक्ष्यो सुख िवि भेटलइि। दु दु टा कायाहो भेलइि। िवि जाइि ककर िजइ लगलइि ि कोि िक्त मे जन्म भेलइि। ओतेक टा घर िवि हिली कहऽ , ओइ मे असगर प़ ल रहइत छइथ। राइत काराइत कछु भऽ जेतइि तकऽ देखतइि। याद हेतह, दुसधा हजरा, ओकरे बेटा राइत कऽ दलाि पर सुतइ छइि।

कामनी दाई, बखारी चौधरीकऽ बेटी छलीह। बखारी चौधरीकऽ असली िमि दमिकऽ िवि बुझल छलइि। एतबा जिवि छलाह जे उिकर दलाि पर कयेक टा बखारी छलइि। गाम की, पुरा परोपटा मे ओतेक बखारी किको िवि छलइि। ओहीसउिका सब " बखारी चौधरी" कहइि। अतेक बखारी रहइि, तै बुइझ कायअ जे कतेक अन पाइि होइि।बखारी चौधरी ब़ का कलामी लोक छलाह लेकि दमिक कासर आ उिका मे दुगोला छलइि। दुगोला मतलब खाि पीि आपस मे बन। अबरजातो िवि। कर कुटुम्बकऽ एक दोसरा कतऽ एला पर पाबंदी िवि छलइ। बाकी सब पर लागू छलइ।

बखारी चौधरीकऽ दु टा कायाह छलइि। ब़ की कविया ओतेक िक देखबा मे िवि छलक्कि। तखइि अपि देख कऽ सुनर

दोसर कवि या केलाह। ओि तऽ बिकी कवि या बेि दुलार होइ छइ, लेकि बखारी चौधरी कतऽ उल्टा छलइ। चलती ब़ की कवि याकऽ बेि छलइि। बखारी चौधरीकऽ दुि कवि यासधीया पुता भेलइि। छोटकी कवि यासभेल धीया पुता सब क्यकि चुिमुि आ ब़ की कवि या सौ भेल धीयापुता सब जमुवि या रंगक छलइि।

जखइि धीया सब क्बयाह जोगर भेलइि तं बखारी चौधरी बर तकाई ि र केलाह। क्मनी दाई ब़ की कवि या सौ भेल छलीह।उकिे समयिस्क छोटकी कवि यासचुनी दाई छलीह। चुनी दाईकऽ कथा सुन्दरता लऽ कऽ एक जगह क्स्थर भेलइि। ल़ का धि सम्मइत बला छलइ। ब़ की कवि याकऽ जखइि पता लगलइि जे उकिर सऊतीकिऽ बेटीकऽ अतेक िक कथा भऽ रहल छइि.......ओ अटाबज्जर खसा देलकि। उकिर बात बखारी चौधरी माइतो बेि रहक्थि, फेर की छलइ। ओइ ल़ कासक्मनी दाईकऽ क्बयाह भऽ गेलइि। क्सन्दुरदाकि बाद जखइि बरकऽ ई धोखा पता लगलइ त ओ कोि बहाि चतुथीसपक्हिहे परा कऽ अपि गाम चइल गेल। ओतऽ सबकऽ ई बात बतेलकइ। ओ सब अपि लंगा छल। कहलकइि जे आब सासुर जेबाक वि काज, हम सब देख लेबइि।

इमहर बखारी चौधरी सब ई सोचइत -

" भेल क्बयाह मोर करता की।

धीया छोव कऽ लेता की।"

कयेक बेर पर पंचयतीकऽ सेहो पयास भेलइ, लेकि बर पक टससमस वि भेलइ। ईएह सब तेला बेलासकनी दाईकऽ बर ततेक ि परेि ि भेलइ जे एकि माहुर पी कऽ मइ गेलइ। उ न्ती समाचार बखारी चौधरी तक सेहो पहुंचलइ ि। कनी दाईकऽ सासुरसि वि कोि खबर एलइ ि। ि हिरे मे चु ी तु ी फोरल गेलइ ि आ जे कि मि लोकाचार छइ, से सब भेलइ ि। ऊमहर चुनी दाईकऽ दोसर जगह कथा भऽ गेलइ ि। अइ बयाहलऽ कऽ दुि सौतीि मे बडड ऊकटापैची भेलइ ि। बखारी चौधरीकऽ कयेक बेर थोर थाम करऽ पड़ लइ ि।

बखारी चौधरीकऽ देह आब उमर बढ़लासखइस रहल छलइ ि। ओ चाहइत छलाह जे कहूि कोि सुपातरक हाथे कनी दाईकऽ बाईध दी। मौकाक तलाि मे सब बेर सभा गाछी जाइ छलाह। एक बेर कि क बयसगर बर भेटलइ ि। बेि ओकर खोज खबर वि लेलकि आ सोझे सभागाछीसऊठा कऽ लऽ अि लखि। ल काकऽ अतबे बतेलकि जे बेटीकऽ बयाह राइत मे जमाय छोव कऽ चइल गेलइ। वि चतुथी भेलइ आ वि मधुशाि री। ि रस्त आ लोकाचार दुि लेखे ई बबाह पूर षि वि माि ल जेतइ आ ऊपरसल का सेहो मइ गेलइ।ओ बयसगर बरकऽ फुसला कऽ आ धि कि लोभदऽ कऽ गाम परलऽ अयलाह। कनी दाईसपुछबाक काजो वि। कपृ ाक गुव या जेका कनी दाईकऽ फेर बयाह

दाि भेलइि। सब ठीक-ठाक बुझाई छलइ। दस वर्दि बाद बानदाई लऽ कऽ ल का ओतऽ सचलल। जखइि ओतऽ सपहुंचािमा आ कोिी खोज पुछारी िवि एलइ त इमहर चवंता भेलइ। बानी दाईकऽ मोि त पवहिहेससिंवकत छलइि।जखइि बखारी चौधरी ल का बारे मे पता लगेला त भेद खुललइ। ओ बर पवहिहेसबायाहल िवि, चौदह बरखक बेटो छइ। कोिी काज िवि करय छइ आ सब अिगुरसआगर छइ। बहु बेटा जे मिी केलकइ त खीस मे दोसर बायाह कऽ लेलकइ। बाद मे जखइि घर गेल त सब भूत ऊतइ चुकल छलइ।कािि सेहो िबका बायाह मान्य िवि छलइ। बानी दाईकऽ जीिि फेर ओवहिी सुन भऽ गेल छलइि। बाद मे बखारी चौधरी थो`क जमीि खोवसक रप मे वलख देि छलवखि। बाकी भाइ सब ब़ का ब़ का हाकिम भऽ महाििगर सब मे रहइत छइि। सबकऽ फ़ ाक फ़ ाक ब़ का ब़ का घर बिल छइि। बानी दाई एक बेर कऽ साझ बाती देखा अबइ छवथि।

ईएह गप्प सब बवहि, दमिकऽ सुिी रहल छलवखि। तखिि लाठीकऽ सहारे चवकसयाइत बानी दाई जो सबजइत एलीह- "कऽ आयल छवथ। पाटिरि की?"

दमि आ उिकर बवहि दुि गोटे ठार भऽ गेलाह। उिकर लाठी हटा कऽ दमि हाथससहारा दऽ कऽ खवटया पर बइसलकवि। बानी दाईकऽ तािक गोवधया हरदम दमिि रहइ छलवखि। तै ओ दमिकऽ आबेिस"पाटिरि " कहइ छलवखि। अतेक बरखकऽ बादो आिज सुइि कऽ आइब गेलवखि।

दमि उकिर हाल पुछलखि। कनी दाई र बाब देलखि- " हमर छो । हमर हाल त भइ दुवि या जर्विित अइछ। तु अपि कह पाटिर।

दमकिऽ कछु कहल र्वि भेलइि।कनी दाईकऽ बयससबेर्गी देह खइस गेल छलइि। थो बाक काल बाद साझबाती देबाक समय भऽ गेल छलइ। ओ चइल गेल छलीह।

दमि बाबु, बक्हिसिपुछलखि आबो दुगोला छऊ।

बक्हि र बाब देलखि- धुरषछी। आब लोके कहा जे दुगोला। मरला पर काध देबइ लेल मजुरी पर लोक बजालि जाइ छइ।हमरा जखइि समय भेटइत अइछ तं हम उकिा कतऽ चइल जाइ छी। दु क्दि र्वि जेबइि त तेसर क्दि टुघ्र इत ई अपि पहुंच जेतीह।

दमि बाबुकऽ बक्हिकिऽ सब उपराग आब खत्म भऽ गेल छलइि। दमि बाबु सोइच रहल छलाह क दुगोला रहलो पर कनी दाई कक्हियो पाहुि बुइझ कऽ , कक्हियो खेलबासआ तािक गोधया बिबासमिा र्वि केलखि। कर्गीक रंग दब उकिर दुखक कारर त क्हिये भऽ सकइ छइि, कपछले जन्मक कछु लेखा जोखा मे बचल छइि, उएह क्हसाब भऽ रहल छइि।आब उपराग ककरा सं।

अएि ा (लघुकथा)

मव्हाि ाथ बाबु दीाि ाि मामलाकऽ जाि ल माि ल ाि कील छलाह।ओाि उाि कर व्माता रमाि ाथ बाबु भी काि ाि कऽ कम जाता िव छलाह। लेव्काि रमाि ाथ बाबुकऽ ाि कालतक पैव्कटस ठीक िव चललइाि । ततेक ाि उाि कर व्टम्भा छलइाि जे मोाि व्कल सब धीरे धीरे दुर होइत गेलइाि । मोाि व्कल आहाकऽ पाइ दइया, ओ ाि खरा थो बे सहत। आहाकऽ ओकर ्याि राखऽ प़ त, िव तऽ ओ दोसरकऽ धअ लेत। ऊयाह भेलइाि , रमाि ाथ बाबु जाि ाि रव्हतो, मोाि व्कल सबकऽ िव सम्हाइ सकलाह। व्याि हाव्रक पक कमजोर रहबाक काररि उाि कर घरक गाि ाि जेाि - तेाि डुग़ इत रहलइाि । उाि कर कवि याकऽ सेहंता लगले रहलइाि जे ाि कीलाइाि जेका बाि ल ठाि ल, खुब देब-लेब करइत जीाि ाि बीतइाि ।उाि का अपाि घरबालाकऽ पोछल पाछल सुखल बेबहार बुझल छलइाि । रमाि ाथ बाबुकऽ सााि मा आयल ाि कील सबहक ठाट-बाट ओ देखव्थाि .... चचा सेहो करव्थाि .... लेव्काि अइ काठक मुरत रमाि ाथ बाबु के,कऽ बुझेतइाि । रस्सा फुल्ली, ल़ ाई-झग़ ा, ऊकटा-पईची, कना-रोहट, ाि क-बेजाय, सईज-धईज,अलार-मलार, ाि पता-ाि पती सब कऽ कऽ ाि कीलाइाि थाईक गेल छलीह।आब ओ व्कछु कहाि ई ओाि ओ छोव धेाि छलव्खाि , लेव्काि मौका भेटला पर अखाि छो़ ई िव छलव्खाि ।

अइ घरक भीतरका संघरषमव्हाि ाथ रोज दु चाइर होइ छलाह। ओ मायक उपरागकऽ बुझअ सुझअ लागल छलाह। ओ कव्हया ई

विशय कऽ लेलाह जे उनिका निकील बनिबाक छइनि, से अपनि विनि बुझेलइनि।जखइनि ओ निकालतक पढ़ाइ लेल कालेज मे निमक्लखा लेलाह, तखइनि घरक लोक बुझलकइनि। ओइ समय मे जे डाक्टरी, ईन्जीवनियरी, आ सरकारी निकरी मे विनि पास होइ छलाय, उएह निकालतक पढ़ाइ करय छलाह। लोक मक्हनिथक निकालती पढ़ाइकऽ फैसला जाइनि कऽ अचक्मभत भऽ गेल छल। सब ई बुक्झये विनि सकल जे की विरिषाकऽ पाछु एकटा दृढ़ विशय छइ।

मक्हनिथ निकालतक पढ़ाइकऽ संग संग आरो काज सब मे सक्रिय छलाह। जक्हया परीक्षा पास कऽ कऽ निकालत जनिइनि केलाह, तक्हया पुरा त क भ़ क संग ब़ का पाटी देलाह।अपनि क्याताकऽ जुवनियर विनि बइनि कऽ निहरक निमी निकील बीरेर बाबुकऽ जुवनियर मे जनिइनि केलाह। बीरेर बाबुकऽ जज सबसघुटा सोहार रहइ छलइनि। ओक्हनि मक्हनिथ कम्मे समय मे ओकर सबहक बीच मे लोकक्प्रय भऽ गेल छलाह। अक्धकारी सबहक कोनि भी काज होइ, ओइ मे मक्हनिथ सबसं आगु। अपनि जानि जी लगा दइ छलाह-ओकर सबहक लेल। पक्हनि तऽ निरेर बाबुकऽ जुवनियरकऽ र प मे पहचानि रहइनि, मूदा थो बे क्दनिक बाद अपनि पहचानि होबऽ लगलइनि। निरेर बाबु अपनि सेहो अही रस्ते आगु बढ़ल छलाह, तै ओ इनिका पीठ पर हाथ ठोकइत रहलक्हनि।

मकहिथ जखि कि सुकमतगर भेलाह त ओ सबसं पकहि ककछु पाइ इमहर ओमहर कऽ कऽ एकटा मोटर कीलिाह। तकहया मोटर िरेर बाबुकऽ सेहो विि छलइि। ई मोटर आ डाईरि ओ जज सबहक तीमारदारी मे छोव देलकखि। अखि मंगिि मे मोटर डाईरिक संग ककरो भेटई त दस टा काज जर री भऽ जाइ छइ।अइ मोटरकऽ कारर इिका कोटषमे कयेक टा लोक सबसं िजदीकी भऽ गेल छलइि। अकधकारी सब कहकिर मोटरक भोग केलाक बाद कहकिो कहूि ि कहूि उपकृत करऽ लगलइि।

मकहिथकऽ जन्मे कािि पोथीसभरल घर मे भेल छलइि। ओ गलती आ मजबुरीसबिल िकील विि छलाह। ओ अपि ्येय बिि कऽ अइ पोफेिि मे आयल छलाह। ओ लवातो छलइ। जखि समय भेटइि कािि पोथी सब पढ़इत रहलाह। ताईद आ मोहकरषक लंबा सुची कहकिा लग छलइि। सबकऽ बेवियै कमीिि दऽ कऽ पक्टयेि छलाह।अइ सबकऽ संग अपि उदार आ अकभजात्य चेहरा सेहो समाजक सामि रखि छलाह। पकलकसटीकऽ कोिि मौका हाथसविि जाय दइ छलाह। पैकक्टस चलऽ लागल छलइि।अपि घरक लोकक जन्मक तारीख याद होइि ि विि होइि, सब साहब की, मेमोसाहबक जन्म तारीख आ कायाहक कदि याद रहइि। कतउ मधुर, कतउ गुलदस्ता, कतउ उपहार, कतउ सिि त कतउ खाली ििभकामिि....... अकधकारीकऽ सिभािक अििसार ई बेबहार करय छलाह।

ओ अपि घरे लग एकटा पुरि घर सेहो भा I परलऽ लेनि छलाह। अइ मे मोक्किल सबकऽ रहबाक आ खोई पाीईकऽ सेहो बेबसथा छलइ।दीििि मुकदमा सबहक फैसला होबऽ मे बडड समय लगइ छइ।जकरा जमीि रहतइ, सैह ि मोकदमा ल त। कयेक लोककऽ तऽ जमीकि संग भाििात्मक लगाि रहइ छलइ। अकरे सबकऽ मक्हिाथ भजबइ छलाह। आब बीरेर बाबुसअलग भऽ ीकि पैक्कटस करऽ लागल छलाह। मोक्किलक रहबाक बेबसथाकऽ कऽ बि ि्र आत भऽ गेल छलइ। रमािाथ बाबु बला भगलका मोक्किल सब सेहो घुअइ कऽ इकिा लग आइब रहल छलइि।

आब िहरक पक्तका त लोक मे मक्हिाथ बाबु आइब गेल छलाह। िहरक कलक्टर, पुक्लस कप्ताि, क्जला जज, वधायक, िता, क्यिसाई, पैघ वारहथ सब संग ऊठई बइसई छलाह।बाहरी दुवियाकऽ लेल, दहेज लेल क्बयाह मे िाक्मल विि होइ छलाह। लंबा लंबा सैदाक्तक आ आ् याक्त्मक गप सब देबऽ आइब गेल छलइि। उिकिा कतऽ सफायदा होबाक अइछ, अकर पहचाि मे पटुता छलइि। जतऽ जई तरहसक्बाि "िि " कहि वबिटारा होइत, ओइ तरहक तकष दइ छलक्खि। कखिा दु पक्तका त पक्षािरकऽ बीच कथा-िता सेहो करा कऽ अपि पैठ बिा लइ छलाह।

अक्हिा आगु बढ़इत जा रहल छलाह।मक्हिाथ अपि भाक्तजक क्बयाह एकटा अक्धकारीकऽ बेटीसकरिाबइल लेल जी जाि लगेि छलाह।

कहिकिर भाइ दोसर जगह बेटाक बियाह ठीक कऽ लेलकइ। ई अपन झेप मेटबऽ खातिर " पाइ लेब, कि भाइ लेब "कऽ डायलॉग समाजक सामने रखलाह।अइ मे भाइकऽ किरकिरी भेलइ, लेकिन मनोहर बाबुकऽ पक्ष मे भेटलइ।हर व्यवस्थाकऽ भजबै मे माहिर छलाह।

अहिना मनोहरक गामक संगी एकबेर कोनो काज मे मददक इच्छा लऽ कऽ उनका लग एलखिन।मनोहर अपनाकिऽ व्यस्त जकाँ देखबइत, सीधा कहबा मे लाचारी देखेलकिन।ओ कहलखिन- " ज्यों हमरा ओ पुछताह, त हम कहबइ।"मनोहरकऽ ई बात मोन मे रहि एलइ जे अकरासउनका कहियो कोनो काज पड़ि सकइत अइछ। जेकरासकाज परऽ वाला होइ छलइ, ओकरा लेल तऽ सदिखन समर्पण व्यस्त छलइ।मनोहरकऽ ओइ संगीकऽ मोन मे एलइ जे कनि हमरो एहिन वृत्ति होइता जे मनोहर हमरा लग काज लेल अयताह। कहल जाइ छइ- कोनो चीज मोनसँ चाहब तऽ, ओ पुरा हेबे करत।सब परिस्थिति चाहतक अनुकूल भऽ जाइ छइ।

समयक पहिया घुर्इम रहल छल। थोड़ बरखक बाद मनोहरकऽ काज ओइ गऊआं संगीसँ पड़ि लइन। ओ अपन पुरना संगीक संबंध लऽ कऽ उनका कतऽ बड़ का मोटर मे मधुरक डिब्बा आ भरि पथिया मालदह आम लऽ कऽ पहुंचलाह। अइ सँ पहिने बल पर ओ केहन केहन काज करा चुकल छलाह। ओ संगीकऽ सब

कमछला बात मोि छलइ। ओ कहलकइि-" हम त अहीसिंक चीज सीखलऊं। ज्यो हमरा ओ पुछताह, त हम आहा बारे मे कहबइि "। मक्हिथकऽ सब याद पड़ गेलइि। अपि िकम्रट्ुता पर उिका बडड गुमाि छलइि।आइ गामक अदिसि लोक उिका अएिदेखा देलकइि।

पुरा गाम समाज मे ईएह चचा चइल रहल छइ जे सबकऽ अपि क्दि होइ छइ। ब़ का होइ िछोटका होइ, ककरो उम्मेदकऽ िवि तोि। समयक चक एहि िघुमई छइ जे सब केलहा मुंह बेिं सामि ठार भऽ क्चढ़बऽ लगइ छइ।ओकर मारल मे आिज िवि होइ छइ।

अइ घटिसमक्हिथ पुरा तरहे कफइ गेलाह। आब उिका सब गामक लोक अपि वििरोधी बुझाय लागल छलइि। कििका कोि हावि पहुंचेबइि, अहीकऽ पाछु परल रहलाह। अही सब चकव्यूह मे फंसल हदयाघातसपरलोक चइल गेलाह। अएि उिका लेल भारी परलइि।

हत्यारा (लघुकथा)

ि बि कालोि ी छलइ। चुनी महतोकऽ बेटा सेहो कालोि ी मे घर बि ि छइ। बवि या सबहक ि किलकऽ कऽ ओहो अइ कालोि ी मे जमीि लेबा काल मेि रोड चुि लिक। अकर पाछु एके टा कारर छलइ जे ओ दु टा दोकाि बहरी क्दस वि कालत। सैह भेलइ। दोकाि बि लाकऽ बाद एकटा तऽ क्रराया मे लगेलक आ दोसर मे चुनी महतो अपि दोकाि खोलबाक फैसला केलक। ओि ओकरा अकर अि भि सेहो छलइ। ई सत गप छइ जे ओकारा दोकाि सबरकत ि वि भेलइ।

चुनी महतो ताव्ह जमाि किऽ मैक्र क पास छल। ओकरा क्हस्सा तीि बीघा जमीि प ़ ल छलइ। अपि समाज मे ओकर धाक छलइ।जो ा ब़ द संग टायर गा ी सेहो ओकरा रहइ। ओकर घर अपि समाज मे ि ीक वारहथ मे अबइ छलइ। दोसरोकऽ जमीि ओ भरि लइत छल। ई सब रहलाकऽ बादो ओकरा खेती मे मोि ि वि लगइ। ओि सरकारी ि ीकरीकऽ परीक्ा सब देि हो रहइ लेक्कि ि ीकरी ि वि भेलइ। इमहर क्ायाह दाि छोटे मे भऽ गेल छलइ। चाइर टा ि ि कीरबाकऽ लाइि लगा देि छल। कोि काज तऽ दोसर रहइ ि वि ....आइ जेका टीि ी, मोबाइल, फोि - फाि, सवि मा क्कछु ि ाई। बरख मे एक बेर दसमी मे ि ाच अबइ छलइ। कोि कोि बेर बाबु भैय्या सबहक कतऽ जग सब मे सेहो ि हरसि चवि या अबइ। गामक बाहर गाछी मे ि ाच-गाि कि पोगाम होइ छलइ।चुनी महतो अइ सब मे जी जाि सिलागल रहइ छलाह। ओ सब समाजक ि ाचक भार लेि रहइ छलाय। ि चवि या ठीक करऽ

सलऽ कऽ ओकर सबहक खेिाई पीिाई सुतिाई- सब महतोकऽ वजम्मा। जाबइत िाच - पाटी गाम मे रहइत छलइ, भुख वपयास सब हरा जाइ छलइ चुनी महतो के। दु चाइर बरख पर जमीिा बेचई छल आ ओइ पाइसकवराकिऽ दोकाि खोलइ छल। साल दु साल दोकाि चलबो करय.......फेर एके बेर दोकाि बन भऽ जाइ। लोक सुवि जे चुनी महतोकऽ घाटा भऽ गेलइ।

ओकरा खेतीसबेिी दोकदिारी मे रस भेटई छलइ।तै अपि खेत पथार ओ बटईया दऽ देि छल।

गाम मे ई चचा सब बेर अकर दोकाि बन भेलाक बाद होइ- जे एिा वकयैक भेलइ। दोकाि पर हरदम भी रवहते छलइ, दामो अकर बेिी रहइ छलइ, मोल कम्मो वि करय छलइ, उधारी देबहो मे करकर करइत छलइ, सोलकिि ईएह टा दुकादिार छल- तै ओकर समाजक सब अतइसकीवि। गाम मे ओिा दु टा आर वकराकिऽ पुराि दोकाि बाभि सबहक छइि। उकिर सबहक बोली बािी वि िीक। तै सोलकि वि, बभिटोवलयोकऽ लोक सब चुनी महतोकऽ दोकाि पर अबइत छल। बाद मे कतउ कतउसगप छुटलइ जे ई चुनी महतो ढेकाक कमजोर छल। ओ अइ चकर मे दोकाि डुबेलकइ। भोर साझ त दोकाि मे भी रहइ छलइ,तखइि मौका वि लागइ, लेवकि दुपहवरया मे ओ ग़ ब़ कऽ लइ छलाय।बजार जे ओ होलसेलससमाि आिऽ जाय ओतउ ओ वकछु वकछु ग़ ब़ कऽ लइ छलाय। गाम मे दबले र बाि मे, लेवकि कहल जाइ छलइ।

ईएह कोटा रहलो पर ओकरा ि किरी वि भेटलइ, मूदा कपार जोरगर छलइ, एकटा बेटाकऽ रेलि मे ि किरी लाइग गेलइ। ओकरे कतऽ रही कऽ दोसरो बेटा सब पढ़लकइ। आब त चार कतउ कतउ ि किरी धेि छइ। छोटका त फौज मे छइ। ओकरासचुनी महतोकऽ बडड सुख। ओ बेटा जखइि अबइ छइ, अंगरेजया बोतल सब रंक भइ कऽ अवि छइ। जे पीलक वायेलक, बचलका जायकाल मे अपि बापक हािले कऽ दइ छइ। फेर तऽ चुनी महतो चाि ि काटअ लगइ छथ। ब़ का बेटा रेलि टीि ि पर मालबाबु लागल छइ। सब समाि चढ़ला उतरला पर कमीिि बान्हल छइ। ऊयाह ि हिर मे जमीि कीि कऽ घर बि लिकइ, ओही मे चुनी महतो दोकाि वकिाललाह अइछ।आब फेर कयेक बरख बाद दोकाि खोललाह अइछ।अपि त दोकािकि ि मि पर ि हिर मे रहअ लागल छल लेकि ओकर घरबाली गामे मे धाि गहुम सम्हा इ लेल रही गेलइ।ओ वि अपि कवियाकऽ परािह करय आ वि कवियाि ओकरे करय।

पवहलुका गामक दोकाि मे त असगरे ओ सब काज करय छलाह। आब तऽ चाइर टा कमासुत बेटाकऽ बाप छथ, अपि दोकाि मे झाु पोछा आ बाकी काज कोिि करताह।आब गल्ला पर अपि बइसई छथ आ एकटा टेिि िकऽ रखि छथ। कयो टेिि ि दोकाि मे वटकइ वि छइि। ओिि पाइ कम्मे दइ छथि, तखिि सब भाइग जाइ छइि। कछु ि कछु तऽ झोल छइ।

आब िहर मे घर पर समाि पहुंचबइकऽ फैिि भऽ गेल छइ। अइ कालोिी मे सेहो अकर लसाइ लागल छलइ। गामसएकटा छौ़ ा देबािकऽ पकइ कऽ चुनी महतो दोकाि पर रखि छल। ओ छौ़ ा बडड पइिगर छल। ओ दऊ दऊ कऽ काज करय। भरीगर आ दुर बला घर पर समाि पहुंचबइ लेल साईकलसजाय।कतउ घर बाला सबसज्यो ओ गप करबाक कारर देरी भऽ जाइ त माइ माइ कऽ छुटय ओकरा पर चुनी महतो। सब िाि अइ छौ़ ा पर झारय। चुनी महतोकऽ ई दोकाि चइल गेल छलइि।

कालोिीकऽ बच्चा सबकऽ खेल खेलाइत देख कऽ देबािकऽ सेहो खेलेबाक सेहन्ता होइ। चुनी महतो ओकरा खेल पर पव कऽ िवि देबऽ चाहइ छलइ। कतउ कतउ समाि पहुंचेला पर घर बाला सब दु चाइर टका देबािकऽ द दइ छलइ। देबाि ओकरा जमा करय छल।ओ दोकाकि सब तरी कमटी सीख रहल छलाय। ओकरो मोि रहइ जे कि़ि पाइ जमा कऽ कऽ िहर मे कतउ ओहो अपि ठीहा जमाति। अही धुि मे लागल रहइ छलाय। चुनी महतो अपि बेटाक देल अंगरेजया बोतल मेसकिि किि रोज पीबइ छल। एक ददि देबािकऽ सेहो पीयई लेल जो केलकइ। देबाि त ओकर िकर छल,केिा बात कइटतइ.........दु घुंट दऽ देलकइ। जहा तक ओकरा मोि पृ इ छइ, ओइ राइत चुनी महतो ओकरा संग कछु गलत बेबहार सुतली मे केलकइ। भोर मे जखइि देबाि ऊठल त ओकरा सब बुझेलइ। ओ किि काल बाद अपि झो ी ऊठेलक आ गाम पृ ा रहल।

इमहर चुनी महतोकऽ अइ खराब सोभा ि लऽ कऽ आर क्कयो ओकर दोका ि मे काज करय लेल र्वि गछइ छलइ। दु तीि हफ्ता बीतला बाद चुनी महतो अपि कर्वियासभेट करऽ गाम गेल। थाह लेबऽ देबा ि कतऽ सेहो गेल। देबा ि कतउ बाध क्कस गेल छलाय।ओकर मायसचुनी महतो क्वकि चुप़ ल गप केलक। ओकरा पता चइल गेलइ जे अतऽ सब ठीक छइ। थो `क काल बाद जखइि देबा ि आयल त ओकर माय अपि गरीबीकऽ क ि ाई ि ुर केलक।हाक्र कऽ देबा ि फेर चुनी महतोकऽ दोका ि पर काज करबाक गछलक। चुनी महतो एडबासे मे करकरऊआ टका देबा िकऽ मायकऽ हाथ पर राईख देलकइ।

महल्लला बाला चुनी महतोकऽ देबा िकऽ दोबारा अयलाकऽ बारे मे पुछइ त ओ कहइ - सब गमी आब ऊतइ्र गेलइ, त आइब गेल।गमीसमतलब अतऽ जमा पैसा खत्म होबाकसछलइ।

देबा िकऽ क्वसराजीकऽ कर्विया सऽ बडड गप होइ। क्वसराजीकऽ पोता देबर्ि किऽ बयसकऽ छलइ। उ ि का कतऽ हर बेर समा ि लऽ कऽ गेला पर पाइ त भेटबे करय, उपरसखाय पीयई लेल सेहो भेटई। ओ सक्कखि क्वसराजी कतऽ जाइ लेल तैयार रहइ छल। जखइि ओ जाय तऽ घुरऽ मे क्वलमा जाइ छलइ। चुनी महतो ओकरा अइ देरीक लेल एक दि र्वि छो़ ई। देबा िकऽ अइ क्वग़ ाईकऽ को ि ा असर र्वि छलइ।

क्वसराजीकऽ घर सेहो कालो ि ा मे मेर्ि रोड पर छलइि। चुनी महतोसबेर्विये रोखगर उ ि किर घर छलइि। क्वसराजीकऽ घरक सब लोक ओकरा मा िऽ लागल छलइ। क्वसराजीकऽ कर्विया

देबीिकऽ गाम लगक छलखिन। ओकरा गाम मे बाभिटोली मे उिकर संबंधी सब रहइ छलइिन।ओ ओकरा गाम गेल आयल छथिथ। बड्ड लोककऽ कहिहतो हथिन ओ। देबी चुनी महतोकऽ चाइल चलिक वािकाइत इिका सब लग केलकइिन।किन मिन िक उिको सबकऽ बुझा रहल छलइिन, लेकिन अतऽ महल्ला बाला बात छलइ। सबकेिकऽ झमेला बेमतलबकऽ ,कऽ ऊठाइत। ओ सब ओकरा दोसर जगह काज तकबा लेल कहलखिन। अइ लेल मददकऽ भरोसा सेहो देलखिन।

देबी एककिन उिकर घरक आगु तरकारीकऽ ठीहा लगबऽ कऽ बारे मे पुछलकइिन। ओ सब तखिन हं कहि देलखीिन।उिका सबकऽ तऽ एकटा मंगिन मे विशासी चौकीदार भेट जेतइिन। अतबे िनिह, किन सुदक पाइ पईच सेहो लइ लेल कहलखिन। देबी आब अपिन गुमटी बिबऽ कऽ बारे मे सोचऽ लागल छलाय। संस्कृतक एकटा मास्टर साहब कालोिन मे रहइ छलखिन, उिकासदोकािन खोलबाक किन तकइ लेल कहि देिन छलइिन। आब पुरा जोिन जोिन मे देबी रहअ लागल छलाय।चुनी महतोकऽ सेहो दोकािन खोलबाक भिक लाइग गेल छलइ।

अकिह एक किन राइत मे दोकािन बन भेलाक बाद चुनी महतो, देबीिकऽ िब दोकािन खोलबाक खुिन मे अंगरेकजया िराब पीयेलकइ। िनि मे अयलाकऽ बाद की भेलइ से अ़ िसि-प़ िसकऽ सेहो कियो िनि बुझलकइ। भोर मे दोकािन िनि खूलला पर लोक घर मे तकलकइ त ओतऽ चुनी महतोकऽ विक्षित लािन भेटलइ। छुरासससऊंसे देह मे गंथिन छलइ।िकर त पुरा घर मे फैलल। बाकी कोिन समािकऽ िनि अगरम्भार भेल छलइ। सब

घर मे सब समानि ओहिना संइतल राखल। दोकानिक गल्ला सेहो सुरक्षित।खाली देबानिकऽ कोनो पता नहि। पुलिसकऽ खबर भेलइ। लाशिकऽ कब्जा मे लेल गेलइ। टीवि पर दिल्ली बाला रेनि मेसदेबानिकऽ पकड़ि कऽ पुलिस अनलकइ। देबानि अपन अपराध मानि लेने छल। चुनी महतोकऽ बेटा सब आइब गेल छलइ।ओकरा सबकऽ पुलिस बलासलऽ दऽ कऽ सेट्टंग भऽ गेल छलइ। दु दिन बाद अखबार मे निकललइ - "देबानिकऽ नि दोकान खोलइ लेल पाइकऽ जरुरत छलइ। ओइ लेल ओ अपन मालिककऽ जान लऽ लेलक। आबसानिकर राखऽ सपहनि जाच करा लेल करु"।देबानि कोनो नौकर थोड़े छल।ओ तऽ चुनी महतोकऽ गऊंआ आ समाग छलइनि। ई बुझअकऽ फुसला ककरा छइ। महीना दिन अइ घटनिकऽ खोदबेद होइत रहलइ, फेर सब बिसरइ गेल। जीनि कतउ रुकलइया। चुनी महतोकऽ बेटा सब दोकानिक समान बेच कऽ पुलिस निलाकऽ रुपय्या उलीझ देलकइ। दोकानिकऽ किराया पर उठा देलकइ। आब एस टी डी बुथ ओइ मे खुईज गेल छलइ।

देबानिकऽ पुलिस बला ओइ घर पर जाच करय लेल अनलकइ। बासराजीकऽ परिवारिक लोक बाहरे मे ठार छलइनि। सब बाल बच्चेदार लोक, हत्यारासकेनि संबंध रखतइ। अकरा देखते सब घरक भीतर जा कऽ साकल चढ़ा लेलकइ।

देबानिक बात बाहर नहि आइब सकलइ।ओकर अपन दोकानिक सपना जेहल तर दबा गेल छलइ।अइ सपना देखते ओ कयेक राइत जगलाहे बितेनि छल। कर मे कराक भऽ गेल छलाई।केनि ओ अपानिसबलाष चुनी महतोकऽ चकुसगोईध देलकइ, ओकरा अपन

ताकत पर आशयषहोइ छलइ। कतेक बेर चकु गंथलकइ, ओकरा कछु मोि वि छइ। ओ चकु चलबइत रहलउ। जखइि खुिससऊंसे ओ िहा गेल, तखइि छो लकइ। एि लगइ जे ओ खुि वि ललका रंग होइ आ ओइ ललका रंगसओ अपि गामक िबकी भौजाइ संग होली खेलि हुआय।सऊंसे घर मे लाले लाल िवर त फैलल।

ओकरा सब हत्याराकऽ िम दऽ देि छलइ। ओहि मोहक मुस्कािबाला छौ ा, आब हत्यारा भऽ गेल छलाय।

असल मे तऽ हत्या देबािकऽ अरमािकऽ भेल छलइ। ओकरा अइ लेल विििकऽ केलकइ, ओ जािऽ सुिऽ बाला अइ आन्हर बहीर संसार मे कयो वि छइ। देबािकऽ जीिि पहा भऽ गेलइ। तारीख पर कहयो काल गामसमाय अबइ छइ। तारीख पर तारीख लाइग रहल छइ। जखइि बसराजीकऽ कतऽ कऽ लोककऽ गािही लेल कहल गेलइि तऽ ओ सब देबािकऽ चन्हबासइनकार कऽ देलखि।देबाि आ बसराजीकऽ बीच भेल गपक बात तऽ कोटषमे भईये वि सकलइ। अंतम उम्मेद ईएह सब रहथि। सब खत्म भऽ गेल छलइ। सजा भेलाक बाद बाकी जीिि जेहल मे काइट रहल छल देबाि।माय ओकरा जेहल मे भेट करऽ काल कहलकइ जे गाम समाज मे आब ओकर िबका िम पड़ गेल छइ " हत्यारा "। ओकरो लोक आब देबािकऽ माय वि कहइ छइ .... "हत्याराकऽ माय " बि िम ओकरो भऽ गेल छइ। देबािकऽ मायकऽ पहि होइ जे एहि हत्यारा ओकर कोखसकेि जिमलइ।जिविमते कअए वि ओ िि चटा कऽ माइ

देलकइ। मूदा जखइि ओकरा चुनी महतो बाला गप सब देबािकऽ िकील साहब बतेलकइ, तखिसतऽ ओकरा " हत्यारा" िमिक लाइग रहल छइ। आब ओ अपि कहइ छइ-" हमरे देबाि ओइ मुंहझौसाकऽ मारि छइ। हम ओकरे माय छीयई। हत्याराकऽ माय।"

आब ओ आोईख चोराअ कऽ िव, आंईख उठा कऽ गाम जाय बला बस मे बइस चुकल अइछ।गिभरल आ अकरल ओकर देह भऽ गेल छलइ। आइ ऊपरसईहो देखयउ, ओकरा बस मे सीटो एकटा मंिा दऽ देलकइ। ओ मंिा आर कयो िव कासराजीकऽ बेटा छलइि।देबािकऽ कोटष मे ओ सब िव कान्हलखि लेकि बस मे ओकर माय लेल सीट छोव देलखि।

हुक्का (लघुकथा)

दुगा स्थानि मे सब साल जेका जतराकऽ परात बैसार भेल छलाय। पचपल्टया मंदिर कमिटी बाला सब जमा छल। धीया-पुता सब सटले परती पर खेला रहल छलाय।

कनीके काल पहिने टेट बला सब सामयानि, दरी, कनात आ आरो समान सब समेटने रहय। एक तो बैलगाडी पर लदाकऽ थोड़ समान चइल गेल रहय। बाकी सब जमाकऽ क राखल गेल रहाय। समानक वान्तीभऽ गेल छल। अहु बेर दु टा जाजम नहि भेठलइ।ई सब बेरक लीला छइ- किछु न किछु हराईते छइ। मंदिर संकऽ चोरा कलऽ जेतइ। टेट बाला सबकऽ अपन हिसाब बारी फाइनल करऽ काल मे दबाब बनबऽ कऽ तरीका छइ। ओ पुरनि फटलाही जाजम केकर काज के। ऊपरसदस हिसिऽ ओइ पर ररधुमस भेल छइ। केहन हाल हेतइ से सोइच सकयह। अहु बेर टेट बाला बजई छल जे अवाला बेरसओ नहि आइत। ओकर सब सामान कहिया लेदरभऽ जाइ छइ। ओ एको पाइ फायदा नहि कमबइ अइछ अइ पूजा सं। ओ त पुरनका बेबहार छइ जे ओ आइब जाइया। मुदा कमिटी बाला सब त ओकरा हटबऽ चाहिते अइछ- सब बेर पुरान आ फाटल चीटल समान एतऽ लगबइ अइ। ओकर बातकऽ पतियेतइ। तखनि पुरनि लोक सब ओकरे भार दइ छथिन। ओकरा सब बुझल सुझल।कहिया आ कखइन, कथीक जररत छइ- कहबाक काज नहि, ओ अपने नीने अबइत

छइ। गामक समागभऽ गेल अइछ ओ। सबके क्यन्हइत अइछ। ककिासऽ कोिा वबिटल जाइ छइ-ओ पारंगत अइछ। कोि बच्चा कोि घरक अइछ- सेहो ओकरा बुझल। ककिा बाग़ बाक काज, ककिा आदर संग कहाई आ ककिा लाठी आ गाइ तरे भगोई-ओ जविि त अइछ। कछु बच्चा सब जमा कायल मसलंगकऽ पहा बािकऽ ओइ पर चढ़ई छलाह आ ओइ परसऽ कुईदकऽ उत्त इ छलाह। बेिी बच्चाकऽ बाप कानती सब बगले मे बैसार मे जमा छलाह, तै टैट बाला िव कछु बजई छल। ओकरो क्हसाब ओइ बैसार मे होइ छलइ। जे पाइ भेट गेल से भेट गेल, बककयौता त फेर पर क साल। तै ओ अपि िम्बर आबऽ कऽ लेल साकाक छल।टेट बालाकऽ ई पचपक्टया बाला सबकऽ डपोरिंखी गप्प पर हंसी अबइ छलइ। दस बरखसऽ बेवियेसऽ मंक्डलक ककरीस्त बइि रहल छल। दमरी कयो वकिालता िव आ गप्प सुि।ओकरो पाइ अखइि तक िव बढ़ेलाह अइछ। सब बेर-अवाला बरख। आब त ओ कक्हतो िव छइि। जेहि ढऊआ खरचता, तेहि ि सामाि भेटतइि।

बैसार मेसऽ आबाज एलइ जे रामा मायकऽ क्हस्सा छोव क्दयऊं।ओ बेचारी कतऽ सऽ देतीह। झटसऽ दोसर लोक ओकर समथिि केला। बैसार मे पासभऽ गेल जे रामा मायकऽ क्हस्साकऽ चंदा देबऽ कऽ िव काज।

"रामा " िमि सुवति, ओतइ टेट बाला जमा मसलंग पर कुदइत "

दीि "कऽ कािठारभऽ गेलइ। ओ सब छोव क, बैसारक गप्प पीबऽ लागल। ओकरा ई फैसला ठीक िव लगलइ। ओ कििकोसऽ कम कयैक। ओ दौडल घर गेल आ दाईकऽ कहलकइ ई क्सस्सा बाला बात। दाई ओतेक बुझलक्खि िव। कहलक्खि जे हम पता करय छी जे की बात छइ।

- पता क करबही। हमहु क्सस्सा देबइ -मंव्डल मे। ईएह गप्प छलइ।

-

ठीक छइ। दइयही। तु केकरासऽ कम। आबऽ दहुि पटी बाला सब के। हम कहबइि एिक अए केलाह। हमहु क्सस्सा देबइ। ओिि दुगा जीकऽ कहूि की अतेक पाइ दथुि जै तौ असकरे मंव्डल बिि ले।

दीिि ओतइसऽ मोिमोि दुगा महारािीकऽ ई गप्प कव्ह देलकइि। दाई ओकर कल जोइ कऽ दुगाजीकऽ कहलक्खि जे दीिकऽ सूवियिउ हे महरािी।

रामाकऽ दाई कव्ह त देलक्खि लेकि कतऽ सऽ पाइयक बेबसथा हेतइ- से सोचऽ लगलीह। मोि मोि हंक्सयो लगलइि जे बाबा बला िािि पोता मे आयल छइ। हम कििकासऽ कम।

रामाकऽ गाम त ओिा ब़ की टा छइ। सोलहो बरर ओइ गाम मे - एको दु घर भेक्टये जाइत। दुगा पूजा पाच पटी कमलकऽ करय छइ। गाम मे इकिा सबकऽ पचपक्टया कहल जाइ छइि। पूजा ईएह सब िर केि छइथ, तै पुरा बेबसथा इकिे सबहक हाथ मे। गऊंआसऽ चंदा पूजा लेल र्वि लेल जाइ छइ।

पचपक्टया मे हर सालक पार चलइ छइ- दुगा पूजाकऽ लेल। पूजाकऽ अलाि िचि गाि आ मिरिंजिकऽ बेबसथा गऊंआकऽ कक्मटी छइ, से करय छइ।पक्हि त िटुआ अक्बते टा छलइ लेक्कि आब त मुजफ्फरपुरकऽ कब्बाली पाटी ि बेक्तयाकऽ बाईजी अबइ छइ। अइ गामक िटक िमी छल।कयेक गामक लोग देखऽ अबइ छल। अबइ त अखि अइछ - बाईजीकऽ िचि ि दुअथी कबाली सुिऽ क्क देखइ लेल।आबकऽ खेलत िटक आ कतऽ सऽ आइत िटुआ। सब क्कछु अतेक जल्दी बदइल जेतइ- क्कयो सोचिि र्वि छल।

दुगा मंक्दरकऽ भिि बडड पुराि छल। बरका बाईढ़ मे अकर थो` भाग खइस परलइ। ओकरे दोबारासबिबऽ कऽ बारे मे सब साल जेका अहु बेर सेहो बैसार मे चचा भेल छलइ। पचपक्टयाकऽ एकटा क्बिरिता छइ- आपस मे खुब पटीदारी करत- सब एक दोसरकऽ लंगी मारऽ लेल तैयार बैसल, आपसी मोकदमाकऽ त पुछु र्वि। लेक्कि जो दोसरासऽ कोिि झमेल, त सब एकभऽ जाइत। गाम मे आब दोसर टोलकऽ कतेक पाइ बलाभऽ गेल छइ, जे

पचपक्टयाकऽ जेबी मेलऽ क घुमतइि। ई सब ओकर पंसगो मे िव छइथ, मूदा दुगा पूजा, गंिारी िव होबऽ देलक्खि।

ओिि क्हंदू धमषमे छइयो- आहा अपिि गोसाउि घर िि पूजा घर िि मंक्दर राईख सकइ छी, लेक्कि मुसलमाि जो मक्स्जद बििलक त ओ समाज कभऽ जाइ छइ। ककरो िमाज पढ़असऽ रोईक िव सकइ छी। दुगा पूजा मे अपि चलती त पचपक्टया देखइबते अइ- धमषक पाछा छइजो जाइ छइ।

आब देखू पचपक्टयाकऽ आपसी दाि-पेच। दीिाक बाबा, बालचंर ठाकुर उफषबाला बाबु पुरिि कागेसी छलाह। आजादीकऽ लड़ाई मे सेहो भाग लेिि छलाह। जेहल िव गेलाह तै रामा मायकऽ पेिि िव भेटलइि। कोिवि पैरिी खुब भेल- लेक्कि िव भऽ सकलइि। पटिि मे एसेम्बलीकऽ क्टकट फाइिलभऽ क िम क्हकिर क्दल्ली गेल छलइि। तखुिका अ्यक कहलक्खि जे -

"आहा अपि क्षेत्र मे जाऊ-परचार िुर कर। क्टकट बुझु की ि, आहाकऽ भेक्टये गेल अइछ।" ओ क्षेत्र मे आइब गेलाह।मोटर कीिलाह।गामे गाम घुमिाई िुर कयलाह।

बाला बाबुकऽ कंगेक्सया सब गच्चादऽ देलकइि। उिकर क्टकट कइट गेलइि। दोसरकऽ भेट गेलइ। बाला बाबु पाछु हटअ बाला लोक िव।क्दअयद बाद आर चढ़ा देलकइि। ओिि पक्हिहेसऽ

कहल जाइ छइ- क्रकिोसऽ बदला सुतारऽ कऽ हुिय त, या क्राधायकीकऽ इलेक्िि ल ा दी ि पुरि मोटर गा ी खरीदा दी।

पक्तष ा आ िट दु्ि दु चीज होइ छइ। पोक्लंग बूथ पर इिकर पैर छुअ बाला लोकक लाइि, िटक लाइिसऽ पैघ छलइ। ओइ समय कागेसकऽ एहि लहर छलइ जे कुकुरो क्लाई ओकर क्यन्ह पर जीत जाइ। बालाबाबु आ कागेसकऽ उम्मेदिर दु्ि चुिि हाक्र गेलाह। तेसरे जीत गेल।

आब ्िर भेल बाला बाबुक दुक्द्दिि। पक्हि मोटर क्लाकेलइि, फेर दोसर गामक जमीि,फेर गामक खरहोइ , फेर िसी, फेर धिहर खेत, फेर पक्शम भरक गाछी। कतेक कजा उठा लेि छलाह से अपि अंदाज िव। घर- घरारी आ थोरेक बहुत सक्झया गाछी , पोखइ , खेत बचलइि। बाद मे क्लाक्प्तभऽ गेलाह आकऽ एल सहगलकऽ गाि गूिगुिबइत मइ गेलाह। अपि जीबते मे जेठका बेटा "रामा ठाकुर " केन्सरसऽ मइ गेलइि- आठ महीिकऽ दीिकऽ छोव क।

अइ गामकऽ बालाबाबुकऽ गामसऽ लोग जािय लागल छलइ। ई बात पचपक्टयाकऽ लोककऽ अख्र इ।बालाबाबु कागेसी रक्हतो सामंती सिभािक छलाह। पचपक्टयाकऽ क्रयो उिकर सामि ठाढ़

िविभS सकइ छल।के िव उिकर पटि बाला डेरा पर आयल छल। क्कयो आबय- भोजि भेक्टते टा छलइ। हं ई सही छलइ जे पुछा-पुछी िव छलइ। अपि जाऊ आ भिक्सयासS खेिईलS क्लयह। तखइि त अतेक लोक अबइ।लोको मीि मेख िव वकालइ। कोिि बाला बाबु क्किको बजेि त िव छेलक्खि।अपि काजसS ककरो कतS जायब, त ओइ समय मे अइसS बेिि उमेदो लोक िव करय छल।

ऊयाह बदला आब ओ सब उिकर पक्िरिकS दीि-हीिकS र प मे बाईज कS केलक।

ई कमाल देखू- रामा मायकS त क्कस्सा देबS सS बचा देलकइि । सहाि्भूक्तकS पात बििलकइि, लेक्कि अपिि क्कयो िव देलक।देबS कS हूक्बा होइ छइ। ओ कतS सS होइतइि। सब बेर अक्हिि बैसार होइ। क्करीस्त बिवि-सीमेट, ईटा, छ ी, बालु, मजुरीकS क्कसाब होइ आ साल बीत जाइ।बजट सुरसाकS मूंह जका बढ़इत जाइ छलइ।

दीिि ठाकुर ओतेक पढ़ल क्लखल त िव। क्कदल्ली मे एमहर ओमहर बऊिलाकS बाद आब कयेक होटल सब ठेका मे लेि अइ आ चलबइत अइछ। क्वकि पाइ कमा रहल अइछ। िबि भिि दुगा मंक्कदरकS बिबौलक अइछ गाम मे। बाला बाबुकS पुरखाकS

बिबिल मंक्दरकऽ पचपक्टया ठीक तक विि करा सकल। आइ संगमरमर पर क्लखल पटी,दीिकऽ दाईकऽ िमिस, सेहो मंक्दरक आगा मे लाइग गेल।

गऊंआ कक्ह रहल छइ - जे हुब्बा बालाबाबु मे छलइि उएह हुब्बा दीि देखेलक। दीिकऽ अफसोस होइ छइ - जे दाई रक्हतै त ओकरा कतेक खुिी होइतइ।ओ त अपि बाबाकऽ विि देखि छल। लोक मजा लइ लेल ओकर बाबाकऽ क्खस्सा कहइत रहइ छल।

ई हुब्बा कखिकऽ जािलेि सेहोभऽ जाइ छइ। तै बइचकऽ अइ हुब्बा सं। सोइच समइझकऽ काज कर। बाला बाबुकऽ त ईएह हुब्बा सब कक्छु "क्बाला" देलकइि आ दीिकऽ हुब्बा समाज मे पक्तष्ठा क्दयेलकइ।

इच्छा (लघुकथा)

सुतले रहइथ रमि, क्क "क्षपता"कऽ िर पा इत सुिला- उठु ि, "घुरि बाबु" अपि आयल छथ्- आहासऽ भेट करबाक लेल।

राईते रमि अयलाह आ भोरे घुरि बाबु आइब गेलाह। कतेक मजगुत उकिर खुक्रया तंत गाम मे छइि- से बुझु। क्षाि कतउ गेि- सब खबर रही छइि। क्रछु खास लोक उकिर सब टोल मे छइि।

पुरा घर मे दलमल मचल अइछ। लोक सब पदा हटाकऽ बहरी दलाि क्दि ताईक रहल अइछ। पाइि ओ पीब चुकला आ चाह उकिर सामि राखल छइि।

कतबो ओ कहलक्खि जे हम चाह अखि पीकऽ आइब रहल छी, तैयो चाह उकिा लेल बइि गेलइि।

जगक आंगि रहइ। कयेक लोक घुरि बाबुकऽ देखि िवि छइि-िमि त सब सुिि छइि। स्त्रीगर महाल मे त बेिये फुस्सा फुस्सी।क्रयो कोिठा लग ठार त क्रयो क्ख्र की सं। पुर ख पाहुि सब सेहो िमस्कार िमस्कार करइत घुरि बाबु लग पहुंच गेल

छलाह।

अहु बयस मे अतेक भव्य लगइ छलाह। दुरेसऽ लगइ जे क्कयो बइसल छइथ। दरबज्जा भरल बुझाई। सब धर्विकाहाकऽ अव्हि चेहरा मोहराभऽ जाइ छलइ। चेहरा देक्खयेकऽ लाइग जईता, क्क कते समपइत व्हिका हेतइ। एकटा हैदराबादकऽ विजामे एहि छलाय, जेकरा देखला पर बुझईता जे कतेक दक्र अइ।

घुरिबाबु बडड कम बजई छव्थ- सुवि आ मुक्स्कयाई बेि छइथ। ई मुस्की बडड मार क छइ, थाहे वि लागय दइ छलव्खि जे खुि भेलाह आ क्कछु आर। कम बजाई, सेहो धर्विकाहाक गुर छइ। आब ई गुर ससइ कऽ आइब गेल छइ- अफसर सब मे। जतेक ब़ का अफसर, ओ ओते कम बजताह। आहा बजबासऽ अंदाज लगा सकइ छी, जे कोि पद पर छइथ। एि चुप रहइ जेता, जेि बजलासदु कठा जमीि ककरो व्दअय जेतइ।

घुरि बाबु चुप्पे मुंहे सबसं पव्रचय पातकऽ रहल छलाह। क्कपता, बच्च्चेसउकिे घर धेि छल। आब उमहर ग़ ब़`लइ त इमहर धेि अइछ। आब त सीधा सादा फमुष्मा छइ-

बाबू ब़ ा ि भैया, सबसे ब़ ा रपैया।

जे बेिी पाइ देतइ, ओकरे काज करतइ। बापताकऽ पुरिी मालक छलखि त ओहो- लल्लो चप्पो मे लागल छल। तै रमकिऽ उठबऽ आयल।

घुरि बाबुकऽ " हक अन्ति हक कथा अिता" बाला खिस्सा सब छलइि।

आजुक समय मे सरकार दु टा बयाह करऽ मे , िरोक लगेि छइ- राखऽ मे त िवि। ओ अही वसदातकऽ छलाह। िहर मे एकटाकऽ रखलखि आ ओकर पुरा भार ताउम उठेलखि। गाम मे सेहो एकटा िसषकऽ पकहि रहइ लेल कोठली देलखि आ बाद मे घरे मे आइि लेलकिि। लोकक लेल ओ िसष़ मोि खराब मे सेिी करऽ लेल आयल छलइि, बाद मे त सबकदिी उिके कतऽ रहअ लगलइि। ओहो िसषिया जबर छल- पुर ख कयो कछु कहवथि से त कममते िवि, स्तीगर मेसककयो कछु कहइ, त उिका तेहि िर बाब दइि जे मुंहे बंदभऽ जाइि। ई िसषत हाल तक छलइि।सबसं कमाल ई छलइ जे कहयो कयो िकाइत िवि केलकइि। पीठ पाछु लोक मस्ती मे कहइ- घुरि बाबुकऽ बडड सूिर " डेबऽ " अबइ छइि। ईएह ’कला "कऽ कारर सबहक वजजासाकऽ केर बिलि छलाह।

उठअ पड़ लइि रमि के।

घुरि बाबु त कतउ जाय बला लोक वि ।ओ त अपि कोि बच्हकि सासुरो तक वि गेल छइथ। अपि सासुर, बाबाहक बाद कतऽ सऽ जयताह।अही तरहक कयेक टा गुरक भंडार छलाह, तै ि चुटी जेका सऊंसे लोक उकिर लग ससइ कऽ आइब गेल-बाि बजौि। ईएह त छइ "आकरष"।

रमि जा कऽ गोर लगलखि। हाल चाल पुछलाकऽ बाद घुरि बाबु कहलखि-

आहा हमर घर अबातऊं- त बडड खुिी होइताय।

- कयैक वि। हम कििके काल मे अबइ छी।

बस घुरि बाबु उठलाह। सबके िमस्कार केलाह आ चलइत बिलाह।

रमि बुझई छलाह जे ओ कयैक अयलाह अछ। आइ तक त कह्यो घर पर बजेला वि। उकिर घरो जादुगरक वाक्लसम छइ। कतेक तरहक वखस्सा। कयो कहइ जे सब देबालक बीच मे घर गरम करबाक बेबसथा छइ। जारइि ओइ मे दइत रहु आर माघो मास उघारे देह सूतु। ततेक गमष़ घरभऽ जाइ छइ। कयो कहइ जे उकिर घर मे जे बंदुक छइि ओकर मुठ "सोिि"कऽ छइ। उकिर बदअयद त कह्यो उकिर कतऽ जाइये वि सकइ छथ-रमि त सद दोसर टोलक।

गामक लोक अंदाज लगा लेलक जे की बात छइ। कयो कयो

तुर पा फेकइ छलाह - जे अही लेल- त कयो दोसर लेल। अंदाज लगेिाई ि्ुर भऽ   गेल छलइ।

उटकर पचे डेढ़ सै।

घुरि बाबु आ रमकि समीकरर सबहक बुझबासदुर छलइ लेककि मातिइ के।

घुरि बाबुकऽ   बेटी करर आ जमाय सुधीर कादेि मे रहइ छलखि।करर ओतऽ   दुखताईभऽ   गेल छलखि। आब उिका देि मे रहबाक िीक जागल छलइि। भेलइि जे पाइि बदलत तभऽ सकइत अइछ जे मोिि ठीकभऽ   जाय।

 ओतऽ   सकदल्ली आयल छलाह आ अतइ घर कीिबाक उधेरबुि मे छलाह। कतउ कतउ घर देखतो छलाह। अतुका समाजसऽ सबदीिि कटले रहलाह। दुखत त करर पकहिेसऽ   छलखि, ऊपरसऽ   कदल्ली मे अइ गमी मे मुहल्ले मुहल्ले कछकछयेिाई। पोपटी एजेट सब घुमबइत रहलइि। करर कऽ   लू लाइग गेलइि। अस्पताल मे भती भेलीह , लेककि बइच िवि सकलीह। सुधीरकऽ कदल्ली मे कयो िवि अपि। घुरि बाबुकऽ   खबर भेल। ओ कयेक लोककऽ   सुचिि देलखीि- मदद लेल कोिि कहथि।कयो िवि टघरलइि। गऊंआ कसाबे रमिकऽ   कहलखि।

रमि अस्पताल गेलाह। ओतऽ   सुधीरसऽ   भेट भेलइि। सुधीरक दुि् बेटा सेहो कादेिसऽ   आइब चुकल छलइि। दुखतेकऽ   खबर ओकरा सबकऽ   छलइ।ओही पर ओ सब आयल। अस्पताले मे

बापसऽ ल अ लागल जे अही मारलऊं हमर माय के। कोि काज छल हुिका भारत अिबाक लेल। आहाकऽ अपि मोि भेल त आहा जाऊ। आहाकऽ छी अपि बिचार थोपअ बाला।व्यक्तिगत आजादीकऽ आहा सीमा लंघलऊं। अपराधी छी आहा ...... अक्हि कतेक उपराग।........ हम सब पुक्तसकऽ क्पोटष करबइ।.............. अहा योजिा बिाकऽ मायकऽ मारलऊं।आरो आरो बात सब। सुधीर माथ पर हाथ देि गुम्म बैसल।

अस्पताल मे आरो मरीजक तीमारदार सब ई तमाि देखइ छलाय।रमि त क्कििको कचन्हइतो िवि छलाह। भी देखकऽ उम्हर गेलाह त सब बुझा गेलइि।

रमर सीधा सुधीर लग गेलाह आ घुरि बाबुकऽ समादकऽ बारे मे बतेलक्खि।

सुधीर बजलाह-

-ईएह लीला छल हमर घर के। तै पराअकऽ अतऽ अयलऊं। भान्य हमर साथ िवि देलक। क्करर संग छोव देलीह। हमरा त दाह संस्कारकऽ कोिि जाि िवि। आहा कहूिि करबाअ क्दय-कक्ह क-कलजोड़ कऽ ठारभऽ गेलक्खि।

-हमर कोिि भी विरिषा पर कक्हयो सबाल िवि उठेली आ ऊपरससंग सेहो देलीह। देि घुरऽ कऽ हमरे इच्छा छल, जैकरा ओ अपि

कहलीह।हम ठीके दोरी छी। जे सजा दइ जैब से दीयह, मुदा पक्हि उकिर दाह संस्कार अपि सबहक कक्धसऽ करबाऊ-दहोबहो कविित सुधीर बाईज रहल छलाह।

रमि कद्लली मे त तीस बरखसऽ रही रहल छलाह। बहुत रास संस्था सबससेहो जुु ल छलाह। लोक सबकऽ खबर केलक्खि। दस लोक करीब भऽ गेलाह। सुधीरक बेटो सब, मोकि कक्कार वकिललाकऽ बाद ाित भेल। सब कयो वगिमबोध घाट जाइ गेलाह। ओतइ कक्ता पर लक ीकऽ बीच मे ककररक देहकऽ जखइि राखल गेल छलइि तखि सुधीर बजलाह-

-

आब हमराकऽ सहारा अइ। हमर अंकाम इच्छा अइ जे ककररक एकटा फोटो लइक्तयइि। ऊयाह हमर जीिकि संबल छलीह। हमरासऽ बयस मे छोट छलीह आ पक्हि छोव देलीह। धरफरी मे छलीह। हमर अंकाम इच्छा आहा कहूि पुराकऽ दी। ताक्ह जमाि मे कैमरा मैिकऽ बजेिाई आसाि िवि छलइ। तखि रमि, चादिी चौकसस्टुडीयो बालाकऽ बजबेलाह। ओ ककररक मृत्यु ियि्या परक फोटो खीचलक।फेर मुखाकि बेटा देलखीि।

सुधीर स्टुक्डयो बालाकऽ पाइ देबऽ चाहलक्खि लेककि ओ िवि लेलकइि।

सुधीर बाकी संस्कार हकदार मे कयलाह। सब बेबसथा घुरबाबु

करी देने रहथि।

हवलदारसँ सुधीर सासुर गेल छलाह। ओतऽ अदौपात सब बात घुरनि बाबुकेँ कहलखिन। अंतिम इच्छा सेहो पुरा भेलइनि।

अकरे धन्यबाद दइ लेल घुरनि बाबु गेल छलाह। पहिले पहिल रमनि सेहो उनकिर गमषघर मे बइसलाह। ईएह त "डेबऽ " बाला कला छलइ , जईमे घुरनि बाबु माहिर छलाह- रमनि सेहो आइ बुझये गेलाह।

क्ाि एडक्ाि (लघुकथा)

रमि मैक्ककऽ इक्तहाि पासकऽ चुकला अइछ। ि्मार ठीक ठाक छइि। जेहि विदाथी रहता, तेहि ि िमरो एतइि। आब िुर भेल आगुक योजिा।

रमकि क्पता बुधि बाबुकऽ सेहो अपि पढ़बाक इक्तहास छलइि। सात बेर मे ओ तक्हया मैक्क पास कयि छलाह। उिकर पढ़ाइकऽ पाछु पुरा हरक्दअय मौजे क्बका गेल छलइि। सतमे मे जखइि छलाह तखिसिऽ उिका तासक िाि छलइि। जाबइत कोटषपीस मे "कोटष आ टिटी एट मे "लालक सेट " विि होइ, ओ सुतइ विि छलाह। उिका मोि लगेबा लेल गामक चाइर गोटेकऽ सेहो उिकर कलकता बाला घर मे रहबाक बेबसथा केल गेल छलइि। चाइर मे तीिि गोटे त तासक गोक्धये भेलाह आ बचला एक गोटे- से राजा दैि ज्यो अइ मेसऽ क्कयो विि उपलब्ध छक्थ, तखि लेल। खेल त विि रकबाक चाही िि। ओहो गोक्धया दुआरे। जे हाथ मे छलइि -से उिकर बाबुजी केलक्खि।

ई चार गोटे पईढ़ क्लख कऽ आगु बइढ़ गेलाह आ बुधि बाबु िपिस गाम घुइर गेलाह। एको क्कलास आगु पास विि कऽ पौलाह। िौिि पास कक्हयउिि दसमा फेल - ईएह भेलइि उिकर िहरक कमाइ।ओ त कक्हते छलक्खि जे पढ़ाइ छोअइ कऽ कोिि काज

करा क्लयह। उकिर बाबुजी विि सुलिक्खि कक्छु। आब भुगतस।

आब रमिकि बेर आयल छलइि। हरक्दअय सिकि धिहर मौजे बुधि बाबुकऽ पढ़बा मे क्बकेलइि त रमिि मे कक्छु बविते छइ। आब त मौजे विि रहलइ-सब सरकारलऽ लेलकइ।जैह छइ, ऊयाह क्बकेतइ। बेबसथा त अक्हि होइ छइ ि- "ओ पढ़ाइ की, जई मे जमीि विि क्बकाय।"

कालेजक पढ़ाइकऽ खचषकोिि हंसी ठठा छइ। बुधि बाबुकऽ गाम आब क्डक्सरक्ट बोडषमे आइब गेल छलइि। अखिि ब़ की टा खरहोइरे छलइि। अकर बगल तक बस्ती आइब गेल छलइ। कक्छु लोक क्दि राइत बुधि बाबुकऽ आगु पाछुकऽ रहल छल। ललका झंडाकऽ उत्पात सेहो िर भऽ गेल छलइ। उएह सब बुधि बाबुकऽ मोिि मे डर बइसाबऽ लगलइि जे बजार मे सुलिऊं क्क ि अहाक खरहोर पर ललका झंडा लगाकऽ कब्जा करऽ बाला अइछ। बुधि बाबु चट दं र बाब देक्थि -ई त हमर खक्तहािि जमीि अइछ। कोिि कब्जाकऽ लेत।

-अरे आहा सुक्लियई विि जे बरगािि बालाकऽ कयेक बीघा पर झंडा लगा देलकइि। कक्छु विकिऽ सकलाह। कयेक बेर हंसेरी सबकऽ जमा कयल गेल। लेक्कि ओ क्टडडी दलकऽ की करतइ। ततेक ि लोक आइबकऽ बइस गेल जे क्िये उजाइर पेलाह।

दोसर गोटे बजलाह-

खुब थाि पुक्लस भेल। पाइयो खुयेलक्खि, लेक्कि कब्जा िवि भऽ सकलइि।

- आब केस चलइ छइि।कतेक बरख चलतइि, सेकऽ जिविित अइछ। क्सविलिक मोकदमे एहिि होइ छइ। पीढ़ी बदइल जाइ छइ मूदा फैसला िवि भऽ पबइ छइ।

-तेसर गोटे उपरसऽ टीपई छइथ -

बेहरी बालाकऽ त ओतऽ कचहरी रहइि-ओहो हाथसऽ चइल गेलइि।

अक्हिि सक्दखि ओ िहर बाला सब बुधि बाबुकऽ डरबइत रहइ छइि। ओहो सोचऽ पर मजबुर छलाह जे ब़ का ब़ का कलामी घरबाला सबकऽ ई हाल, त उिकर की हेतइि। कोिि भरोस, कक्हयो ललका झंडा उिके खेत पर िवि गाइ दइि।

इमहर गऊंओ सब उिका बडड अंईठल बुझाई लागल छलइि। अपिि मे सब मगि। बुधि बाबुकऽ कोिि मोजरे िवि। उमहर देखू िहरबाला सब के, कतेक आगु पाछु करइत अइछ। ललका झंडाकऽ बारे मे उएह सब बतेलक। अपि गऊंआ त कक्छु कक्हते िवि अइछ। ओ क्कछु ि-डाह होइत हेतइ अकरा सब के। भीतक्रया क्दअयदी त चइलते छइ ि

बुधि बाबुकऽ धीरे-धीरे पुरा गाम - समाज आ, आर ि हर बाला सब अपना बुझाई लगलइ।

एक दिन ओ सब कहबो केलकइ- अइ गाम मे आहासऽ ब़ का के?

गामक ि मि आहा पर होबाक चाही।

-आहा खरहोइ ि ला जमीन हमरा सबकऽ लिख दियह। हम सब आहाक ि मिसकालोि ि बि ायिब।

ई गप्पक असइ आब बुधि बाबु पर पइ रहल छलइ। ि मिक ि ि त सबसं ब़ का ि ि थीक।

इमहर रमि सेहो मैट्रिक पास केलक्खि। अपि बेर मे हरदम अय मौजे त बेटाक बेर मे खर हौरे बेचि ाई त बवि ते छइ।

बुधि बाबु चुपेचाप खर हौरे, अपि ि मिक कालोि िक लोभे बेच देलाह। जखइ कि ा ि मेहि तिकऽ हाथ पर मोट पाइ अबइ छइ त ओ वि ि रकइ छइ। अपि संगे कतेक रास आदत आ ि ाकिऽ सेहो अि वि छइ। जमीन कीि ऽ बाला लोकक लाइि लाइग गेलइ। ि ुर मे त सब बसऽ लेल हाथ जोई कऽ अबइ छइ।

रवजसरी होइते वारवाटोसऽ बेिी जल्दी रंग बदइल लइत अइछ। सस्ते मे कतेक लोक जमीि क्लखा लेलकइि।

आब सबाल उठलइ बुधि बाबुकऽ िमि पर कालोिी बिबऽ कऽ त ओकरा सबकऽ " बुधि" िमि ठीक िवि लगलइ। ओ बूधि बाबुकऽ बाबा "धिीलाल बाबु"कऽ िमिस"लाल" लेलक आ कालोिीकऽ िमि "लाल बाग" रखलक। ई कछु िवि- फुक्सयाही गप्प बुधि बाबुकऽ िमिक बारे मे कव्ह देलकइि। आब कयले की जा सकइत अइछ।कतउ "िमिक" क्लखा-पढ़ी त भेले िवि छलइ।

"अपि हारल बहुक मारल कतउ क्कयो बजलक" - मोि मसोईसेकऽ रही गेलाह बुधि बाबु।

आब ि्र भेल रमिक कालेजक पढ़ाइकऽ अ् याय।

रमिकऽ गाम मे सब कहऽ लगलइि

-" आहाक बाप त सब बेच देताह। घरो घरारी िवि बाचत"।ई बात उिका सुिबा मे अधलाह लगइि।

अइ घरक जे परम्परा छलइ ओइ मे िवि बुधि बाबु अपि क्पताकऽ

कछु कहलखिन आ ओ रमन कछू बुधन बाबु के।अतबा मोन मे रमन विशयकऽ लेलाह जे अतऽ गाम मे ओ ओ रहताह आ ओ पढ़ताह।

कयेक संबंधी सब गाहे-बगाहे अतऽ अबइ छलाह आ बुधन बाबुकऽ उदारतासऽ उपकृत होइत रहलाह।

आब रमन कि बेर छलइन।

पैघ शहर मे एकटा संबंधी रहइ छलखिन। ओतुका कालेज सेहो नामी छल। रमन गामसओतऽ पहुंचला। पहिल बेर असगर बहरायल रहइत। माय हुनकर कयेक टा सनेस मोटरी संगकऽ देने रहथिन।ओ घरबइया, रमनकिऽ देखते बडड खुश भेलाह। ऊपरसऽ अतेक तरहक सनेस। पुरा मान-दान भेलइन रमन के। रमनकिऽ बुझेलइन जे अतेक दिन ओ कअएह ओ आयल छलाह। आब हुनका अपन परिवार पर गर्व बुझाय लगलइन। अपन आगुकऽ कालेजक पढ़ाइकऽ बारे मे सविस्तार गप्प सप भेलइन। अगले दिन ओ संबंधी कालेजसएडमिशनकिऽ फार्मसऽ क अयलाह। अवाला रविकिऽ फुरसत मे फार्मभरबाकऽ बारे मे सोचल गेल। एक हफ्ता बीत गेल छल। रविकिऽ फार्मभरबा काल छात्रावासक कालम अयलइ। ओ संबंधी आ रमन एक दोसरा दिस ताकऽ लगलाह। रमन त एडमिशन लेल आयल छलाह। रहबाक विषय मे त सोचने ओ छलाह। तखन बजलाह - होस्टल त छइ न कालेज मे। ओतइ रहब।

संबंधी बजलाह-विि वि। अतइ रहब।

तखि फामषमे होस्टल भरेलइ।

सुतली राइत कछु कि फुसकीकऽ आि जिसरमकि िद टुटलइि-

- आहा कअए कहलयई जे अतइ रहब।

- ई केि ि कहकयई।

-अपि धया-पुता अइछ। सेह बुझल अइ ि। धीरे धीरे खचा बढ़त।

- अइ िहर मे रही कऽ होस्टल मे रमि रहताह त कतउ मुंह देखाबो जोग़ रहब।

-सबकि अतऽ राखब से ओकाइत अइ आहा के। हमर भाइकऽ कते मोि छलइ अतऽ पढ़बाक के। ओइ बेर मे त िक पर माछी वि बइसऽ देलयई। अइ बेर देखू ि।

- आहा बुझअकऽ कोवि कर ।

-ओहो। हम बुझते वि।सब त अही बुझई छयई।

-हम त कोदो खाकऽ पढ़ि छी ि।

-कोि जर रत वि छइ। मेजि करऽ के।

-आठ दसबेिभऽ गेलइि।कहया जेताह।

-हम केि पुछबइ।

-कोि काज वि छइ अतऽ एडि के।

अकहि ब़ ी काल फुसफसी चलइत रहल। कछु रमकिऽ सुिलइि आ कछु विफिरषविकाललाह।

अवाला कदि रमकि फामषकालेज मे जमाभऽ गेलइि।

एक हफ्ता बाद एडमाि किऽ कलस्ट विकिललइ। रमकि िमि ओइ मे विि छलइि।

ओ संबंधी बडड अफसोस जाकरकऽ रहल छलाह। आब रमकि सोझा गाम घुरबाक दोसर कोिि रस्ता विि छलइि।

तकया त िहरक पकहले दुविया देखिि छलाह। आब होइ छइि जे कही उकिर एडमाि किऽ फामषजमे त विि भेलइि। जमा विि भेलइि त कलस्ट मे िमि कतऽ सअऊतइि।उकिा कालेज विि जायल देल गेलइि- ई की सिहि छल िि सावजिि। ई पहेली उकिा भइ जीिि वखहा इत रहलइि। र बाब विियेि भेटलइि।

गाम मे सब उम्मेद लगौिि जे ओइ िहर मे त कयेक टा िक कालेज छइ। कोिि िि कोिि मे एडमाि भईये जेतइि।ऊपरसजे "फला" ओतऽ छवथये- कोिि बातक कांता बेगरता।" फला"कऽ अिभिलिऽ क रमिि गाम मे छवथ। लालबागकऽ बोडषलाइग गेल छइ। रमकिऽ ओ बोडषकटहा कुकुर जेका लगइि। उमहर गेिाई ओ छोिव देििि छलाह।रमकिऽ घुरल देखकऽ , घर मे सब दुखी

छल। मातम जेका पसरल्स्थकाभऽ गेल छलइ घर मे। उम्मेद टुइट गेलइ जेि।

अवाला कदि भोरे भोर दोसर टोलकऽ बीर ठाकुर रमि कि घर पर आयल छलाह। अयबाक मकसद त जमीि कि थाह लेल छलइि।देखार िवि भेलाह। बुधि बाबु लग बइसलाह। कालेजक पढ़ाइकऽ िमि पर जमीि ककका गेलइि आ रमि कि एडकाि िवि भेलइि।

बीर ठाकुर दोसर िहर मे रहइ छल। अपि किऽ छात-िता कहइत छल। जेि "बाल कवि"कऽ अपि बालकभऽ जाइ छइि- तइयो उपमा " बाल कवि"कऽ िवि छो़ ताह। "युि िता "कऽ धीया पुता, चेतिभऽ जाइ छइि, तखि युि िता कहबइते रहइ छथ्थ। ओकि ई "छात िता " छथ्थ। िवि जाइि ककह्या तक ई छात िता रहताह। दस बरखसऽ उपरभऽ गेलइि मैकरक केलाह।गाम मे त सब कहइ छइि जे ककसर जीकऽ ई सब लठैत छइथ। जे भी होइथ। बीर ठाकुर बजलाह-

चाइर टा कालेजकऽ पंिसपल त हमर संगी अइछ आ कतेक रास पोफेसर सब त हमर जेबी मे अइछ। आहा रमि किऽ हमरा लग पठा कदयऊं। ई त दु किमि टकऽ काज छइ। अहु लेल आहा कंिता मे छी। कहुं त। तखि हमरा सि भाकाजकऽ रहि कोि काज।

-आब एडकाि किऽ तारीख खत्तमभऽ गेल छइ। अप्लाईयो िवि भेल छइि।

- आहा छोर ि। ई सब, हमर कंगुकरया आंगुरकऽ बरोबइ काज छइ। आब आहा बुइझ क्लयह जे एडक्मा िभऽ गेलइि। बस कि ी हमरो सब पर ्यािदेि रहबइ। हमरा घरारी मे बडड कि मिकि अइछ। ज्यो अपि छाया मे बसा लइतऊं त ब़् का उपकार होइताह। आब आहा सब जेका सोचऽ बाला लोक कहा। आहा अंक्तम क ी छी।

रमि सब लल्लो चप्पो बाला गप्प सुि वि छलाह। सबहक जई मे उएह जमीि। आब उि का बचबे कतेक केलइि। एकटाकऽ हश अक्हिा देखि छलाह।गामेकऽ छलाह। पटिा मे पढ़ई छलाह।

पटिा मे एडक्मा ि खाक्तर रमि सिपाइलऽ लेि छलइि। ओकर बादसऽ वि पिता छल। बाद मे पता चललइि जे ओकर हर सालकऽ ईएह धंधे छइ। दु चाइरटाकऽ मुगा हर साल बि बिइया।

आब रमि किऽ सब ठगहा बुझाई लगलइि।गामक लग बाला कालेजक पोफेसर, जे गऊंआ सेहो छलक्खि, उि को लग गेल छलाह।

- हमर कालेज ई छइ। ओ छइ। क्सस्टम छइ। वि शिवि दािलय मे छठम स्थाि छइ। आहा अइ बेर छोव क्दयउ। अवाला बरख आऊ। हम एडक्मा ि करा देब। अखइि हमरा मीक्टंग मे जयबाक अइछ। चलइ छी।

आर कक्छु िवि । असल मे टरकेलक्कि। ओहो चपचपायल छलाह एक समय मे जमीि लेबाक लेल। िवि देल गेलइि- तकरे क्कार छइि।

एक साल बेकार बइसल रहस रमि, कतेक आसािसऽ ओ कहि देलखि। रमकि आंईख िरा गेलइि। सबहक एडमि िभऽ गेल छलइ आ ओ दुआरे दुआर बउआ रहल छलाह। आब अफसोस होइि जे कयैक िहरक चकर मे परलाह। उकिा त बहुत िमर आयल छइि। अइ कालेज सब मे सोझे एडमि िभऽ जंइतइि।

ईएह होइ छइ-

वाि िकाले, वापरीत बुद्ध।

होिाहाथ धराकऽ करा दइ छइ। आब अपि बाहर पढ़बाक फैसला पर खीस बरइि। घरो मे कयो सलाह िव देलकइि या िव मंगलखि। जे भी हो। कछि समय बीत रहल छलइि। जीिकि पाठ पईढ़ रहल छलाह।

अही समय मे बीर ठाकुरकऽ गप्प मे कछु उमेद बुझेलइि।

अवाला सोमकऽ भोरका चरबजया रेि पकइ कऽ रमि िहर गेलाह। स्टेििसऽ ओि बीर ठाकुरकऽ डेरा दुर छलइि, मूदा रमि भोर मे टहलइत वादा भेलाह। वकि बाला बच्चा बुइझकऽ भारा बेिबतेलकइि, तै िव लेलाह।आब आर ठगाय िव चाहइ छलाह। सात बजेकऽ करीब ओकर लौज पर पहुंचलाह। ओ सुतले छल। इकिा देखते जोि मे आयल। ओकरा गाम मे रमकि पटीसकयो मोजर िव दइ छलइ।आइ काजलऽ क कयो आयल छइ।अपि लंबा लंबा गप्प देिाई िर केलक। रमि त काजसआयल

छलाह। चुप चाप सुनि छलाह।

थोरेक काल बाद कहलकइ - कागज सब अनि छी नि।

-हं -हं।देख कलयह।

- देखबाक कोनि काज। रखनि रहु।

-आहा बइसु अतइ। हम कनी काल मे अबइ छी।

रमनि ओतइ बइसल छलाह। दु घंटाकऽ बाद ओ बुलेट मोटरसाइकल पर एकगोटेक संग बइसल, हरहराकऽ पहुंचल। फेर तीनु गोटा लौजक सामनि बाला भरभुजाक दोकानि मे गेलाह आ चुडा-दही जलखइ कयलाह।

फेर तीनु गोटे बुलेटसवारदा भेलाह। ओ बुलेटकऽ पहिल नि दोसर गेयर मे चलबइ छल, जईसआबाज फटफटकऽ बेनी होइ। बीर ठाकुर बुलेट पर सीनि तनि चलबइ छल। रमनिकऽ बुझाई जे कोनी ररक मैदानि मे जा रहल छलाह। पाचे मनिट मे एकटा कालेज मे पहुंचलाह। अइसऽ दसगुना दुरी त रमनि स्टेनिसिपैदल चइलकऽ आयल छलाह।

बीर हाथ मे बुलेटक चाभीकऽ छल्ला घुमबइत कालेजक कायालय मे गेलाह। करानी बाबु ओकर जानि पहचानिकऽ छलखनि। कालेज मे एडमनिकऽ सीट खालये छलइ। बीर सऽ उनिका पहनि

कछु गप्प भक्संभि भेल छलइि। कागज सबलऽ लेलक्कि। एडक्मिि फीस बतेलक्खि। रमि त पाइ लइयेकऽ आयल छलाह। तुरंते देलक्खि।भऽ गेलइि एडक्मिि। करािी बाबु कहलक्खि जे काइलसकालेज आइब जाऊ। कोिी क्दकत हुआय त हम छीहे।

रमकि खुिीकऽ ठेकािि वि। घर मे िवि पढ़ल क्लखल रहलाहकऽ काररर कहू या बाहर िवि वकिललाकऽ काररर- "फोसरी बुझु की भोकनरभऽ गेल।" एिी एडक्मिि हेतइ से ओ सोचिहो िवि छलाह।

करािी बाबुसबीर कऽ परिमि पाती भेलइि। फेर सब बुलेटसक्वदा भेलाह।

वांक्सपल ओिी कालेज मे छलक्खि। उिका लग बीर िवि गेलाह। की जािि, जािि पहचािि छइि क्क िवि। आब अइ सब पर पश क्वन्ह लगेबाक स्थक्त मे रमि िवि छलाह। उिका त बुझाइि जे जीबते बैतररी पारकऽ गेलाह। एडक्मििभऽ गेल छलइि।आब होइि जे गाम बाला पोफेसरकऽ जाकऽ कक्हयइ जे देखू हमर एडक्मििभऽ गेल। आब अवाला बरख हमरा आहाक खुिीमद िवि अइछ। अपि परफेसरी अपि लग राखु। ओकर बातसऽ बडड दुखी तक्हया रमि भेल छलाह। मोिि होइ छलइि जे ओकर मुंह िइच ली। गाम लग रक्हतइि त बीर कऽ कक्हतक्थि जे ओइ परफेसरकऽ दलािि बाटे बुलेटस चलु -फटफट करइत।

आब रमि, बीर कऽ हदयसबीर भाइ कहऽ लगलाह। बीर बुझइ छल जे ओकरा अपि धाही देखेबाक ईएह मौका छइ। ओ

रमिकऽ भइ क्द्रि कतउ कतउ घुमबइत रहलइि। ओ जे तेसर लोक बुलेट पर बइसल छल, ओकरोसरमिकऽ दोस्तीभऽ गेल छलइि। भक्सक बुलेट ओकरे छलइ। क्द्रि मे होटल मे तीि गोटे खेिाई खाई गेलाह। अखइि तक कतउ बीर कऽ पाइ दइत िव देखलक्खि। ई सबसरमिक सीिा सेहो चौ ा भेल जा रहल छइि।

साझ होइत होइत रमिक चाइल मे अक आइब गेल छलइि। ओहो अपिाकऽ बीर बुझअ लागल छलाह। बुलेटसस्टाइल मे उत इ आ चढ़ई छलाह। कखिा डार आ गदषिकऽ ढ़ील िव छो इ छलाह।किि मिि दादा टाइप अपिाकऽ बुझबा मे आइब रहल छलइि।पक्हल अििभ छलइि। आइये एडक्मिि भेलइि आ आइये सऊंसे िहर घुईम लेलाह।

संझुका सतबक्जयासगाम घुरबाक छलइि। बीर सेहो कहलक्खि जे गाम हमहु जायब। आइ विजयीभऽ क गाम घुरबाक छलइि। ईएह त मौका छलइि जे बुधि बाबुसक्कछु झीट ली।

पाच बजेकऽ करीब स्टेिि तीि गोटे बुलेटसपहुंचलाह। बुलेट चलेबाक उएह अंदाज छलइि जे कतेक बेिि आबाज विकइल सकाय। पक्हलसदोसर वायर, तेसर वायर त क्बारले लागल होइत।सतबक्जया रेि लाइग गेल छल।रेि अतइसऽ खुजई छलइ। रमि जाकऽ बैस रहलाह आ एक सीट बीर लेल सेहो गमछा ध

कऽ घेर लेलाह।

अखइि त रेि खुलबाक मे ब़ ी काल बाकी छलइ तै लेल बोगी खाक्लये जका छलइ। ज्यो ज्यो रेिकिऽ खुलबाक टाईम लगीच अबइत गेलइ , लोक आबऽ लगलइ। बुलेटक आबाज सुइिकऽ कछु ओतुके छौ ा सब एलइ। ओकरे सबहक संग बीर आ तेसर लोक कतउ चइल गेल छलाह। पर्कि रमि अइ छौ ा सबकऽ लफुआ कहइ बुझई छलखि। मूदा आइ त ओ सब स्टेिकि दादा लगइ छलइि। अपिकऽ ओ ओकर सबहक समाग बुझई छलाह।

जेि गाम मे कहबी छइ- " कालेज मे जा कऽ िलेजभऽ जाइ छइ " आइ एडक्मिि होइते रमि सब िक बेजाय बुझअ लगलाह- अपि मोि मोि। कििको ओ गमछा राखल जगह पर बइसह विि देलखि। आबाज मे र आब आइब गेल छलइि। एिि बुझाइि जे रेि उकिे जमीदाक्ये मे छइि। ओ गमछा बाला जगह त जेि ओ कबालाकऽ लेि होइत।

रेिकि बोगी आब पुरा भइ गेल रहइ। बीर कऽ कोि पता वि। ओकरा लेल जगह छेकि छलाह रमि। खाली जगह देखकऽ कयेक लोग लुधकय, बइसय लेल। रमकि रौर र प देखकऽ सीट सहइट जाय। आब बोगी मे लोक ठार भेिइ सेहो िर कऽ देि छल। रमि अकइ कऽ बइसल, चार कात तकइ छलाह। तखि

अ ायास आंधी तूफा जेका धरधराइत एकटा मऊगी आयल आ ध़ ाकसओइ खाली जगह पर बइस रहल। रम अक इत बजलाह-

-देख ही रहे है जो सीट पर गमछा रखा है।

- तो।

-" तो क्या। खाली कीजए। कोई बैठा है"। आबाजकऽ गंभीर करइत अक प मे रम बजलाह।

- "ठीक है। आऐंगे तो उठ जाएंगे"। बहुतही धीरेसऽ ओ मऊगी रम कि आंईख मे आंईख मलाकऽ बाजल।

रम आब ओकरा देखलाह। ओ तीसेक बरखक करीब छल। गोर त वि लेक्क पीरक्सयामे मे सुनर धोआ काया छलइ। ओकरा मे ठहराब छलइ। रम किऽ आंईख अप दोसर क्द करऽ परलइ। बोगी मे जगह कम रहबाक काररे ओइ मऊगीकऽ देहसऽ रम सटल छलाह। बयस्क मऊगी संग सटल रहबाक पक्हल अ ि छलइ। सऊंसे देहक रोईया ठारभऽ गेल छलइ। ए ा बुझाइ जे रोईया वि ई "साही "कऽ काट अइछ। ततेक अकइ्र गेल छलइ जे अप ा ग़ इ छलइ। ओ मउगी आर अप देहकऽ इ का क्द खसा दे छल। आइ मे इहोभऽ सकइत छइ जे ओइ मऊगीकऽ दक्ह ा कात जे अधबयसु पुर ख बइसल छल, ओ बेसी सटबाक पयास करइत होइ। ओकरासऽ िक अइ मऊगीकऽ ई बच्चा रम संग सटबाक मे लगइत होइ। तीि किऽ जगह मे पाच लोक बइसतइ त सटबाक त छइये। आब कमहर सटु, से ओइ म िक्ख पर व भष।

ईहोभऽ सकइ छइ जे ओइ मऊगीकऽ रमि क्व सितः अपि इच्छासऽ भार देि अइछ आ ओइ कात त कयो धक्कअए रहल छइ। जेतह बलात् ि जबरदस्ती िली बात िवि रहइ छइ, सदौसऽ उम्हरे झुकाि बिल रहइ छइ। रमि अइ पवस्थिकऽ आिदि उठा रहल छलाह। संगक्ह साकाके छलाह जे कयो उिका इ िवि बुझइि जे ओ जाइि बुझ्झकऽ ओइ मऊगी मे सटल छैथ। ओ धीरे धीरे अपि देहक भार रमि पर खसेि जा रहल छल। रमकि रोईया त ओकरो ग़ इत हेतइ, तैयो ओ बेपरिाह छल। पुरा बोगी मे मौि पसरल छल। अंदरसऽ क्हलकोर रमलिऽ रहल छलाह। ओ मऊगी आ दक्हिि कात बाला पुर ख, कखिि काल क्हलइ डुलइ छलाह- कयो बुझय िवि। रमि त बुझअ लागल छलाह -अतबे काल मे।

आब उिका बीर कऽ कोिि कंता िवि होइ छलइि। मोि मे होइि जे कहूिि ओ िवि ये आबस। सुिि आ देखिहो छलाह जे कयेक बेर रेि लेटभऽ जाइ छइ। आइ होइि जे कहूिि रेि लेटभऽ जाइ। उिकर देह क्हलला डुललाकऽ बाद ओइ मऊगीकऽ देहसऽ कयेक जगहसऽ संइट गेल छल। ओ मऊगी कयैक िवि हटई छल, से रमकि समझसऽ बाहर।

ओ मऊगी माथ पर सािी रखिि संच मंचसबइसल, छल आ िन्य मे तकइ छल। चाइर पाचटा पक्हलुका दादा आब लफुआ सब फ्लेटफामषपर अइ बोगीसऽ ओइ बोगी चहलकदमी करय छल।

ककरो तकइ छल। कखिकऽ आबाज रमि सुिबो करयथ-" अहु मे िव छऊ। ओहु मे िव छऊ। परा गेलइ की। -------"।

बेचैिी ओइ लफुआ सबहक चेहरा पर देखाअ रहल छल। तखि एक टा लफुआ रमकि बोगी मे चढ़ल आ जोरसऽ हाक देलकइ-" हइया छऊ"।

फेर की। आब चाइर पाच टा लफुआ सब बोगी मे आइब गेलइ आ हइया छऊ, हइया छऊ, फुसफुसाय लागल।

रमकिऽ भेलइि जे कही बीर ठाकुरकऽ दुश्मि सब त िव अइछ। आइ त भइ क्दि उकिे संगे बुलेट पर सौसे िहर घुमलाह अइछ। लोक सब तकते छलइि। स्टेिि अबाते केिी दु तीि टा बदमाििी सब पहुंच गेल छल। ओकरे सबहक संग बीर गेल छलाह। सुआइत ि लोक कहइ छइ- " लंगाकऽ दोस्ती िीक िव"। कोि काज छलइ ई बीर संग अयबाक के। एडमिि अइ साल िव होइतइ त पर काभऽ जइतइ। कोिी िीकरी छलइ। कोि चकर मे पइ गेलऊं। ई बदमाििी सब हमरे लेल आयल अइ। हमहु त अकइ कऽ चलइ छलऊं। अकरा सबकऽ भ गेल हेतइ जे ओकर एकरया मे दोसर दादा के।

जे रमकि अकरल देह छलइि, से िविथल हुिअ लगलइि। ठोर पर फफरी परऽ लगलइि। कंठ सुखाय लगलइि। पाइिी िव छलइि लग मे जे पीताह। आब रेिसिउतरताह, से ई बदमाििी सब

जाय देतइ तखि ि। ई कतऽ बीर ठाकुर मइ गेलाह। हम त कक्ह देबइ जे हम िव कन्हइ कछयइ।

फेर रमिकऽ भेलइ जे बुलेट पर संगे बइसल छलऊं, से जे कहत त कक्ह देबइ जे हम त पक्हले बेर िहर आयल छलऊं एडक्मििकऽ लेल। हइया देखू कालेजक रीद। देखला जे झो ा सामि अइछ-ओही मे त सब कागज-पतर सब छइ। हम टीिि अबइ छलऊं, रस्ता मे गा ी रोकलाह आ चढ़ा लेलाह। ओ दोसर टोलकऽ छथ।हम सब सौजवया सेहो िव छी। हमरा छोव क्रयह। ईएह सब सोइच रहल छलाह। बोगी बला लोक की कहत। ककरो हम बइसऽ िव देक्लयई आ आब बेजती होइत।बडड दादा बुझअ लागल छलऊं आब क्लयह।

एक तरफ ओइ मऊगीकऽ समिषऽ गमाहट त दोसर क्दस सामि पाच पाच टा लफंडर बदमििकऽ देखक िक्रतक सदष भेिइ। ओ मऊगी अखि चुप्पी लगेि छल।

किी काल मे ओ छौ ा सब बाजय लागल-" चल ि", "उतर ि", " रेि खुलतइ आब"। पक्हि धीरेसऽ बजलक ओ सब। जखइ बोगी मे कयो कछु िव पत्युतर देलकइ त ओ सब जोरसबाजय लागल।रमि रेिसऽ बाहर जाइि बुइझकऽ तकइ छलाह, कािि त बोवाये मे पाथल रहइ।

ओकर सबहक साहस बढ़अ लगलइ। आब ओ ओइ मऊगीकऽ छुकऽ कहलकइ-" चल उतर, बडड दौरैि छे आइ, रेि खुईज जेतउ त लइत रक्हये, पहुंच जेबे कतऽ दुि"। आब रमिकऽ जाि मे जाि अयलइि। कहाबतो छइ-

" जाि बची तो लाखो पाए"।

ओ सब त अइ मऊगी लेल आयल अइछ। आब रमि धीरेसऽ अपि देहकऽ ओकरासअलगकऽ लेलाह। अखइि तक ओ िीक लगइ छलइि, आब ओ जाि कि जपाल बुझाइि। अपिकिऽ पुरा तरहे अइ अ् यायसऽ बाहरकऽ लेिि छलाह। जेिि क्क ओ अतऽ छइथे विि। " विि हरष विि वस्मियो" बाला क्स्थक्त बिि लेिि छलाह।

आब बोगी मे चार कात रमि तकलाह। देखइ छक्थ जे खायल पीयल धाक देह बला पुरर सब सेहो बैसल छक्थ। सब मौि धारर केि छक्थ। एक टा तऽ मुिंडा सेहो छलाह। कतेक रौबदार चेहरा छलइि। एक बेर घु इक दइतक्थि त अइ लफुआ सबहक क्हम्मत होइतइ-अतऽ ठार होबाक के। पेट गीलभऽ जइतइ,अइ क्सकटी क्पल्ली सबहक। क्ककिो कोिि मतलब विि। आपसो मे विि क्कयो गप्प करय छलाय, आ विि रेिसिऽ िीचा -उपर, चढ़ई-उत्तइ छल।

ओ मऊगी, बोगी मे चार कात एकबेर गदक्ि उठाकऽ देखलक।

फेर ओकरा की िव की फुरेलइ, सामाि त कछु छलइये िव, देहे टा छलइ, एके बेर उठल आ सरसराकऽ बोगीसऽ बाहर चइल गेल। जखि धरधराकऽ सीट पर बइसल छल, ओखि हरहराकऽ परा गेल। ओकर पाछु पाछु ओ लफंडरो सब भागल। तखि इंजि सीटी देलकइ। बीर ठाकुर सेहो दौरल रेि मे चढ़लाह। एक टा बदमाि उिका कहइ छलइि-" जेकरा हम सब सऊंसे रेि आ टीिि पर ताईककऽ हाक्ष गेलऊं ओ त ईएह बोगी मे बैसल छल"। बीर बजलाह-

-" ओह। अजुका जतरे ग़ ब़ छल।"

फेर रमिकऽ कहलखि जे आहा कअए िव कहलऊं जे ओ अतऽ बैसल अइछ।

रमि की बजताह। गमछा हटा लेलाह आ कहलखि -"कयह । बैसु।"

तखि फेर ओइ बदमाि गुपकऽ एकटा छौ ा एलइ आ बाहरेसबीर कऽ कहलकइि-" फेर ओ मऊगी गायबभऽ गेल। आइ कििसओ चोरि - ुकी हमरा सब संगे खेला रहल अइछ। आब जे ससपाहीकऽ डयुटी टीिि पर छइ, ओ बड क ा छइ। सबहक गतर गतर कन्हइ छइ। अजुका जतरे खराब हमर सब के। आब अहुंके रेि खुईज रहल अइछ। हमहु सब जा रहल छी। सोचि रही जे आहाकऽ कछु मजा दी, लेकि िवभऽ सकल"।रेि चइल परल छल।

रमि मोि मे सोचई छलाह जे मजा ओ लेलाह क्क सजा मे समय क्नतेलाह। आइ पक्हले बेर मे बहुते रास अ़िभि लेलाह। बीर कऽ िक कहताह क्क अधलाह। ठीके कालेज मे जाइते िलेजभऽ गेल छलइि। ई क्मि एडक्मि, पन्रह बरखक बच्चाकऽ जीबकि पाठ पढ़ा देलकइि।

अपि लोक (लघुकथा)

भिकिऽ अियास फेसबुक पर मैसेज एलइि। "आहा बंगाली टोला बला भिि छी ि"

भिि सोच मे पड़ गेलाह क ईकऽ छथ। मैसेज पठबऽ बालाकऽ पोफाइल देखलखि त ओ एकटा सुनिर लिि छलीह। उकिर संगी सबहक सुची मे तकलाह- कयो इकिर जािऽ बला िि।

अतबा त िशत छल जे कयो मैथलािथकीह। बंगाली टोला मे त आइसचालीस बरख पिि रहल छलाह। ओतऽ त कयो ल कीसऽ उकिा कोिि जाि पहचाि िि छलइि। मूदा रहल त छइते बंगाली टोला मे। ईहो सते थीक। तरह तरहकऽ िचार सब मिमाग मे उमर घुमर करय छलइि। िि छोरले बिि आ िि कछु कैले बिि। हरदम उएह मैसेज माथा पर िचइत छलइि।

जखि मौका लगइि ......ओइ ललिकिऽ पोफाइलकऽ उलटबइत पलटबइत ...... कछु िषकरषिि िकिलइि। मोि करयि जे ओ अइ मैसेजकऽ र बाब दकऽ पुईछ ली। फेर िबेक एिि करऽ

सऽ मि करयि। ई मोि आ क्वबेकक बीच कमिकि कक्सयाकऽ चइल रहल छलइि। अइ मे लटपटायल भिि। जतेबे अइसबहराय चाहइ छलाह, ओतबे ओझरा जाइ छलाह। ई त काटक झाइ - झंखारभऽ गेल छल.....ओइ मे एक बेर फंसलाकऽ बाद जेतेक हाथ पैर मारब, ओतबे बेिी काट मे फंसब आ काट गरबो करत।

अखइि तक सुिवि छलक्खि जे फेसबुक मे अहीि मैसेज अबइ छइ। संगी बिबाक सेहो िित अबइ छइ। संगीकऽ िितकऽ गक्छते आहाक सबटा समाद ओकरा लग चइल जाइ छइ। ओ तेहि ि एक टा अपि समागकऽ कम्प्युटर मे बइसा दइ छइ........ समक्दअय जेका ओ सबटा समाचार पठबइत रहइ छइ। अइ ".क्वि बजायल पाहुकि " डरक मारे भिि आगु िवि बइढ़ पाइब रहल छलाह।

दोसर गप्प इहो रहइि जे ज्यो ई मैसेज पठबऽ बाला पुरख रक्हतइथ त ओ र बाब दकऽ पुईछ लइतक्थि। उमक ओही प़ ाि पर ठार छक्थ जे अगर इमहर ओमहरकऽ कयो होइ आ ई बात पसइ जाइ त सेहो जुलूम। मैक्थल समाज मे बात क्वथारऽ सबेिी दोसर कोिि काज मे मोिि िवि लगइ छइ। मुदा घर मे त एके बेर लहाकिऽ चीर-फा़ कैल जाइ छइ .... इकिर समाज मे त जाबइत क्वथ़ ा क्वथ़ ा िविभऽ जाइ छइ, गप्पक पोस्टमाटम चक्लते रहइ छइ।

फला फसलाह।

कोनिा मउगीकऽ चकर मे प़ ल छलाह।

पक्ष्हिोसहेतइि।

अइ बेर भंडा फुटलइि।

लोककऽ बुझािईि अतेक आसािविि। केकर भीतर कोिि क्खच़ ी पकइ छइ जेकऽ कहत। ओ त अइ बेर बात बढ़लइ त लोक बुझलक....... ई सब तेला बेलासऽ रेहल खेहल छलाह भििि। विि साहस जुटा सकलाह-जबाब देबइ लेल।

कुछु क्दि बाद फेर मैसेज एलइ -" बुइझ प़ ईया जे आहा विि क्यह पेलऊं। हम धिहा गामक ललि बाबुकऽ बेटी छी। आब उमेद अइछ.....क्यन्हे गेल होयब। "

मैसेज पक्ढ़ते सब कुछु सिसिािकऽ याद आइब गेलइि। पुरा देह झिझिा गेलइि।अपिा पर अफसोस होइि भििकिऽ जे कोिा विि क्यन्हलकिि। फोटोससेहो विि अंदाज लगलइि।ओ की बुझि हेतीह। चटसअपिािटसएप िम्र देलक्खि.... ई क्लयह.....अइ पर गप्प कर या अपि िम्र बताऊ।

चालीस बरख पहिलका सब घटि आंखक सोझा आइब गेलइ। सिनेमाक रील जका सब िचऽ लगलइ। ओ चौदह - पन्द्रह बरखसबेसीकऽ िव छलाह। िवरक परीकादऽ दे छलाह। रजल्ट िव आयल छलइ। उकिर सब संगी सब कतउ कतउ घुमअ गेल छल। ओ सब त की िहर मे डेरा पर रहइत छल , तै अपि गाम या कोिा दोसर िहर मे संबंधी सब कतऽ गेल छल। भबेिकऽ गाम-िहर सब ईएह छलइ। हुिकर कोिा संबंधी दोसर िहर मे िव रहइ छलखि। बच्चेसपरीकाकऽ बाद घरे मे रहिाई भिकिऽ ीक िव लगइ। मूदा जेताह त कतऽ जेताह। उिकर बाबुजीकऽ अपि गामसविरकान्त छलइ। बदली बाला िकरी सेहो िव छइ। मोि मसोईसकऽ रही जाइ छलाह भबेि। ई कोि िकरी, जई मे बदली िव। ओ त एहि िकरी करताह, जईमे खुब घुमअ कारऽ कऽ रहतइ।सब साल जका, परीकाकऽ बादकऽ समय उिका पहा जेका लगइ......अहु बेर सैह छलइ। मूंह लटकाअ कऽ घर मे पड़ल छलाह।

ओही समय हुिकर बाबुजीकऽ संगी ललिजी बम्बइसआयल छलाह। ओिा ओ उम मे भिकि बाबुजीसपैघ रहथि, लेकि दुि मे दोस्ती रहइ। दोस्तीक कारर छलइ जे दुि गोटे पहि अतइ एके जगह िकरी करय छलाह। ललिजी सीवियर छलखि। बाद मे ओ कोिा दोसर परीका पास कं बम्बइ चइल गेलाह। ओ जखिया कखियो गाम कि अबइ छथि त अइ डेरा अयबे करताह। ओ सब बेर इिका सबकऽ बम्बइ अबइ लेल कहइ छथि। बम्बइ जायकऽ भिाकऽ बडड मोि करयि लेकि कयो जेबे िव करय।

ललजिी कहबो केलखिन जे हम आब क्टायरोकऽ जायब, आहा सब कन्हिया आयब। बडड िनि अतुका खेि छी, एक बेर हमरो कतऽ आऊ।

अइ बेर ललजिी अपनि छोटकी बेटी सीमाकऽ बियाह करक लेल अपि गाम आयल छलाह। उकिा तीनि बेटी आ दु बेटा छलइि। सबहक बियाह दाभिऽ गेल छलइि। ई अंतमि काज छलइि.......तै अयबाक आगह बेिनी छलइि।

भिनिक मा बुझई छलखिन जे एतऽ सऽ तऽ कियो जाय बला छइ िनिं, आ भिनिकऽ परीक्षाक बाद घुमबाक मोिकऽ रहल छइि.....ओ कहलखिन- "ल जईयउि भिनि के। आब त ईएह सब ि संबंधकऽ आगु बढ़ौता। बाकी कियो त जाय बला अइछ िनिं। आहासऽ की छुपल अइछ। सब बुझ्इते छी।" फेर की छलइ। भिनिक कप़ा लता सब एकटा झोनी मे रखेलइि आ ओ ललजिी संग बिदा भेलाह। ई बिनि मा बाबु जीकऽ असगर जयबाक पहिले अिसिर छलइि भिनि के। पुरा उत्साह मे छलाह।

पहिं रेि, फेर टायरगािसिओ धिहा गाम पहुंचलाह। ओ त टायरगािनी पर हाक्रकऽ सुिनयो गेल छलाह। पहिले बेर एहि गािनी पर चढ़ल छलाह।काजक आंगि छल। सब लोक भिनिकऽ देख कऽ बडड खुिि भेल। ललजीकऽ पुरा परिवािर भिनिकऽ

हाथो हाथ रखलकइ ि। आखर छलाह त बच्चे ि भ ि ि। थो बाक काल त दला ि पर संचमंच भऽ बैसल रहलाह। ललजी सेहो कतउ ऊईठकऽ गेलाह। उकिर घरक आर बच्चा सब भ ि िकऽ इ िराकऽ क बजेलकइ ि....... ओ उईठ कादा भेलाह.....फेर ि र भेल- खेलक दौ । चोरि ि की, बुक्कया कबडडी, ता ि, लुडो,लाली, कटो आर को ि को ि खेल.... बीच मे पकइ कऽ लोक जलखइ करेलकइ ि। अइ बच्चा सब मे ललजीकऽ बेटी सीमा सेहो छलीह। ओ अइ सबसअ िजा ि जे दसे कि बाद उकिर विहि छइ ि आ ओकर सातम क ि दुरागम ि। भोरेसखेल ि र भऽ जाइ आ राइत तक चलइ। ईजोरयाकऽ समय छलइ तै को ि ईजोतोकऽ बे ि ि काज वि ि। खेल मे एक क ि त ओतुका बच्चा सब भ ि िकऽ बात माइ ि लेलकइ ि....... दोसर कसिल ाई होबऽ लगलइ। कयेक खेल मे अतुका वियम अलग अलग छलइ। कयो झुकइ लेल तैयार वि ि। भ ि िकऽ धमका देलकइ ि- "पाहु ि बुझई छी अपा िकऽ त ओतऽ दला ि पर बैसु गऽ , अतऽ अतुके वियम चलतइ। खेलऽ कऽ अइ त हमरा सबहक वियमसखेलू।" भ ि िकऽ समझौताकऽ अला ि दोसर चारो वि ि छलइ ि। ओतुके वियमसऽ खेलाय लगलाह। गामक बच्चा सब बइमावियो करय........ई भ ि िकऽ बदाश्त वि ि। झग़ ाभऽ जाइ, फेर क ि ि काल मे मेल। अइ झग़ ा मे सीमा हरदम उकिे तरफसरहइ ि, बाकी सब अलग ।

सीमा बम्बइसआयल छलीह। पाच भाइ बक ि मे सबसं छोट, ओइसदुलार ओ बडड छलीह।दोसर उकिे कायाह छलइ ि, तै मोजर

बेिी। एक क्दि खेल मे सबके अप्पि अप्पि िहरक िमि लेबाक रहइ। भिि बंगाली टोला बजलाह.....बसंत मुसरी घरारी बजलाह.....सीमा बंबइ बजलीह आ आर बच्चा आि आि जगह। सीमाकऽ "बंगाली टोला" सुिबा मे िीक लगलइि। फेर की छलइ ओ भिि के" टोला" कहऽ लगलखिि आ बसंतकऽ "मुसरी"। ओ टोला आ मुसरी बाजस आ ठठाकऽ हंईस दइथ।भििि सीमाकऽ बंबइ कहला पर कहलखिि जे ई त "सबुजा आम"कऽ कहल जाइ छइ। ओ सब सीमाकऽ सबुजा आ सीमा इिका सबकऽ टोला आ मुसरी कहथ्थि। अक्हिि हंसइथ खेलाइथ क्दि बीत रहल छलइ। क्बिि मा-बापकऽ भिि आयल छलाह, तै ललिजी आ घरक आि लोक, बेिी ्यािि दइि। सब बच्चा एके जगह सुतय,उठय, खाई पीयई छल। खाली िहाय मे बच्चा आ बुच्ची अलग अलग जगह, समय एके छल।

सीमाकऽ लोक क्बध बाध लेल बजा लइ छलइि। उिकिर मा कहथ्थि -खेलऽ कुदऽ क्दयउ। फेर त अइ घर वारहस्थीकऽ पच्च ि मे फंसहेकऽ छइ।

जेतबा बुझबा मे अयलइि भिि के, ओइ अिुसार ललिजीकऽ अही साल क्रटायरमेंट छलइि। ओइसऽ पहीिि ओ सीमाक क्बबाहकऽ कऽ क्जम्मेदारीसमुक्त होबाक चाहइ छलाह। ओिि सीमाक मा अइ कथाक क्िरोध मे छलखिि। तक्हया स्त्तीगरक बाते कथा िािा मे कतेक मािि जाइ छलइ। क्िि क्कयो कािि बात उिकिर बातकऽ देलकइि। मोिि माइ कऽ अंत मे लाइग गेलीह क्बबाहक तैयारी मे। ल का एम टेककऽ कऽ िजािकिक िकरीकऽ रहल

छल। ब़ क गुर देखी आ कवियाक रप-ईएह सीमाक मा सबके कहइ छलक्खि। ई सेहो उकिा बुझल रहइि जे बरक बयस बेिी छइ........ ललजिीक क्टायरमेट िला बातलऽ कऽ ओ चुप्पी लगा लेि छलीह। सीमाकऽ तं गाम अयलाहकऽ बाद क्काबाहक बात बतायल गेल छलइि- ई सब गप सीमा कहि छलक्खि भिि के, तै फुईस होबाक कोिि मतलब िव।

अहीिि क्काबाहक क्दि आइब गेलइ। सीमा आइ िवि खेलेली। ओ मऊगी सबहक भी मे घेरायल छलीह। साझ मे बर बक्रयाती आयल। भिि अपि बिका कप़ ा जे मा देि छलक्खि, से पक्हरलाह। जे काज लोक अढ़ा दइि, से काज कइयो दइ छलक्खि।

भिि किऽ सीमाक बर देखबा मे िीक िवि लगलइि। ओ बेिी बयसक छल। ककरोसक्कछु बक्जतो िवि छल। भिि दोसर क्दि कती काल ओकरा लग ठाढ़ छलाह, टोकबो िवि केलकइि। सीमाकऽ आब बाहर विकलिाई एकदम्मे बनभऽ गेल छलइि। सारा क्दि लोक सबहक एिाई गेिाई लगले रहइ छलइ। आब भिि किऽ खेलिाई सेहो बने जका छलइि। उकिा मोि उचइट गेल छलइि। सीमाकऽ आब भिि कि लेल समय िवि छलइि। सीमा चुप्पी लगा लेि छलीह। हरदम जोर जोर से क्कचकरऽ िली, गुम्मीभऽ गेल छलीह। दुरागमिसिएक क्दि पक्हि " टोला" सोर कऽ क भिि किऽ बजेलक्खि-" हम काइल सासुर चइल जायब। आहाक बुझल अइछ"।

- हं। हमरा बुझल अइछ।

- हमरा िर िव खसईया। की कर ।

- बीटु जोरसऽ काइट क्लयह।

-िव िव ।

-दोसर उपाय बताऊ।सब कक्ह रहल अइछ क्क दुरगमविया कविया कवि छइ। हम ब़ कोविि केलऊं। िर खसबे िव कैल। मुसरी कतऽ छक्थ.......

कक्हकऽ हंस लगलीह।

-हमर "बर" केहि लगलाह।

-ठीक

-ठीक की। एक िमर, दु िमर से कहू।

- दु िम्मर।

फेर क्कयो सीमाकऽ बजा लेलकइि।

भिि सेहो परेिाि छलाह जे दुरागमाि काल मे क्यो सीमा िव कितीह त लोक की कहतइ।

अगला पाते सीमाक किाईकऽ आिजसभिाक विन टुटलइि।उिका दहोबहो िर खइस रहल छलइि। कखिा ओ अपि माकऽ गर लाइगकऽ त कखिा बक्ह के, त कखिा काकी के, त कखिा पीसी के,कखिा भऊजाइ के, आरो लोक सब के,

फेर ललजी के। दुरगमनिया बरयाती सबहक आंईख सेहो िरा गेल छलइ। कात मे ठार भि सेहो काइ रहल छलाह।सीमा ततेक कलीह ......

सब बजई जे अतेक त कयो वि कालि सासुर जाय काल। सबहक कोढ़ फाइट गेल छलइ। भइ गऊंआ जमा छल ललजीकऽ दरबज्जा पर। वि कवि छल त ओ सीमाक बर छलाह। थोरबा काल बाद सीमा गा ी पर बैस गेल छलीह। लोटा मे पाइ आइकिऽ उकिर मा उका दु घुंट पीयेलखि। फेर गा ीकऽ तीि बेर आगु पाछु केल गेल आ ओ गा ी मे बइस कऽ चइल गेलीह। भि सेहो एकटा दोसर पाहु संग अप घर घुइ गेलाह। कछु द घर पर मोि वि लगइ। सीमाक कवित चेहरा उका परोकिऽ रहल छलइ। धीरे धीरे अप दुनिया मे भि लौट चुकल छलाह। कोि हालचाल वि पता लगलइ। सब बसइ गेलाह।आइ चालीस बरखक बाद ई मैसेज उका सब यादकऽ तरोताजाकऽ देलकइ।

आब दु गोटेकऽ िताक कम िर भेल। सीमाकऽ मा बाबु जी दु सगिसीभऽ गेल छलखि। भाइ- भाऊज आ बि- बिाई सब अप दुनिया मे व्यस्त छथ। सीमा लेल उका सबके समय वि छइ। कयो कोि फोि वि........आबऽ जायकऽ त दुरक गप। सीमा एकतरफा िर मे घरक लोककऽ फोि करय छलखि........ बाद मे फोि कोई छोव देलखि। अि एकसाह

संबंध कक्कयो चललइ अइछ। ल़ ाई र्वि छइर्ि लेक्कर्ि अबरजात बंदयजेका।

सीमाकऽ एकटा बेटा बेटी छइर्ि। बेटी फैर्िि क्वडजाइर्विगकऽ कऽ र्विदेर्ि मे रही रहल छइर्ि। जमाय ओ अपर्ि चुर्िलक।सीमा दोबारा गलती र्विि करऽ चाहइ छलीह। अइ क्वायाहलऽ कऽ सीमाक बर पसन र्विि छक्वथ। ओ अखइर्ि तक अइ संबंधकऽ र्विीकार र्विि केलाह अइछ। ओकर डेरा पर क्वादेर्ि कक्कयो र्विि गेलाह। सीमा अपर्ि साल दु साल पर र्विदेर्ि बेटी कतऽ जाइत अबइत रहइत छइथ। सीमाक घरबाला क्वरटायरकऽ गेल छइथ। कंसल्टेटकऽ काज बंबइ मे ि ुर कयलाह अइछ।बेटा बैक मे र्िाकरीकऽ रहल छइर्ि। ओकरा लेल ल़ की ताईक रहल छइथ।

अकरा बाद भर्िि़िक बारी छलइर्ि। बंगाली टोला बाला मकार्ि क्वाका गेलइर्ि। ओइ पाइसभर्िि़क दुि ु भाइ दोसर र्िहर मे घर कीर्िलाह अइछ। भर्िि़क मा बाबूजी जे भइ़ जीर्िि कक्कयो गाम र्विि गेलाह, से बुढ़ारी मे दुि ु गोटे गाम मे रही रहल छइथ। भर्िि़ एक र्िाकरीसदोसर र्िाकरी करइत, क्वादेर्ि मे प़ ल छइथ। गामकऽ छोव कतउ घर दुआर र्विि बर्िार्िि छइथ। छोट छोट धीया पुता छइर्ि, से सब अतइ पढ़ई छइर्ि। बदली बाला र्िाकरीकऽ र्िाक रहइर्ि, से आब जार्िक जपालभऽ गेल छइर्ि।पक्कर्ि र्िहरे र्िहर आब देर्ि देर्ि क्छक्छया रहल छइथ।

फेर मुसरीकऽ हाल पुछलखिन सीमा। एक बेर त सकपका गेलाह भैया। ब़ का सास छोड़ इत बजलाह- "वि कोनो संपकष ठीके हेताह"।

सच्चाई त ई छलइ जे सीमाक बियाहक तीन चाइर बरखक बाद बसंतकऽ हदय मे कोनो बीमारीभऽ गेल छलइन। पटनासडाक्टर विल्लोर रेफर केने रहइन। घर मे अथक अभाव कारने गामे लगक बैदक इलाज शुरू कयल गेलइन। छ महीना बितइत बितइत बसंत इलाजकऽ अभाव मे अपन गामे मे मइर गेल छलाह।

सीमा गपपिकऽ बाद बडड खुश छलीह। कहलखिन जे बुझाइत अइछ नैहर मे छी जेना।

भैया कहलखिन-हं हं आहाँ नैहरेसगप्पकऽ रहल छी। ललन ककाजी चइल गेलाह त ओइसऽ की। हम आहाक भाइ छी। नैहर आहाकऽ सबदिना हमरा घर मे बनल रहत।

भैयाकि स्नेह देखकऽ सीमाक आंईखसऽ नोर खंसऽ लगलइन। कहलखिन- कोनो चीजक वि कमी अइ आ वि चाही। बस ईएह आबेकि लेल मोन घुमयाइत रहय आ आहाकऽ तकइत रही।

सीमाकऽ अपन लोक आइ भेट गेलखिन। आइयो दहोबहो नोर बहइ छइन.........ई नोर खुशीक छइन-जे बडड दिनसिजमा छलइन।

बर्खीा (लघुकथा)

आइ काइल त बेिी कालेजया बच्चा सब चरफर की, चलता पुजा होइत अइछ। कतउ आबऽ जाय आ गप करऽ मे अािकयष िवि लगइ छइ। फरहर सब अइछ। कदकत एके टा छइ जे ई बच्चा सब अपि आि बडड बुझई छइ। अपि घरक काज होइ त चट संकऽ लेत, दोसर घरक काज होइ तखइि ि देखू कारंग कमरंग। एिा िवि त ओिा िवि। अपिा बेर मे पैसेजर रेिसऽ कािा वटकसकऽ जाइत आ दोसर बेर मे त चइ पकहया चाकहयई....... िवि कछु त मोटरसाइककलकऽ पेरोलकऽ िमि पर अिससे। रैि, बससजयो जाइत त केतबो पाइ कदयउ, घुराकऽ िवि देत। कथी मे खचषकरय छइ से िवि जाइि।

दमि अइ सबसं अलग छइथ। चलतो पूजा खुब छइथ। अपाि आि ओ िवि बुझताह। सबहक काज अपि बुइझकऽ करताह। कथु लेल पाइ कदयउि त जे बंइच जेतइि से घुरा सेहो देताह। आब त मुशककलसऽ एहि लोक होइया जे दोसरकऽ काज अपि बुइझकऽ करइत अइछ। खाली वठल्ला बइसल रहत, कोिा काज कह कदयउ त कलक्टरोसबेिी व्यस्तता देखा देत। दमिकऽ अहीसऽ बडड जि छइि अपि गाम समाज मे।ओ बुझतो छवथ जे लोक दु टा ब़ ाईकऽ कऽ , अपि उल्लु सीधा करयया.......तखिा लोककऽ हरसटे ाि िवि कहइ छवथि।

परोपकारी लोकक ईएह हाल होइ छइ-दोसरक काज मे लागल रहइत अइछ आ अपन सब काज ओझरायल रहइ छइ। दमकि से हाल ि। उकिर छोट भाइ सोहि घरक काज सब सम्हारि छलाह।दमि घरसवश्ांत छलाह।

कछु मास पह्हि दुखत काकीक ल का ल्ली आयल छलाह। पुरा ठीकभ गेलखि, तखइि गाम घुरलाह। दु महीिसऊपर लाइग गेल छलइि।बडड सेि केलखि। काकीक मुंह दमकि ब़ ाई करइत थकइ ि छइि। काकीक अपि बेटा पुतोहु त दसे ल्हि लेल गुजरातसल्ली अयलइि-फेर िकरी मे छुटी आ बच्चाक पढ़ाइक बहाि बि चइल गेलइि। काकीक जमाय आ दमि दु गोटे ल्ली मे काकीक ईलाजक लेल टीकल रहलाह। कथी लेल लोक बेटा - बेटा करइत अइछ, से ि जाइि। बेटा काज ि अयलइि, तखि काकीक मुंहे बेटेक ब़ ाई। दमि ओहो पर काकीक कछु ि कहइ छथि। काकीक लेखे उकिर बेटाक िकरी मे छुटी ि आ दमकि त िकरी ि, तै छथ।सैह देखू -काज केलो पाछु ईएह सुि क भेटई छइ- " खाक्लये बैसल छलाह, तै जाइ लेल कहक्लयइि।"

काज कर बालाक त काज खहा इत घु इ छइ। आब मामी दुखताहभ गेल छथि। ओि ब़ का लोकक कछु ि कछु होइते रहइ छइ। ि कछु त "धरधरी"........ ओकर बाद

"व्डपेिि"। लोको आब ओतेक गंभीरतासऽ ई बीमारी सबकऽ िवि लइ छइ।अइ मे त आपरेिि होबाक छइ। दोसराइत लेल एक गोटेकऽ आर रहिाई जर री छइ। उएह संग जाय, जे चरफव्करया हुआय। डाक्टर सबसगपकऽ सकय...... रस्ता पेरा मे सकाक रहय......चोर उचकासऽ बइचकऽ रहय........अपि बेिी व्टटंभा िवि होइ.......पोि व्टकल रहय बाला होइ आ अंव्तम जे घरभइयाकऽ पाइकऽ अपव्यय िवि करय।काज पर चाइर लाइि अंगेजी बाईज व्लयैय त सोिा मे सुगंध िाली बात।

दमि अइ सब गुर कऽ बासि छलाह। मामा जे कव्हयो हुलकी िवि पा इ छेलव्खि, व्तािकर समाद पर समाद। दमि त सब लेल तैयार रहइ छलाह..... ई त अपि मामीकऽ गप छलइि। झटस"हंअ " कव्ह देलव्खि। मामा अपिा संग एसी बोगी मे व्टकस कटा लेलाह। आइ तक कव्हयो एसी बोगी मे दमि िवि चढ़ल छलाह। खुिाीकऽ मारे फुइलकऽ कुप्पा भेल छलाह। सबकऽ कव्हते व्फ़ इ छलाह जे फला व्दि एसी मे व्दल्ली जयबाक व्टकस अइ।सब गोटे विइत व्दि पर पटािसव्बादा भेलाह।

एसी मे जायकऽ पव्हल अिुभि छलइि। राइत मे जा लागह लगलइि, मामा कम्बल देखा देि रहथ्व्ि पव्हिहे....अपि ओइढ़कऽ सुइत रहलाह। खेिाई पीिाईकऽ त पुछु िि। बुझाइि जे बव्रयाती मे आयल छी। अपि मोिि खायक सामगी सबदऽ रहल छलइि। अंत मे आइसकीम सेहो देलकइि। मामा कहलव्खि जे राजधािी

एक्सप्रेस छैक ई। सबटा पाइ पहिनहि लऽ लइ छइ। एको गोटे फाजिल नहि छल बोगी मे। ओहि दिल्ली बला ट्रेन मे त

" ईधर घुसकिये,

ऊधर घुसकिये,

कहा घुसके,

माथा पर बैठियेगा-

ओ बीमार है..... लेटा है

ट्रेन है कि एम्बुलेंस है......सब बीमारे है

ईएह सब ओ सुनि रहल छलाह। अइ बेर सब चुप्पे।

बढ़िया जतरा बुझेलइन दमाद के।

दिल्ली मे स्टेशन सऽ सीधा टैक्सीसऽ लऽ क बता अस्पताल जाइ गेलाह। डाक्टरसऽ समय पहिनहि सऽ लेल छलइन। ई "फ्लाइट सर्जरी" छल। जतय सुविधा हुअय.....करा लिय। अस्पताल मे मामीकऽ भर्तीकऽ लेलकइन। एकटा कोठरीदऽ देलकइन। सिर्फ अलाहि एकटा किसुम औडली, जेकरा दाई बुझु, सेहो मामी खातिर अलगसऽ रहइन। बेर बेर काकी बाला जे तरदुत भेल छलइन दमादकऽ दरभंगा मे,ओइसऽ बचलऽ लागइथ। ओइ

मे चाइर बेर जाइ छलाह तखइि किसर्षिया आ दाई अबइ छलइि। अतऽ त पले पले हाल पुछा ी लेल अबइ छलइि।अस्पताले मे कैफेटेरिया छलइ। मामा जाकऽ र म िमिर क्लखा देि रहथिि आ दमिकिऽ काडषऽ देलखिि। उिका जे खेबाक होइि से खा लेताह-पैसा देबाक िवि काज।काडषमे चढ़ा देतइि। दिककत एके टा छलइ जे राइत मे एके गोटे कोठली मे रही सकइ छल। बाकी लोकक लेल सबजाि जगह बिल छल।

मामा दमिकिऽ विचार पुछलखिि।दमिकिऽ त दस टा गऊंआ ओतइ संगम विहार मे रहइ छइि।तीि टाकऽ त अपि घर छइि। बाकी सब किराया मे कोठली लेि छइथ। दिि भइ दमि अस्पताल मे रहइथ आ राइत मे कोिि िकोिि गऊंआ कतऽ चइल जाइ छलाह। गऊंआ सब बडड आबेि करयि। गाम मे सब दमिसिउपकृत रहइ छल। चिछलो जतरा काकी बला मे, संबंधी सब कतऽ गेल छलाह। गऊआं सब छुटल छलइि। ओिि ई सब काकीकऽ देखऽ अस्पताल मे दुर रहितो कयेक बेर आयल छल।अइ बेर सबहक घर सेहो गेलाह। राइत मे रकइ छलाह अपि संगी मोहि कतऽ । ओ असगरे एक कोठरी मे रहइ छल। राइत मे तरह तरहकऽ िक बेजाय गप होइ....... फेर मिमाकिक खेिाई बिवि। भोरे, मोहि अपि आफिस जाय आ दमि अस्पताल।

ओिि दमिकिऽ एतऽ अस्पताल मे अपिि कोिि काज िवि बुझाइि। सब पाइयक खेला छलइ।पन्द्रह दिि मामी अस्पताल मे

रहलीह। आपरेिि सब ठीकभऽ गेल छलइि। आब दोसर िडष मे विफ्ट करतइि आ अवाला क्दि व्डसचाजषकरबाक छलइ। चौदह क्दि एके कोठरी आ एके िसषआ दाई छलइि। ओ देखइ छलाह जे मामीकऽ ओइ दाईसबडड खुसुर फुसुर होइि। क्सिषिया त ओतेक भाि विि दइि लेक्कि दाई लल्लो चप्पो मे लागल रहइ छल। खुब दोस्तीभऽ गेल छलइि दुि गोटा के। कोठरी छो़ बाक काल मामी, दमिकिऽ कहलक्खि -

"अकरा चाइर टा धीया पुता छइ। अस्पताल मे ई एकटा एजेसीकऽ मा् यमसआयल अइछ। बडड कम पाइ दइ छइ। अपि क्दसक छइ। पढ़ल क्लखल सेहो छइ। घरबाला सेहो क्सक्युक्रटी गाडषछइ। िकाकऽ अकरा क्कछु पाइ बर्खीि मेदऽ क्दयउ। बडड सेिा केलक अइछ। िकाकऽ देबइ। ककरो कहबइ विि। ज्यो मििजर अकर बुइझ जेतइ त सीधा िकिरीसऽ हटा देतइ।"

क्कछु पाइ विकाइलकऽ कुमोिसदमि ओकरा देबह लगलक्खि। मामी कहलक्खि-

"हमरा देखाऊ।

....

....

आर क्दयउ। हम आहाकेदऽ देब।

मामा जेका अहुं पुर ख छी ि-मऊगीकऽ कतेक जर रत होइ छइ से कोि बुझबइ"।

दमकि क्हसाबे मामी ओकरा बेि पाइ देलक्खि।दाईकऽ त डयुटी छइ। कथीकऽ पाइ। उपरसअते डर। तखइि लइते क्कअए छै।

दमकिऽ भेलइि जे ई मामीकऽ पोक्टयाकऽ ठइग लेलकइि।राइत मे मोहि कतऽ घुरलाह। ओ केक आ क्मठाई देलकइि खाई लेल। कहलकइि-

हमर प्ऱ ेसीकऽ बेटाकऽ आइ जन्मक्दि छलइ। ऊयाह पठौलक अइ।

बगल बाला घरसआिज अबइ छलइ -" अखि दुर्वि या मे िक लोक छइ जे गरीबोकऽ सुिवि छइ।"

बर्खि ीकि पाइसऽ ओ बेटाक कप्ऱ ा आ केक कीिलक अइछ।अपि पाइ त पक्हिहेसजन्मक्दकिऽ लेल महािर जीकऽ लडडू भोग लगबऽ लेल रखि छलाह। ई बेटाकऽ जन्मक्दि त भगिि अतेक िकसमबिा देलक्खि।

दमकिऽ केक आ क्मठाई खेलाकऽ बाद ओइ बच्चासभेट करबाक मोि केलकइि। क्कछु आिीिदी ओहो देबऽ चाहइ छलाह।केक खेबाक उपरात अतबा बर्वि छलइ। ओकर बगल बाला कोठरी मे

मोहि संग जखइि ओ जाइ छइथ त देखइ छथ्थ जे उएह मामीकऽ अस्पताल बाली "दाई" सीधा पल्ला सा ी मे माथ झंपि बेटा संग खेला रहल अइछ। दुि गोटे स्तब्धभऽ गेलाह। दमि ककछु पाइ बच्चाकऽ हाथ मे दऽ घुइ गेलाह।

ओकर रतुका डयुटी होइ। ओ राइत मे अस्पताल आ दमि ओकर प़ ेस मे मोहि कतऽ । अखइि तक देखा-देखी भेले वि रहइि।

आब अपि सोच पर अफसोस होइि। आरो "बर्खीि" मे मामी ककअएह वि देलक्खि।दमि लग सब पाइ रहइि......जे चाक्हतइथ,दऽ सकइ छलाह......ऊपरसमाक्मयो कक्हये देि छलक्खि।

ठीके पुर ख ककछु वि बुझई छइ। आब उिका ब़ का लोकक उदारता िक लागऽ लगलइि। मोि मोि सोइच लेि छलाह जे आब कक्हयो " बर्खीि" पर संदेह वि करताह।

टीस (लघुकथा)

ककरो ककरो जीिि मे अतेक जल्दी जल्दी बदलाि कि बयार बहअ लगइ छइ जे ओ सोचऽ पर मजबुरभऽ जाइया क्क कोिि कथाकऽ पटकथा त िवि तैयारभऽ रहल छइ।अहुि की कोिि जीिि छइ-क्र मे अट आ क्र मे पट। अखइि देििथ, िबका डेरा भेटअकऽ खुििकऽ एको क्मस्या आिद लेबो िवि केलाह ....डेरा छुक्टयो गेलइि। आहा एिि बुझु जे छो अ परलइि। ओ िवि छइ-"जायब िपाल त कपार संगे जाइत।"

गामसऽ िबे िब देििथ क्दल्ली आयल छलाह। अतऽ ओ अपि संबंधी वि दाथी कतऽ ठहरल छलाह। आब एलाह उपरात उिका लेल डेरा तकिाई िर भेल। तक्या क्दल्ली मे लोक एक साझ खुआ दइ छलइ, लेक्कि रहअकऽ िवि कहइ छलइ। ओिि अखिि ईएह हाल छइ। सब महािगर मे ईएह हिि बहल छइ। "मुंह देख मुंगबा" छलइ। खुबऽ लऽ दऽ कऽ अबइत छी, तखि त िवि कोिि क्दकत। अन्यथा ज्यो कतउ धरिि खसाअ देक्लयई त बाद मे सुिऽ प़ त- " खाता था और यही प़ ा रहता था। इतिि हगा क्क मेरा पाखािि का हौज भर गया।" ई सब क्वस्सा ओ गामे मे सुििि छलाह।

दु तरहक समाज छलइ। वि दाथी आ मजदूर िगषत अपि िब

लोककऽ हृदयसँ स्वागत करय छलइ लेकिन जे पाँच- दस बरख पहिने दिल्ली आयल छलाह आ परिवार संग रही रहल छलाह- ओ त अपन घर पर ककरो टपअ नहि दइ छलखिन। तखन जे आइब गेलाह त उनका उचक्कानर मचाकऽ धर दइ छलखिन। गलतीसँ जे ओ घरबइया,अपन घर कीनि छलाह- तखइन त बुझ्झ लीयह, उनकासँ बूड़बक्ख्यार ककरो नहि। सबसं बढ़िया उनके कलोनी आ सबसं बेहतर उनके मकान छैक.....सबसं दामो बेसी उनके घरक।सुविधा त रहु-पहिने.......। अपनाकऽ त कथी दुनि बुझइ छलाह घरबइया, मुदा आगंतुकभऽ गेलखिन " बाहारी।" उनकासँ बेसी कमबख्त ककरो नहि। बेचारा मोनि मोनि कानि पक ई छल आ लगले बादा होइत छल।ई असुरक्षाक भावना छलइ या किछु आओर-से नहि जाइन।

अही सब हाल मे देखिथ आयल छलाह।अबिते लाइग गेलाह "डेरा" ताकऽ। डेराकऽ त कोनो कमी नहि छलइ- जेकर कमी छलइ, ओ छल "ढऊआ"।ओइ बजट मे नियडा मे घर भेटइन- तखइन होइन जे नियडा त उत्तर प्रदेश भऽ गेल.......तखइन पटनि ककयैक नहि। नियडाकऽ नाम फर नाक भौं ससकुअ लगइन। दौड़ धुपक बाद प्रीत बिहार मे एकटा चारिम मंजिल पर बंद फ्लैट भेटलइन।

आब भेल- रुममेटकऽ तकाशीई। ओतेक किराया असगर त संभव नहि छलइ। वजिका माध्यमसँ डेरा भेटलइन-ओ सेहो संग रहबाक

पत्थाि ी छलाह..... लेकि दाि दारी खुइलकऽ िव केिं छलाह। तेसर एक गोटे आर ि ब वि दाथी माधि आयल छलाह,ओ एक कु ी सेहो भेलाह..... कि रायाकऽ लेल। ई देखू - अखइि देि ि थकऽ अयलाह एक महीि ा िव पुरलइि - उि किर एकटा गंऊआ पभात परीक्षा दइ लाय, ऊपरससेहो आइब गेलक्खि । देि ि थ अपि पाहुि .....आब पाहुि किऽ पाहुि .... युद स्तर पर इि का लेल डेरा ताकल गेल। डेरा लेल बुझ्ु की सतगामा हकार पठाओल गेल छलइ। एजेट त सट देि घर क्दअय दइतइ, लेकि ओ तऽ पैसा लेतइ, तै ओकरा अइ मे िव कहल गेल छलइ।

"डेरा"कऽ चाभी भेट गेल छलइि । देि ि थ आ माधि भोरे पीत वि हार गेलाह। घर मे सऊंसे कबुतरक बीट क्छ्व याल......... महीि सघर मे झा ू िव पृ ल......गंदगीक अंबार लागल। एक्रया बडड सुनर छल। कोठी चार कात। ईहो कोक्येकऽ चाक्रम तल्ला छल।

सबसं पक्िह दोकाि सझा ूक्फि ायल, पोछा, बाल्टी, मग सब कीि कऽ दुि गोटे अिव गेलाह। फेर ि र भेल सफाई अक्भयाि । दसो बाल्टी कु ा कबा ा सब घर मे छलइ। अपि डेरा आ ि क एक्रया देख कऽ दुि गोटे जोि मे छलाह। जिि ि मे त अपि ि ि होइ छइ।खुब चमचमा देलक्खि घर के। अइ डेराकऽ बालकोि किऽ सामि ि ला घरक छत पर चाइर टा सुन्दर ल की सेहो ठारभऽ कऽ इि किर सबहक सफाई देखइ छल- आपस

मे हंसी मजाक करय छल। किछु चुहलबारी भऽ रहल छलइ ऊमहर। देिथिकऽ जिइ जखइ ओमहर जाइ त ओ सब मुस्कियाईयो दइ। फेर की छलइ। भुख पियास सब दुि गोटेकऽ हेरा गेलइ। आठ बजे भोरसतीि बजे दि तक ओ सब लागल रहलाह आ घरकऽ चमचमा देलाह। सामि बला छौ ी सब सेहो अधिक काल इिका सबके तकिते रहलइ।

आब त देिथिकऽ भेलइ जे असली दिल्ली त ओ आब एलाह अइछ। अतऽ बिढ़या समय बीततइ। अकरा सबहक आंईख मे उिका अपि लेल दोस्ती देखा रहल छलइ। ओ तऽ आब उमंग मे आइब गेल छलाह। जे सुि छलाह जे दिल्ली मे एि होइ छइ.....ओि होइ छइ......सब पुरा बुझाय लगलइ। किछु किछु ओहो सब इिरा केलकइ आ ईहो इिरा मे रबाब देलखि। होइ की सामाि लइयेकऽ कीया िवि एलऊं। जायकऽ मोि विकऽ रहल छलइ।

िबि ताला, फ्लैट मे लगाकऽ दुि गोटे घुरलाह।पभातकऽ सेहो अिबाक छलइ। ओ अतऽ सअिभुआर छल। ओकर त देिथे ि अपि एतऽ ।

सात बजे साझ मे देिथ, माधि आ पभात सब सामािलऽ क उमंगक संग पीत विहार अयलाह। फ्लैटकऽ बल्ब सब बदलला

आ सामाि सब रखलाह। घर आब बेवि ये िक लाइग रहल छलइि। काछाि क्ताछाि सेट केलाकऽ बाद घुमअ वि किललाह। उम्हरेसतीि गोटे खाअ पीअकऽ घुरलाह।

िचेसदेखइ छइथ जे घरक लाइट जइ रहल अइछ। तीि गोटेकऽ िकसयाद छलइि जे बती मीझा कऽ आयल छलाह। सीढ़ीसदौ इत उपर चढ़लाह। देखइ छइथ जे उिकर सबहक सब सामाि पैककऽ कऽ फ्लैटक दरिजा पर बहरी मे राखल। घरक अन्दर चाइर टा देिथसकिी ियस मे बेिी लोक सब बैसल छल। सामि छत पर ऊयाह ल की सब ओक्हि ठार....हंसइत....अकरा सबसबक्तयाइत।

इिका सबके ओ कहलकइि जे हम "डेरा" भारा पर िवि लगायब। आहा सबहक सामाि बहरी मे अइछ। सामाि उठाऊ आ चलइत बि।

देिथ गामसअखिआयल छलाह। उिका अतुका ई रंग ढंग बुझा िवि रहल छलइि। ओ बहसा बहसी करऽ लगलाह। कहलक्खि- हम त आहासचाभी िवि लेि छी। जे देि छइथ, उिकासआहा सब गप्प कर ।

ओ बाजल- उिका खबरकऽ देि क्छयइि। ओ अक्वाते हेताह।

-ताबइत हम सब र्वि जायब। बरजोरी करब त ओ ठीक ककरो लेल र्वि।

-बरजोरी हमरा सब लेल बि र्वि, लेकर्कि आहा पढ़अ आयल छी ......घरकऽ बडड ीक साफ केलऊं अइछ, तै हमरा सबकऽ बरजोरीकऽ वचार र्वि। ओि आहा चाहब त कऽ देब।

ईएह सब गरमा गरमी चइल रहल छलइ ताबइत पभात, देिथिकऽ धीरेसकहइ छथ्वि - हमरा वनिकऽ स्टीम बइि गेल अइछ। जल्दी करय जाऊ..... हमरा सुतबाकऽ अइ।

ई सुवते देिथिकऽ देह मे आइग लाइग गेलइि। ओ त सोइच रहल छलाह जे बदमििकऽ अइ चारूम तल्लाकऽ बालकोिसउठा कऽ ीच्चा फेक दी। आ पभातकऽ देखू वनि लाइग रहल छइि। एहि म्खि होइया।कतऽ मार क्कटाईकऽ क्स्थक्त छल, आ इकिा वनि लगइ छइि। देिथि त बुझई छलाह जे चाइर गोटे बदमिि सब अइ, त तीिि गोटे हमहु सब छी। एक गोटेकऽ ऊपरसफेकते ई क्दल्ली बाला सक्टिटही सब की क्टकत। सबकऽ माइ कऽ भगा देबइ। जे हेतइ से देखल जेतइ। अइ छौ ी सबहक सामि बेजजती कतउ बदाश्त होइ। माधि सेहो बहस मे देिथिकऽ संग छलाह।

पभात आब समस्या बुझाय लगलक्खि।उिका कोिि मतलब र्वि अइ सब सं। देिथि उिका डेरे डेरालऽ कऽ घुईम रहल छइथ आ इिका देखू। ओ ओतइ एकटा कुसी पर बैसल ऊंघा रहल छलाह।

थो` काल बाद िलेि जे चाभी क्दयेि छलक्खि आ अपिा अतइ रहअ बाला छलाह- सेहो अयलाह। उकिो बदमिाि सबसअलगसगफ्प भेलइि। ओ अकरा सबकऽ देख कऽ डरा गेल छलाह।

फ्लैटक ताला त ओ सब तोइ़ चुकल छल। देिाािथकऽ सामाि पैककऽ देि छलइि। सुतली राइत सामाकि संग संबंधी वदिाथी कतऽ घुरलाह।

भइ़ क्दि जे घर साफ करऽ मे जे मेहिति केि छलाह, से देह आब दुखाइत छलइि। कतेक खुिासिसब काज केि छलाह......की की ख्याल मे आयल छलइि। एके बेर सब िजिपातभऽ गेलइि। कालि कविया .....घुक्रये गेल........... बाला हाल भऽ गेल छलइि।

मोिि मे ईएह घुक्रयाइि क्क घर साफ करबाबइ लेल तं ई कोिा योजिा चल........िा उकिा संग धोखा भेलइि........ओ छौिी सबकऽ ई हस होइत, से बुझल छलइ- तै हंसई छल......पक्हिहो आरो ककरो संग एिा भेल छइ?......

जे भी होइ, धोखा त भेले छइि आ ओहोसबेिि हदय पर डाका।ई "टीस" सबक्दिा रहबे करतइि।

विशासघात (लघुकथा)

पहिलुका समय मे रामबाबूकऽ समाज मे सब कतऽ , कि कछु त पइभिरी ि रार- रािव होइते टा छलइ। अहि लोक कजा कि कतऽ दु ि साझ चुि ा जरऽ पर संदेह- उकिो कयो िव कयो खबास ि छलइ ि।भोज भातकऽ बाद जुठ उठबऽ खातर ककरो कहऽ कऽ िव प़ ई.......खतबे टोलीकऽ स्त्रीगर आ बच्चा सब जुठ पात पर टुइट प़ ई आ बदला मे सब साफकऽ दइ। ओकरो सब मे ककरो पाइ ि चलइ आ ककरो िव। ई िगीकरर सब समाज मे रहइ।

रामबाबूकऽ पिरिार मे त जेि ा जमीि-जथाकऽ बंटिारा होइ.......ओहिा िकर-चाकरकऽ सेहो।ई िकर सबहक घर, कजा किर जमीि पर छलइ, उएह ओकर मालिक भेलइ।ओइ िकरक कवि या इकिर सबहक पइभिरी आ जे तेज तरार िकर, से खबासभऽ जाइ छल। कखि ा आहा भोर मे सुइतकऽ उठू.....सब घइल पाइ िसभरले भेटत। ज्यो एक टा दुखित होइ त ओकरा दोसर संग गठबंधि रहइ..... ....ओ आइब कऽ भइ दइ छलइ। कािा िगाकऽ ई व्यिस्था चलइत छलइ। पाइि ा की त, धार िा ई िरसअबइ। खेिाई वािाई ई िरक पाइ िसिआ कप़ ा लता, कवि या बहुकयाकऽ हिेिाई धोयेिाई, पाहुि परख-ई सब लेल पोखइ ि धारसपाइि अबइ छल। ईएह ढरा पैघ छोट सब घर मे छल। पाहुि परख आ बेटीकऽ ऐला गेला मे एक दोसरसमंगि चि होइ......अकरा

खराब भवि मालि जाइ। पाहुि आ बेटी त समाजक होइ छल।

जे रामबाबू, सर संबंधीकऽ टेि ि कहू ि िकर, पठबइ छलखिि- से अपि आब बेलल्ल भेल छइथ।जक्टयासक्समी बटाई बाला केस हारलाह, सब िकर चाकर ठेगा देखा देलकइि। पछाइत एहि ि उजाही मचलइ- सब सोलकि गाम छोव कऽ चइल गेलइ। दु चाइरटा ओइ मे सऽ बम्बइ मे ततेक ि कमेलकइ जे ओकरे देखाऊंस सबके लाइग गेल छइ। आब त रामबाबूकऽ एकटा क्यअयद ओकर बम्बइ बाला होटल मे खेिाईं बिबिइ छइथ। सब दुसधा सब िक्सलाइटभऽ गेल छइ। बाबु भैया सब डरे डरायल रहइ छइथ। माक्लक कक्ह दइ छइि-ओतबेसक्तरबात।

रामबाबू सबक्दि िकर चाकर रखलाह। कतउ िता क्पहािि मे जाइथ, तखिि एकटा संगे जाइि। कवि या उिकर जयथुि ि वि, लेकि िकरबा जेब्बे करय।माक्लि कऽ कक्तइि पहुिाईं मे! आब अइ विकट समय मे उिकर समईध एक टा टेि ि जोवायाकऽ पठा देलखिि। ।उिकर समक्धयाि मे जोवाया माय पइभिरिि छल। क्बधि छलाय त सोचलक जे दु पेटसएक पेटभऽ जाइत। एक गोटेकऽ तऽ कोिि हििली बाला खुआ देतइ। घर होइ बेिि भीते के, मूदा कहाइ "हििली"।एके दु घर कोिि गाम मे कोठा होइ छलइ।

जोवाया बारह तेरह बरखक छल, जखया रामबाबू कतऽ आयल। ीक ुकुत खेला उपर देह ओकर फुइट गेल छलइ। ीकर चाकर त गोर कम्मे होइ छलइ- लेक्नि जोवायाकऽ रंग साफ छलइ। ओ देखबा मे रामबाबूकऽ घरक धीया पुतासकविको कम िव लगइ छल। कतेक िब लोक त ओकरा उकिर बेटे बुझई छलइि। जोवायाकऽ रामबाबू माइतिो बडड छलक्खि।ओ जोवायाकऽ ल कऽ अपि धीया पुताकऽ क्सगइ दइ छलक्खि। रामबाबू जमाि देख्ि छलाह आ ओइ अ्ुसार अपिकिऽ बदइल ले्ि छलाह। उकिर कहबाक छलइि - " जोवाया दोसरकऽ बच्चा छइ....... ज्यो अपि बच्चा ओकरा िव बुझबइ त एक क्दि िव क्टकत। जे काज ओ कऽ दइया, से काज क्कयो अप्पि िव करत। " अक्हि जोवायो, रामबाबूकऽ ्यािर खइि।

जोवायाकऽ मायकऽ समय समय पर रामबाबू पाइ पठा दइ छलक्खि।ओकर कखिि समाद िव अबइ जे जोवायाकऽ घर पठा क्दयउ........देखबाकऽ मोि करइत अइछ। बस पाइ भेट जाइ आ ओ खुिभऽ जाय। तखिि रामबाबू दु-तीिि बरखकऽ बाद जोवायाकऽ ओकर गाम घुमा दइ छलक्खि।

जोवाया सेहो अतऽ खुब खुि छल। ओहो कखिि मायकऽ मोि िव पारय।

जखइि जोवाया अठारह उनैस बरखक भेल त ओकरा कछु चोरऊका समाद अपि घरसएलइ।ओ रामबाबूकऽ कहलकइि जे एक बरख करीबभऽ गेल.......हम गाम जाय चाहइ छी। ओइ समय मे रामबाबूकऽ हाथ मे ओते पाइयो िव रहइि.....ओ ई बात ओकरा कहलक्खि। जोवाया बाजल-

की हेतइ। आहा बाद मे पठा देबइ। हम त लगले घुइ जायब। बुझु की...बेिसबेि दस क्द मे अतइ छी।

रामबाबू एकगोटे संग ओकरा घर भेजबा देलाह।

दस क्द की बीस क्द बीत गेल। फेर मक्हि दु मक्हि ......तीि मक्हि बीत गेलइ। जोवाया िव आयल आ िव अपि बक्कयौता पाइकऽ लेल कोि तगेदा।

आप रामबाबू अपि समक्यािसपता केलाह। जोवायाकऽ समाज मे बच्चे मे क्वयाहभऽ जाइ छइ। गौि छंटगर भेलाकऽ बाद होइ छइ। ओ जे जोवायाकऽ चोरऊका समाद छेलइ से ओकर कवि या पठेि छलइ-जोवायाकऽ क्वयाह सेहोभऽ चुकल छलइ.....अतऽ ककरो िव बुझल। जोवायाकऽ समाि मेसपुजी वकिललइ......क्लखल छलइ-" अगर तौ अइ फागुि मे गौि िव करेबऽ त ओकर बाबु ओकरा दोसरा संग क्वयाईह देतइ। तोहर मायकऽ कयेक बेर समाद पठालि गेलइ-ओ काि बात िव दइ

छइ। जल्दीसक्कि तका कऽ पठबैयह..... ज्यो चाहइ छह। वि तं लइत रक्खयअ घंटा"।

ओ सैह बात रहइ। जोवाया माय गौि कराअ क, फेर एक पेटसदु पेट वि करऽ चाहइ छल। तै र बाब वि दे छलइ। जोवाया गौि करेलक आ घरबालीकऽ अ लिक। खचा बइढ़ गेलइ। जोवाया माय सेहो बुढ़ भऽ गेल छल। ओकरोसकाज धंधा वि होइ। जोवायाकऽ ीक िकुत खायकऽ आदतभऽ गेल छलइ। कि जीभलाह ओ िर येसछल। ओकर एकटा ससुरक भाइ दरभंगा मे हलुिईकऽ काज करय छलइ। ओ अकरा कहलकइ-

"मेहमा! तौ दरभंगा आइब जाह। हम सब सीखा देबऽ । हुि भऽ जेतऽ , त भइ जीि बाि बोझा ढो, ीक िकुत खाइत पीयइत बीत जेतह।"

जोवाया देखलक जे गाम मे त ओ आब ज बाला मजुरी कऽ वि सकइत अइछ। रामबाबू जे पाइ दइ छलक्खि ओइ मे ई दुि सास पुतोहुकऽ वभिाई असंभ छइ।ओकर समाज, घरिलीकऽ बभटोली मे काज करऽ वि देतइ।अइ हालात मे, होटल बाला काज ओकरा ठीक बुझेलइ। सोचलक जे गप्पकऽ कऽ देखी पक्हि।

दोसर क्षि दरभंगा " सत्कार होटल" गेल। ओकर कुटुम्ब, होटल मालिकसगप्म केि रहइ। चाइर क्षि बादसकाज पर अयबाक छलइ।

जोवाया सोचलक जे रामबाबूकऽ समाददऽ क्षअयि जे ओ दोसर काज पकड़ लेि अइछ। ओकरा साहसे िवि भेलइ। ओकराभऽ रहल छलइ जे ओ उिका संग विशासघातकऽ रहल अइछ।ओ गाम चइल गेल।

चाइर क्षिकिऽ बाद अपि कप़ ा लता संग होटल पर आइब गेल। भोर साझ ओ हलुि ाईकऽ काज सीखय आ बाकी समय बैरा िला काज करय।

एहि ि क्यकि क्यिमुि ओकर हंसइत चेहरा रहइ जे गहकी सब आकर्षण होइ। बोली-बाि ी ओ रामबाबूससीक्खये लेि रहय।

होटल मालिक सब देखइ छल। ओ जोवायाकऽ काजसखुि छल। जोवाया सेहो अइ िब पक्षि मे मजालऽ रहल छल। क्षि भइ तरह - तरहकऽ लोक सब होटल मे अबइ जाइ छलइ।

अक्षि ा एकक्षि रामबाबूकऽ एकटा गऊंआ मोहि ओइ होटल मे

अयलाह। उकिासआडष लइ लेल जोवाया आयल। दुि एक दोसरासपुरि गप्प िप्प कयलाह। जोवाया माक्लकसकक्ष कऽ कछु छुट सेहो क्दअय देलकइि।

रामबाबूकऽ बेटा रमेि सेहो दरभंगे मे रही कऽ पढइ छलाह। मोहि, जोवाया बाला गप्प रमेिकऽ कहलक्खि।रमेि तखि सत्कार होटल गेलाह।ओतऽ जोवाया भेटलइि। ओ कहलक्खि - कक्कया जेबे।

ओ बाजल- अतऽ सर्वितृ होइ छी, फेर जायब।

बहुतही ठंडा व्यिहार छलइ जोवाया के। चाहो ताह लेल वि पुछलकइि। ओ तऽ अपि आपकऽ दोरी बुझई छल।

रमेि, होटलक माक्लकसगप्प केलाह। ओहो अक्ियाले जेका र बाब देलकइि। रमेि घुइ अयलाह अपि कमरा पर। आब जुगत भीरबऽ लगलाह जे केकरा कहलासहोटल िला बात माि।

उकिर एकटा संबंधीकऽ संगी दरभंगाकऽ ब़ का बापक बेटा छलाह। उकिर ब़ का टा मकाि होटलकऽ लगे छलइ। रमेि ओइ संबंधीकऽ ल कऽ ओ ब़ का लोक कतऽ गेलाह। ओ पुरा आगत सिगित केलक्खि आ इकिर सबहक संग सत्कार होटल अयलाह। ओतऽ होटल बालाकऽ क्ाग़ बो केलक्खि जे

आहा हमर संबंधीकऽ िकरकऽ अपि कतऽ कअए रखि छी। होटल मालक हफ्ता कि किऽ समय लेलकइि, जे ओ जोवायाकऽ द देतइि।

सात की दस कि किऽ बाद जखइि रमेि होटल गेलाह त जोवाया कहलकइि - ओ जे फला बाबूकऽ बेटा आहा संग ओइ कि आयल छलाह, से बाद मे फेर आयल छलाह। होटल मालककऽ केबि मे ओ हमरा कहलाह -" जतेक पाइ आहाकऽ रामबाबू दइ छइथ, ओकर दुना हम देबऽ । तौ हमरा कतऽ रह।"

दु बरखसउकिो दरभंगा डेरा पर िकर िव छइि-परेिा छलाह।

जोवाया उकिा तो कछु िव कहलकइि लेकि होटल मालककऽ कहलकइ- " हम रामबाबू मालक कतऽ िव रहब त दोसरो कतऽ िव रहब। हम आब बम्बइये जाइ छी, गऊंआ सब लग"।

रमेिकऽ ततेक ि अइ बातक तकलीफ भेलइि जे देखू फला पकिरकऽ भ कऽ ओ दरभंगा बाला केहि वशािसघात केलाह। जोवायाकऽ कोि गलती िव, तखि ओकरा अपि दोर बुझाई आ ई फला बाबूकऽ बेटा भऽ कऽ पाछुसगेम खेलाय लगलाह। ओ मोि मोि सोइच लेलाह जे आब कि िकरकऽ रहिाई सीखऽ कऽ अलाि कोि चारा िव। जे जतेक पैघ, उकिर दीि ईमाि- ओतेक छोट। वशािसघाती सबतर बैसल आ पैसल छइथ।

पापक फल (लघुकथा)

महेन्द्र बाबू एक सुभ्यस्त लोक छलाह। ब़ का बासडीह -अनाहसऽ बानाह तक,पोखरा पाटि, मंदिर, कलम, खरहोइ , बसबाटी, धहिर खेत आ छहइ क कात कतउ सऽ कतउ जमीि उकिा छलइि। जखन हुनका जन्म भेलइि तखन हुनका दु टा कोठरीकऽ दरबा जका घर छलइि। अपि अजििक कऽ कऽ सब ठार केलाह अइछ। अइसई र्वि बुइझ लेब जे खुब कमेला अइछ!कहक लेल िकालत करय छलाह। अपि केि ल़ इत ल़ इत िकीलभऽ गेलाह।

ई सब सम्पइत, उिकर पवारिर मे छलइि। मूदा की? कोिि? तखन उिकर दादाक(बाबूक ताकऽ ओ दादा कहइ छलाह) संग बंटिारा मे भेलइि। दु टा कोठरी टा हुनकर हिस्सा मे प़ लइि। बच्चा महेन्द्र एक बेर अपि दादा संग सुदि बाबु कतऽ गेल छलाह। सुदि बाबु वजलाक ब़ का मोखतार छलाह। ओ इिकर दादासपुछलखि जे इिका कतउ पढ़ाकऽ मास्टरी धरा दियउि।हिकर दादाकऽ जिाब छलइि जे मास्टरी ई मिि करय छइथ। तइ पर उिकर जिाब छलइि-" त की मोखतार बिताह "। घमंड मे डुबल सूदि बाबुकऽ ओ बात महेन्द्रकऽ आगु बढ़बा लेल पेरित कऽ रहल छलइि ।

महेन्द्र बच्चेसजमीि जालकऽ बंटिाराकऽ लेल संघरषकरइत

छलाह। सुपीम कोटषतक गेलाह.....केि जीतलाह.......फेर धीरे धीरे सब कछु ठार केलाह। संघरषकऽ संग संग िकालतोकऽ पढ़ाइ-िलखाई पुरा केलाह।मोखतार त िर्व, ओइसएक डेग आगु िकील बइि गेलाह। आब त दादा िर्व जीबइ छथि। रक्तथीि तं, बडड गिषहोइतइि। अपि ओ पढ़ल िर्व छलाह, लेकि पढ़बाक बडड सेहन्ता छलइि।

जखइि समझइत अबइ छइ त ओ अपिा संग फुलसयाही "िाि" सेहो अिर्व छइ।ओइ मे जयो आहा कछु केस मोकदमा जीत जाऊ त अपिाकऽ "अजाति तु" लोक बुझअ लगइत अइछ। महेन्र कशा संग सेहो सैहभऽ गेल छलइि। अपिाकऽ आब जमीदार बुझअ लागल छलाह। उिकोसबेिी उिकर धीया पुता सब मे ई बीमारी आइब गेल छलइि।

एक िइि महेर कशाकऽ पोखइ मे इिकर बेटा गजेन्र दतमइिकऽ कऽ कुर रकऽ रहल छलाह। तखि एकटा मलाहि खखार फेक देलकइि पोखइ मे। पाइि मे दहाइत ओ खखार िहकर सामि आइब गेलइि। गजेन्रकऽ खखार देखते पारा चईढ़ गेलइि। ओ ओइ मलाहि पर कग़ ला..... कछु अिाच कथा सेहो कहलखि। ओहो मलाहि उल्टा उरेब बाईज देलकइि। बस आब की छलइ। खीसे माहुर भेल गजेन्र ओकरा पर हाथ उठा देलकि। एक त उिकर पोखइ , दोसर खखार फेकलक आ उपरसमहेन्र कशाकऽ बेटा, कतउ बदाश्त होइ।

ओ मलक्षवि या कवि ि त अपि घर गेल। मलाह टोल आ दुसधा टोली दुि सटले छलइ। ओि ि दुि टोल मे बात बात मे माइ पीट होइ। दुगोला छलइ ओकरा सब के। लेकि अतऽ त बभि टोलीकऽ गप्प छइ।आइ मलाक्षि संग भेलइ त काइल दुसक्षि संग सेहो हेतइ। ई रोग काटि ाई जर री छइ।

दुसध टोली आ मलाह टोलकऽ सब मऊगी -मदष लाठी ,भाला, ग़ ास, जेकरा जे भेटलइ-लऽ कऽ महेर क्षशकऽ दरबज्जा पर आइब गेलइि। लोहा बाला ब़ का गेटकऽ बंदकऽ कऽ अइ कातसमहेन्र क्षश लाईसेसी बंदुककलऽ कऽ ठार आ उमहरसओ भी । ओ सब कहइि जे आहासहमरा सबकऽ कोि ि दुश्मि ि वि । हमरा सबकऽ गजेन्र चाही। ओकरा क्षम्मत कोि ि भेलइ मलाक्षि पर हाथ उठबऽ के। गजेन्रकऽ ताबइत घरसपाछु मुंहे भगा देल गेल छलइि।

ब़ ी काल ई खेल चलल। आरो गऊंआ सब आइब गेल। अतइ पंचैती भेल आ क्षकछु आवश्यक दंड गजेन्र पर ठोईक कऽ मामलाकऽ रफा दफा कयल गेल।

महेन्र क्षश जे आइ तक कक्षयो वि ि हारल -अइ बेइज्जतीसअपमावि त

महसूसकऽ रहल छलाह। उिका आब ईहो पता लाइग गेल छलइि जे उिके क्षअयदक लोक क्जिकासकेस मोकदमा चलल छलइि-उएह सब अकर पाछु छइथ।

आब िुर भेल "आपरेिि बदला"।

महेन्र क्मश अपि सब बेटा बेटीकऽ संबंध उएह घर मे करय छलाह जे लाठीसमजगुत होइथ िि थािि पुक्लस पर पभाि होइ। आब जे सब अगुआ छलइि उिकर घर पर चढ़ाइ करऽ मे ओकर सबहक सुची बिि। अलग अलग क्जला कचहरी आ थािि सब मे मोकदमा दायर कैल गेल। आब ओतऽ कऽ पुक्लसकऽ बजा कऽ ओकर सबकऽ वारफ्तारी भेलइ। कोटषकऽ िक्टस सब अबइ- अकरा सब पर। जेहल गेला पर जमाित करबहो मे बडड पाइ लाइग जाइ। ओ सब परेिािभऽ गेल छल।

फेर पंचायती भेल। गजेन्र क्मश पर जे आवश्यक दंड लगायल गेल छल से हटािि गेल। ओकर बाद जतेक जगह पर जे केस दायर छल- ओइ सब मे समझौता फाइल कैल गेल। पोखइ मे थुक फेकिाई पर रोक लागल। एिकिऽ कऽ दबाि बिि कऽ समझौता भेलइ। ई परेिाि करक लेल, झुठा केस केिाई तक्कया आम बात होइ। कहबी छलइ- " क्बाि भय ि होबे पीत।"

महेन्द्र क्षशकऽ एकटा जमाय रामा ठाकुर समस्तीपुर क्जला मे सेहो छलक्खि। ओतऽ महेर क्षश अपिि गेल छलाह आ ओतुका कोटष मे केस फाइल भेल छलइ जे फला मुक्खया आ फला मुक्खया अतऽ समस्तीपुर डेरा पर आयल ....राइत मे ठहरल आ फला सामाि सब चोरा कऽ पराअ गेल। पुक्लस जाच मे घटि सही पालि गेलइ। ओकरा सब पर ि रिंट विकिललइ......सब वारफ्तारभऽ कऽ समस्तीपुर जेहल भेजल गेल।

जखइि समझौता महेन्द्र क्षशकऽ गाम मे भेलइि तखइि अतउ ओकरा सबकऽ जमाति भेटलइ। ओ सब अइ बेर रामा ठाकुर कतऽ आयल छल। ओ मल्लाह सब ल ाई मे थाईक गेल छल । रामा ठाकुर सबकऽ गोर लाइग कऽ गेल छल। जाय काल मे कहिि रहइि जे हम सब त अपिकिऽ गामक कुटुम्ब बुझइत रही। अपिि एिि करब, से विि उम्मीद छल। छो् ु ।आब माइट क्दयउ सब पर। ओ सब जेहल गेलासदुखी छल। रामा ठाकुरकऽ सेहो अफसोसभऽ रहल छलइि। ओ मलहा सब बडड आदर दइि उिका। तरह तरहकऽ माछ-मखाि सब सासुर गेला पर खुआबइि ओ सब।

आइ महेन्द्र क्षश सेहो दुवियासचइल गेल छइथ। समस्तीपुर मे एकटा हत्याक केस मे विदोर रामा ठाकुर वारफ्तार भऽ जेहल गेलाह अइछ।रामा ठाकुर कतबो पुक्लस िलाकऽ कहलक्खि जे ओ विदोर छइथ। ओ कहलकइि -" जे कहबाक अइछ, कोटष मे जा कऽ

कहब। हमरा सबकऽ ऊपरसआदेि अइ"।

रामा ठाकुर बुइझ गेलाह जे ई मलहाकऽ "आइह" अइछ। ओइ विदोरकऽ तक्हया ई जेहल भेजबेलक्खि, आइ ओ अपि जा रहल छइथ।

ई सब उिके " पापक फल" छइि। सब अतइ भुगतऽ कऽ प़ ई छइ। अखइि विि भुगतता त अवाला जन्म तक पाप क्खहा इत रहतइि।

हाथक लकीर (लघुकथा)

जक्‍हयासकबीर विदेिसघुइ कऽ अयलाह अइछ, बेिी काल ऋत्‍वकेि जाइत रहइ छइथ। अकर पाछु दु टा कारर छइ- एक तं क्‍दल्‍लीकऽ पदुरर समुक्‍त आ दोसर गंगा माईकऽ कोरा मे रहबाक सौभान्‍य। विदेिी मे िदी सबकऽ माय जका बुझल जाइ छइ। ओतुको सब िदी उिका गंगेजी बुझाई छलइि...... अतऽ त असली गंगा माई छक्‍थि। ओ कोिी ि कोिी बहािे उिका लग जाइत अबइत छलाह। ऋत्‍वकेिकऽ क्‍दल्‍ली सदि इकिर अडडा भऽ गेल छलइि।

क्‍दल्‍ली सदि एकदमसगंगा कात मे छलइ। दुरसदेखला पर बुझईता जे गंगेजी अपि अंचरा मे अकरा लेिे छक्‍थि। अतऽ विशछल गंगाजी बहइत रहइ छइथ। ओ धारा बहअकऽ जे कलकल ्विि छइ- से कबीरकऽ सम्‍मोक्‍हत कयिे छइि। ओ अतऽ आर कक्‍छु ििि करय छइथ.......बस क्‍दल्‍ली सदकि जे गंगा कात मे बेच लागल छइ.......ओइ पर असगरे बइसल ओ धुि सुिवित रहइ छइथ।उिका ई धुि सब समयक अिुसार अलग अलग सुिाइत छइि। जेिा िास्‍त्रीय संगीत मे भोर का,दुपहक्‍रया, संझुका, रतुका सब मे अलग अलग राग गाबल जाइ छइ, ओक्‍हिा क्‍हिका सब बेर मे अलग अलग राग सुिाइत रहइ छइि। िदी उएह, धारा उएह, गक्‍त उएह, िगि उएह,स्‍थाि उएह, समय उएह आ व्‍यक्‍क्‍त उएह........तखइि एिा कक्‍अए पाइकि बहािे उिका राग मे डुबल

गीत लगइत छइि।

सबके एके आिज हहअ.....हहअ....हहअ लगइ छइ, इिके कअए राग लगइ छइि। जे भी अकर पाछुकऽ कारर विधाि होइ......कबीरकऽ अपिा िीक लगइ छइि आ ओ अबइत रहइ छइथ।एको राइत अतऽ बाता लइत छइथ त अपिाकऽ उजाािि बुझाय लगइ छलइि।आब त वदल्ली सदिकऽ लोकसब इिका वचन्हो गेल छलइि। कयेक बेर िवि कमरा खाली रहला पर ओ सब अलगोसइिका लेल व्यविस्था कऽ दइ छलइि। अतऽ जलखइ, चाह आ दुि समय भोजि, सबहक इंतजाम छलइ। कवहयो कऽ बाहरोकऽ दीि- दुवखयाकऽ अतऽ खेिाईि खुआिि जाइ छलइ।

बेिी लोक त घुमअ िा कछु काजे ऋवरकेि अबइ छल.......कबीर एहि छलाह जे लोकक अिुसार ओवहिा वदल्ली सदि अबइ छलाह।भइ भइ वदि गंगा कात मे बेच पर बइसल बाता दइ छलाह। िवि कतउ जाइ छलाह आ िवि कयो भेट करऽ अबइ छलइि।अतुको लोकक लेल पहेली बिि जा रहल छलाह।

एक दुपहवरया मे बैसल देख रहल छइथ जे कछु भगिाधारी साधू संत सब दौरल खेिाईि खाय लेल आइब रहल छइथ।एिा ओ पवहिहो अतऽ देखिि छलाह जे दीिि दुवखया सब लेल कवहयो काल

भण्डारा लगइ छलइ।अइ बेर ओइ भी मे एक गोटे पर उकिर जिर टीक गेलइि। ओिा भगाि स्त्रि मे उकिा पक्षि वि देखि छलक्खि....... लेक्ि मूंह काि कतउ बदलइ छइ! कबीर उकिा क्यन्ह गेला।अखइि जे उकिा टोईक दइतक्थि तभऽ सकइत छलइ जे ताबइत खेिाई खत्मभऽ जाइ। पक्षि आऊ आ पक्षि पाऊ बाला हाल छलइ। दोसर भरल पेट मे पुछपाछ केिाई ठीक रहइ छइ। आब ओ इंतजार करऽ लगलाह.....उकिर घुरबाक।

घंटा भइ कऽ बाद ओ साधू जाय लगलाह त कबीर उकिा बजेलक्खि।

- आहा गढ़ी माईकऽ पंडीजी क्थकौह?

- हं । छी वि, छलौह। आहाकऽ छी?

हमरा केिा क्यन्हइ छी? हम की आहाक बगल मे बइस सकइ छी?

- हं हं पंडीजी एकदम बैसु। आहासहम आििदी लेिि छी।क्यन्हु हमरा! कतेक बेर भेट भेल अइछ।

कतबो जोर ओ साधू लगेला मूदा िव क्यन्ह सकलाह।

- आहा कोिा धरफरी मे त िव छी? अइ साधू सबहक संग त िव कतउ जयबाक अइछ?

-िव िव? ई सब त भोजिक संगी छइथ। अइ िहर मे भण्डारा लगइत रहइ छइ। जकरा पता लाइग जाइ छइ ओ दोसराकऽ सुक्यतकऽ दइ छइ। क्रयो ककरो संगी िव छइ। पापी पेटक सिल छइ, ततबे तक साथ छइ। देखबइ ि- दस क्ािट मे खालीभऽ जाइत। सब अपि अपि अडडा पर पहुंच जाइत।

- चलु हमर कमरा मे। ओतऽ आरामसगप्प करब।

- हं हं। चलु।

दुि गोटे कमरा मे अयलाह। आब कबीर अपि पक्रचय देलक्खि.......छक दं ओ साधू क्यन्ह गेलक्खि।

- आहा पंडीजीससाधू कक्हया भेलऊं?

- िव हम पंव्डये जी छलऊं आ िव साधुये छी। सब कमक्ष फल

छइ।ओ जेि रखि छइथ.....जीब रहल छी। जक्हया अर दा पुरा भऽ जाइत, अपि लग बजा लेताह।

- हम त अइ सदि मे अबइत रहइ छी। आहाकऽ कक्हयो िवि देखलऊं।

- हमरे गल्ती। हम आहाक सोझा िवि अयलऊं।

- िवि िवि। से िवि कहइ छी। हम त हुजुम मे अबइ छलऊं। कयेक बेर बेिि लोकभऽ जाइ छलइ तऽ क्ािि खेि घुराअ दइ छलाय। आब आहा छी त एिि िवि भगाइत।

- आब आहाक कक्हयो िवि भगाइत। विश्रांत रहु।

कबीरकऽ क्हिकर छायाािदकऽ बात आर अतीत जिबा लेल उत्साक्हत कऽ रहल छलइि।

ई गढ़ी माई, िपालक पंडीजी छलाह। कबीरक िहर मे लोक इिका अही रपे क्ान्हइि।कयेक टा क्हिकर क्खस्सा रहइि।

एक बेर एकटा अधिकारीकऽ पोमोशि बडड दिसिबाधित छलइ। ई पंडीजी, जकरियाकऽ तारीख कहलखिन, तकरियो उकिर पोमोशि भेलइि। ओ अधिकारी इकिर चेलाभऽ गेल छलाह। पंडीजीकऽ राक्त विशाम उकिे कतऽ होइि।ओ चाइर लाइि इकिर पिंसा मे क्लखबो केिं छलखिन। पोडीजी ओकरा शिािकऽ र`म मे लगा कऽ अपि झोि मे रखइ छलाह- कहला पर विकाइल कऽ देखबइ छलाह।

एकटा पक्तका त ब्यापारीकऽ धीयापुता शि्वि होइ छलइ त पंडीजीकऽ ओ अपि कतऽ बजेिं छलाह।जे तारीख कहलखिन- ओही दिि बेटा भेलइ। ओ व्यिसाई अपि हाथक घ़ि खोइल कऽ पोडीजीकऽ ईिमि मे देलकइि। पंडीजीकऽ हाथ मे उएह घ़ि बान्हल छइि।

अक्हिि कतेक इकिर भविष्यिािरीकऽ सत्य होबाक बात फैलल छलइ।

कबीरकऽ अपिि याद प़ ई छलइि जे एक बेर पंडीजी उकिो कतऽ आयल छलाह। कबीर अपि पाच टा संगी संग बैठकखाि मे बइसल छलाह। मस्तीकऽ लेल पुछलखिन -" हमरा बारे मे किछु बताऊ।"

पंडीजी किछु काल मौि रहला उपरात बजलाह- " आहाकऽ काँदेिक योग अइछ।"

-" कादेिकऽ योग की! हम त जाइते रहइ छी- बीरगंज। िपाल कादेि भेल िव।" कक्ह कऽ कबीर अपि सब संगी संग हंसऽ लगलाह।

पंडीजी गंभीर होइत बजलाह-" से जे कादेि होइ। इिका पबल योग छइि। आ आहा चार लोककऽ िव अइ। कलखा कऽ लऽ कलयह"।

कबीरकऽ ओक्हाि मोि छइि जे उिकर संगी सबकऽ मोि हुससभऽ गेल छलइ- ई सुइि कऽ । कबीरक मा खुिसखुब अन पाइि पंडीजीकऽ देि छलक्खि। तक्हया कादेि जयबाक अिसर कम्मे लोककऽ भेटई छलइ। आजुक जेका िव जे सब हरही सुरही मूंह ऊठौि कादेि जा रहल अइछ।

पूजा पाठ, ज्योक्तर,भविष्यिक्ता, हस्तरेखा पढ़अ बाला- ई सब कयेक पकार छलइ- कहाइ छलइ सब...." पंक्डते।"

जेिा सत्यिारायर भगिाि, अिन्त आ सरसिती पूजाकऽ लेल एक पंक्डत! मु ि, जिऊ आ दुगा पूजाकऽ लेल दोसर पंक्डत! कायाह, गर पुरार आ शादक लेल तेसर पंक्डत !आ क्टपइि, गह महादिा आ एकादिी यज लेल अलग पंक्डत होइत छल। कक्यो लोकाचारकऽ जाता होइत छलाह त कक्यो ज्योक्तरकऽ त कक्यो हाथक लकीरक त कक्यो ललाट पढ़अ बाला त कक्यो संस्कृतक विदाि।

ई पंडीजी अइ सब मेसक्कछु िवि छलाह- मूदा जे कहइ छलक्खि से सतभऽ जाइ छलइ। ईहो कहल जाइ पक्हि जे एक विश्शत संख्या मे जे गायती मंतकऽ जाप कऽ लइया, ओकरा मे अतेक पभाभिऽ जाइत छलइ जे ओ कहइ छइ- से भऽ जाइ छइ।ई गायती मंत पढ़ई छलाह ि िवि- संदेहे।

कबीरकऽ अपि बारे मे कहल गप्प सत्य भेलइि, तै ओ आइ अतेक खोदबेद कऽ रहल छलाह।

पंडीजी कहलक्खि जे लोक उिका पकड़ पकड़ कऽ अपि घरलऽ जाइि आ कहऽ लेल दबाि बिबइि। ओहो जजमाि खुिकऽ देखइथ, कक्ह दइ छलक्खि। जखइि ओकरा अिुसार फल िवि होइ त इिका अिप िपि कहऽ लगलइि।

ई पंडीजी िवि ककरोसक्कछु मंवाते छलक्खि आ िवि देला पर घुु इबते छलक्खि। बाद मे इिकिर क्स्थक्त खराब होबऽ लगलइि। जे बजेला पर जाइ छलाह पक्हि , से क्बि बजौि घरे घर जाय लगलाह। भीखमंगा जेका लोक क्यहिार करऽ लगलइि।

" जे िगर राज करी, से िगर भीख िवि मागी"- ईएह सोइच कऽ

ओ अउआइत बऊिाइत ऋक्रकेि पहुंचल छइथ। अतऽ एकटा बिवयाकऽ छोट छीि मंक्दर छइ। ओइ मे ठाकुरजीकऽ दुि साझ पूजा करय छइथ। मंक्दरकऽ संग चाइर टा दोकाि सेहो छइ।ओकर क्करायाकऽ क्कछु भाग पंडीजीकऽ सेहो भेटई छइि। ओही मे दुि साझ पूजा पाठ,पसाद, साझ अगरबती सब छइ। ज्यो भंडारा मे भोजभिऽ जाइ छइि तं ओइ पाइसबक्ढ़यासठाकुरजीकऽ भोग लगा लइ छइथ। ततेक ि पंक्डत ऋक्रकेि मेभऽ गेल छइ जे "एक बुलाये, दस आये" बाला हाल छइ। ज्यो बिवयाकऽ कम पाइ बाला बात कहक्थि तऽ ओ तखिि हटा देतइि। ओकरा त एहि पंक्डत चाही जे अइ स्थाकि बदला क्कछू ओकरे दइ। भगिि क्स्तकऽ अइ िहर मे चलती छइ आ "औल रट पास " सेहो भलइ। कतउ जाय आबऽ मे क्टकस विि लेबऽ पड़ ई छइि, तै ई चोला गहर केिि छइथ। उजरा धोती मे तऽ धाई सि धअ लेतइि।पंडीजी समयक संग ढ़इ गेल छलाह।

सब बात बतबइत पंडीजी विभिषभिऽ गेल छलाह। पक्हले बेर क्कयो उकिर हाल पुछलकइि। जे हाथक लकीर मे खीचल रहइ छइ- से होइते टा छइ। जन्म आ मरर- ईएह सत्य थीक। पंडीजी भािकिभऽ गेल छलाह। मंक्दर मे साझ देबाक समयभऽ गेल छलइि।जाइत काल बजलाह- "आहा बहुत ऊंचाई पर जायब- हम आहाक पिस्त ललाट देख रहल छी। हम अइसिवि कहलऊं जे आहा हमरा अहु हाल मे क्चन्हलऊं, हम जे देख रहल छी- से कक्ह रहल छी।"

कबीर, पंडीजीकऽ भोजि लेल कहलखी सदि िलाकऽ कहू देलखि।जकहया आहाकऽ मोि करत आहा आइब कऽ भोजि कऽ लेब।

आइ राइत मे जखइि गंगा कात मे कबीर बइसलाह त उिका कोिि" राग " िवि सुिाई छलइि। खाली हहअ.....हहअ......हहअकऽ आिज अबइ छलइि।पंडीजीसभेट होबा खाकतर ई सब सुिव. इच रहल छलीह।

बुझेलइि जे आब ऋतवरकेिकऽ अ् याय खतमे जेका छइि। अपि मोिकऽ कहलखि- " हे कतउ आर चलु।" उईठ कदा भऽ गेलाह- कोिि आर ठेकािकऽ तलाि मे।

छका-पुरार (लघुकथा)

हाक्र कऽ जदु ठाकुर फैम्मली कोर्ट मे केस फाइलकऽ देलाह। एतऽ सऽ ओतऽ , दौ इत दौ इत थाईक गेल छलाह। सोचि रहइत जे रिटायरमेन्टक बाद आराम करब, उल्टेभऽ गेलइि। आब त कतउ गेिाईयो उिका लेल अबगह। जेहो िवि क्यान्हइ जिवि छलइि, ओहो साईक्कल रोईककऽ " ओकर" की भेल, से पुछइत रहइ छइि। कतेक व्दि ििकाकऽ रक्खतैथ। जाबइत संभि छलइि, ििकेबे केलाह। काि-कािि िवि बुझअ देलक्खि।

"दोरी " त उयैह छक्थ। कोि मक्त मारलकइि, जे ओ "हा" कक्ह देलक्खि। ओइसऽ बेक्सये पाइ रमपुरा बाला दइ छलइि। ओ सेबो सत्कार िीक कक्रतइि।ओकर बेक्टयो सुनवि र छलइ। लाल काकी कहइ छलीह, ई कथाकऽ क्लयह......जीतल रहब। िवि कयलाह। आब बुझ्ु। अपिसऽ अपि बेटाकऽ गदर्ि पर तर आइ्र चला लेलह। आब पायक्शत मे केस केलाह अइछ आ तारीख पर दौर लगा रहला अइछ।

जदु ठाकुर सरकारी अमीि छलाह। हाले मे क्रटायर केलाह अइछ। पुरा परोपटा मे क्किका कतेक जथा- जमीि छइि.........कतेक ओइ मे ओझराहा आ कतेक सोझराहा...........सबटा उिका बुझल छइि।

कयेक जमीकि मालिक सबकऽ सेहो नहि बुझल जे कोन जमीन कतऽ अइ। बेचऽ कऽ होइ नि दाखिल-खारिज करबाक होइ, बाट-बखरा होइ नि बदलेन होइ........ लोक जदु ठाकुरकऽ पकड़ ते छलाह। थोड़ बहुत मेहनताना सेहो उपरसभेट जाइ छलइन। अही चकर मे त ओ फंसी गेलाह। बगलेकऽ गामक जोहन पाठककऽ कदअयदी बंटनिरा मे ओ गेल छलाह। चालीस बीघासऽ उपर उनिका जमीन छल। सब खतिहानी मरौसी जमीन छलइन। कोनो झंझट, कतउ नहि। असगर जोहन पाठक, आ उनिकर बापो असगर ए। बाकी कदअयद सबकऽ त बीघा कि, आब कटा मे बचल छइन। जखन जोहनकि कतऽ सऽ कथा एलइन, जदु ठाकुर लुसफुसा गेलाह। भेलइन जे ई कुटमैतीभऽ जाइत त सब संपैत हमरे। ई नहि देखलाह जे जोहनकिऽ चाइर टा बेटो छइन। किछु पतो ततो नहि केलाह। जानि घर छलइ। मोट पाइ देलकइन। सटससऽ "हं "कऽ लेलाह। पाइकऽ खुब छहर -महर भेल।

जदु ठाकुरकऽ बेटा मोहन आइ टी आइकऽ कऽ टाटा मे फीटर अइछ। डेरा डंडा सब भेटल छइ। पाइन -बिजली सब मुफ्तउआ। बिजली सब दिखन रहिते छइ। ओतेक टा डेरा त उनिकर बीडिओ साहेबकऽ सेहो नहि छइन।आब की छइ।जदु ठाकुरकऽ जमीन नहि, लेकिन अपन नोकरी आ बेटोकऽ नोकरी। जोहनकिऽ जमीन छइन , लेकिन नहि अपन नोकरी, आ नहि बेटे सब के। बेटा सब अबंड जका भरिदिन मोटर साइकिल पर इमहरसऽ उमहर उधियाइत रहइ छइन। अखनो उनिकर समाज मे सरकारी नोकरीकऽ बडड मोजर।ओइ मे टाटाक नोकरी, ई त पुछबे नहि कर । सरकारी

फेल ओकर सामर्ि। बेटाकऽ ओतऽ सब "फीटर बाबु" कहइ छइर्ि।

ब्याह दार्ि सब संपन भेलाक बाद, जदु ठाकुरकऽ पुतोहु छह महीर्ि सासुरे मे रहल।हर चारुमे ब्र्दि जोहर्ि कि एक र्ि एक बेटा अब्बते रहलइर्ि। हर जतरा मे खुब सर - सर्िर्ि सब सेहो अबइ। जदु ठाकुर खुब चपचप सर्िर्ि सब खाई छलाह। आब जोहर्ि पाठकक समईधभऽ गेलाकऽ काररर अमीर्िी लेल बऊयेर्िाई सेहो छोव देलाह। घर मे रहलाक काररर ब्यकर्िाअ गेल छलाह । कर्िी कर्िी धोईध फुइटर्िाई र्िुर भऽ गेल छलइर्ि।

छह महीर्िाक बाद मोहर्ि कर्वियाकऽ टाटालऽ गेलाह। कर्विया डेरा पर जाइ लेल तैयार र्िर्ि छलइर्ि। जदु ठाकुरकऽ खुर्िी भेलइर्ि जे कतेक र्िीक पुतोहु जे गाम मे रहअ चाहइत अइछ ।मोहर्िकऽ त पर्ह्िहो ब्र्कछु ग़ ब़ बुझाई छलइर्ि। ओतऽ अपर्ि दोस-महीम आ अस्पतालक डाक्टर सबसब्र्कछु र्िका समाधार्ि केलाह। कर्वियाकऽ डाक्टर अर्िबाक लेल कहर्ि छलैर्ि।

डाक्टर जररी जाच सब केलकइर्ि। मोहर्िकऽ कहलकइर्ि जे ई पुरषस्त्री र्िर्ि छब्थ।

मोहि माथ पकड़ कऽ बइस रहलाह। आब करताह की। कवियो काहि लगलइ। कहलकइ जे ओ अपि मायकऽ कहि छलइ। ओकर कयो वि सुलिकइ। बयाह करा देलकइ।

दोसरो डाक्टरसऽ मोहि, कवियाकऽ देखेलाह। ओहो ईएह बतेलकइ। कविया मे पुरखक बेि लकर छलइ। लकर की छलीहे पुरख।

मोहकि सार सब एहि अबंडड आ बदमाि सब छलइ जे ओकरा सबसजबरदस्ती कछु करा वि सकताह।

कछु महीिक बाद कवियाकऽ अपि छोट भाइ संग िहर पठा देलाह। जदु ठाकुरकऽ धीरे-धीरे सब सच्चाई पता चललइ।

मोहि दुखसआधाभऽ गेल छलाह। जदु ठाकुरकऽ धोईध कतऽ सटईक गेलइ, ओकर पते वि। दुखत रहअ लगलाह। डाक्टरसऽ देखेलाह। जाच सब भेलइ। बीपी, चीि आर कथी कथी वकिललइ। रोज भूखले पेटे गोटी सब खाई छथ, तखइ वित्य कया कमष करय छथ।

जोहि पाठक सबकऽ त सच्चाई बुझले रहइ।ओ सब गुमकी लगा लेने छलाह। जदु ठाकुरकऽ सेहो मोहिक सार आइबकऽ कहि गेल रहइ, जे चुप रहबाक छइ। ज्यो बाजब तं घरक भीत भीत घिइच लेब। बुइझ लियह।

ईएह गुमकी जदु ठाकुरकऽ तरे तरे जौवनस जका सुखा रहल छलइ। दर्ईक डोज बढ़ते जा रहल छलइ।

साल भइ त गुमकी सब लागल रहल- अइ वरिय मे। फेर जदु ठाकुरकऽ बिमार रहल गेलइ। ओ जोहि पाठक कतऽ पस्ताविऽ कऽ अपने गेल छलाह -

जे बाबाह मे जोहि पाठक वाति आ खचषकयलाह अइछ , से लिपसलऽ लैथ। अलगा-अलगी मोहकिऽ भ जाइ।

जोहि त अपने चुप्पे रहलाह। उकिर छोटका बेटा मारऽ मारऽ उठलइ जदु ठाकुर के। ओ तऽ आर लोक सब पहुंच गेलइ जे जदु ठाकुरकऽ जान बंचलइ।

सऊंसे गप्प पसइ गेल छलइ।दु बेर पंचइती सेहो भेलइ।बेसी लोक अइ पंचैतीसऽ अलगे रहल। जदु ठाकुर सब डाक्टरी जाचकऽ

क्पोटष़ पंच सबहक सामि रखलाह। ितीजा क्छु िव िकललइ। जोहि पाठक सबहक कहब छइि जे इिके बेटा मे कमी छइि। आर दहेज चाह्यइि-ओकरे लेल ई तेल बेल केि छ्थ। हमर पिरकऽ जे बेजती भेल अइछ ओकर बदला हम सबलऽ क रहबइि।के, ककरा आ कोिा जंचतइ क् की सच थीक!

ि्र मे त जदु ठाकुर डराइत छलाह। आब सऊंसे घरे घर आ गामे गाम लोक बुझ्ये गेलइ त आब कथीकऽ अढ़क काज। जे छइ से छइ- " छका बाला लीला", ईएह ि!

मोहि अलग होयबाक लेल मोकदमा केि छ्थ। तारीख पर तारीख पइ रहल छइि।

देखू ...... की फैसला......आ कह्या अबइ छइ।

ई अजगुत कथा त आइ तक एिा सुिबा मे िव आयल छलइ। तरघुक्सया भेलो होइ लेकि एिा हो- हल्ला िव भेल छलइ।सब अकरा " छका" बला पंचैती कहइ छइ। समाज आ कोटष़ दुि जगह जदु ठाकुरकऽ दौ इत दौ इत चटी क्सा रहल छइि।

दाई- माई सब सेहो कहइत रहइ छ्थि- " धुर! एहिा कतउ भेलइ अइछ। जीबी त कीऽ कीऽ िव सुिा।"

अकरे संग जखइ दु बुढ़ीकऽ जिर क्षलइ छइ....... ओ कछु आरे ईिरा करय छइ । ई कोि पक्हले घटि वि भेल छइ। सदौसऽ होइत रहलइ........ पर्क्ह अकरा घरक छरदिलीकऽ भीतरे दबा देल जाइत छलइ।आब जुग आ जमाि बदइल गेल छइ........िका वछ्पीकऽ समय चइल गेलइ ....जे सच छइ-से सोझा छी।

जदु ठाकुर सबके अपि दुख़ ा सुबिइत चइल जाइत रहइत छक्ष्थ। लोककऽ त चचा मे मजा अबइ छइ, मूदा गु क माइ त धोकरबे बुझई छइ।

लोक जदु ठाकुरसपुछइ छइ- आहा कोि बुझक्लयई?

अच्छा---

....

ई भेलइ----

....

ओहो------

अक्हि कतेक गप।

ई सब जाइि बुइझकऽ ओझरेि छइि, िवि त कक्हया ि अलगा-अलगी भऽ जइतइ।

छका पुरार पर सब िजिर गरौि अइ। देखू अंकाम अ् याय कक्हया बहराई छइ।

सरपाइज (लघुकथा)

(गाम मे रहइत मा आ विदेश मे रहइत बेटाक बीच भेल फोनिता पर आधारित- कुटी पतीक जमाना चइल गेल।)

कोना छे!- बेटा बजलाह।

ठीक छी!- मा बजलीह।

- आर कोना वर्षि।

- विश सब ठीक-ठाक।काइल विश फोन केलह।

- हम त कहिने कहिये जे इशिन-. इबक फोन करबऊ।

- दु बेरसन्डिश क फोन अबइ छलइ, तै भेल जे अहु बेर इशिन आइत।

- ओ त जखन्या समय भेट जाइया, तखन्या क दइ छयउ। अइ बेर डिश क समय विश भेटल तै. इब क केलयउ।

दोसर जे समय मे पाच घंटाकऽ अंतर छइ- दु जगह मे। तकरो देखऽ पृ ई छइ।

- हम त सब बुझते छी जे बऊआकऽ आफस मे इ कऽ काज बे भऽ गेल हेतइ- तै फो व केलाह अइछ।

जव व छउ बाबु जी के! काइलसचाइर बेर पुईछ लेलाह- बऊआकऽ फो व आयल.......बऊआकऽ फो व आयल। मो घोर भऽ गेल सुव त.......सुव त। कहलयइ जे खाली फो कोई काज थो` छइ। आफस मे व फुरसत भेल हेतइ। देखइत व छेलये...... दल्ली मे कती राइत कऽ हारल थाकल अबइ छलाह।

हमर बऊआ त वदे सफो कऽ दइ छइथ। रामजी बाबुकऽ देखयउ- पट मे बेटा पुतोहु छइ। कहयो फो व । कव या उ किर हकल रसक व त रहइ छइथ।एह िबकी कव या सब आयल छइ......काबले आन्हर। हमर त पुतोहूओकऽ फो अबइत अइछ।

- सब गप तुहे बजई छे। सब बुझते छे, तखइ परे व होबाक चाही।

-व व । हम कयैक परे होयब। एह बेटा भग सबके

देखथि। आइ काइलकऽ माय बापकऽ अतेक खोज पुछारी करइत अइछ। अतइ देखऽ ि- सब बुढ़ा-बुढ़ी सब असगरे छइथ। जखइि कागज पर अंगुठा लगबऽ कऽ रहइ छइि, तखि गाम आ माय बाप याद अबइ छइि।

-आर कहऽ । मोि ठीक रहइ छऊ। दबाई समय पर खाई छैि!

-हं हं। हम सब दिाई समय पर खाई छी। ओइसपक्ष्ि एक वालास दूध सेहो पीबइ छी।

याद हेतऽ " म़ र"। ओकरे पोता, खटाल खोलि अइछ। उएह आब ब़ का दूधक कारोबारीभऽ गेल अइछ। एतऽ ओ अपि दूधदऽ जाइत अइछ। कहलकइ जे ई हमर सबहक पुरा दरबार अइछ। बाकी टोल मे ओकर आदमी दूध लऽ कऽ अबइ छइ। ओहो अतेक इज्जत दइत अइछ तं हमहु जखइि ओकरा बि गाय खरीदऽ कऽ रहइ छइ- जे कहइत अइछ..... पाइदऽ दइ क्छयई। दूध मे ओ कमिहा कऽ दइत अइछ।

ओ अइ दुआरे िवि अपि अबइत अइछ जे पुरा दरबार छइ- ओ अइ दुआरे अबइ छऊ जे तुं एडिास मे पाइ दइ छही!

-भऽ सकइ छइ। बोली बाि ओकर बडड बढ़िया छइ।हमरा त कक्कयो दूध ििगा िव केलक।

- बाबूजीकऽ मोि ठीक छइि?

ओि तऽ ठीके छइथ लेिक कफक्फक िकाइत रक्कते टा छइि।

- ततेक ि एंटी बायोटिक खेि छिथि, जे दिाई असर िव करय छइि।

- िदल्ली बाला जे डाक्टर ओइ बेर दिाई देि रहइि, ऊयाह पची देखा कऽ बीिि फामेसीसदिाई मंगा देलयइि। ओइसक्कछु आराम छइि।

" दही" दुि साझ खेिाई छो ई िव छेिथि।कऽ बुझेतइि।

गरम दूध मे ह इद िमला कऽ पीला पर आराम होइ छइ- लेिक उिकाकऽ कहतइि। मोि होइ छइि त पीताह। िव त ओक्कि छोव देताह।

हमहुं तऽ बुढ़ेलऊं! अतेक हुच्ची हमरा सऽ आब िव होइया। तुहे कखिि बुझईयउि जे दही छोव दैस आ गरम दूध पीबइथ।

अखइ ि वि कहयउ- ि वि त हमरे काग़ ता जे बऊआकऽ हमही कहक्लयइ ि।

- अच्छा बाद मे कह देबइ ि।

- एकटा खुि खबरी कहि ाई त कासईरे गेल। तुं जे कटहर रोपि छलह, से अइ बेर फइ गेलह। दु बरखसमोछी होइ छलइ- लेकि कटहर ि वि होइ। अइ बेर फरलइ। हमहु ओकर जइ मे माछक खोईचा सब ग़ बाअ दे ि छक्लयई।

अइ बेर कम फरलइ। अवाला बरखसबे ि ी फरतऽ । हम अइ बेर बुइझ गेक्लयई।कटहर, वारह पर फ़ ई छइ। पक ि हे ि ीचा बला डाईढ़ सब पंगबा देबइ।

- तु तं एकदम वारहथभऽ गेल छंय। ि ाक्रयल सबहक की हाल?

- ठीक छअ। बीच मे ग़ ब़ ा गेल छलइ। बक्तये मे ि ाक्रयल सब ढ ि ढ ि ा कऽ खसऽ लागल छलह। चुटी लाइग गेल छलइ। द ि ाई स्पे भेलइ। आब जे बइच गेलह, से ठीक छह।

- दु चाईरो टा बचलइ की ि‍व ि?

- दु चाइर टा ककअए? घुंघर जेका अखिा लुधकल छअ। ई बुजलहक जे स्‍पे केिा ककबेक्‍लयई?

तुं जे ककल्‍लीसस्‍पे िला मिीि अि‍ि छलह, से राखल राखल खराब भऽ गेल छलह। दु सै टाका लागल ओकरा ठीक कराबऽ मे।

- आम सब?

- ओ तोहर बाबूजीकऽ कजम्‍मा छइि। जोवाया अपि पाइि ताइि दइत रहइ छअ।सब ठीक छअ।

ई कहऽ ि कक्‍हया " ऐबऽ "?

- देख! ि‍वश्वात ि‍व ि अइछ।

- अइ बेर बडड धाि गहुम भेल छअ। बटाईदार िीक पकृ ा गेल अइछ। बाकी त सबहक खेत परती परल छइि। उिकिर सबहक बोली एहि खराब जे ककयो बटाई लेबइ लेल तैयार ि‍व ि। हमरा

कतऽ सब बटाईदार तैयार।

लेबाि जोगर धाि तोहर कविया काकीकऽ िवि भेलइि। हमही पठा देक्लयइि। बडड आिीिदी दइ छलखुि। बेटा सब एहि कुपात सब भऽ गेल छइि से बेचारो की करतीह?

- की कुपात?

- िवि बुझल छअ! विि करय छइि। माय बापकऽ एक दि िवि छो ई छइि। जेहि तोहर गा ी छलह क्दल्ली मे, सैह गा ी खरीदि छइि। आमदिी एक पाइकऽ िवि, आ िक सब साहबी!

- कतऽ सपाइ एलइि?

- कतऽ सं! तोहर गाम मेकऽ ककरासकम। जमीि बाका रहल छइ आ फुटािी बइढ़ रहल छइ। क्दल्ली बम्बइ जेका लोकक स्टेन्डर भऽ गेल छइ।

लोक त मूंहे पर कक्ह दइ छइि........हमर बऊआ कमा कऽ कीिलक गा ी.....आ ई सब गंिी कऽ । कतउ छजई छइि दलाि पर गा ी। हमरा सबकऽ ओिि िहर बजार जाय मे सहुक्लइत भऽ गेल अइछ। सब घर मे गा ीभऽ गेल छइ......आ

सब एक समाद मे गा ी पठा दइ अइछ। बडड मावि अइछ हमरा। कर्विको िवि बुझाइत अइछ जे अपि गा ी िवि।

आब जे तुं स्टेिि एबह त क्स्कि पर िवि आबह पृ तह।

- िहि। बहुत विकास भेलइ। पक्ि त क्स्कि बालाकऽ खुिमद करऽ पृ इ छइ।

- देखऽ ि। एकटा आर गप सब बेरसक्सरा जाइत अइछ। ओ जे दुमहला पर तोहर बाबूजी पोता- पोती लेल घर आ क्सदेिि बाथरम अलगसबिबौि छलखुि....... ओ बंदयछलह......तौ सब एबे िवि केलह। ओइ घरकऽ साफ सफाई करेलखुि आ बाबूजी अपि ओइ बाथरम मे जाइ छथुि। ओइ बाथरम मे गीजर छइ......बाबूजी गरमे पाइिसिहाइ छथुि आ थो` काल बच्चा बाला घर मे आरामो करय छथुि।

ओिि त ठेहुि धेि रहइ छइि- लेक्ि कोठा पर चईढ़ जाइ छइथ।

हमरा त िवि जाअ होइया। तुं सब एबऽ त भऽ सकइत अइछ जे तखि चढ़ी।

- आइ तऽ बडड गप्प भेलइ।

- अखइि आरो कतेक गप सब अइछ। तुं एबऽ तखइि कहबऽ। एकटा राज क्मस्ती आ दु टा जाि वापछला तीि महीिासिऽ काज कऽ रहल अइछ। बहुत काज भेल अइछ.......आ बहुत बाकी अइछ।

अखइि ि्दक समय छी......एहि ि भारी लगि छइ जे जि सब िगा बडड करइत अइछ।

- आिद लेल काज करकांहे। तािि लऽ कऽ िवि!

- िवि िवि। कोिि क्यंता िवि।

- पाइकऽ काज होऊ त कक्हहे!

- पाइकऽ कोिि काज िवि अइ। बस तुं सब जकल्दये आइब जईहअ......." सरपाइज" रखिि वछयह।

- ठीक छइ। जकल्दये एबऊ।

बऊआकऽ पता लाइग गेल छलइि जे उकिर मा पुरा घरकऽ िबका वडजाइि मे बदलबा देलक्खि अइछ। जे उकिर माकऽ होइि जे जि मजुर सब उकिर बाबूजीकऽ हा मे हा मला कऽ ठकइ छइि..........आब बाबूजीकऽ भऽ रहल छइि जे जि सब इकिर माकऽ हा मे हा मला कऽ ठकइ छइि। असल मे कयो ककरो विि ठकइ छइ..........सब अपि बऊआकऽ सािगत अपिा ढंगे कऽ रहल अइछ।

बऊआकऽ " सरपाइज" देखबऽ कऽ इंतजार भऽ रहल छइि।

अफेयर (लघुकथा)

दासजी अइ िहरक कालेज मे लेक्चरर छइथ। लोक उिका परफेसर साहब कहइ छइि। सफाई दइत दइत परेिाभिऽ गेलाह....लोक परफेसर साहब कहिाई िवि छो़ लकइि। ओ कहइ छलक्खि जे हम लेक्चरर टा छी अखइि...... पोफेसर ब़ का पद होइ छइ.........पुरा वशिवदिालय मे आंगुर पर वाि जाइत जे केऽ सब छैथ पोफेसर.... हम िवि छी। मूदा लोक तऽ उिका परफेसर साहब कहिाई िवि छो़ लकइि। आब ओहो अपिाकिऽ माइि लेलाह। कतबो दलील देलक्खि जे दरोगा आ पुक्लस कप्तािा जेिा अलग अलग होइ छइ.........ओक्हिा लेक्चरर आ पोफेसर........ कोिा काज िवि अयलइि।

अइ िहरकऽ ई क्मजाज छलइ- क्सपाहीकऽ हिलदार, क्करािीकऽ ब़ ा बाबु, दरोगाकऽ इंस्पेक्टर, िकीलकऽ पी पी साहेब, मास्टरकऽ हेडमास्टर साहब, बैकक बाबुकऽ मिजर साहब, रेलिकिऽ पैटमैिकिऽ स्टेिि मास्टर, छुटभैया िता सबकऽ वधायकजी, दोकािदार सबकऽ सेठजी, बदमािि सबकऽ भैयाजी आ बाकी सब िक्मतालीकऽ चौधरी साहब कहल जाइ छलइ। पक्हल लोक दासजी िवि हेताह - वजिका पदकऽ बढ़ा कऽ कहला पर अिकिटल लागल हेतइि, लेक्कि जे रेिाज छइ से छइ। ई रेिाज िवि एक क्दि मे बिवि छइ आ िवि एक क्दि मे टुटई छइ। दासजी अकरा अिधाइ़ लेलाह।

आब दोसर परेशानी उकिर सामने मुंह बौने ठार छलइनि। "दास" टाईटल देख कऽ पहिने देहिजी सबकऽ भेलइनि जे ई उकिे समाजकऽ छइथ। पछाइत गप्प सबसपता चललइनि जे ई त " बंगाली" छथियइथ। दासजीकऽ ज्यो क्यो " बंगाली" कहइ छलइनि तं खीलखीला जाइ छलाह। ई सत्य छैथ जे उकिर पितामह पोस्टमास्टरक नौकरी करइत बदली भऽ कऽ कलकतासदरभंगा आयल छलाह। फेर ईएह शहरकऽ अपन घर बना लेलाह।अतऽ रहइत चारम पीढ़ी दासजी छइथ। ओ त घरो मे मैथिली बजई छइथ। बंगला बुइझ जाइ छइथ, लेकिन बाईज नहि पबइ छइथ।ई बाहरे- बाहर रहलाक कारर बुझाईया भेल छइनि। इकिर कहब छइनि जे या तऽ "मैथिल " कहू या "बिहारी " कहू.... बंगाली त कोनो हाल मे नहि चलत। दासजी , बंगाली कहला पर खिसियाई छलाह, तै कयेक गोटे जानखाहे " बंगाली" कहऽ लगलइनि।

पढ़ल लिखल लोककऽ त सब समाज अपना मे मिलेबाक पयास करय छइ। ओइ मे ई शिकाइत करऽ बाला लोनिक आगु " दास" टाईटल- बिच बिच निताि दैआयबइत रहइ छइनि। अइ शहर मे किछु घर " केटि" जाइतक लोककऽ रहइ। ओकर सबहक टाईटल सेहो " दास" छलइ- ओ सब दासजीकऽ अपन समाजक मानि लिनि। बडड अधिकारसइ किा ओ सब अपन परिषितयोहार मे बजा कऽ लऽ जाइनि।

कछु आर दास परिवार ओइ िहर मे रहइ। ई सब अलग तरहक चंदिक टीका माथा पर करय। अलगे कान्हासी ओकर सबकऽ रहइ। माछ माउस ओ सब िव खाई। कि धाकम्क बेवि ये ओइ सब घरक सब सदस्य होइ। िबो लोककऽ दीक्ा करा कऽ अपि समाज मे जोइ लइ छल। अतऽ त िमही मे दास लागल छलइ। ईहो सब " दासजी" पर बोर फेकलकइि।

दासजी, महाि गिरसपढ़ल - कलखल- गुरल छलाह।ओ सबससमभाि मे मेलजोल रखइ छलाह।जाइत पाइत- धमष़ ऊंच- िीच, धिी-गरीब सब मे ओतेक विशास िव करय छलाह। छोट िहर मे रहबाक उिकर पक्हले अ्िभि छलइि। उिकर वियुक्त सरकारकऽ कमीिि दारा भेल छलइि।जतऽ पठा देलकइि, ओतऽ खुिी खुिी आइब गेलाह।जई विरयक, जतऽ जगह खाली रहतइ, ओतइ ि उिका पठेतइि- सब बुझई छलाह।

ओइ समय मे बेिी पोफेसर सब त उएह होइ छलाह जे मैिकजंग कमेटीकऽ सदस्यकऽ परिवारिक होइत ि लगुआ भगुआ ि ककरो अ्िमोदि ि पाइ दऽ कऽ ।जे बेिी पढ़ल से पोफेसर, कम पढ़ल से करािी आ कािि पढ़ल सब चपरासी मे रवजस्टर मे िमि चईढ़ जाइ। िब िब कालेज खुजई छलइ.....सब लोककऽ बहाली होइ.......फेर सरकारी कराबइ लेल पयास ि्र । अइ मे सब खुि -खुि रहइ छल। कवधायक, कलक्टर, मंती, विक्ा विभाग, ठेकेदार, व्यिसाई, पाइ बला सबहक ििडष रहइ- तै ककरो

कोनि विकाइत छेनि। विकाइत ककरा रहइ छल- ओ छलाह विदाथी! उनिकाकऽ पुछइया।

दासजी अपनिकऽ अइसअलग बुझई छलाह। ओ लोककऽ फरीछा कऽ कहइ छलखिन-" हम कमीनि बाला छी"।

लोक तखया की अखनि "कमीनिकि" मतलब "देबलेब" बुझई छइ।ओकर आंईखक चमकी देख कऽ दासजी बुइझ जाइ छलाह जे ई गलते बुझलक। जेतबा ओ बुझेबाक पयास करय छलाह- ओतबे ओकरा" देबलेबसभेल निकरी" पका बुझानिई लागऽ लगइ छलइ। अंत मे हारि कऽ दासजी फरछेनिई छोरव देलाह। जे बुझबाक होइ से बुझय, हम जे छी, से छीहे।

दासजी विजानि विरियक पोफेसर छलाह। तखया टयुनिकि बडड चलती छलइ। पोफेसर सब कालेज मे अइ दुआरे नहि पढ़बइ, जे पईढ़ जाइत तऽ टयुनि कोनि चलऽ त।दासजी कालेज मे बुझा कऽ पढ़बनि आ ऊपरसजेकरा नहि बुझाई, ओकरा अपन घरो पर बिनि पाइ लेनि पढ़बनि। पहिने त सबकऽ भेलइ जे विदाथी फसबंकऽ त ई कोनि चाइल त नहि छइ- लेकिन साल बितलो पर जखनि पाइ नहि लेलखिन, तखइनि सब विरोधीकऽ मुंह मे ताला लाइग गेलइनि।

एकतऽ मुफ्तउआ पढ़ाइ, उपरसनिक सेहो- विदाथीकऽ जमघट

होबऽ लगलइ।

कय वरिय पर तऽ दासजी "व्यवस्था"कऽ खिलाफ खुइल कऽ कालेज मे बजतो छलाह। हरदमसत्ताकऽ ललकारऽ बाला लोक, छात्र सबकऽ बीच मे लोकप्रिय रहल अइछ। दासजी बेि चलती बाला प्रोफेसर भऽ रहल छलाह।अहुसपैघ जे गुर रहइ - ओ छलइ " उत्सव/ सभा/गोष्ठी आयोजित करऽ के"। छात्रक फौज इकिा संग छल- क्रिता ीक छलाह- आयोजि कता ीक छलाह- मुफ्त मे घर पर पढ़बइ छलाह- आर आर गुर सब।

इकिर पत्रवक्र अइ िहरक स्थापित प्रोफेसर सबकऽ विस्थापित करऽ लगलइ। ओिा मैंविजंग कमेटीकऽ कृपा पात्र सबकऽ पढ़बऽ कऽ जगह "प्रबंध" सदौसपाथमिकता मे रहलइ। कोिा भी विशवविद्यालयकऽ सुची उठाअकऽ ताकु- सब अहि लोक पासिवकि पद पर भेटताह। ई सब हक एकटा गिषहोइ छइ। सब एकदोसराकऽ "िलफेयर" करय छइ। ज्यो क्यो िलफेयर विा करऽ बला आइब गेल त सब क्षल कऽ ओकर " फेयरिल" कऽ दइ छइ। अतऽ ईएह भेल जा रहल छल। दासजीकऽ पत्रवक्रकऽ ल कऽ इकिर सबहक दोकदिारी बन होबाक कगार पर पहुंच गेल छलइ। दासजीकऽ खिलाफ कय गोटे एकजुटभऽ गेल छलाह। मौकाकऽ तलाि मे छलाह। आखिर भेट्ये गेलइ।

दासजीकऽ घर पर पढ़अ बला विद्यार्थी मे बसंत दास सेहो छल। ई बसंत ओतुके केटि टोलीकऽ छल। ओिा त केटि टोली मे क्यो सुभ्यस्त विा, लेकिा बसंतकऽ परिवार त सबसं गरीब। बसंत पढ़अ मे तेज छल, तै दासजीकऽ िजर मे आयल। ओ

पढ़बऽ कऽ अलाि कछु आवश्यक मदद सेहो बसंतकऽ कऽ दइ छलखि। अकर बदला मे बसंत अपि मोि कि किर घरक टहलुआ बाला काज जेि- तर तरकारी अिाई, बच्चाकऽ खेलोई, मेला ठेला घुमोई, बजार हाटक काज ईएह सब हल्लुक फल्लुक कऽ दइ छलइि। बसंतक माय बापक लेल त दासजी आ हुकि पवाि देिता तुल्य छलइि। हालाक कयेक बेर दासजी, अपि कवियाकऽ मि करय छलखि- बसंतकऽ काज अढ़बऽ सं, लेकि बसंत िव मािव छलइि। अपि आगु बइढ़कऽ काज कऽ दइि। ओि बडड काज त छेबो िव करय- कोि कुव्टया पीवसयाकऽ सािले िव त काजे कोि। ईएह- इमहर ओमहर िाला।

दासजीक कवियाा अवामा सेहो पोफेसराइकिऽ पदी भेटलासखुि रहइ छलीह। दु टा छोट छोट बेटा छलइि- पाच बरखक अवखल आ दु बरखक विवखल। अवखल स्कुल गोई ि़र केि छल। दुि बच्चा बसंतक संग खुब वतीया गेल छलइि। ओ सब बसंतक संग ओकर घर सेहो चइल जाय। बसंतक माय सेहो दुि बच्चाकऽ जािसबेि मािव छलीह।अवामा अपुिषसुन्दरी त िव छलीह लेकि भरल भरल देह छलइि, आंईख बडड तेज, केि बरकी टा आ चेहरा रमरगर रहइि। ओहोसबेि जे हंसमुख सिभाकिऽ छलीह। विदाथी सबससेहो हंसी ठठाकऽ लइ छलीह। विदाथी सब सेहो बडड आदर करयि। दासजी जवि गंभीर ओवि मजाकअए अवामाजी। सब कहइ जे दासजीकऽ कसाकऽ हंसी कवियाा मे आयल छइि। हंसी खुिी वि सस इ छलइ।

अखिल बीमारभऽ गेल छलइ। डाक्टरकऽ ईलाज चइल रहल छलइ। देह मे कनिछु दािा जेका विकिलल छलइ। अवरमाजी त पहिले बेर एिा दुखित बच्चाकऽ देखि छलीह। बसंतक माय सेहो एलखिा वजगेसा मे। ओ अखिलकऽ देखते कहलखिा -ई त " कोदबा" छइ।

अवरमाकऽ अकर अिभिा वि िछलइि। ओ कहलखि-

ई तऽ आब कम भेलइया। डाक्टर कहला जे तीिा चाइर कदिा मे पुरा ठीक भऽ जेताह।

बसंतक माय बजलीह- डाक्टर जे बाजय, अइ मे ािमक पात छुआबऽ पड़ त।

- अच्छा हम डाक्टर साहबसपुईछ लेबइि।

- "हं । अपि पुईछ लेबइि।" बसंतक माय बजलीह।

फेर भेलइि जे ाबि जमाािकऽ लोकबेद छइथ। अपि जे ािक बुझेतइि से करतीह। इािका जे फुरेलइि, अपि कहि देलखिा।

अइ गपािपकऽ समय बसंत ओतइ ठार छल। ओकरो एकबेर "कोदबा" भेल छलइ- ओइ मे ािमक पात ओकर देह पर राखल गेल छलइ। तखइि ओ ठीक भेल छल।

अखिल दुखित भेलासकमजोरभऽ गेल छलइ। बसंत , अखिलकऽ

माबिो बडड करय छलइ। साईक्कल पर सऊंसे िहरकऽ कैक चकर ओ अकरा घुमेि अइ। बसंतकऽ भेलइ जे िमिक पातसअवखलकऽ छुआिल जाय त ई ठीकभऽ जेतइ। ई मोि मे अक्बते ओ ओतऽ ससाईक्कललऽ कऽ क्बदा भेल।

ओकरा ई अंदाजे िवि छलइ जे ओकर िहर मे अतेक बदलािभऽ गेल छइ। पक्हि कतेक ि िमिक गाछ चार कात छलइ। आइ ताकऽ विकलल, त कतउ देखेबे िवि करय। कतऽ क्बलाअ गेलइ िमि सब। तकइत आगु बढ़ल। दु ठाम िमि गाछ भेटबो केलइ- तं ओइ गाछक माक्लक पात तो असमिा कऽ देलकइ। एकाध टा आर ठुठ िमिक गाछ भेटलइ- जेकर सब डाईढ़ पात लोग दतमइि आ खक्रका मे सुडडाहकऽ देि छलइ। आगु बढ़ल जा रहल छलाय बसंत। आइ ओकरा बुझेलइ जे अपिा िहरसओ दुरभऽ गेल अइछ। िमि सि छोट छीि गाछ तककऽ ओकरा ठेकाि िवि।कतऽ ओकर ्यािि रहइ छलइ- ओकरा अपि पर हंसी आबइ।

अक्हंिा ओ पहुंचल स्टेिि गुमटीक बाद , बंद चीिीि क्मलक गोदाम लग। ओ खंडहर जकाभऽ गेल छलइ। पक्हि ओतऽ रकक लाइि लागल रहइ छलइ। ओतऽ पहुंचला पर एक फंका चीिीि ओक्हिा डाईिर खलासी सबदऽ दइ। भी लागल रहइ छलइ ओतऽ । ओतऽ चाहक दोकाि सेहो छलइ- जे मंगिीि िाला चीिीसबिवि। सब रक िाला दु चाइर क्कलो ओक्हिा ओ चाहक

ठेहािलाकऽ द दइ। सब खत्म। क्रायाबाि जंगल जेका लगइ छइ। आइ ओ देखलक जे गोदामक देिर मे पीपरक गाछ सब भऽ गेल छइ।

अपि क्दमाग पर जोर दइया बसंत- देखू हम आयल छलऊं िमक पात लेल......पीपरक पात देख रहल छी। गोदामक पछुआइत मे एकटा िमक गाछ पक्ह्िि छलइ। ओ सब ओकर खसलका फर िमरी खाई छलाय आ तखइि उपरसजं चीिि भेट जाइ त" तीता मीता" सिद ओकरा सबकऽ कहइ। ब़ का िमक गाछ छलइये। िचा बाला ठाइ्र िवि छलइ लेक्कि ऊपर पात छलइ।

साईक्कल गोदामक आगु मे बसंत लगेलक आ पाछु चइल गेल - क्जमहर िमक गाछ छलइ।

दासजी कतऽ सजे बसंत वकिलल, ओकर बाद ओ अपि घर िवि पहुंचल।ओ कतऽ गेल? ओकर घरक लोक दासजी कतऽ आयल- एतऽ सत ओ तखि चइल गेल छलाय। सब जगह ताकल गेलइ। कतउ िवि भेटलइ। एक दु गोटे कहलकइ जे िमक पात लेल आयल छल- लेक्कि मिि केला पर चइल गेल।ओकर साईक्कल गोदामक बाहर भेटलइ। ओकर बाद कोिि खबर िवि।

अंत मे हाक्र कऽ थािि मे क्रपोटषक्लखाि लि गेलइ। पुक्लस घरक

लोक, दोस महीम, वि‍द्यार्थी आ दासजी सबसपुछताछ केलकइ। आब ई त सत बाहर आइब गेल छलइ जे दासजी कतऽ सबसंतकऽ बडड हेमकेम

छलइ।

आब दासजीक जे वि‍रोधी लोक सब छल- से अइ घटि‍ मे हि‍ देबऽ लगलइ। ओ सब हल्ला उ ा देलकइ जे अक्र माजी आ बसंत मे ि‍जायज क्रश्ता भऽ गेल छलइ तै पोफेसर दासजी, बसंतकऽ मरि‍ देलक्खि‍। ई बात पुक्लसकऽ सेहो पता लगलइ। ओ दासजीसपुछताछ करऽ लगलइि‍। दुि‍ गोटेकऽ थाि‍ मे राखल गेल। अलग अलग पुछाई भऽ रहल छलइि‍। बीमार अक्खल , पृ ि‍सी कतऽ छलाह। वि‍क्खलकऽ पुक्लस थाि‍ आि‍ऽ समि‍कऽ देलकइि‍। आब वि‍क्खल दोसर पृ ि‍सी कतऽ । दुि‍ बच्चा दु जगह आ अतऽ थाि‍ मे दुि‍ पारी दु जगह परीक्कदऽ रहल छलाह। संकमरक दौर चइल रहल छलइि‍।

उमहर जे बसंतक माय खाक्तर दासजी सब देि‍ता छेलाह, से आब इि‍कर सबहक वारफ्नारीकऽ मागकऽ रहल छलीह। ि‍हर मे केि‍ट टोलीकऽ लोककऽ संग कक्छु आर संगठि‍ सब दासजी आ अक्र माजीकऽ वारफ्नारी खाक्तर दबाि‍ बि‍ रहल छल। अखबार आ टीि‍ी मे समाचार इि‍कर सब पर आइब रहल छलइि‍। क्बि‍ वारफ्नारीकऽ समाचारकऽ आधार पर दासजीकऽ वि‍शवि‍द्यालय पि‍ासि‍ वि‍लक्कंतकऽ देि‍ छलइि‍।

पुलिस टीम जाच करइत फेर ओइ गोदाम पर गेल। जखइ ओ मिक गाछकऽ तकइत ऊपर चढ़ल त देखइत अइछ जे गाछक ऊपर जे खजखोहइ छल ओइ मे बसंतक लाि प़ल छल। पुलिसकऽ अिुसार मिक पात तो इत काल ओ न्यारह हजार िोल्टक बिजलीकऽ करेटक चपेट मे आइबकऽ ऊपरे टंगा गेल छलाह। पोस्टमाटम मे सेहो बिजलीकऽ करेटसऽ मौत अयलइ। तखइ जा कऽ दासजी आ अवरमाजीकऽ पुलिस छो़लकइ।

अइ सब पुछताछसदासजी आ अवरमाजी अतेक टुइट गेल छलाह जे आब उिका ई िहर काटई छलइ। लोककऽ िजिर मे ओ पुलिसकऽ पाइ खुआ कऽ विदोरक तमगा लेि छलाह। इमहर विशविदालय पिासि इिकिर विलम्बाकिऽ आदेि रदकऽ देि छल।

दासजी तखि कुलपतिाकऽ अपि जाकऽ हाथ पैर जोई कऽ विि‍दि केलखि जे ओ कोिा आि िहरकऽ कालेज मे बदलीकऽ दइ लेल। जे दासजी ककरोसऽ कखियो किछु विि याचिा केलाह, सेअ अइ पता िकिऽ दौ मे हाथ जोि‍ई सीखा देलकइ। कुलपतिाकऽ सेहो सच्चाई पता लाइग गेल छलइ। माहौल समान्य करबाकलऽ सेहो दासजीकऽ ओतऽ सहटेिाई जररी छलइ। पिासविकि अविायिाकऽ िमि पर बदलीकऽ आदेि विकइल गेलइ।

वरोधी लोक सब एहि ि बदला लेलकइ ि , जे दासजी अपि बदली करा कऽ चइल गेलाह। आब उिका ई िहर मोि िव िपृ ई छइ ि.......मोि पृ ई छइ ि त बसंतक त्याग आ आदर। ओ इिका सबहक लेल अपि जीि िकऽ ईहलीला खत्मकऽ लेलक आ ओ एहि छइथ जे लोकक कुचेि ाक डरे, ओकरा याद मे कछु चाहियो कऽ िव िकऽ पाइब रहल छइथ।

पहलूका दासजी रहतइथ त ओ जमाि ािकऽ परि ाह िव िकरतइथ। आब दु टा पैघ होइत बच्चाकऽ बाप छइथ, तै मौि भऽ कालेज जाइ छइथ आ कालेजससीधा घर घु इ छइथ- ि ाराशयसपीव त अवर माजीकऽ सेि ि खाकार।सोझा सोझी जीि ि भऽ गेलइ ि। आब िव ि "बंगाली " कहला पर खराब लगइ ि आ िव ि परफेसर कहला पर। अपि ािकऽ कमीि ि ि ािला लेक्चरर कहि ाई त कासकरये गेलाह।

ईएह कहाइ छइ- बदला मे बदलीभऽ गेलइ ि।लोक घर मे बइसल...... ई वषिकरषवकाइल लेलक जे कि आइगक धुआं िव ि वकिलइ छइ। कछु तऽ चकर छइहे। कि ाको पक्ष ा मटयामेट करबाक हुआय त " अफेयर " सबसं औचक हथियार सदैयसरहल अइछ........ओकरे उपयोग दासजीकऽ वरोधी सब कयलाह आ एक आगु बढ़इत व्यकि ातकिऽ समाज "अफेयसष" कऽ िम पर धराि ाई कऽ देलक।

केतकीकऽ व्यथा- की कहू कथा (लघुकथा)

ओइ समय मे सब गाम मे विद्यालय नहि होइ छलइ। प्राथमिक विद्यालय कतउ कतउ भेट्यो जइतइ, मुदा उच्च विद्यालय त गूलरक फूल। जई गाम मे उच्च विद्यालय,ओकर अंईठ अलग। अइ गाम मे बच्चिया सब सेहो पढ़ल लिखल होइत छल। केतकी अइ मे भागमंत छलीह। हुनकिर गाम मे उच्च विद्यालय छलइ। अगल बगल कयेक गामक विद्यार्थी सब ओइ गाम मे पढ़बाक लेल कियो संबंधी त कियो जोर आ संबंधी त कियो अनसंबंधी कतऽ रही कऽ पढ़ई छल। अही मेसऽ किछु विद्यार्थी बाहर भोजन किन लेल व्यपैल रहइ छल।

केतकी नउआं किलास मे पढ़ई छलीह। सबसं तेज त नहि, मुदा भुसकौलो नहि छलीह। केतकी जेहने सुनर फूल, ओहिना सुनर देखबाह मे। ओहिना बात विचार व्यवहार। से कियैक नहि होइत- संस्कारी परिवारिक छलीह। ओइ समय मे नउआं मे पढ़इत केतकीकऽ विवाहि घरकथासपंचकोसिये मे सुभ्यस्त परिवार मेभऽ गेलइ। चौदह बरखक केतकीकऽ घरवाला चौबीस बरखक कमऊआ महिर बाबू छलाह। कमऊआ बर मे कनि अगिुर नहि- तहिया ईएह मानि जाइ छलइ। बियसक अन्तर तहिया कथा बारता मे नहि देखल जाइत छलइ। सब ठीक छलइ। केतकी घरबाला संग दिल्ली मे रहअ आइब गेली।

घरबाला पाइ जमाकऽ क रखि रहइत। दिल्ली मे एकटा मकानि सेहो कि लिाह। मिहिर बाबूकऽ कि ि गंभीर बीमारी छलइि।ईलाज चलइ छलइि। ई सब गप्प जाबइत केतकी बुझतीह, ताबइत एकराइत मिहिर बाबू सुतले केतकीकऽ छोव कऽ दूर्व यासऽ वि दालऽ लेलाह।दु बरख वि िहकऽ भेल रहइि।

सोलह बरखक ि ऊआं पास केतकी आब की करतीह। सासुर-िहरकऽ सब लोक जमा भेल। ईएह घमरथि। केतकीकऽ की हेतइि। क्ति को वि चार जे आगु पढ़ाि लि जाय,कियो िहर मे रहबाक, कियो बरक आवक्स मे पैघ भेलाह पर छोट ि िकरी, कियो दोसरो व्याह। तरह तरहकऽ गप्प। केतकी मौिभऽ जीि ि ढ़ो रहल छलीह। उि किर सुन्दरता वि ि क्ति त भेलासआरो वि खिइ गेल रहइि। सासुर बाला सब कुमार देबरसवि िहकऽ इच्छा जतेलकइि। केतकी त जेि ि बऊकभऽ गेल छलीह।ओ ि वि हं कहलक्खि आ ि वि । उि किर चुप्पीकऽ सासुर बाला ि वि बुझलकइि आ लगलइि दुख देि ईि।

एही सबहक साक्षी छलाह दीपक। ओ केतकीकऽ दिल्ली ि िला मकानि मे करायेदार छलाह। पढ़ाइकऽ संग ि िकरीकऽ तैयारी करय छलाह। मिहिर बाबूकऽ संबंधी छलाह आ केतकीकऽ गाम मे रहीकऽ पढ़ाइ केि छलाह। बच्चा बाली केतकी, स्कुल ि िली, वि ि क्ति त आ वि धि ि केतकी, अपि स्तीति बचबइ खात्तर संघरषत केतकी- साक्षी छलाह दीपक।

एक दिन केतकी भेलइ, केतकी दीपक संग बाकी जीवन बितबइ लेल तैयार भऽ गेलीह। ओ दीपकक ढीम फलासी मे फंईस गेलीह। असली गप्प छल जे केतकीक सौन्दर्य आ दुल्लीक संपत्तिकऽ लालसा मे दीपक ई चाइल चलने छल। दूनू गोटे चोरा कऽ कोर्ट मे विवाह कऽ लेलइन। किछु दिन बाद भेद खुललइ। पर पंचइती भेल। सासुर पिता अपन मूकदर्शक चाहइ छलाह विधि कऽ जिम्मेदारी सं। किंतु हल्ला गुल्ला भऽ सब शांत भऽ गेल। दुल्ली पिता मकान, व्यवसाय दुरि करबाक नाम पर दीपक, केतकीसँ बेचबा देलकइन। केतकीकऽ एहन दीपकक स्वभाव छलइन जे बुझबइन किछु, ऊयाह दुश्मन बुझाइन। लोक सब सेहो छोअइ देलकइन। जाबइत मकान पाइ छलइन, खुब छहर- महर करय गेलाह। किछु बरखक बाद जखइन पाइ खतम भेलइन, तखइन दीपककऽ असली रूप सामने अयलइन। अही बीच केतकी एक टा बेटाकऽ माय भऽ गेल छलीह। उचित-अनुचित बुझ लागल छलीह। बात बात पर दीपकक तान आ किछु बजलाह पर माइर पिटाई सेहो सहअ पड़इ छलइन।

केतकीकऽ आगु जीवन मे अन्हार बुझाय लगलइन। कयेक बेर जहर माहुर खयबाक मोन करयन। फेर बच्चाकऽ देखकऽ विचार बदइल लइथ। समय बितेबा लेल किछु पेन्टिंग करय छलीह। एक दिन एक टा पाहुन घर अयलखिन। ओ कलापेमी छलाह। केतकीकऽ पेन्टिंग देखकऽ कहलखिन जे ई त विशुद्ध मिथिला पेन्टिंग अइछ। केतकीकऽ घरक हालात कहरोसऽ बुझायल रहिन छलइ। पिता सब सेहो दोसर बियाहकऽ बाद संबंध तोअइ लेने रहइन। सासुर मे सेहो कियो व्यवस्थित नहि। पेन्टिंगकऽ बदला मे किछु टकाकऽ पसन्द अयलइन। आन्हरकऽ की

चाही, दु टा आंख। केतकी मोि लगाकऽ पेन्टंग बिबऽ लगलीह। अहीसदु टा टका अबइि, जईसघरक चुि ा जरइि। कहूि क्दि कातबइ छलीह जे िि कीरबा पईघ होइत त क्दि घुरत। दीपकक हाल आरो खराब। िि ाकऽ क परल रहि ाई आ क्यल्लोि ाई आ स्त्री पर हाथ उठेि ाई-ईएह रही गेल छलइि।

केतकी बेटाकऽ पढ़बकऽ पाछु पागल भेल छलीह। बेटाक संगत ठीक िवि भेलइि। दसि ी मे पढ़इत छलइि, तखि िि ाकऽ क घर घुरलइि। ओही क्दि पहल बेर केतकी बेटाकऽ ई र प देखलीह। पढ़ाइ मे सेहो साढ़े बाइस छलइि। आब कोि उम्मेद आ केकरा पर। पहि सायकऽ लातजुता तर आब उपरसबेटो तेहि। जीिि ढो रहल छथ आइयो। किि ी पूरि जन्मकऽ पापक फल छइि, आर की। केतकी कथा-व्यथे-व्यथा।

उठऊआ कायाह (लघुकथा)

आइ कतेक बरखक बाद ि भिसिऽ भेट भेल। ओ अपा बेटीकऽ दल्ली वि श्वविदालय मे िमि लखबऽ आयल छलाह। हमरा बारे मे पता सब कछु छलइ ि। ताहे लेल सोचलाह जे बेटीकऽ परचय सेहो करा देताह आ भेट गाठ से होभऽ जाइत। राजा देब कखि कोि जर रत प़ तइ त लग मे अपि लोक कतऽ चईलो जाइत। परि र िला सरकारी डेरा छल हमर। लोगक अबरजात छल।पहुंचि ाई सेहो आसाि छल। पहि फोिकऽ क छुटीकऽ दि आयल छलाह। बहुत तरहक गप्प ि प्प भेल। पुराि पुराि लोकक चचष भेल। अतबा बुझबा मे आइब गेल जे बेटी विदुरी छलइि। ओतबे सुनर आ ठाय पर ठाय िली हाजरजबाब। मजाक मे िभिकिऽ सेहो िवि छो़ इि ओ। अपि कहलक हम उठऊआ पोडक्ट छी। भइ दि कोि बीत गेलइ, से पते िवि चलल। कछुये घंटा मे ओ अपि उपस्थि जता देलक। ठहका पर ठहका। साझ मे ओ दुि गोटे अपि होटल घुरी गेलाह।

तीस बरखक पुराि सब गप मोि प़ ी गेल।िभि हमर संबंधी कतऽ रहइकऽ कालेजक पढ़ाइ करय छलाह। बदला मे घरबइयाकऽ धीया पुताकऽ पढ़बइ छलाह। मािे बच्चा सबहक सरजी। बीएससी ओतइसऽ केलाह। ओि एमएससी मे युवििसरी मे होस्टल भेट गेल रहइि, मुदा घरबइयाकऽ आगह पर ओतइ रही गेलाह। परि रिकऽ समागभऽ गेल छलाह। हमर संगतुरया छलाह।

समय उकिे संग बतय। भलमा्रि पक्ारिकऽ छलाह। वारहथक बेटा छलाह। पाइक कमिकि घर मे देखि छलाह। ई सरजी िला मौका जखि भेटलइि, बािि सोचि हामी भरी लेि छलाह।

एक दि्िदकऽ समय मे बेर पहर जखइि युर्विसिटीसऽ घु इ छलाह। कछु लोक जबरदस्ती मोटरसाइकल पर बइसा कलऽ गेलइि। ओ लंगा गाम छल। दि मे कतउ आर रखलकइि। राइत भेलाह पर जबरदस्ती बयाह कराअ देलखइि। हामी भरऽ मे कछु िि्कुिर केलाह त मारबो केि रहइि। थो ड़क काल मे हल्ला भेल। बािि मोबाइलोकऽ खबर चार कात पसइ गेल। गाम मे माय पेटकुवि या लाईध देलकि। कछु गामक िितुरया सब जमा भेल आ िभिकिऽ सासुर गाम गेल। ओतऽ आंगि मे लाल धोती पहरि आ ह इद ठोप लागल गुम्म िभि भेटलखि। िभिकिऽ फेर मोटरसाइकल पर बइसालि गेलइि आ उकिर गाम घुराकऽ ल जायल गेल।सबकऽ उम्मेद छलइि जे माइ पीट कछुओभऽ सकइत छइ। लेकि कोिि वरोध िवि। िभि अपि गाम मे आइब गेल छलाह। आब लंगा गामक अवाला डेग पर सबहक िजर छल। िभिकिऽ ्िकाकऽ कतउ कतउ राखल जाइि

युर्विसिटीकऽ पढ़ाइ से हो छुटी रहल छलइि। कछु लोक थाि पुलिसक लग सेहो गेल। कतउ समाधाि िवि। बजकिा कतऽ रहइ छलाह, ओहो लंगा गामक दुआरे तटस्थभऽ गेल छलाह।

करीब महीि बीतऽ लगलइ। आब ्िर भेल समझौताकऽ

ाता। अक्ह बीच दु ि पक कोटषमे ाक्लि केलक। ल की सुनर छलइि, वधिाकिऽ बेटी छल। ाँहिर सासुर कक्यो कथा लेल ्याि िव देलकइ। तखइि अइ उठऊआकऽ िरर मे गेल। पाइ कऊरी सेहो छलइ। बाद मे ाभिकिऽ पुरा दाि दहेज सेहो देल गेल। समझौता भेल। ल कीकऽ भाग देक्खयउ। ओही साल ाभिकिऽ बैक मे ाकिरी सेहोभऽ गेलइि। कक्छु क्द ि बाद सब सामान्यभऽ गेल। उठऊआ कायाहकऽ अहि सुखात होइत, कक्यो सोचबो िव कयि छलाह। ाभिकि कवयिा सेहो व्यहिारसऽ सब सासुर ािलाकऽ मोि जीत लेलक। सबहक मुंह मे एके बात- अइ मे ल कीकऽ कोि दोख।

अक्हाि होअइत छलइ। कक्यो काससाि करत अजुका ाबिका पीढ़ी।

ब़ का घरक बहुकरया (लघुकथा)

आइ फेर रामबाबूकऽ तुलसी पी ा लगसऽ उठाकऽ घर मे घुराकऽ राखल गेलइक्ह।भइ गामक लोक उकिा जा कऽ देख अयलइि। क्कयो गोर लाइग अयलइि त क्कयो थो`क काल ओतऽ बइसकऽ आइब गेल। देखविहार सभकऽ चाह- पाि सेहो उकिा कतऽ भेट जाइ छइि। ताक्हक लोभे सेहो क्कछु लोक वियक्मत चइल जाइत अइछ।ओिा रामबाबू आ उकिर घरक लोकक बेबहार एहि छलइि जे भइ गाम मे लोक याद करइत छइि। क्काि कििा लोभ लालच के, जे भी याद केलकइि, कम-बेिी मदद केलक्खि। ओही परतापे, सब धीया पुता सुख मे छलइि। लोक कहइि जे फलमा आयल छक्थ- आहाकऽ देखइ लेल। बडड दुर सं। रामबाबू उकिा क्दस ताईक लेक्थि। क्ककिो देखकऽ मुक्स्कयाईयो दइ छलक्खि। ओ अपिाकऽ भागमंत बुझइत जे हमरा देखकऽ मुक्स्कयेलाह।फेर चचा होइ जे फला फलाकऽ देखकऽ खुिी भेलइि। बजई क्कछु िवि छलक्खि। मुदा बुझाई जे क्ककिो ताईक रहल छइि उकिर आंईख। आइ फेर तुलसी पी ा लगसजखइि घुरािल गेलइि त सब कहऽ लगलइ जे क्ककिो देखइ लेल क्हकिर पार अटकल छइि। आइ त गऊदाि सेहो करा देल गेलऽ इि हाई हाई मे।

रामबाबूकऽ कवििया सब बुझई छलीह जे रामबाबू क्ककिा जािसबेिी चाहइ छक्थि।उकिर आंईख क्ककिा ताईक रहल छइि। ओ आर क्कयो िवि उकिर ब़ की बेटी चाि दाई छक्थ। दस बरख रामबाबूकऽ क्काबाहक बाद चािदाई पक्हल संतािि जन्म लेलक्खि। रामबाबूकऽ माय कतबो कहक्थि जे दोसर क्कयाहकऽ लइ लेल मुदा रामबाबू

मिकऽ देलक्खि। चािदाईकऽ बाद पाच टा आर संतािि भेलइि मुदा अंक्खदेखउआ दुलार चाि दाई रहलीह। सोलह बरखक जखइि चािदाई भेलीह त तखुिका ब़ का घर मे कथालऽ क रामबाबू अपि बहिाई संग गेलाह। ओत िरागत जे सब कहलक्खि, रामबाबू सब ितषएके बेर मे माइि लेलक्खन्ह। घुरती मे बहिाई कहबो केलक्खन्ह जे आहा सब क्कयैक गइछ लेक्लयई। रामबाबूकऽ रबाब छलइि जे आइ कािव बाजारिद छइ।जखइि बाजार जाइ आ किििि सामािििक लाइग जाय त ओकर मोल भाि िवि करीह। घुइ्ा कऽ िििदोईस सब बात सरहोइजकऽ कहलक्खि। आब उपाय की। रामबाबू जमीि बेचकऽ क्कबाह केलाह।सब कहइि जे अतेक क्कयो िवि देि छल बेटी के।

क्कबाहक बाद चािदाईकऽ क्कदागरी मे सब बेर संििय। पक्कल बेर रामबाबू अपि गेल छलाह क्कदागरी लेल। क्कदागरी त िविये भेलइि, बेटीसऽ भेट सेहो िवि भेलइि। गाम घुरीकऽ झुटे चािदाईकऽ मायकऽ कहलक्कि जे सासकऽ मोि खराब छलइि ताय िही अयलीह।फेर कक्कयो रामबाबू चाि दाईकऽ सासुर िवि गेलाह। बाक्क पाच धीयापुताकऽ क्कयाह दाि मे सेहो चािदाई कििक काल लेल अयलीह। ब़ का घर ब़ का क्यिहार।िहरबालाससीधा भेटगाठक परम्परा िवि। चाि दाई कक्कयो सासुरकऽ किििि विकाइत िवि केलीह।ओही दुवििया मे ओझरायल छलीह। िहर आबस त बाक्क भाइ बक्किकिऽ सासुर बालाकऽ बेबहार देखकऽ सेहन्ता होअइि क्क उिको सासुरक लोक अहि आबेििि होअइतइि। उिकर क्कदागरी लेल क्कयो िहरसऽ आबइ लेल तैयार िवि। क्कि क्कदागरीकऽ पठबऽ कऽ परम्परा िवि। अइ बीच मे झुलइत चाि दाई। एक बेर मोि हल्लुक करक लेल मायकऽ कहबो केलक्खि जे

बराबरी िला कथा िक। धि सम्मक्त सब कछु िव । माय बुझ्झ गेलक्खि। आब उपाय की। जखि चाि दाई रामबाबूकऽ सोझा जाइ छलीह। दु चाइर टा िर दु िगोटाकऽ आंक्खसऽ टपईके जाइि। व ि ि ब्द सब। गाम समाज मे एकतरफ लोक कहइ जे बेटीकऽ कब्राहक मे रामबाबूसऽ बेि कयो खचर्षवि कयलक। दोसर हु ि कर मोि कहइि जे ब्ऱ का मे संबंधकऽ क िक िय केलाह। सब बेर सोचइत जे चाि दाईसऽ माफी मागब। मुदा सामि अबइि त र बाि मौ िभऽ जाइि।चाि दाई पढ़अ चाहइ छलीह तक्कया। सोलहम बरख तक्कया बड बुझाय। आइ छब्बीसम सेहो कम। अकर बाद क ि ि बेटीकऽ ओ ब्ऱ का घरक बहुक्सया िव बि ऽ देलक्खि। बहुक्सया आ मलकाइि मे अंतर सबके बुझबक्ति। बहुक्सया मे सास ससुरकऽ राजबाला...बर- घर आ मलकाइि मे लायक घरबाला।

सब धीया- पुता, भाइ, बक्कि, भाक्तज भतीजी, सखा - संबंधी िकर चाकर, गंउआ सब आइबकऽ देख गेलइि मुदा चाि दाई अखि िव अयलीह। माय चोरऊका संि ि द कयेक बेर पठा देलक्खि कक आइबकऽ देख क्लयउि। चाि दाई कतसऽ खबास फलक मोटरीलऽ क आइब गेल, ओ िव अयलीह। कहलकइ जे बहुक्सया पठेलीह अइछ। आब मायकऽ से हो बुझाय लगलइि जे रामबाबूकऽ पार क्वाि बहुक्सयाकऽ देखि छुइट जेतइि।ऊयाह भेलइ राइत मे बहुक्सयाकऽ इंतजार मे रामबाबू गोकुल धाम चइल गेलाह।

दरबार (लघुकथा)

दरबार सुनिते राजा-महाराजा, बड़का जमीदार, मंत्री, अफसर ईएह सब याद अबइ छइ। दरबारी ओहदा होइ छलइ। किरित सब ओइ सब मे होइ छलाह। महाराजाक दरबारी छोटका राजा सब, राजा सबहक जमीदार, जमीदार सबहक बारहथ- मजुर। अहीना बड़का लाला- व्यपारी सबहक फुटकर दोकानदार,दोकानदारक मुनीम अखनो कम चलइत छइ। दरबारीसऽ दरबारक मान होइ छलइ।कतउ कतउ रानी महरानी सबहक सेहो अप्पन अप्पन दरबारी छलइन। कोनो कोनो खबास सेहो चहटगर चचक्क नियक रहइ छल।बेनीतर अइ तरहक दरबार निला सबहक आंगन मे परपुर खकऽ गेनाई मे रोके जका छलइ।जे घुसऽ मे सफल उनका बड़का दरबारीकऽ तमगा। जतेक मुंह ततेक गप्प आहाकऽ सुनऽ कऽ भेटत।मोटा मोटी धन जर री दरबारक लेल। आइ काल्हि लोक व्यंग्य मे दरबार निला कहइ छइ। दरबारी कहबान लेल त कोनो तइयार नहि। ओना हा मे हा मिलबऽ बाला लोकक कमी नहि।दरबार मतलब त सीधा भगवान भगवतीकऽ दरबार, मनुक्खक कतउसऽ नहि। आब जई दरबारक बात हमकऽ रहल छी से सबसं भिन्न अइछ। रामबाबू पहिने अंगेज सरकार बाद मे बिहार सरकार मे छोट-छिन मुलाजिम छलाह। समयक अंदाजा लाइग गेल होइत। कनियाकऽ मृत्युभऽ गेल छलइन।असगरे रहइ छलाह। ओना ओइ समय मे अंगेज अधिकारीकऽ छोड़ कऽ कम्मे सरकारी लोक पक्का नि संग रखइ छल।. इब कहिकऽ रामबाबूकऽ दरबार लगइ छलइन। बेर पहर होइत होइत दरी जाजिम सब बिछ जाइ।लोक अयनाई शुरु भऽ जाइ। रामबाबूकऽ अप्पन अलग आसन रहइन। रतआ दरबारी सबहक अलग। दरबारक काज बिलखल पढ़ल अपन संविधान

रहइ। मोटका रजिस्टर रहइ।ओइ मे िम लिखाई। किछु पाइ दकऽ आहा दरबारकऽ सदस्य बइि सकइ छी। गैर सदस्य सबकऽ बइसऽ कऽ अलग बेबसथा- कात मे। सदस्यसरत बि लेल पारदि पक्रिया छल। रतकऽ बइसबाक अलग बेबसथा। जे व्यिक्त अऊताह ि ढोल-संगीतक जाकिार ि विशत सहयोग राि, से सब रत दरबारी। लोक गिम दरबारी कहाबइ छल। सब सदस्यकऽ गोलिया, फल आ लड्डू पसादी मे देल जाइ छलइ। महिला सदस्य सब सेहो होइ छलीह। आिखर ओइ दरबार मे की छलइ जे लोक अबइ छल। ओइ मे ढोल मृदंगकऽ संग विगुण आ विदेिया गायल जाइत छल।रामबाबूकऽ एहि पभाि आिज छलइि जे जखइि ओ विदेिया गबइ छलाह त लोक तक्रते सुिते रही जाइ । भाग-गाजाक बेबसथा सेहो रहइ छल। ओतबा काल सब दोसरे दुिया मे रहइ छल। अंगेज अिधकारी सब सेहो उत्सुकता ि अबइ छल। रामबाबू जई िहर मे बदलीभऽ क जाइत छलाह- ई दरबार अििरत चलइत छल। ओ दरबारीकऽ अलाि क्रिको कतऽ अन जल गहर िि करय छलाह। हुिक संबंधी आ अिधकारी सब सेहो हुिक भाििकऽ सम्माि करइत दरबारक सदस्य पिह बिि छल तखि आबऽ कऽ आगह करयि। रामबाबू सेहो अपि दरबारी सबकऽ पुरा ख्याल रखइ छलाह। भाइ भतीजासबेि दरबारी सबहक माि दइ छलिखि।आब िि ओ दरबार आ िि ओ दरबारी।एक सामान्य लोक अतेक िसदातकऽ संग िजिगी जी लेलक। कियो कहलकइ जे एहि दरबार चलबऽ बाला लोक जन्म लइ छइ, बइि िि सकइ छी। की अहुं सब अइ तरहक किि दरबारकऽ बारे मे सुिि छी? िजजासा। सामािजक व्यिस्था मे कतेक बदलािभऽ गेल।

समयक चक (लघुकथा)

आइ फेर ब़ का बखेरा भेल रहइ। भइ गामक लोक रामबाबू कतऽ जमा भेल रहइि। बेिी त मजा लेबऽ खाक्तर आयल छल।कऽ कहइ छइ जे गाम खालीभऽ गेल छइ। कतऽ सऽ अतेक लोक आइब गेल। बाहमर भोजि मे लोक िित क्तजोह देलो पर विि आबइत अइछ।मुदा अखइि देखू। सब क्ति बजेि आइब गेलाह।कऽ मऊगीकऽ पुर ख। मुरी वाििित रहु। उत्तर िरी टोलसऽ सबसं बेिी लोक आयल।कयैक विि आइत। ओतइ सटले रामबाबूकऽ ब़ का आमक गाछी छलइि।जई मे पक्हि लोक वििति होइ लेल ओइ टोलक लोक जाइत छल।सटले ईिरि सेहो रहइि।ओतुके लोक ओकर उपयोग करय छलाह।कहबी ईहो छल जे अइ ईिरिक पाइि मे दाइल िीक सीझई छइ। बस आब की दोसरो टोलक लोक पाइिलिऽ जाय। पक्हि हत्था आर बाद मे लोहाकऽ काटसऽ पुरा घेरा देल गेलइ।रखबार सेहो रखा गेलइ। भारी आफत उमहरका लोक के। धि कक्ह सरकारकऽ जे आब सब घर मे ई सब बेबसथा छइ।

रामबाबूकऽ बाप फूलबाबूकऽ सबसं बेिी जमीि अइ परोपाटा मे छलइि।संगही कागेसी िता सेहो छलाह। अजुका िता जेका विि। अपिा घरक आंटा वाल्लाकऽ क राजिीक्त करय छलाह। कक्हयो विि क्टकट मंगलक्ति, विि पाटी अपि देलकईि, आ विि चुिाि ल़ लाह। धि भेलासअिरो चेहरो रौबदार लागऽ लगइ छइ। फूलबाबूकऽ क्जिगी िाि मे क्तातइ छलइि। रामबाबू विदािथी िीक वियो रहलाकऽ बादो बापक बदौलत क्जलक्ट मे बक्ऱया रहलाह।

िहरक कालेज मे पोफेसरी सेहो भेट गलइि, कयैक त फूलबाबू कालेजक कमटी मे छलाह। अतेक तक त सब ठीक।

इमहर रामबाबूकऽ िहर मे िकरी लगलइि आ उमहर हुिक माय मामुली जर बोखार मे परलोक चइल गेलखि। ओइ समय फूलबाबू पाटीकऽ अधि ि मे छलाह। खबर भेलइि। तखि अयलाह।फेर कयाकमष भेलइि।ताबइत बफक कसल्ली मे देहकऽ राखल गेल रहइि। पहल बेर लोक एि मृत देहकऽ कसल्ली मे राखल देखि छल। शाद मे चौगामा आ पचमेर भेलइ।

आब फूलबाबू असगरभऽ गेलाह।ओतेक संपइत।ओइ समय मे दुटा तीि टा कयाह लोक करइत छल। फुल बाबू पहि त कयाहकऽ लेल तैयार िह होइ छलाह मुदा बाद मे सकतदऽ देलखि। िक कुल िलकऽ कथा देख कऽ भलमािर कह ि गरीब कह, दोसर कयाह भेलइि। अइ कयाह मे कन्या पक्क बाकी कजमेदारी फूलबाबू गछलखि आ ता जीि ि भेलकि। रामबाबू भीतकरया बापक दोसर कयाहक कखलाफ छलाह।होबाके चाही मुदा कछु बजलाह िह। बेिी अपि िहरे िला घर मे रहइथ।इिको कयाह दाि भेल आ पकरिर संगे रखलाह।

फूलबाबूकऽ दोसर कयाहसऽ तीि टा बेटा भेलइि। जखइि बच्चा सब छोटे रहइि त बीमारी आ उमदराज फूलबाबू सिगिसीभऽ

गेलाह। अखइि तक जे रामबाबू ाित आ िहर मे रहइ छलाह, दादािकऽ पराते बापक पाइ कौरीकऽ हिसाब सतमायसऽ मागह लगलाह। गामक लोक कतबो कहलकइि जे माछ माऊस बाकिये छइ। थम्ही जाऊ। लेकिि उकिर माथ पर त अतेक कि हिसाब हाीि छलइि। सबसं पहि मोटरक चाभी लेलाह। फेर भरार घरक। ओकर बाद जतेक लगुआ भगुआ संबंधी सब रहथि, सबके जयबाक आदेि। मालिक बविते एहि आन्हरभऽ गेल छलाह जे सतमायक मायकऽ सेहो जायक लेल कहि देलखि। मििजर, मास्टर,, मुहरिष सबके हटा देलखि।उतरािरी टोल िाला गाछी मे लोहाक जाली आ ईििर पर मििही अखि भेल। पुरा हििली फूलबाबूकऽ जाइते सुन सपाटभऽ गेल। ब्र का घरक बात छल। सब चुप्पे रहल तकिया।कऽ इिकासऽ कागार लेत।

समयक चक देखू। रामबाबूकऽ कवियाे सेहो ईएह अिस्थिा मे मइ गेलखि। दु टा बेटी छलइि। दुि सासुर बसई छलइि। समय अजुका बदइल गेल छलइ। कतबो बेटी- जमाय सब मिा केलकइि। रामबाबू दोसर कियाहकऽ लेलाह। समझौता ई भेलइि जे पाइ आ पेिि िबिकी कवियाे आ समपइत बेटी सबकऽ द देल जेतइ। अहिा सब चइल रहल छलइ। आइ चाइर कि मुइला िवि भेलइि रामबाबू के, सतमाय आ बेटी सब मे पहि बाता- बाती, फेर गारा - गरौिल, फेर झोटा- झोटऊल भेल। रबािि धविकि कािधािकऽ बडड िभिक्षंतकभऽ जाइत छइ। दुि पक एक पर एकाले। बाद मे थााि-पुलिसकऽ कियो फोिकऽ देलकइ। मक्हला पुलिस सेहो आयल छलइ। ओकरो सामि मे मारा - पीटी

भेल। सबके पकड़ि कऽ पुक्लसलऽ गेलइि। आब कोिा क्कया कमषहेतइि रामबाबू के। उएह बड़मातर भाइकऽ बेटा कमषकरतइि-ईएह पंचइती मे वि रिष्ठ भेल। तक्कहया रामबाबूकऽ सत्ताय सब ज्यो सब िही रखि रक्कहतइत त अक्कहिा वांजि होइतइि।सब जगह अकरे चचा। समयक चक्र छइ। ऊपरिला सबटाह क्कसाब बरोबर करय छइ।

बदलल बेबहार (लघुकथा)

आइ कतेक बरखक बाद रामबाबू दरभंगा एकटा बियाह मे आयल छलाह। संजोगसँ कन्यागत आ वरागत दुनू हुनकर अपेक्षित छलखिन। सोचलाह अइ बहाने कर्विक मोन बदलत आ लोक जे कहइत अइछ जे काज मे वित्र अबइ छी से दोरो कमटा जाइत। दरभंगा आइबकऽ सीधा कन्यागत कतऽ गेलाह। कन्यागत एकटा ब्र का घर आ सटले विवाहि भवि बुक केनि छलाह। रामबाबूकऽ देखते घरबइयाकऽ बडड खुशी भेलइन। आदरक संग अप्पन पाहुन परख सबसपरिचय पाक्त करेलखिन। कनीक काल रामबाबूकऽ पभानी व्यक्तित कलऽ क गंभीरता रहल। फेर विधोख बहस चलऽ लागल। ओइ मे कछु लोक राज स्कुलकऽ कादयारथी सेहो रहल छलाह। फेर की संस्कृतक विकक पंडीजी सलऽ क हेडमास्टरकऽ रौब रुतबा, खेलक मैदानकिऽ सफाई आ फस्ट बर्डीजन शिलाकऽ लोहा शिला जालीकऽ अंदर बोडषमे शिम क्लखायलकऽ चचा। खुब भरी छाक पुरनिका गप्प सब भेल।

कबाह दान संपन भेल। खुब उत्साहक संग दुनू पक कजम्मेदारी विभेलाह। पक्हल बेर रामबाबूकऽ अफसोस भेलइन क कयैक ओ दुनू बेटीकऽ क्दल्लीसबियाह केलाह। ठीक मन्रिथ, बाध बाध देखकऽ अपसिऽ तुलना करऽ लगलाह। सब बेबसथा आ सुविधा अतऽ छइ। बेटाक बियाह अतइसऽ करब से मोनि मोनि विरेषा केलाह। बियाहकऽ पराते घुरबाक क्टकट छलइन।

होइ छलइि जे कछु कि आर रही। दल्ली घुरबाक लेल भारी मोिसऽ कादा भेलाह। घरबइया अपि स्टेिि आयल छलाह छो ई लेल।

फस्ट क्लास मे टकट छलइि। समयसऽ आइबकऽ सीट पर बइस गेलाह।दोसर सीट एकटा बक्चयाकऽ छलइ। ओकर माय बाप ओकरा विदा करऽ आयल छल। ओकर सबहक गपसई पता चइल गेलइि जे ई सुन्दर युिती सिषातीय छइि आ इन्जीविंयरंगकऽ क आइ टी कम्पिी मे काजकऽ रहल अइछ। असगरे दल्ली जा रहल अइछ। ओ ल की आधुिकता आ पारंपरकता दु िक अदुत मेल बुझेलइि। अतेक ओ परिरकऽ लोक सबहक लेल सोचई छइथ, सुइ किऽ रामबाबू भीतरे भीतरे उत्साहतभऽ रहल छलाह। उिका अपि जतरा सफल बुझायल लगलइि। ओ ओइ ल कीकऽ अपि पुतोहु बिबाक लेल सोचऽ लगलाह। रेि से हो वर्विडुलभऽ गेल छलइ। ल कीकऽ माता रामबाबूकऽ परचत कतऽ कथालऽ क गेल छलाह। रामबाबूकऽ परचय जाइ किऽ ओइ ल कीकऽ माता फोि कि देब लेब से हो कयलाह। रामबाबू ई सबकऽ संयोग बुझई छलाह।

रेि कि ीक काल मे खुजल। ओइ ल कीकऽ आंईख मे िर भरल। माय बाप से हो कि वि छलाह। रामबाबू सेहो देखकऽ रवितभऽ गेल छलाह। जखि रेि फ्लेटफामसऽ बाहर भेल, ओ ल की चटसऽ िर पोछलक। आइबो ठीक केलक। फोि

उठेलक। ितालाप सुि।

अरे कइसे फोि उठाती। मा पापा यही थे।

रेि तो कब का खुल चुका।

रेि क्रिडिल हो गया था।

मैसेज कर देती।

िवि मौका मिला।

मैंि चालीस कौल कक्रअए।

साइलेट पर था।

अब सबका फाइि देिा पड़ेगा।

आ ही रही हुं। ले लेिा।

सुद सक्हत लुंगा।

हा-हा ठीक है।

कोई और बैठा है।

कोई िही।

....

भइ राइत गपक पिाहि चक्लते रहल। िब्दक मयादाकऽ सीमा त कखिि लंघा गेल छल। फस्ट क्लासक कुप छल। दुईये गोटे ओइ

मे। रामबाबू कंबल ओइढ़कऽ सुतऽ कऽ ढोग केँ रहइत। पहिल बेर अपन असेसमेट उल्टा लगलइन। अपनाकिऽ कवलतीकऽ बडड दाबा छलइन। जे ल कीकऽ ओ आदर्षबुइझकऽ पुतहु बनिऽ कऽ सोचई छलाह ओकर असलियत सामने छलइन। पुरा जतरा आब बोझ बुझाय लगलइन।बरका धोखा खायसओ बचलाह। ओकर मायबाप जे कथालऽ क घुईम रहल छइथ ओ कतेक धोखा मे छइथ।बेबहार कतेक बदइल गेल। लाज अइछ त कंबलसऽ मुंह झाइप लयअ।

अघिोल (लघुकथा)

आइ फेर भोरेसऽ गाम मे फुसफुसी चइल रहल अइछ।कयो ककरो सीधा किछु नहि कहि रहल छइ। पुछला पर कहत की कि कोनो बात। मुदा सब व्यस्त। किछु सिसाइभऽ गेल।स्त्रीगर सब कानि फला बाबूकऽ घरक दुमुंहा लग त कखनो महाबीर मंदिर मे साझ देबाक काल एकदोसरासऽ पुछइ छथि। सब वरितर। सबहक कानि ठार। ऐना बुझाई छलइ जेना चुनाि किऽ वातीभऽ रहल छइ।कऽ जतत आकऽ हारल। कनिकर सरकार बनि- तेहि जजासा। जेना चुनाि मे पोलिंग एजेट आ किछु पाइ पर काज करऽ बाला लोककऽ छोव कऽ कयो नहि कहत कि कनिका तरफसऽ आहा छी, ओहिना आइ कयो अपन विचार नहि दऽ रहल छल कि ओ कोनि दस।सबाले एहि छलइ। पहिल बेर एहि गप्प सामन आयल छलइ। गाम त गाम छी। अपना घर मे किछु हुआय मुदा दोसरक घर पर सबहक नजिर। सब उत्सुकता सँ आ सब जानय ये। कयो कहइ कि हमर नहिर मे ऐना भेल रहइ त कयो अपन सासुर त कयो अप्पन मातृक त कयो कोनो आर गामक। अइ गामक त पहिल घटना। अघिोल मचल छल। की हेतइ। आखिर एहि कोनि गप्प छअइ जे सब हक ्यानि अही पर।

रामबाबू अइ गामक सबसं कलामी लोक छलाह। हुनिका जीबइत कनिको हिम्मत नहि भेलइ जे हुनिका घरक कोनो रिकऽ स्त्रीगर क कयो चचा करय। समय बदइल गेल छइ। आब कयो ककरो मुंह

पर जाबी लगा सकइ छइ। सब सितंत। आइ रामबाबू रक्हतइथ तखि गप्प ाि तेल लगाकऽ होइबे करतइ। ीक भेलइि,चइल गेलाह।बाजु हुकिर पुतहुकऽ लोक मुदा बिा देि छइि। जक्हया अइ गाम आयल छलीह ओ कतेक माि- दाि भेल छलइि। सुनविर त ओक्हिा छलीह, पढ़लो क्लखल सेहो। सब गामक लोक चाहइ छलाय क्क कक्हयो ओ उकिो कतऽ आबस। कम्मे क्दकि लेल गाम अबय छलीह।अप्पि मोटर मे। तक्हया गाम मे ककरो मोटर िवि छल। क्कयो क्कयो िबका धविक भाडा परलऽ क अबइ छलाह।कहबाक जे अलगे उकिर अंदाज छलइि।

रामबाबूकऽ बेटा राजा बाबू असम मे चाहक गाडि़ मे मैिजर छलाह। ओतइ ओ रहइ छलीह। ओतेक सुनर रहलाक बादो घरािला उकिा पर विैर ्याि िवि दइ छेलक्खि। ई बात रामबाबूकऽ बुझल छलइि। ताक्ह लेल देखकऽ पुतोहू चुिलाह क्क बाद मे सब ठीकभऽ जेतइ। लेक्किि से िवि भेलइ। तखिा संग रहलाहसएक टा बेटी भेलइि।ओकरा राजा बाबू बड मािवि छलाह। घरक माहौल अिुकूल िवि रहबाक कारने बेटीकऽ क्हमाचल मे बोक्डंग स्कूल मे पढबइ छलाह। झापल तोपल सब चइल रहल छलइि। इमहर रामबाबूकऽ परलोक क्सधारभऽ गेला पर मायकऽ सेािकऽ िाम पर कवियाकऽ पठा देलक्खि। कविया जक्हिा देिि तक्हि परदेिि, अपि हालत बुक्झते छलीह। गामे आइबकऽ रहअ लगलीह। इमहर राजा बाबूकऽ आजादी भेट गेलइि। जे क्कछु चोरा छुपाकऽ करय छलाह, आब खुल्ला करऽ लगलाह। बातकऽ पसरह मे कतउ समय लगइ छइ। कंपिीकऽ माक्लक िक्टस थमा देलकइि।

िकरी छुइट गेलइि। गाम घुइ अयलाह। कछु दिकिऽ बाद मोि उचटअ लगलइि। बहिाईई गुजरात मे अधिकारी छलखिि। ओत गेलाह। सब ठीक छलइि। बि िकरीकऽ सेहो जोगारभऽ गेल छलइि। एक दि राइत मे िराब पीकऽ आयल छलाह। बहिाईकऽ ई ठीक िि लगइ छलइि। ओ इकिर बहिकिऽ कछु िहर पर कटाक केलखिि। बहि ई सब खीस राजाबाबू पर उताइ देलखिि। राजा बाबू बहुत दुखी भेलाह। राइत मे सबकऽ सुतले छोअइ कऽ चइल गेलाह। भोर भेलाह पर सब बुझलकइ। बहुत खोजबीि भेल। पुलिस मे सेहो रपोटषभेल। अखबार, टीबी मे सेहो फोटो छपाािल गेल। मूदा सब फेल। उम्मेद सबकऽ छलइ जे राजाबाबू बेटीकऽ जन्मदि पर फोि करथि, ओहो बीत गेल। कतउसऽ कोिा समाचार िि।

आइ बारह बरखभऽ गेल राजाबाबूकऽ विपता भेलाह। आब जे काािफूसीभऽ रहल छइ से उकिे शादकऽ बारे मे। लोककऽ उकिर कवियाकऽ पहिरल ओढल आ सधाि िाला खाि खायि पइच िि रहल छइ। राजा बाबूकऽ कविया त असगर जीिकि पहिहेसऽ आदी छइथ, से त सबके िि बुझअ देलखिि। आब अघिोल मचल छइ गाम मे जे की हेतइ। की भइ जीिि राजाबाबूकऽ कविया सधाि रहताह या विधाि।अकरे कहइ छइ फुसयेकऽ घमथिि। मुदा अघिोल त मचले छइ।

देहक ि ह (लघुकथा)

बीरछाकऽ बेटी एकटा म िसाकऽ घर मे बइसा देलकइ।

ओकरा त बयाह भेल छइ।

त घर िला कतऽ छइ।

छोव देलकइ।

के छोरलकइ।

आर के। बीरछाकऽ बेटी ।

लोक सब कछु कहलकइ िव ।

कअए ि कहलकइ। सब कहलकइ।

मुदा ओकर माये कहलकइ जे ई देहक ि ह छइ। आइ मे कयो कछु िव िकऽ सकइ छइ। ओकरा जे ि मो ि करऽ दयउ। खु ि रहअ दयउ।

आब ककरा फुरसत छइ। लोक जमा त भेल छल मुदा ओकर मायक गप्प सु िबाकऽ बाद सब चइल गेल। तरका मुस्की सब मा इ छलाय। ि िभुटका सबकऽ त बरका म िरिंज िभऽ गेल छइ। सब ओते मंडराई रहल छइ।

बीरछा अपना समाज मे मानल लोक छल। आ सब जेका ओ दस दुआरी नह छल। ओ एके घर पकड़ने रहल। ओ कयेक तरहक काजक ऽ लइ छल। मजुर आ खबास दुनु बाला काजक ऽ लइ छलाय। मालकक भाग आ मलकाईनीक ऽ माला दुनु पीसइ छलाय। घरामी, राजमस्त्री, भानस भात, होलीक ऽ लुकारी, भोज मे पुआरक बाटी सल ऽ क टहल टकोरा तक मे माजल छल। आमक समय मे रखबारी आ जमीनक खरीद बीकीस ऽ सेहो कखनु कखनो भेट जाइ छलइ। कखनु समय त एहनो एलइ जखइन ओ मालकक ऽ कहलकइन जे आहा कत ऽ जे मोटका भात बनि त अइछ से हमरा नहि खायल होइत अइछ। हम सब पतरका चाऊरक भात खाई छी। आब हमरा छोवत नहि हयह। मालक कहलखिन हमहु त उएह भात खाई छी। तोहुं हमरा छोवत देबे। जे बीचार। बीरछा वचारने छल। मालकक ऽ नहि छोरलकइन। भइर जीनगी वभेलकइन। कतउ आर कमाय नहि गेल।अत ऽ तक की ओर रेनो पर नहि चढ़ल।

बीरछाक ऽ एके टा बेटी छलइ। ओ भइर गाम मे सबसं सुनवर छल। बयस होइते बगलेक ऽ गामस ऽ समाद अयलइ। आ ओ बेटीक ऽ बीयाहक ऽ देलक। जमाय ओकर गुजरात मे काज करय छल। बेटी गुजराते रहअ लगलइ। जं कोनो समाद कखनु कहि नहि आबइ त बीरछा परेसानि भ ऽ जाइ छलाय। कोनो कोनो फोन नम्बर पर बुथस ऽ फोन करय। गप्प त कहियो होइ,पाइ सेहो लाइग जाइ। इंतजार मे बीरछा मईरो गेल। कोनो खबर नहि। कतेक बरखक बाद बेटी अयलइ। ओकरा संगे एकटा मनिसा सेहो। पहिने

त ओ मिसाकऽ अपिक्‍अयद कतऽ ठहरेलक। सुतबा लेल। लेकिन राइत कराइत अबरजाइत देखकऽ ओ अपन कतऽ राखऽ सऽ मना कऽ देलकइ। बीरछाकऽ कनिया त बऊकभऽ गेल छल ई सब खेला देख क। इमहर जमाय सेहो एलइ बेटीकऽ ल जाइ लेल। बेटी साफ मना कऽ देलकइ। पर पंचायतीकऽ नौबत आइब गेल छलइ। तखनि बीरछाकऽ कनिया एलइ आ कहलकइ जे ई देहक निहि छइ। जेना रहइ छइ से रहअ दियउ। सब ओकर इशारा बुझ गेल। जमाय वापिस असगरे गुजरात चइल गेल आ ओ मिसाकऽ बीरछाकऽ बेटी घर मे आइबि लेलक रहबाक लेल।

लछमी बहुक्रिया (लघुकथा)

आइ गाम बला सब लछमी बहुक्रियाकऽ याद मे किछु करबाक खातिर बैसार केने अइछ। कियो कहइ की मूर्ति बनि जाय, त कियो छोट छीन स्वास्थ्य केन्द्र, त कियो पढबाक लेल विजीफा, त कियो बेटीकऽ बियाहक लेल बिनु सुदक कर्ज त कियो स्कूल, कियो धर्मशाला आरू आरू। सब कियो अपन विचारकऽ पक मे तर्क दइ छलाह। फैसला नहि भऽ सकल। मूदा ई निश्चित भेल जे किछु न किछु होयबे करत।

आइ गाम समाज मे लछमी बहुक्रियाकऽ याद मे किछु करबाक किअए जरूरत बुझेलइ। बिका लोककऽ त किछु बुझले नहि।कऽ छलीह ओ। उनिको किछु नहि हेतइन जे माय बाप रखनि हेतइन। किनिको नहि बुझल। लछमी बहुक्रिया त सासुरक नहि छइन। निटरक्लास्ट मे सेहो ईएह नहि छइन। खेत खलिहानिकऽ दस्तावेज मे सेहो ईएह नहि। सुनिन कियई की कोनो बिकी चुहुलबाज पुतोहु पुछलकइन की आहाकऽ किछु त नहि होइत। माय बाप हेताह तखनि धरती पर अयलहुं नि। हमरे टा कानि मे कही दियह। हम ककरो नहि कहबइ। लछमी बहुक्रिया कनी काल सोचली, फेर कहलकनि जे ठीके नहि मोनि अइछ। ईएह नहि अइछ।कहीकऽ मुसका देलखिन। कियो सासुर मे अहनि. इच बइस जाइ छइ जे नहि मोन रहइ जाइ। बहुसासि ककरो नहि लेकनि भेल छइ। ओ छलीह लछमी बहुक्रिया।आइ दुनियासऽ एतेक बरख गेलाकऽ बादो

लोक निर्वि क्बसरलइनि अइ।आब त ओहनि लोक बनिाईिये भगानि बंदकऽ देनि छक्थिन।

अतेक त बुझाईये गेल होइत जे लछमी बहुक्ररया अइ गाम मे पुतोह बइनिकऽ आयल रहइत। ई निमि उनिकर ससुर देनि रहक्थिन। उनिका अयलाकऽ बाद ओइ बरख बडड धानि भेल रहइ। लोककऽ राखइ लेल कयेक टा कोठी बनिबऽ परल छलइ। ओइ साल बाईढ मे एहनि माइट आयल छलइ जे अन पाइनिक संग आमो बडड फरल रहइ। जे भी भेल हो निमि परलइनि लक्ष्मी, खुनिहालीकऽ ल क। बाद मे लक्ष्मीसलछमी बहुक्ररयाभऽ गेलीह।कहल जाइ छइ जे कालाजारसउनिकर घरबालाक मृत्यु कम्मे बयस मेभऽ गेल छलइनि। तक्हया अइ बीमारीकऽ इलाज निर्वि छलइ।

लछमी बहुक्ररया वनिसंतानि छलीह लेक्कनि भइ गामकऽ माय जेनिा आबेनि करय छलीह। उनिकर भंसा घरक आइग क्बझाई निर्वि छलइ। तक्हया सलाईकऽ पचलनि निर्वि छल। लोक एक दोसर कतऽ सऽ आइगलऽ जाइ छलाय। लछमी बहुक्ररया कतऽ सऽ लोक सब आइग टुटल खपरा मे सम्हाइ कलऽ जाइ छल। ओइ संगे क्कछु दुख सुख सेहो साझा करय छल। उनिका अपनि मे त कते खचा, लोक सबके कोठी मेसऽ धानि वनिकाइलकऽ दइ छलक्खनि। दइ त छलक्खनि पईचे, मुदा तगेदा कइयो निर्वि। खेनिाई कमसकम पाच लोकक बनिबइ छलक्खनि। जे रहइ छलइ खाय काल, सबके आबेनि ककऽ खुआबइ छलक्खनि। क्बयाह दानि मे सब क्बध

उकिेसऽ पुईछकऽ सब करय। पंक्डत पुरक्हतसऽ क्काबाद भेला पर लछमी बहुक्करयाकऽ कहल मालि जाय। पुरक्हत सब सेहो क्हकिर जाकिऽ आदर करइत छलाह। क्कयो बीमार पइ जाय त घर सलऽ क डागदर आ अस्पताल तक संग दइ छलक्खि। क्ककिो कतऽ कोि करदेिता हुअय, ओ असगर दु सय तीि सय लोककऽ खेिाई बि दइ छलक्खि।

कतउ क्ककिो घरससैय बहुकऽ बेिी ल़ ाई पर ओतऽ पहुंचकऽ धमकाअ दइ छलक्खि। अपि कक्हयो तीथाटि पर िवि गेलीह, लेक्कि जौ पता लगइ छलइि जे फला जा रहल अइछ त उकिा र पया कौ़ ी दइ छलक्खि आ कहइ छलक्खि जे हमरो लेल क्कछु माइग लेब। क्कयो पढअ बाला बच्चाकऽ कापी क्कताब, िमि क्लखाबऽ मे क्दकत होअइ त ओकरा मदद करय छलक्खि। परसौतीकऽ खाक्तर त ओ डागदरसऽ कम िवि छलक्खि। कतेक बच्चा उकिे देख रेख मे दुविया मे आयल। ओ डागदर, दाई आ पंक्डत तीिु भुक्मका मे रहइ छलीह। बेटी सबहक खाक्तर त ओ बरका आशय छलीह। बच्चा सबहक ल़ ाई मे ओ हरदम िइत-िक्ति, भावाि- भवाािीकऽ पक मे रहइ छलीह। उकिर घर , घर िवि सराय छल। भोर सलऽ क राइत धइ लोकसऽ भरल रहइ छलीह।के बरका,कऽ छोटका,कऽ धविकि,कऽ विधिि,कऽ पढ़ल,कऽ क्काविपढ़ल,कऽ ििहरी,कऽ गाम बला,कऽ काक्कल,कऽ चपाट सबके लेल उकिर दरबज्जा खुजल रहइ छल। कयेक लोक त लोकाचार क्काध बेबहार खाक्तर आिि हिरो मेलऽ गेलइि। ओ सबहक सुख-दुख मे िक्मल भेलीह। ओ बाप जे बेटीकऽ क्काबाहक लेल पयास िवि करय छलाह, उकिा ओ एक दिि िवि छो़ इ छेलक्खि। उकिर क्कागराईकऽ क्कयो खराब मििबो िवि करय।

जे उकिर सबसं बरका गुर छलइि जे ओ उपकारकऽ ककरो िवि कहइ छलक्खि आ िवि क्किको उपरागे देलक्खि। कतेक लोक पईढ़ क्लखकऽ बिल अइछ ओइ मे उकिर योगदाि सेहो छइि। ओ सब आब उकिा याद मे क्कछु करबाक लेल लागल अइछ। एके लोक मे अतेक गुर कीभऽ सकइ छइ। सबसं कमाल देखू। क्किकोसऽ कोिि सेिि िवि करेलीह। चइलतेक्करते दुवियासऽ चइल गेलीह। चहुंओर उकिर चचाभऽ रहल अइछ। आजुक कलयुग मे अहिि लोक भेल। अप्पि सब क्कासइ् कऽ समाजकऽ उपकार करऽ बाली लछमी बहुक्करयाकऽ हमर पराम।

अजादी (लघुकथा)

ई कोन अजादी छी।

बुझबाक ऽ अइछ त पुईछ लियउ रमन सं। किछु कहता त संयम राखब।

रमन आब एत ऽ कहा छथि।

कत ऽ गेला।

लोकेसबच ऽ दुआरे गेला अछि त बताक ऽ थोरे जेताअ।

बाजु रमनकि कनिया परा गेलइन। एहिन कतउ भेलइ अछि।

रमन एक टा कम्पनी मे सुपरवाइजर छलाह। कनिया आ एक टा बेटी संग पटना मे रहइ छलाह। सोचलाह की सब दिल्ली मे रहइ छइ, ओहो दौ -धूप क ऽ क ऽ बदली दिल्ली करा लेलाह। कनियेक ऽ बेसी जो छलइन। कतेक ठीक पटना मे छलाह। दिल्लीक ऽ एहन उजाही मचल छइ जेक ऽ बचत। बाहरी दिल्ली मे एक टा बिन कालोनी मे किरायाक ऽ घर लेलाह। ओतइ लग मे अंग्रेजी स्कुल मे किछु भाग दौड़ क ऽ क ऽ बेटीक ऽ नाम सेहो लिखा गेलइन। बीच सेसन मे ज्यो बच्चाक ऽ दिल्ली मे एडमिशन भि ऽ जाय त बुझु बैतररी पारक ऽ गेलऊं।सब काज सुखद्या रहल छलइन। जमहर घर लेने छलाह, उमहर अपना देसक लोक सब

रहइ छलइि। इकिर िौकरी टुर बाला छलइि,तै सोचलाह जे अप्पि लोकक बीच पकिार रहतइि।राजा देि कोिो जररत परलाह पर क्किकत िर्ि हेतइि। ओिो अप्पि आकफस ओतऽ सऽ बडड दुर छलइि। लेककि सोचलाह जे उिके टाकऽ ि परेिािी।बाककऽ सहुकलइत त छइ।फोि सेहो घर मे लगा लेलाह। मोबाइलक जमािा िर्ि आयल छलइ।

अकहि सब ठीक चइल रहल छलइि रमिक कहसाबे। धीरे धीरे फोिक कबल बडड आबय लगलइि। टेकलफोि र्वभाग मे पता लगबइ लेल समय िर्ि छलइि। तखिि जखइि कबल बकढ़ते रहलइि त काल ररकॉडषर्वकिलबेला। सब फोि इिके घरसभेल छलइि। समय छलइ जखइि ई टुर मे बाहर छलाह। कर्वयाकऽ जखइि ई सच्चाई रखलककि त ओ गलती मािलकखि आ दुबारा िर्ि फोि करबाक भरोसा देलकखि। अइ घटिा मे आपसी बहुत दंद भेल रहइि। ककछु समय बाद एक कदि कर्वया गायबभऽ गेलकखि। दुिु बाप बेटी सब जगह पता लगेलाह, ककछु थाह िर्ि लगलइि। हाकर थाईककऽ पुकलस मे ररपोटषदजषकरौलाह। सासुर बलाकऽ कहलकखि त ओ सब इिके दोरी कहऽ लगलइि। कहलकइि जे घर सम्हारऽ िर्ि अबइ छइि। छोट-छीि गप्प फोि बालाकऽ हल्ला मचा देिाअइ उकचत िर्ि, आरो कतेक दोर। कोिो मदद रमिकऽ सासुरसऽ िर्ि भेटलइि। उल्टा बदिामीकऽ तोहमा लगबऽ कऽ बारे मे उपरागो देलखइि। र्वरािभऽ क कदल्ली घुरलाह।

जतऽ जतऽ रमि मदद खाक्तार जाइथ, उकिासऽ पक्हि उकिर क्खस्सा पहुंच जाइि। सब हमददी जतबइि मुंहछुआि, आ मजा लइि अंक्खदेखार।हाक्रकऽ पुक्लस बालाकऽ फोि बाला गप्प कहलक्खि। ओकर आंईख चमकऽ लगलइ। ओइ म्भिर बाला लोक सबससख्तीसपुछताछ केलकइ। त पता चललइ जे रमकिऽ कविया एकटा सोलकि संग तेजपुर, आसाम मे पराकऽ रही रहल छक्थ। क्दल्लीसऽ पुक्लसकऽ संग तेजपुर गेलाह त ओतऽ घर मे ताला लटकल छल। कक्यो पुक्लसकऽ अयबाक खबरदऽ देि रहइ। रमकिऽ कि अप्पि गऊंआ सब पर बुझेलइि। एकतरहक झुनाी बस्ती छल। िपस क्दल्ली घुरी गेलाह। तलाकक केस सेहो लगेलाह।

आब सालि पैघ होअइत बेटीकऽ भविष्यकऽ छलइि। िकरी छोअइ विि सकइ छलाह। गामसऽ बुढ़ मायकऽ बजेलाह।सब धीरे धीरे सामान्य क्दि भेल जाइ छलइि क्क एक क्दि बेटी सेहो लापताभऽ गेलइि। कोिा उपाय विि देखकऽ फेर पुक्लस लग गेलाह। पता लगलइि जे बेटी सेहो माय लग तेजपुर पहुंच गेल छइि। रमि आब पुरा विराि छइथ जे बेटी ओतऽ ओअइ समाज मे कोिकिऽ रहथ। ओकर भविष्य की हेतइ। आब पता लगलइि जे पुक्लसकऽ पक्हले बेर तेजपुर जायबाला फोि बेक्टये केि छलइि। ओ विरंतर फोिसमायसजु ल रहल आ बाद मे विरोध केलक जे उएह जीिि िकि।

रमकि अ़ ेसी-प़ ेसी आब कहइ छइि जे उकिर कविया पुरखाह छेलक्खि। जेिा पुर ख मऊवायाह होइत अइछ ओक्हिा मऊगी सेहो

पुरखाह। उिका सबके पक्लेसऽ आिंका छलइि। जे भी सत हो, रमिकऽ क्दल्ली मे रहिाई आ ओ िौकरी केिाई दुि पहा बुझाय लगलइि। कवियासऽ ओतेक दुख िवि जतेक बेटीकऽ छो़िाईसऽ दुख भेलइि। तलाककऽ केसकऽ तारीख पर तारीख चइल रहल अइछ। रमि सब छोव कऽ क्दल्लीसचइल गेलाह। क्किको लग िवि उिकर िम्बर आफ िवि पता-क्ठकािा।

ई कोिि अजादी छइ जे घर पक्रिारकऽ ढाक्ह दइ। बेटीकऽ बापसऽ अलगा दइ। क्कयो कहइ जे एहि अजादीकऽ आइग लगा दी तो क्कयो अप्पि अप्पि पसंदक पक मे। क्कछु दोर रमिकऽ हेतइि। सबाल ई बेिि घुमई छलइ जे भगलक्खि त भगलक्खि, सोलकि संग क्कअए भगलक्खि।बाह रे समाज। परेिाईयो मे िगष विभेद। की उक्चत की अिुक्चत।

गोलकी र`मकऽ चश्मा (लघुकथा)

आिकऽ जमाित हाइकोटषमऽ भेटलइि। अखइि बरी िव भेलीह अइछ। एकदम झोखइ गेल छइथ। बुढ़्या जका चलइ छइथ। कन्हाईते िव छइथ। सब ककछु बदइल गेलइि। िव बदललइि त ओ गोलकी र`म बाला चश्मा। हम त ओहीसऽ कन्हलइि। केहिभऽ गेल छइथ। कतेक गंभीरभऽ गेल छइथ। ककछु बकजते िव छइथ। बडड खोचाकरयोि त हुं हा। चेहरा पर कोिी भाि िव। जेकर बुटी बुटी चमकइ छलइ, ओ एहिभऽ जाइत से पइच िव रहल अइछ। लेककि जे सामि देख रहल छी ओइ पर कासिास त करहेकऽ परत। आब बेिी कइि िव जीतीह। हाइकोटषमे जकहया आब इिकर केिक म्भिर अइतइि, ताबइत तक ई िव जी पेतीह।आिा जेहल जेतीह, सजोभऽ जेतइि एहि अपराध करतीह से सोचो मे ककिको िव आयल हेतइि। ईएह त छइ जीिि। पता िव की की क्लखाकऽ आयल छइथ।

आिा बच्चेसऽ खुब हंसमुख आ पढुआ छलीह। तकहया बेिी बेटीकऽ कालेज मे िमे टा क्लखािल जाइ छलइ, रोज जयबाक पचलि िवये। ओइ मे जे गाम मे रहइ छलीह, उिकर त सोचबो िव कर। आिा कजदकऽ क कालेज मे िम क्लखेक्लह। रेिसऽ रोज जाइ छलीह। पास बिा िि रहइत, ताय बेिी पाइ िव लगइ छलइि। डेरा भारालऽ क रहतइथ आ पढ़ाइ करतइथ, से घरक क्स्थत िव रहइि। ककछु आर समाजक ल की बच्चा सब सेहो

रेिसऽ जाइ। आिक दुश्मि उिकर सुन्दरता आ गोलकी र`मकऽ चश्मा रहइि। किछु लफुआ सब उिका रेि मे पीछा करयि। आिकऽ बुझल छलइि जे ज्यो घर मे कहलिखि त कालेज गेिाई बंदभऽ जेतइि।ओहीलऽ क अपिि जेिा तेिा सामिा करय छलीह। बात कयो छुपलइ अइछ। एकिदि उिकर गऊंआ सब िमलकऽ ओइ बदमििकिऽ पक लक आ जईमकऽ थकुचलक। ओ बदमिि बडड हाथ पैर जो लक त ओकरा रेलि पुिलसकऽ िव सौपल गेलइ। किछु मिहिा त ओकर बाद ािित्तसऽ गुजरलइ। मुदा जखइि ओ बदमििकिऽ घाि सब भरा गेलइ त ओ एकिदि फेर ओ रस्ताकऽ स्टेिि पर आिसऽ बदला लइ लेल किछु लोक लडकऽ आइब गेल छल। अइ बातक खबर आिकऽ दोसर ल़ की सबसऽ पता लाइग गेलइि। आब केल की जाय। फोि फािकऽ कोिा जमाि िव। पुिलसकऽ रेि मे रहबाक सेहो कोिा बेबसथा िव। ओइ रेि मे किछु कुजरिि सब सेहो जाइ छल। ओ सब िमलकऽ एक टा मुसलमािक पकिर जाइ छलइ, ओकरासऽ िहोराकऽ क ओकर बुका आिकऽ पिहरािल गेल। गोलकी चश्मा उताइ़ कऽ कोरा मे एकटा बच्चाकऽ बइसािल गेल। कयो आब िचन्ह िव सकइ छल आिा के। उएह भेलइ। अवाला स्टेिि पर रेिकऽ भेकम्मकऽ क बदमिि सब रोकलकइ। आ सऊंसे रेि मे तकलकइ चश्मािली के। मुदा िव ताईक पेलक। ब़ का अिहोिि होबऽ सऽ बइच गेलइ। आब आिक कालेज गेिाई बंदभऽ गेलइि। अवाला ि्द मे िबबाहकऽ देल गेलइि। पढ़ाइ छुइट गेलइि।

आ िकऽ घरबाला सरकारी िकरी मे छलाह। एक टा बेटा सेहो भेलइ ि। आ ि सब बासइ कऽ बच्चाकऽ पढ़बऽ मे लागल छलीह। विधाताकऽ ई मंजुर ि वि। एक क्दि उिकर बेटाकऽ एकटा बच्चासऽ ल ाईभऽ गेल छलइ ि। साझ मे ओ बच्चाकऽ बाप कछु बदमा िकऽ लकऽ इ िकर घर पर आइबकऽ बेटाकऽ मारऽ लगलइ ि। तखि आ िकऽ घर िला आवकसऽ अयलख ि। लाइट गुलभऽ गेल छलइ। मारा वाटी दु ि तरफसऽ भेल। लाइट आयल त देखल गेल जे ओइ बच्चाकऽ बापक माथसऽ िवरत बहइ छल। अस्पताललऽ जायल गेलइ। दु क्दि बाद ओ मइ गेलइ। आब पुलस आइबक आ िकऽ बर आ उ िकर बेटाकऽ पकइ कलऽ जाय लगलइ ि। तखि आ ि सामि अयलीह आ कहलख ि जे हम ओकरा मारि रक्हयइ लाठी सं। लाठीकऽ जरा देवलयई आ राईखकऽ ि िली मे बहा देवलयई। बर आ बेटाकऽ आंईखस िर बहअ लगलइ ि- ई गप्प सुइ ि क। पुलस आ िकऽ पकइ कलऽ गेल। कोटषमे आ ि ईएह बया ि देलख ि।के ि चलल। लोअर कोटषसऽ सजा सेहोभऽ गेलइ ि। ऐ ि कअए केलीह आ ि। सच्चाई छल जे घर िलाकऽ िकरी छुइट जंइतइ ि आ बेटाक जीि ि बबादभऽ जंइतइ ि। उ िकर सबहक दोर अप ि परलऽ क अप्प ि जीि ि अन्हारकऽ लेलीह। जे कक्हयो जोरसऽ ि वि बजलीह ओ कि को जा ि मारती ि। कतउभऽ सकइ छइ। ऐ ि जेहल मे अप िकऽ दकऽ घर पव ि र लय अतेक त्याग की संभ ि छइ। आ िकऽ आंवख कयो गोलकी चश्मा हटाकऽ देखतइ ि तखइ ि ि बुझतइ जे कतेक ददष ओ समेट ि छइथ।

अंत (लघुकथा)

धर्िि बच्चेसऽ चलता-पुजा छलाह। ओि उकिर गामोकऽ पाइकि असर छइ। लोक कहइ छइ जे ओइ गामक बच्चा, दोसर गामक चेतकिऽ जेबी मेलऽ क घुमई छइ। कतउ ककरो बेच देत ओ सब। धर्िि ओहो मेसऽ चागला छलाह। ओि उकिर बाप कम्मे बयस मे मइ गेल छलखि। बाबा सब खचषबचषदइ छलखि। पाइकऽ कोि क्दकत िक्ह छलइि। जखइि धर्िि स्कुल मे पढ़ई छलाह तखिसऽ धुरफंदी मे लागल रहइ छलाह। बाबासस्कुलक फीस लइ छलाह। क्ािि बापक बच्चा टुअर कहाइ छइ।ओ अइ टुअरकऽ आर मे पुअर ब्याज फंडसऽ फीसकऽ पैसा लइ छलाह। फेर बाबाक देल फीसक पाइसमहाराजा होटल मे जाकऽ क्संघारा खाई छलाह।एहि मुंह बिकऽ मास्साहेब लग ठारभऽ जाइ छलाह जे ओ एप्लीकेिि देखते फीस माफकऽ दइ छलखि।

जखइि स्कुलक बाद कालेज मे पढ़ई लेल गेलाह त ओतउ उएह खेला। पढ़ाइ छोव सब काज मे उकिा मोि लागइि। बाबा अन पाइि आ क्हसाबेसऽ पाइ सेहो दइ छलखि। धर्ििकऽ कालेज मे आइबकऽ पाईख वकिइल गेल छलइि। दोसर िहर छलइ। र्विि कयो क्चन्ह बाला। खुइलकऽ मटरगश्ती करय छलाह। युर्विक्सिटीकऽ चुिाि मे सेहो ठार भेलाह। एकटा कागज मे झुटफुसकऽ सब जाइतक अलग अलग िम्बर क्लखि छलाह आ अपिकऽ अपि जाइतक िटक ठेकेदार बइि गेल छलाह। कछु लोक झासा मे आइब गेलइि। िटसऽ एक क्दि पक्हि मोटकि

पाइलऽ क बइस गेलाह। ईएह त उकिर योजना छलइन। बाबा जखइन ईएह हाल देखलखिन त उकिर ब्याबाह पुरा दान दहेजलऽ क करा देलखिन। जतेक पाइ देन रहथिन अखइन तक ओ दहेजकऽ र पया मेसऽ काइटकऽ धनि कि मायकऽ पठा देलखिन।

आब धनि कि सब फुटानी हनि होबऽ लगलइन। युर्निवर्सिटी निला इलेक्शन मे एकटा कैंडिडेटक बाप ब्याहार सरकारकऽ बोडक चेयरमैन छलइ। ओकरा पकड़ धकड़ कऽ पटना मे क्वार्टिकऽ निकरीलऽ लेलाह। पहिन अस्थायी छलइन निकरी बाद मे परमानेंटभऽ गेलइन। दरमाहा कम छलइन। कनिया गामे रहइ छलखिन। एक टा बेटा आ बेटी सेहो भेलइन।

पटना मे पहिन एकटा गऊंआ कतऽ रहलाह छह माह धइ।फेर एमहर उमहर किराया मे। राजेन्द्र नगर मे एकटा बाधिन मउगी कछु कमरा सब किराया पर लगबइ छलाय। इनिको पता लगलइन। ओ ओकर बरसाती मे किराया पर नियर मे घर लेलाह। कनिया गाम मे हल्ला करकानि पटना जाय लेल।उनिका अलग घर लिन होबाक बहाना बनि कऽ रोईक देथिन। धनि सब काज सोइच बुझइझकऽ करय छलाह। धीरे धीरे ओ बरसातीसऽ अलग कमरा मे अयलाह। फेर ओइ बाधिनिकऽ बहरी कमरा मे रहअ लगलाह।

ओइ बाधिनिकऽ दु टा बेटये छलइ। धनि ओकरा सबकऽ पढ़बऽ

लगलाह। पाइ र्वि लइ छलक्खि। ऐ ािकऽ क अपि र्वशािस जमेला।ओहो मऊगी पढ़बऽ कऽ बदला मे इ िका खेिाई देबऽ लगलइि। आबऽ धर्िि बहरी घरसभीतरका घर मे रहअ लगलाह। ओकर बेटी सब स्कुलसऽ कालेज मे आइब गेल छलइ। ओकरा सबकऽ सबटा बाहरबाला काज धर्िि करऽ लगलाह। इमहर ािकरी मे उपरी आमदि्ी सेहो पुराभऽ रहल छलइि। सब ओकरा सब पर खचषकरय छलाह।बाकी करायेदार सब कछु कछु कामेट करयि।

आब कधािकऽ मकािसऽ सब करायेदारकऽ हटा देलाह। बीच मे कर्िया एलक्खि पटिा त एहि ि परेाािकऽ ािटक केलाह क ओ घुक्ये गेलीह। कर्िया बच्चा सब गामे मे रहअ लगलइि।इमहर अइ मौगीकऽ दुि बेटी पारा पारी कहार मेक्डकल परीक्ष पासकऽ गेलइ।एकटा पटिा आ दोसर राची मेक्डकल कालेज मे पढअ लगलइ। धर्ििक मुंह मे अपि बच्चाकऽ ािमक जगह पर सद्धखि बक्कताजी आ सक्कताजी ािचइत रहइ छलइि।

बात धीरे धीरे पसरऽ लगलइ। सब कहइ जे ओ मऊगी धर्ििकऽ पटाअकऽ अपि ऊल्लु सीधाकऽ रहल अइछ।ओकर संबंधी कहइ जे ई धर्िि ओकरा मीठ मीठ बात मे फंसेि अइछ आ अतेकटा घरक माक्लक बइिकऽ बइसल अइछ। धर्ििक माथ पर त उएह सब ािचैत छलइि। गाम कछु पाइ हर महीि पठा दइ छलक्खि। गाम लोकक क्यंन्यािरक डरे गेिाई लगभग छोव ये देि छलाह।

बेटी समथ्र्याऽ गेल छलखिन। कका सब काल कऽ ल का तकलक। खचषबचषजे भेलइ से धनि देलखिन। अलगे अलग गामो मे रहलाह। बेटासऽ किछुंये जेका गप भेलइन। बेटीकऽ बियाहक बाद घुअइ कऽ पटनि अयलाह।गाम मे बाप माय मइ गेल छलखिन। बाट बखराभऽ गेल रहइन। किछु किछु बात पर भाइ सबसऽ सेहो झंझटभऽ गेलइन।

इमहर बबीताजी आ सबिताजी दुनु डाक्टरभऽ गेल। ओकरो सबकऽ आब धनिकिऽ घर मे रहनिई नीक निन लगइ।धनि त अपन सब टा कमाइ ओकरे सबकऽ पढ़ाइ लिखाई, घुमाई फिराई मे गांनि चुकल छलाह। बबीताजी एकटा डाक्टरसऽ बियाहकऽ क राची मे सेटलभऽ गेल छल। सबीताजी सरकारी अस्पताल बिहटा मे पोस्टेड छल। धनि कतेक लोककऽ मुफ्त मे इलाज करा दइ छलखिन। एक दिन धनिकिऽ पता चललइन जे राजेन्र गिर निला मकान ओ सब बेच देलक। धनिकिऽ मकान छो़ अ परलइन। रिटायर केला पर किछु पाइ भेटलइन। बाकि सब पाइ त ओ पहिने विकाइल चुकल छलाह। आब यक पश सामन छलइन-धनि कतऽ जैताह।

धनि घुरीकऽ गाम अयलाह। बंटनिरा मे उकिर हिस्सा मे घर निन घरारी भेटल छलइन। जे किछु पाइ छलइन ओइसएकटा छोट घर बनिलाह। उकिर निकरी मे पेनि निन छलइन। कहिनिकऽ

घीच तीरकऽ घर चलइ छलइि। बेटा सेहो बेरोजगार बइसल रहइ छलइि। दुि बाप बेटा म मे खटबहस होइत रहइ छलइि। अव्हिा समय क्वातइ छलइि।

धर्िि सुविधा भोगीभऽ गेल छलाह। ई जीिि जीबाक ओ आदी िवि छलाह। बड्ड जोरसदुक्खत प़ लाह। इलाजक कमीसमजष बढ़इत गेलइि। बाद मे देखेला पर पटिा रेफरकऽ देलकइि। लाईद पाइदकऽ पटिा भती भेलाह। संयोगसबबीताजीकऽ बदली पटिाभऽ गेल छलइ। ओ तुरंत पाईिट िाडषमे विफ्ट केलकइि। मायकऽ खबर केलकइ। ओ हो सब राचीसऽ अयलइि। दस व्दिकिऽ करीब अस्पताल मे रहलाह। ओतइ मृत्यु भेलइि आ ओकर सबहक देखरेख मे काजो ओतइ बेटा केलक्खि। जेकर पाइ तकरे जुइत ि।

दु दु टाकऽ डाक्टर बिलाह आ ईलाजक अभाि मे धर्िि मइ गेलाह।अपि योजिा बिलासऽ कछु िवि होअइ छइ। ऊपरिला जे अंत वजिका लेल क्लखि अइ, ऊयाह होइत।

फैसला (लघुकथा)

बेर पहर काल बेल बाजल छलइ। ईकऽ भऽ सकइत अइछ। डाक्टर रावाीकऽ अखि तऽ विनि लागल रहइि। क्लीविकिसएलाक बाद , विि चाक्हतो थाकल थेक्हयाल रहइत छथ्थ। दाईयो विि छलइि। अमिि भासिगेट खोलइत छथ्थ।

ईकऽ विकिट पाहुि भऽ सकइत छथ्थ। जक्हयासपी एि जी भऽ गेल छइ, ई गैस बालाकऽ झंझट खत्म। विि तऽ ओ, जखि सुतब, तखि आइत। बेटाकऽ स्कुलसआबऽ मे अखइि समय छइ। अगल बगलसबेिी अबरजात रखिहे विि छथ्थ। ओिी डाक्टर सबहक संग ई क्दकत छइ, जखि लोककऽ बुझा जेतइ जे ई डाक्टर छथ्थ- सबकऽ कछु ि कछु मंगविया सलाह दइत रहु। सब लोके रोगी भऽ गेल छइ। मऊगी महाल मे तऽ आर हाल बेहाल छइ। क्सस्टर कुमारकऽ बेिी लोकसहेम केम पसन्द विि छइि। ओइसरावािी ककरोसहाय हेल्लोसबेिी संबंध विि रखि छथ्थ। भेलइि जे बेक्सकि िली जामक कम्मलेि क्सस्टर कुमार केि छलक्खि, भऽ सकइत छइ, जे उएह होइ?

महाििगर मे ई ब़ का लीला छइ, आब तऽ रावाीकऽ सेहो आदत भऽ गेल छइि.........मेि गेट खोलऽ सऽ पक्हि मैक्जक आइसहुलकी क्दयउ। अइ मे कछु देखाई छइ?

केकर भीतर की चइल रहल छइ सेकऽ जविया?

ई चेहरा तऽ कछु कन्हल जालि लगइत अइछ।

गेट खोलते देखइ छथ जे राजि ठार छथ।

आऊ आऊ राजि बाबु। कोि आयल? आइ कोि कसिसुर ज ऊगला अइछ?

राजि घर मे घुसला। सोफा पर धंईस कऽ बैसलाऽ ।

चाहइ तऽ कहयासछलऊं। मूदा गरे िवि ध्र इ छलाय। आइ मौका लागल तऽ आइब गेलऊं।

अच्छा! मौकाकऽ तलाि मे छलऊं!

हं हं। आहाकऽ कोि कासरब।

से कियैक? हमरा मे एहि की लागल अइछ जे आहा विकासरब?- मुस्किक्याइत रावािी बजलीह।

जे आहा मे अइछ, से हमही जवि छी।

अच्छा! अखिी कासरायल वि।

रावािीकऽ मुस्कीसराजकिऽ बुझा गेलइि जे आइ फेर गोटी लाल अइ।कतेक सोइच विचाइर कऽ तऽ आइ बेर पहर एलाह अइछ।गप्प सबसपता चइल गेल छलइि जे कास्टर कुमार अखइि बंगलोरसबाहर सेक्ािर मे गेल छथ्य। बच्चा स्कुल गेल छलइ, घुरऽ मे तीि घंटा बाकी छलइ। राजि अइ लब्धक लब्ध, समयक सदुपयोग करऽ चाहइ छलाह। रावािीकऽ सब र बाब उकिा हक्यर झंडी लाइग रहल छलइि।

रावािी जल्दी जल्दी चाह बिा कऽ देलखिि।

राजि उकिा आर कछु बिबऽ समिा कऽ देलखिि।

आहा अतइ बइसु ि। अहीसभेट करऽ एलऊं अइछ। आब खेिाई क्वाािई के,कऽ पुछइया ?

की भेल? भूख क्वयास सब हेरा गेल?

आहा सामि रहब तऽ , हरेबे करतऽ ि।

हम तऽ सामिसजाइते छलऊं , भंसाघर मे जलखइ बिबइ लेल, अही तऽ रोईक देलऊं।आब सामि छी त कहइ छी एिा ओिा भऽ गेल।

कव्ह कऽ चट दऽ उईठ कऽ रावािी भंसाघर क्दि जाय लगलीह।

राजि तखि सही मौका देख उिका आगुसरोईक लेलक्खि।

अच्छा बइसु। िवि कक्छु कहब!

रावािी अपि भाि भंवामा सऽ राजिकऽ ऊकसबइ छलक्खि।

राजिकऽ भेलइि जे आरो देरी केिाई ठीक िवि। सब कक्छु उिकर साथ दऽ रहल छइि।असगर मे रावािी दसो बरखक बाद भेटेक्लह अइछ। कतेक कतेक राइत उिकर याद मे जगले क्वातेि छइथ।आइ सब बक्कयौता पुरा कऽ लीह।

" आहा की सोच विचार मे पृ ल छी"- रावािी बजलीह।

रावाीिकऽ सिाल पर राजि सम्हृ इत बजलाह- िवि क्कछु।

थाकल बुझाई छी? आराम करब तऽ , ओइ घर मे पड़ रहु।

परऽ कऽ तऽ मोि कऽ रहल अइछ, आहा संग दी तखइि ि?

अइ मे हम की संग देब? हऊआ पलंग अइछ। जा कऽ पड़ रहु।

अहा पहुंचा क्दयह।

चलु।

राजि आब आगु बढऽ कऽ मोि बिा लेि छलाह। ओ रावाीिकऽ र बाबकऽ आगु बढ़बाकऽ ईिारा बुझई छलाह।अइ बीच मे गप्पक दौरािरावाीिकऽ अस्तव्यस्त स्तिसउिकिर अंग पत्यंग सेहो कखिा काल झलकी दऽ दइ छलइि।राजिकिऽ बुझबा मे एलइि जे रावाीि आ क्मस्टर कुमार दुि व्यस्त लोक छक्थ आ एक दोसरा लेल इिका सबकऽ समय िवि छइि। रावाीि अपि दाम्पत्य जीिसिसुखी िवि छइथ, तै कतेक...... क्लफ्ट दऽ रहल छक्थि।

जखि ओइ पलंगक लगऽ दुि गोटे पहुंचलाह त राजि "मत चुको चौहाि" जेका रावाीिकऽ हाथ पकड़ लेलक्खि।

रावाीि झट दं हाथ झा लक्खि। सखक्तीसकहलक्खि- हम बुझइत रही

जे आहा कतऽ जा रहल छी। कथी लेल आहा एलऊं अइछ।

सनाटा छा गेल छलाह। राजि कथी दुि सोचि छलाह, आ भऽ गेलइि तेसरे।

आहा आब दु क्षिटक अंदर एतऽ सरस्ता िइप क्लयह। िवि तऽ हमरा पुक्लसकऽ बजबऽ मे समय िवि लागत- रावाि बजलीह।

हमऽ आहाकऽ असली र प देखऽ चाहइ छलऊं। अतेक बरखक बादो आहा मे बदलाि िवि भेल। जाऊ, अपि कवि या बच्चा संग समय क्षताऊ।अतऽ आहाक सब कायक्षलाप कैमराक क्षरकॉक्षडंग मे आइब गेल हैत।

राजि स्तब्ध भऽ ठार छलाह। मौसम ठंडा रहला बादो पसीिसितर-बतर भऽ गेल छलाह।

गरदि िचा कें लजाइत धीरेसबजलाह- "ओ जे पक्षि भेल छलइ?ओइ मे अहुं िक्षमल रही।"

रावाि उिकर बातकऽ बीचे मे कटइत बजलीह- हमरा होइत छलाय जे अखइि तक आहा ओकर चचा क्षयै िवि केलऊं।

बजइत हंफइत रावाि सोफा पर आइब बइस रहइ छक्षथ।

पाछु - पाछु राजि सेहो सोफा पर बइसऽ लगलाह, ताक्षते फुंफकाइत रावाि बजलीह-

खबरदार जे अतऽ कऽ कोिि चीज पर बइसऽ कऽ कोवि करब। आहा पुर ख सब हमेिसस्त्रीकऽ भोगक िस्तु बुझई छी। ललिो चप्पो कऽ कऽ एक बेर फंसा लेलऊं, फेर जखइि

मोनि ओकरासहसिकऽ पुरा केलऊं। स्त्री कऽ एक गलतीकऽ भइ जीनि ओकर फल भोगबइत रहइ छयई।हम गलती केनि छलऊं, ओ हम भोइग लेलऊं। हम मास्टर कुमारकऽ सेहो सब बात पहिनेहि बता देनि छयइनि। तै ओइ चकर मे निनि परब जे बातकऽ फईला कऽ हमर जीनि निकषकऽ देब। आब हम फैसला कऽ लेनि छी जे आहाक सजा दी। बाजु सजा चाही? या हमर जीनिसिदूर रहब?

राजनि कल जोड़ कऽ माफी मंगलाह। ....आइकऽ बाद हम कहियो निनि एहनि गलती करब आ निनि आहाक जनिगी मे आयब।

राजनि गेट खोइल कऽ जाय लगलाह आ जाइत काल रावानिकऽ पैर सेहो छुअइत बजलाह- "ई बातकऽ अतइ कब मे दफनि कऽ देल जाय। कैमरा रकार्डिंग सेहो डिलीट कऽ देबइ? "

आहा बकिलु? हमरा जे करबाकऽ होइत, से कऽ लेब।

राजनिकऽ गेलाकऽ बाद रावानिकऽ बुझेलइनि जे बड़ का भारी बोझ उनिकर माथा परसउतड़ गेलइनि। बच्चाकऽ स्कुलसघुरबा मे अखइनि समय छलइ। ओनि रावानि , मासेज कुमार बनिलाकऽ बाद आजाद ख्यालक बइनि गेल छथ। जीनि जीबा मे कोनि बंधनि निनि छइनि। मास्टर कुमार तरफसपुरा आजादी छइनि। सिहस्की पीनिई उनिका मास्टर कुमारे सिखौनि छथिन।"निइनि तऽ पाइनि छइ"- पहिल बेर ई लाइनि सुनिऽ मे केनि दनि लागल छलइनि। मेडिकल कालेज मे जे छौड़ी सब निइनि पीबइ, ओकरा सबसं ई कै लम्बा दुरे रहइ छलीह। आब की ओकहनि लोक इनिकोसदुर रहइ छइनि?ओ छोट

िहर छलइ, ई महागिर छइ। देि- विदेिकऽ लोक छइ। िवि पीयऽ बाला बैकिडषकहाइ छइ।

ओ व्दि मे व्डंक घर मे िवि करय छव्थ, तखिा उिका िवि रहल गेलइि। बार कैबिािट मेसअपि पसंदीदा बाड विकाललीह आ बोतलक काकषखोललीह। आइ बाि सोडा, बाि आइस आ बाि पाइिक, िाट पी रहल छलीह। कविको कंठ मे आइ िवि लाइग रहल छलइि।

दसो बरखसओ अइ व्दिक इंतजार मे छलीह। राजि फेर एताह तऽ उिकासकोिा विबटब। कही हल्ला गुल्ला िवि भऽ जाइ। स्त्रीकऽ चव्रते टा तऽ छइ, जई पर बाि कव्छु केिि, कव्यो ढेैमा फेक सकइ छइ। एतऽ तऽ उिकासगलती भऽ गेल छलइि।बात मे फंईस कऽ ओ राजिकऽ देहसखेलायकऽ आजादी दऽ देिि छलव्खि। बाद मे सब बुझेलइि। क्व्रक सुख, विकि पर हािा भऽ गेल छलइि। ओिा उिकर कयेक टा मेव्डकलक संगी बान्दास जीिि जी रहल अइछ। बायाह ओकरा सब लेल बेकारक " पच्ा ा" छइ। िरीर की छइ? मासक लोथ्ाि ि? अइ लेल कव्यैक अतेक पपंच? ईएह सब सोचइत, रावाि पैग पर पैग खीच रहल छव्थ। सामिि िाा मे चेहरा देखा रहल छइि।

हम तऽ बव्ढ़या िाटक खेल सकइ छी।

राजि केहि डराऽ गेल छलाह।

सटक सीताराम भऽ गेल छलइि।

कही डरक मारे पेट तऽ गील वि भऽ गेल छलइ।

हा हा हा- ि ि मे अप हंसऽ लगलीह।

अपसिअप पीठ ठोईक लेलीह।अप सोचइत, हंसइत, मुस्कयाइत बाछा पर परऽ चइल गेलीह।माथ पर कोि भार वि छलइ, तै बाछा पर जाइते वनि भऽ गेलइ।

ओ गल्ती की छलइ? राजकि चकर मे राविि कोि एलीह? ओ इंजीवियर, ई डाक्टर, केि? की? भेलइ? बुझऽ लेल आहाकऽ पाछला इतिहासगुजरऽ प़ त ....

राज आ राविि एके िहर मे िर आत मे रहइ छलीह। राजकि पाता करािि छलखि आ राविकऽ पाता सरकारी पदाधिकारी। करािकऽ िकरी बदली बला वि, आ पदाधिकारी सबकऽ कछु कछु बरखक बाद बदली होइत छलइ। ओइ िहर मे पढ़बाक सुविधा िक छलइ, मूदा अधिकारी आ करािकऽ बीच दूरी बेि छलइ। आपसी आ- जा आ मेल- जोल विये बराबर।

दसमी तक ल का-ल कीकऽ अलग स्कुल छलइ, लेकि न्यारहिसकालेज मे संगे पढ़ाइ होइ।दु गोटे एक दोसरकऽ िक विदाथी रप मे िमसजवि छलीह। गलसिष कालेज ओइ िहर मे वि रहइ। राजकिऽ दसमी मे िक िम्मर आयल छलइ। राविि तऽ अप स्कुलक टापर छलीह। कालेज मे आइब कऽ

िक दोस्ती भऽ गेल छलइि। टयुिि सेहो सब संगे पढ़ई छलाह।दोस्ती कालेजे तक छलइि।

बारहिीकऽ बाद राजि इंजीवियवरंग आ राविाी मेवडकलकऽ कोवचंग लेल पटिा अलग अलग संस्थाि मे जाइ गेलाह। गाहे-बगाहे भेट सेहो भऽ जाइि। राविाीकऽ तऽ पटिा मेवडकल कॉलेज मे डाक्टरीकऽ पढ़ाइ मे ,आर राजिकऽ टाटा मे इंजीवियवरंग मे िाम वलखा गेलइि।

सब अपि दुवियामे व्यस्त छल। राजिकऽ थडषईयर मे खचाक लऽ कऽ धविक बापक बेटीसऽ वबयाह करा देल गेलइि। राविाीकऽ पवरिार ,ओ िहिर छोवड कऽ कतउ आर चइल गेल छल।आब दुिू मे कोिाे संपिक िवि छलइि।

इंजीवियवरंगकऽ पढ़ाइकऽ बाद राजि सरकारी िाकरीकऽ तैयारी गाम मे रही कऽ करऽ लगलाह।दु टा धीया पुता सेहो बेरोजगारी मे भऽ गेलइि। परीक्षा सब दइ छलाह , लेवकि सफलता िवि भेटलइि। इमहर वपता सेहो वरटायर कऽ गेल छलवखि। घरक वजम्मेदारी बइढ़ गेल छलइि। हावर कऽ बम्बइ जा कऽ पाईविट िाकरी करबाक फैसला केलाह।ईएह पाईविट िाकरी पवहि भेटई छलइि, तखइि िवि केलाह। आब कोिाे िाकरी ताकऽ बहरेला।पछता रोटी खेिि छलाह।

जखइि पटिा मे, रेि मे बम्बइ जाइ लेल सीट पर बइसला तऽ

देखइ छइथ जे सामर्ि ि वर्िाक्हत रावार्ी अपर् घरबाला संग बइसल छलीह।गाम मे बेरोजगारीकऽ माइ झेललाकऽ काररर् राजर्कि देह झोकइ गेल छलइर्। ओ बयससबहुत बेर्ी लगइ छलाह।

इमहर रावार्ी एम बी बी एस, फेर एम डी कऽ कऽ र्ौकरी करइत रहलीह। एतेक गुरी लेल बर तकर्ाई आसार् थो बे छलइ।देरीसकबयाह भेलइर्। बयाहक बाद बरक संग बम्बइ मे रहइत छलीह।

राजर् तऽ देखते रावार्ीकऽ कबन्ह गेलवखर्। रावार्ी इर्का वहर् जाइर् बुइझ कऽ या अन्जार् सं, तकबो र्वर् केलकीर्। राजर् इंतजारे करइत पक्हल वहर्कि रस्ता कबतेलाह।अवाला वहर् भोर मे हल्का फुल्का रावार्ीकऽ बरसराजर् गप्प ि्र कयलाह। तखइर् संक्षेपे मे रावार्ी बजलीह। राजर्किऽ बेरोजगारीकऽ बात बुझला पर, रावार्ीकऽ घरबाला अपर् काडषदेलवखर् आ र्ौकरी तकबा मे मददकऽ भरोसा देलवखर्। रावार्ीकऽ घरबाला अपर् पाइर्टि कालेजक पढ़ल इंजीवर्यर छलाह, सरकारी कालेज मे उर्का एडवर्िर्वर् भेल छलइर्। राजर् सरकारी इंजीवर्यरंग कॉलेज मे पढ़लाक बादो र्ौकरी र्वर् भेटबाक काररर् उर्का सहार्ुभूक्त छलइर्।

बाद मे रावार्ी आ उर्किर घरबालाकऽ सहयोगसएकटा र्ौकरी राजर्किऽ सेहो भेटलइर्। रावार्ी अपर् डाक्टर छलीह आ ओतइ एकटा पाइर्टि अस्पताल मे र्ौकरी ि्र कऽ देर् छलीह।

राजिकऽ अपि कयो बम्बइ मे िव छलइि, तै ओ पाबइि तेहार आ छुटी मे रावाि कतऽ जाइत अबइत छलाह।

अिहि एक िद बेर पहर ओ रावाि कतऽ गेल छलाह। ओतऽ गप्प सप्प, हंसी -मजाक करते ओ कखइि आगु बइढ़ गेलाह........ रावाि िव बुझलीह........राजिकऽ तऽ सोचल छलइि...... रावाि पर अपि ािरीरक बल िौ देखबइत ओ मयादाकऽ सीमा रेखा तोइ लेलाह। ओिा ओइ िद कतउ असहमत िव छलइ। विािहत राजि, बहुत िदिसस्तीकऽ संसगबहादुर छलाह, आइ मौका भेटला पर रावािकऽ संग सहिास कऽ लेि छलाह।

कछु िदिक बाद रावािकऽ बरक बदली भऽ गेलइि। ओ सब गोहाटी चइल गेल छलाह। राजिकऽ ओइ िदिक बाद रावािसकिहयो भेट िव भेल छलइि।एक दु बेर चाहबो केलाह-जाइ लेल, लेकि िव गेल भेलइि........कारर जे भी हो।

रावाि अइ घटिासबाद मे दुखी छलीह। ओ अइ लेल अपिकऽ दोरी मािव छलीह। उिका होइि जे मास्टर कुमारकऽ विशासकऽ ओ तोइ देलखि।ऊपरसजे फेर राजि एताह, तऽ कोिा कऽ सामि करबइि।

ओ बम्बइकऽ पाइि िव सुट केलाक बहाि बि कऽ अपि दुखताई होबाक िाटक केलीह। फेर हार कऽ मास्टर कुमार दोसर िाकरी गोहाटी मे तकलाह।ओतऽ ओ सब बाि बतौि चइल गेलीह।

राजि आब व्यवस्थित भऽ गेल छलाह। कविया बच्चाक संग बम्बाइ मे रहऽ लागल छलाह मूदा उकिर माथ पर रावािी चिइत छलक्खि।

राजकिऽ जखि मौका लगइि, ओ इकिर सबहक पता करइत छलाह। थो बे क्दि पक्हि पता लगलइि जे ई सब आब बंगलोर मे छइथ।

राजि बंगलोरकऽ आवकक्सयल काज अक्बते, ओतऽ पहुंच गेलाह। कक्छु ढेकाहारी कऽ कऽ इकिर सबहक घरक पता वकिाइल लेलाह।ओकर बाद ऊयाह बेर पहर पहुंचल छलाह। उकिा बुझले वि छलइि जे रावािी " फैसला" लऽ लेि छक्थ। अपि गलतीकऽ अपि सुधार रावािी कऽ कऽ वक्यिन सुइत रहलीह।

आत्मन्लावि (लघुकथा)

रंजीत िरायर, गंगा अपाटमेेट आर डब्ल्यू एकऽ पेसीडेट छक्थ। क्ररटायर भेलाक बाद अपि सब उजा अपाटमेेटकऽ भलाई मे वि शाथष लगा रहल छलाह। इिका अइ सोसायटी मे एलाक बाद सोसायटीकऽ खचा चौथाई भऽ गेल छइ, आर सुवि धा दुगुि। सब अपाटमेेट मे रहविहार इिका या तऽ पेसीडेट साहब कहइ छइि या क्रमस्टर आर एि।ई दुि संबोधि मे गदगद रहइ छक्थ। कुकुरमुता जका भइ क्दल्ली मे क्छक्ररयायल ई हाऊक्संग सोसायटी आ अकर आक्रफस क्रायरमाष सब सगरे भेटा जेताह।सब पेक्सडेटे छक्थ। आइिसभरल रहताह सब। घर मे कवि या बच्चा सब टे इत िवि रहइत छइि, अतऽ सोसायटीकऽ आक्रफस मे तीसमार खा अपिाकऽ बुझबइत रहताह।अििरोकऽ कि हा उचका उचका कऽ चलइत रहताह। सोसायटीकऽ गेटसबाहर जाइते सुटक क्रल्ली भऽ जाइ छइथ। ई उिका बुझले िवि छइि जे इिकर सबहक काजबाली सब टा भेद खोइल देि छइि।अकरा कतऽ कऽ गप ओकरा करऽ मे ई दाई सब पारंगत अइछ।

क्रमस्टर आर एि, अइ सबसअलग अपिाकऽ बुझई छक्थ।एक क्दि सोसायटीकऽ आक्रफस मे केयरटेकर लग कोिि काजक क्सलक्सला मे गेल छलाह। ओतऽ पक्हिसएकटा व्यक्क्त क्रकछु सोसायटीकऽ फामषभ इत छल।

केयरटेकर कहलकइ-

ई क्लस्टर क्लब्हर राय छक्थ। २०१ मे एलाह अइछ।

२०१ तऽ क्लस्टर कुंरिकऽ छइ?

हां। ई क्कराया मे एलाह अइछ।

क्लस्टर आर एकिऽ तऽ क्लस्टर क्लब्हरकऽ देखते जेि साप सुंईघ गेलइ। एकदमससकपका गेलाह।

आि कोई रक्हतइ त केयरटेकरकऽ वदेि दइतक्थि की- ई फामष भराऊ, एि क्लस्टर कुंरिसएक्कडेवट क्लयउ, इकासअंडरटेक्कंग क्लयह, एि आऊ, एि जाऊ, ओतऽ गाि पाकषकर, समय पर मेटेंसिकऽ पाइ क्दयउ......... फला क्चला। केयरटेकर तऽ मजा लइ लेल इका पक्रचय करेलक। अतऽ तऽ ओ भेलइ जकर ओकरा आि वि छलइ।

अइ सोसायटी की, सब हाऊक्संग सोसायटी मे क्करायेदारकऽ दोयम

दजा देल जाइ छइ। आ मेम्बर तऽ अइ बुढ़्याकऽ फुईस बाला पेक्सडेटकऽ मोजर दइ वि छइ, ई बिका करायेदार पर इकिा सबकऽ छजई छइ। बि लोककऽ तऽ ई सब ई कर आ ई वि कर, सुि कऽ पका दइ छथि।

क्कर कछु बजलाह वि, लेकि केयरटेकरकऽ थाह लाइग गेल छलइ जे कछु तऽ कछु झोल छइ।

क्सटर आर एि चुपकेसओतऽ सर्व किइल रहलाह। क्करकऽ सेहो भेलइ जे चलु अपिलोक अतऽ सोसायटी मे पक्ले क्दि भेट गेलाह, ई ीक संयोग छइ।

क्सटर आर एि सोसायटीकऽ आक्सससीधा घर घुरलाह। आ क्दि तऽ इमहर ओमहर राउंड मारलाकऽ बादयअबइ छलाह। इकिा डर सतबइ लगलइ जे कही ई क्कर सबकऽ सच्चाई ि बता दइ। अतुका सब इज्जत एके क्िट वि लगतइ, छु जेका उव या जाइत।

बेचैि मे घर मे टहलऽ लगलाह। कर्वयाकऽ अइ परेिािकऽ काररर पुछला पर िर मे तऽ वि कछु बतेलक्खि लेकि बाद मे जोर देला पर क्करकऽ अइ सोसायटी मे रहअ बाला बात

कहये देलखि।

कवियो परेशानि जे आब की हेतइ, सबकS असकल इत ई कमहर बतेबे करतइ। ई जाइन बुइझ कS अइ सोसायटी मे आयल अइछ। ई तS करायेदार अइछ, कतउ रही सकइ छलाय।ई बदला लेबाक इरादासआयल अइछ।

आइकS बाद मास्टर आर एिन आ उकिर कवियाकS सोसायटी मे विकिलाई कम भS गेलइन।

महीिन बातइत बातइत एक बन्दि सब देख रहल अइछ जे मास्टर आर एिकS समािरक पर लदा रहल छलइिन।ओ कककिो अपिन पता विबिन देलखि आ ओतS सकतउ आर विफट भS गेलाह।

बाद मे सोसायटी बालाकS पता चललइ जे मास्टर आर एिन अपिन फ्लैट सेहो बेच लेलाह अइछ।सब लेल ई एकटा रहस्य छलइ, वसािय केयरटेकर के।ओकर अिभिनि आईेख, मास्टर आर एिकS ओइ बन्दिकि उतरल चेहरा बडड कछु कहय देत रहइ।

वजजासा सबकS ई बुझबाकS लेल लागल छलइ जे एहि "

कारर " आवखर की छइ?

रंजीत एकटा सामान्य िकरी करय छलाह। उिकर कवया तीि बच्हि आ एक भाइ छलवखि। ससुरकऽ मृत्यु भऽ गेल छलइि। रंजीतकऽ सार संजीि बिारस वहन्दू विशवविदालय मे पढइ छलाह।

एक बेर संजीि अपि गाम छुटी मे गेल छलाह। ओतऽ एकटा पुश्तैिी जमीिकिऽ लऽ कऽ दोसर टोलक लोकसविािद भेलइ। ओइ लिाई मे दुि पक्क लोक जमा छल। ओइ पक्क एक गोटे संजीि पर गोली चला देलकइि। मौके पर संजीिकि मृत्यु भऽ गेलइि। संजीिकिऽ वपता पवहिहे सविगषलोक जा चुकल छलवखि। ई जिाि बच्चाकऽ लहाि देख कऽ संजीिकि बाबाक बुढ़ भाइ दलपवत रायकऽ िवि रहल गेलइि।

ओ अपि लायसेसी बंदूक उठेलाह आ संजीि पर गोली चलबऽ बालाकऽ ओतइ ढेर कऽ देलाह।दु लोककऽ सरेआम हत्याकऽ खबर आइग जेका चार वदि फैल गेलइ। थाािि पुवलस एलइ ।दलपवत राय आ उिकिर घरक सब पुरख सदस्यकऽ पकइ कऽ लऽ गेलइ। ओइ पक्क जे मारि रहइ, ओ तऽ मइ गेल छल।तै उमहरसआर वकयो िवि जेहल गेलइ।

संजीि आ उिकिर दुि साढु सपवरिार अइ दुखक घिी मे ढ़ाढस देबइ लेल पहुंचल छलाह।ई लिाई संजीिकिऽ लऽ कऽ भेल रहइ आ ओकर मृत्युकऽ बदला लइ लेल दलपवत राय बुढ़ भेलाक बादो ई कदम उठेलाह। उिका लाख कहलाकऽ बािजुदो पुवलस घरक सब पुरख सदस्यकऽ ििम केि मे दऽ देि

रहइ, कारर सीधा छलइ- दोसर पक पभाािलली छलइ आ उपरसपुक्लसकऽ पाइ सेहो चढ़ा देि छलइ।

शाद कमषकऽ बाद ई सािल उठलइ जे केसक खचा आ दलपक्त रायकऽ आवश्यतक देखरेख कोिा होइ। सोंजीकि मा कहलक्खि जे उकिे बेटा लऽ कऽ सब फसाद भेल छइ आ बेटा परलोक चईले गेल अइछ।हम ई सब भार ओकर आत्माक िाक्त लेल उठायब।गामक स्कुलकऽ जमीि सेहो संजीकि माय देबऽ चाहइ छलक्खि। उकिर बेटी सबकऽ आब संपइतक लोभ भऽ गेल छलइि।ओ सब अपि मायकऽ क्दमाग मे बइसा देलक्खि क्क स्कुलकऽ जमीि देला पर ओतऽ अिर आ लोकक अडडा भऽ जेतइ। आहा क्कछु आर सोचु, भाइकऽ िमिससैह कऽ देल जतइि। अक्िा स्कुलक जमीि देबाक पस्तािा टरका देल गेलइ।

ओकर बाद संजीकि खेतक फसल दलपक्त रायकऽ घरकऽ लोककऽ दऽ देल जाइ छलइि। सब सामान्य चइल रहल छलइ। सब जेहल गेल लोकक जमाति लेल ब्र का िकील राखल गेल छलइ। लोअर कोटषसतऽ जमाति िर्ि भेटलइ, लेक्कि हाइकोटषसदु बरखक बाद क्कछु लोककऽ जमाति भेलइ। अइ सब कोटषक दौर बरहा आ दलपक्त रायकऽ आवश्यत सबहक खचष संजीकि माय अपि दऽ रहल छलक्खि।

जिाि बेटाकऽ मायकऽ रक्हते गुजरलाकऽ िकसब्र का दुख क्कछु िर्ि होइ छइ। संजीकिऽ माय आब बेटी सबहक संग रहइ

छलीह।ओ इकलौता बेटाकऽ याद मे गाम मे कछु करऽ चाहइत छलीह। बहुत सोच वचार केलाक बाद महादे मंडल बबिऽ वश्वत केलीह। उकिर ई वरिषा सुइ कऽ ती बेटी एहि जाल बुिऽ लगलइ जे सब पाइ इमहर आमहर होबऽ लगलइ।दोसर गामक पुश्तैनी जमी बेचऽ कऽ जहा ककरो कहक्त क जमाय ओकरा भ़ का देथ्य।किये मंडल बबिऽ देलकइ सब।कछु बेटाक याद मे करबाक वचार ओ सोचते रही गेलीह।

दु बरख बतइत बतइत संजीकि माय चट दं एकद रंजीतक कतऽ रहलाक कम मे मइ गेलखि।ओि गामक लोककऽ उकिर मृत्यु पर संदेह छइ।

तीि बक्ह अप जमा भेलीह आ उकिर शाद हक्दार मे कऽ दइ गेलखि। मूंहछुआ गाम मे खबर भऽ गेल छलइ। आधासबेिी लोक तं जेहल मे छलइ, वि कयो आइब सकलइ।

आब ती साढुकऽ केस परक खचषफालतू बुझा रहल छलइ। ओि ई पाइ उका सबकऽ अपासदेबऽ वि प़ इ छलइ। आब तऽ सासुरोकऽ संपइत उका सबकऽ अप बुझाय लागल छलइ।

सब साढ़ु मे बुझविहार रंजीत छलाह। ओ दलपत राय केँ घरक लोकससेहो संबंध रखैत छलाह। आ जान होइत रहइत छलइ।

अही सब मे एक गोटे इशिका लग संजीवक कहस्साक गामक घरारीसल केँ सब संपइत कलखबइक आफर देलकइ। जमीन खरीदै बाला आर कोई नै छलाह, ई छलाह उएह लोक, जकर बेटा संजीवकि हत्या केने छलइ।

ई बात दलपत रायक घरक लोकक सेहो पता लगलइ। ओ सब रंजीत आ उकिर कवियाक ओकरा बेचै समति केलक्खन। रंजीत बदला मे बहुत रास पाइ मंगलक्खन। दलपत राय त अपने जेहल मे छलाह।ओतेक पाइ कत सदइतक्थन।

पाइक लोभ मे तीनु साढ़ु आ उकिर कवियाँ सब कमल क ओइ पक्क सब संपइत रवजस्टरी क देलकइ।

रंजीत आ दलपत रायक परिवारक बीच खुब झगड़ा शुरु भेलइ।

आहाक हाथ नै कापल ई हत्यारा सबक रवजस्री करऽ

मे?

हमर सम्मइत! जे मोि से करब!

अइ खािदािक संपइत छइ। आहाक बाप िर्व अरजि छथ्थ।

आहा सब बाप पर िर्व जाऊ।हम आहा सबकऽ देखा देब।

हं हं । कर ि, जे मोि करय।

जेहलससबकऽ वकिलऽ क्यउ। आहाकऽ टपअ िर्व देब।

....

अक्ष्िा राक्ं बेटखऊंकी खुब भेलइि।

रंजीत आ दुि साढु ओकरा सब के, सब क्लख देलक्खि।ओ दुि साढु अइ मुफ्तउआ पाइकऽ उ ा लेलक। आइ तक ककरो रहलइया? रंजीत बुक्षयार छलाह, ओ ई अपाटर्मेट कीिलाह आ सम्मावित लोक जेका अतऽ रहअ लगलाह।आबऽ उिका काजे कोि जे, सासुर जेताह।

आब दलपक्त रायकऽ पक्ष्िरकऽ खाय पीयकऽ कि होबऽ लगलइि। रंजीत ओइ पाइससोसायटी मे घर कीि लेलाह। सब संपकषसासुरसतोइ लेलाह। दलपक्त रायकऽ दुःखसजेहल मे ही मृत्यु भऽ गेलइि। रंजीत आब क्मस्टर आर एि भऽ गेल छथ्थ।

ऊयाह दलपक्त रायकऽ पोता क्मक्हर राय छथ्थ। ओ तऽ अंचोके अइ सोसायटी मे क्कराया मे घर लऽ लेलाह।

ऱजीत ि ारायर आ उ किर कवियाकऽ आत्मन्लावि भऽ रहल छइि। ओ सब अपि बुझई छथ्थि जे कतेक विकृि काज करय गेलाह अइछ। मरल भाइकऽ संपइत ओकरे दुश्मिकिऽ हाथ बेचबे विि केलाह, मायक देल बचिकिऽ सेहो विि विभेला। ब्मक्हरक आंईख उिका सबकऽ व्खहा इ छलइि। ओकरासआंईख बलबऽ मे एक टा गक्त विि बाचइि।

कहल गेल छइ-

बाप ब़ ा ि भैया, सबसे ब़ ा र पैया।

र पैया तऽ रंजीत ि ारायर कऽ भऽ गेलइि लेकि ब्मक्हरक आंईखक सोझा उिका ठार विि भेल जाइ छइि। ओकर आंईख जेि ा पुछइ छइि-

संजीकिऽ मौतक बदला लेल आहा की केक्लयईं?

दलपक्त रायकऽ मृत्युकऽ व्जम्मेदारकऽ छइ?

सासक बचिकिऽ की भेल?

ई आत्मन्लावकिऽ कारर रंजीत ि ारायर कऽ एक एक क्दि गंगा अपाटमेंट मे भारी लागऽ लगलइि। सुतली राइत संजीकि आत्मा आबऽ लगलइि। ई सब ब्मक्हरक अतऽ एलाकऽ बाद भेलइि। अइसबचबाक एके टा उपाय बाचल छलइि- एहि जगह चइल जाइ, जतऽ ब्मक्हरक सोझा सोझी विि होबक परइि।

पक्हि तऽ ब्मस्टर कुंरिसपयास केलाह जे ओ ककरायेदारकऽ हटा दइ। ओ तैयार र्वि भेलइि।

आब कोोि उपाय र्वि देख, रंजीत ििरायर कतउ आर चोरा कऽ बाकी जीिि बीतबऽ चइल गेलाह।

इिका ई बुझले र्वि छइि जे संजीिक भूत इिका सब जगह अक्हिि क्खहा इत रहतइि।भाइकऽ जमीिक अतेक र्सिह छलइ जे ओ जािि दऽ देलक आ बक्हिकऽ देखू ओ मक्लकाइि होइते हत्याराकऽ हाथे कबाला कऽ देलक। कतऽ र्विकन संजीिक आत्मा होबऽ देतइि।

ओमहर ब्मक्हरकऽ जखइि रंजीत ििरायर कऽ फ्लैट बेच कऽ चइल जेबाक पता लगलइि, तऽ उिका क्वंता भेलइि। ब्मक्हर तऽ िबि जबािकऽ लोक छक्थ, व्जिका र्वि ई सब अतेक बात बुझल छलइि। आ ककछु ड़ न्तु सुिििहो छलाह तऽ ओ पूििगहसअपिकऽ अलग रखर्ि छलाह।

ब्मक्हर दु चाइर क्दि रंजीत ििरायर लेल क्वंक्तत रहलाह, फेर समयक डेग मे बढ़इत,सब ब्मसइ कऽ आगु व्जिगी बढ़ा लेलाह।

खेलौनी (लघुकथा)

जई बेर गाम जाऊ, खेलौनी टपकये जाइत। हमरा आब ओ सोहाइ नहि अइछ। आइब कऽ बइस रहत, आ तखइन तक बइसल रहत.......जाबइत कच्छु देबइ नहि।।कयेक बेर त दलान पर अखरे चौकी पर बिधंग सुईतयो जाइत।देला परलो, जाय काल मे दु बेर पुछत, जे फला रे सिजायब नि? हम कहबइ हं, तखनि मुस्कयाइत धीरे धीरे टुघ्र इत बादा होइत।

कोनि काज छलइ खेलौनीकऽ आबऽ के। चलल जाइ नि छइ, आंईखससुझाई नहि छइ, तखनि एबे करत। आंईख मे मोतयाबीन भेल छइ। एक आंईखक आपरेशन तऽ "धरान" मे जा कऽ करा आयल। दोसर आंईख मे तहिया मोतयाबीन पाकल नहि छलइ, तै नहि केलकइ। ईहो अचरजक बात- दुनियाकऽ लोक तऽ भारत मे अबइत अइछ, ईलाजक लेल। आ अतऽ देखू गामक गाम "धरान", नेपाल जा रहल अइछ। ओतुका बेबसथा कहादुनि बडड बढ़िया छइ। भी उम़ल रहइत छइ।बेनी अपनि देनिक लोक रहइत छइ। ऊपरसरहबाक, खेबा-पीबाक आ मंगनियें मे चश्मा सेहो दइ छइ। कतऽ सई सब होइ छइ। अतऽ कहइ लेल अपनि सरकार, आ इलाजक कोनि इंतजाम नहि।

खेलौनीकऽ जहिया देह मे हुब्बा छलइ, ब़ कानि ता बनि छल। अपनि समाज मे ओकर बात अंतम होइ छलइ। ककिको पर हाथ उठबो मे ओकरा सोचऽ कऽ नहि प़ इ।सब कहइ- अकर हाथ छुटल छइ।ई हाथ एकदन्नि मे नहि छुटलइ। अकर नि रआत

रामजीिि क्संह कतऽ सभेल छइ।

रामजीिि क्सह कलामी लोक छलाह। गाम मे सबसं बेिी गाछी कारछी छलइि। अही गाछी बाटे सब सोलकि क्ि- मैदाि लेल सरेह मे जाइ छलाय। जे किी तरी कमरी की केलकइि, ओकर बाध मे जेबाक रस्ता बन भऽ जाइ छलइ। गाम मे पहीि उिके धिरोपिी होइि, ओकर बाद ककिको खेत मे हाथ लगइ। ओक्ि कटिीकऽ समय मे सेहो होइ।उिकिर खेत मे खेलौिकऽ महीस ककछु जजात कजयाि कऽ देिि रहइि।अइ लऽ कऽ खेलौिसरामजीिि क्संहकऽ बेटाकऽ बहस भेलइि। ओइ पर तमसा कऽ दु हाथ रामजीिि क्संहकऽ बेटा , खेलौिि पर चला देलक्खि। ओतइ खेलौिकऽ संघक्ताया, ओकरे टोलक रमरक्ताया सेहो घास गढ़ई छल।रमरक्ताया दौरल एलइ खेलौिकऽ बचबइ लेल। आब की छलइ, रमरक्तायाकऽ देखते, खेलौिकऽ की जाि की भेलइ। पक्हि तऽ चुपचाप माइ खा लेिि छल।बात खत्ते जेका छलइ। ओकर महीस जजात कजयाि केलकइ, तऽ ओकर जुमािि मे माइ खेिई बिवि छलइ।ई पाठ ओ बच्चेसपढ़ि छल। लेक्कि ओइ क्ि तऽ दोसरे गह लिि रहइ। खेलौिकऽ हाथ मे महीस चरबऽ लेल छऊंकी छलइ।ओ सटासट चाइर छऊंकी, रामजीिि क्संहकऽ बेटा पर ससाइ देलकइ। क्चकरइत रामजीिि क्संहकऽ बेटा परेलाह।उिकिर क्चकरिई पर उपरसरमरक्तायाकऽ हंसी छुइट गेलइ।

ओ पक्हले बेर क्सयाि बाबु भैय्याकऽ कपटाईकऽ बाद क्चक्चयेिई सुििि छलइ। ओकर समाज मे तऽ दस- बीस छऊंकी खेलाकऽ बाद किी मिी आिज विकिलइ छलइ। अतऽ तऽ एके

छऊंकी पर छटपटाय लागल। कथीकऽ मरद हइ, से नि जाइि।

खेलौािकऽ बाप हमरा कतऽ दौरल आयल छलइ।पर - पंचयती भेलइ। सािल ईएह छलइ- पर्कि हाथकऽ उठेलक?

जमाि बदइल गेल छलइ। खेलौािकऽ समाज मे कै टा लाठी भऽ गेल छलइ। आब गल्ती सहीकऽ फरीछौता हुअि लागल छलइ। एकतरफे फैसला िि होइ, चाहे कयो होइस।

अही आधार पर खेलौाि बाइच गेल। माफी माइग कऽ छुइट गेल।

आब ओकरा रामजीाि संह बाला गटीसतरऊका दुश्माि भऽ गेल छलइ। ओाि गामक हीरो ओ भऽ गेल छल। आब ककिो मजाल िि जे ककरो पीट दैस।खेलौाि अगल बगल गाम मे आब पंचइती मे जाय लागल छलाय। सब ओकर चन्हि लागल छलइ।

अइ माइ बाला घटािकऽ बाद रमरक्षाया जे िहर ओक्हाि मोि बदलऽ आयल छलाय, अतइकऽ रही गेल। खेलौािकऽ संग ओ रहअ लागल।कऽ ककरा रखलकइ, से िि फुजलइ। ओाि कहऽ बाला ईहो कहइ छइ जे खेलौािकऽ ई रामजीाि संहकऽ बेटाकऽ मारऽ बाला करेज देख कऽ , रमरक्षाया अपािकऽ ओकरा विहुछ देलकइ।

ओकर बर, कादागरी लेल एलइ तं गऊंआ सब बेलगा देलकइ।ई रमरक्षायाकऽ सब बाझ बुझई छलइ, ओकरासचाइर टा बेटा भेलइ खेलौाि के।

रमरक्तयाकऽ सोभाि एहि छलइ जे िवि अपि साऊस तर रहल आ िवि पुतउहे सब ओकरा संग रहलइ। दु टा बेटा ड़ इिरी करय छइ आ एकटा घरभुजाकऽ दोकाि खोलि छइ। चाक्रम जे सबसं बेिी पढ़ि रहइ ओ एकटा क्चराि - क्मल मे मुंिी छइ। सब अलगा-अलगी छइ। जाबइत रमरक्तया जीबइत छलइ, खेलौिकिऽ िवि कोिि क्दकत छलइ।ओ क्कछु ि क्कछु कमाइये लइत छल। ऊपरसबकरी पोसि छल, मूंजक डक्लया बीिवि छल,एकटा माल सबक्दिि पोसबे केलक आ ऊपरसरोपिी- कटिी मे काज भेक्टये जाइ छलइ।

रमरक्तयाकऽ कोि बेमारी भेलइ से िवि जाइि........दसे क्दिक जा बोखार मे ओ चइल गेल। खेलौिि सोचते रही गेल, पाईिट मे क्िहये देखा सकलइ ओकरा। सरकारी मे देखेबा मे भइ भइ क्दि लाइग जाइ छलइ। तखिि खेलौिि लऽ जाइ ओकरा।कयेक बेर तऽ रमरक्तया अपि ककरो दोसराइत मे लऽ कऽ चइल जाइ छलइ। िवि बचबाक छलइ, तै िवि बचलइ रमरक्तया।

गरीब गुरबाकऽ कक्हयो ब़ का बीमारी थो बे होइ छइ? ब़ का बीमारी ओ भेल , जकर ईलाज मंहग! बीमारीकऽ पता तऽ जाचसहोइ छइ। जतेक पैभ बीमारी, ओकर जाच ओतेक मंहग। गरीब लोक तऽ डागदरेसि देखाइत, जाच ओकर बुतासबाहरक गप होइ छइ। उएह भेलइ रमरक्तया संग। डागदरसतऽ खेलौिि देखेलकइ, मूदा जाच िवि करा सकलकइ। कराईयो लइतइ त की क्दल्ली बम्बइ ओ लऽ जा सक्कतइ। ई जे मोि मे अफसोस होइतइ, ओइसिीक रमरक्तया चक्लये गेल।

खेलौि काज केिईई रमरक्तयाकऽ जीक्वते छोव देि छल। आब खेलौिकऽ बेटा सब कतऽ खेबाक पारी लागल छइ।

भोजि तऽ दुि साझ भेट जाइ छइ। चुि-तमाकुकऽ ओकरा तलब छइ। ओइ मे क्दकदारी भऽ गेल छइ। देह आब चलइ र्वि छइ। बेटा सब खेिईकऽ अलाि क्कछु देबइ लेल तैयार र्वि छइ। ओिि सरकारी ललका काडषओकरा बिल छइ। ओइ पर चाऊर, गहुम सब भेटई छइ। जकरा मे रहइ छइ, ऊयाह बेटा कोटा उठबइ छइ। सरकारक सौ क्दिि काज करौवहिार मे खेलौिकऽ िमि सेहो छइ। सरकारी पोखइ कऽ साफ-सफाई मे चेक बइि गेल छलइ। आब बस ओकर एकाउंट मे अबइये बला छलइ क्क कोिि मूंहझौसा कलक्टरकऽ विकाइत कऽ देलकइ। आब इन्क्कोईरी बइसल छइ। पाइ फईस गेलइ।तै कििक क्दकदारी मे अइछ।

हम सोचऽ लगलऊं। कोिि पाइ फंसलइ? अकरा चलल तऽ जाइ र्वि छइ। जि बवहिार मे िमि छइ? पोखइ मे कोिि काज भेले र्वि छइ। आत्मविशास देखू अकर- देर सबेर पाइ भेटबे करतइ। बस ताबइत चुि तमाकु लेल क्कछु चाही।

खेलौि बाईज रहल छल-

हम आहा कतऽ छोव कऽ दोसर घर र्वि धेलऊं।अतउ आब पक्िि बाला चुहचुही र्वि छइ। पक्िि कतेक तरहक काज होइ। माक्लककऽ अपि िकरी र्वियो छलइि तइयो दु लोकक ऽ रोजगार दइ छलक्खि। आहा सब पईढ़ क्लख कऽ हाक्कम भऽ गेलऊं, लेक्कि ककरो रोजगार र्वि दऽ पेलऊं। कथीकऽ

हाक्कम?

हम सोचलऊं जे कतेक अकर उपदेि सुि। हमरे दलाि पर बइस कऽ हमरे कही रहल अइछ जे पक्कलका चुहचुही आब एतऽ िवि छइ। कोिि जि बवििहार िवि खइट रहल अइछ। सब तऽ मििखब पर दऽ देल छइ।कऽ खटतइ। जिऽ क मजुरी ततेक ि भऽ गेल छइ, जेकऽ सकताह खेती करबाि मे।

हम कहक्लयई- ई पाइ क्लयह। चुि तमाकु कीि लेब। आहाो बुढ़ा गेल छी। टीिि अयबाहकऽ िवि काज।

खेलौिि परिमि पाती कऽ कऽ चइल गेल।

जाय काल टीिि पर अबइ छी तऽ खेलौिि गुमक्तये लग भेटा जाइया।हमरा ओकरा देखते फेर मोि खौझा गेल। फेर अकरा पाइ चक्कयई..........हमर कांड ई िवि छोडते.......थेथर भऽ गेल अइछ........कहि रक्कयइ िवि ओ, तखिि आइब गेल। अतेक बुढ़कऽ कोिि ऊिचि कथा कहबइ- हुं हा करइत रहलऊं।

ओ कहलक-

ढेबराकऽ बेटा अतइ टीिि पर क्टकट कटई छइ। ओकरे लगसहम आइब रहल छी। रेि एक घंटा लेट अइछ। हम ईएह बतबऽ जाइ छलऊं।आब आहा आइब गेलऊं त चलु टीसि पर बइसब।

स्टेिि पर रेि लेट हेबाक कारर भी बेिि छलइ। खेलौििकऽ देक्खते ढेबराकऽ बेटा एक गोटाकऽ इििरा केलकइ। हमरा सबहक लेल तीिि टा कुसी कतउसआइब गेल। फेर लस्सी। कििि काल मे चाह सेहो।बच्चा सब लेल कुरकुरे।

कतबो पाइ देबऽ चाहलयई, ओ सब विि लेलक।

खेलौिकऽ समाजकऽ चाइर गोटे तऽ टीि पर दोकाि खोलि छइ। खेलौि सबकऽ हमर जयबाक बारे मे बतेि छलइ।लोक एकाएकी अबइत छल। हमर धीया पुता ई आदर देख कऽ अचम्भुत छलाह।ओकर हम बादेवि या माल्लक भेल्लयई। रेकिऽ अबाते देख हमर हाथ जेबी मे गेल आ जे भी पाइ रस्ता लेल अलगसरखि रही, ओ बंद मुटी मे आइब गेल।हम ओ मुटीकऽ खेलौिकऽ जेबी मे हाथ दऽ कऽ खोइल देल्लयई।

रेि पर सब सामाि हाई हाई कऽ कऽ रखा गेल छल। खेलौि कहलक- हम आब ओतमे छी बौआ जे आहाकऽ चहुंपाई लेल अबइ छी। अही लेल हमर बेटा सब हमरासबखखयाल रहइत अइछ।हमरासअइ अंत काल छो ल हैत।हम पाइ लेल विि, सेहि लेल अबइ छी। ओइ बुढ़ा माल्लक- मल्लकाइकिऽ याद मे अबइ छी।उकिर कजा चुका रहल छी।

हमर बच्चा सब सेहो गामक पैघ बुजुर्गकऽ जेि पैर छु कऽ आिीदी लइ छलाह, ओक्हि खेलौिकिऽ सेहो पैर छुबइ गेलाह।

खेलौिकऽ आंईख छलछला गेलइ-

जाऊ जुग जुग जीबइ जाऊ।बऊआ माल्लकसभी पैघ हाकम बि जऊ। हमरा जिकऽ विि कसरब।

खेलौि ठीके कहइ छल। जाबइत ओ अइछ, ताबाते ि "बौआ माल्लक "। आब गाम गेला पर दोसरकऽ कहत। चुि तमाकुल की, कतबो पाइ देला पर कयो अतेक आबेि करत आ बौआ माल्लक

कहत।ई ओइ पीढ़ीकऽ अंक्तम लोक अइछ। आबऽ बला जमाि, पोक्थये टा मे पढ़तइ, जे खेलौि जेका लोक समाज मे होइतो छलइ।

टीिि पर क्बदा करय लेल खाली खेलौि ठार अइछ। आर क्कयो गोटे िवि आयल छक्थ। हम क्किको छो़ अ जेबइि ि, तखि ओ सब अऊताह। अतऽ तऽ बरोबरी बाला गप छइ। पाइये सही, आक्खर खेलौि मे अतबा माशयषतऽ भेलइ। खेलौि तोरा हम चाक्हयो कऽ िवि क्बसरबऊ।

कल्पवास (लघुकथा)

दहि बाबुकऽ आंगासिबडड इच्छा रहइि - " एक बेर कल्पवास कवरतऊं "।

उकिर हिरे- सासुर सब मास क्दकि लेल कल्पवास कोि छलइि।ओइ कल्पवासिक समय भोगल वजगिी, संत महात्माकऽ बोल- चिि, लोकक भी , सावकिि जीिि, साधु संतक ब़ का ब़ का टेट, कुंभ मे लोकक रेला, ओ मोरक पंख, लोहाक हासु, लोककऽ हरेिाई आ हरेला पर तकिाई, सरकारक बेबसथा, हडडी गलबऽ बाला जार, भीजल जारइि, ईटाक चुिा, साझक बजार, तरकारी बाली सबहक मोल मोलइ , ओ मोटरा- मोटरी, ओ ठगहा सिमी, ओ िस्तुजातक चोरी, अहीि कतेक रास क्खस्सा वहािी ओ सुिि छइथ।

सासुरकऽ लोक गेल होइथ िि िहर के, क्खस्सा एकरंगाहे। कल्पवास उकिा अपि क्दि सम्मोक्हत करय छलइि। ओ एक दु बेर पक्हिहो मोि मोि जायकऽ तैयारी केहिो छलीह लेक्कि ऐि मौका पर कोई ि कोई वघि बाधा सामि ठार भऽ गेलइि। वि जा सकलीह, मोि मसोईस कऽ रही गेलीह। अपिकिऽ मििलीह- ओिि अखइि तेहि बुढ़ थोरबे भेल छइथ, कल्पवास कोि भागल जाइ छइ।

आब सब वजम्मेदारीसमुक्त भेली अइछ। ओिि त भइ जीिि क्कछु ि क्कछु लगले रहइ छइ।दुि बेटी अपि सासुर बसई छइि। बेटाकऽ िीक िौकरी छइि। दु बरखक पोतो छइि। क्दल्ली मे बेटा-पुतोहु रहइ छइि।िइत, िििि आ पोता भेलाक बाद उकिा लागऽ

लगलइ जे आब बुढ़ भऽ रहल छइथ।

ओि देह- दिसिीक छइथ। कयो वि कहतइ जे घरबाला ीकरीसक्रटायर कऽ गेल छथीि। ओि ई दहि बाबुकऽ उपराग मे कक्तो छवथि- आहा क्टायर भेल छी, हम वि। से मोि राखु।

कहलो गेल छइ जे पोता भेलाक बाद सिगिष रस्ता सीधा खुईज जाइ छइ।

ईएह सिगिषसुिला पर तऽ कल्पिसिक धुि सिरि भेल छइि।अइ बेर सोइच लेि छलीह जे कछु भऽ जाय माघ मे पयागराज जेबे करतीह।एक दु टा धरम करम बाली बुढ़ी सबकऽ दोसराइत लेल पुछबो केलवखि, लेकि ओ सब वि तैयार भेलवखि।अंत मे हाक् कऽ दहि बाबुकऽ कहलवखि- " आहा हमरा कल्पिसि मे जा कऽ छोव देब आ फेर एक महीि बाद लऽ आिब"।

से कयैक?

हम कै गोटेकऽ कहक्लयवि, कयो संग दइ लेल वि तैयार भेल।

अरे हम छी ि। हम संग देब!

सकारात्मक रबाब भेटला पर दहि बाबुकऽ कवया किि आर जोिली। बजलीह-

से तऽ हमरा बुझल अइछ जे आहा संग हमर देबे करब।ओहीसत कहलऊं।

मूदा हम छोड़व कऽ कि आयब?

कियैक?

डर होइया। आहा कोनि बहुर नाया साधुकऽ कि नाछो धअ लेबइ।

आब कतऽ जायब। ओतऽ हम धरम करऽ जाइ छी। एहि कि छी जे कियो बहला फुसला लेत हमरा।

बात बात मे दहि बाबु अपनि कल्पासि जयबाक इच्छा जतेलखिन।

आब की छलइ। उकिर कनिया तऽ खुशिसझुमअ लगलीह। सब बेटा बेटीकऽ अपन जायकऽ बारे मे बतेलखिन।

सब बयस भेला पर बदलइत अइछ।दहि बाबु घरो मे कनियो पूजा पाठ कि केलाह, ओ मास कदकि लेल कल्पासि करऽ जा रहल छथि। सबकऽ अचरज लगलइ।

अवाले कदि इलाहाबाद बाला रेनि मे वरजनिकिऽ वटकट अवाती-जयतीकऽ करा लेलाह। समानि सबहक कलस्ट बनि लागल। जे बुढ़ी सब पहिन कल्पासि केने छथि, उकिा सबसबीकनंग पर बीकनंग दहि बाबुकऽ कनिया लऽ रहल छलीह।जायसएक हफ्ता पहिने सब जर रतकऽ समानि कीनि गेल छलइन। इलाहाबाद मे एकटा सीधा संबंधी तऽ कि, लेकिन जो हुआ तऽ अबस्से कहबइन, उकिर पता आ फोनि म्बिर सब लऽ लेनि छलाह। उकिासएककदि फोनि पर गप्प सेहो भऽ गेल छलइन। हुकिा अपन आबऽ कऽ पोगाम बता देनि छलखिन। कोनि की

स्टेिसगंगा कात जेबाक छइ, कतेक की भा ा लगतइ, कोि आ कते पाइ मे टेट भेटतइ, सब बुइझ- सुइझ लेि छलाह।

दहि बाबुकऽ कवियाकऽ होइि की आब तऽ ओ सोझे सिगे जेतीह। ओकरे लेल रस्ता सब बइि रहल छइ।

जायसएकक्दि पक्हि सब धीया- पुताकऽ " आलदऽ बेस्ट आ हैप्पी जिी" बाला फोि सेहो एलइि। आइ ओ ििी-दादी बाला खा ी मे अपिकऽ असली मे बुइझ रहल छलीह।

जखइि घरसक्बदा भेलीह तऽ भइ क्दअयद क्बदा करऽ आयल छलइि।बुझा रहल छलइि जे कोि जंग मे जा रहल छइथ। लोक सब कुंभ आ कल्पािसक सुिल सुियल गप कहइि आ डरबइतो रहइि। दहि बाबुकऽ कवियापर अकर एक िबको असर िवि छलइि। उिका दहि बाबुकऽ अफसर बाला रौब पर भरोसा छलइि। जे काज ओ हाथ मे लइ छलाह, सफलता भेटते छलइि। चाहे बच्चा सबहक एडक्मिि होइ, रेि मे जतरा होइ, बेटी सबहक कथा िता होइ, सब जगह ई गोटी लालकऽ कऽ घुरल छलाह।

रेलि टीिि पर छोे अ लेल एकटा भाक्तज आ उिकर कवियामोटरसआयल छलक्थि।एसी बोगी मे क्रजिि छलइि। बेिी भी भा िवि छलइ। अपि आरामसदुि बेकती क्रजिषसीट पर बइस गेलाह।

जखइि अवाला क्दि भोरे इलाहाबाद पहुंचलाह त देखइत छइथ जे एक गोटे उिका सबकऽ लेबइ लेल स्टेिि पर ठार छक्थ। ई ऊयाह व्यक्क्त छलाह क्जिकर क्पतासदहि बाबुकऽ गप भेल

रहइि।ओतऽ सओ सब सीधा संगम गेलाह, जतऽ कल्पािसक लेल टेट सब लागल छलइ। पर्व्हिेसइिका सबहक लेल एकटा टेट ठेकाियल रहइि।ओ व्यक्त फाइिल अइसर्वि केि छलाह, इिका सबकऽ केहि ाीक लगतइि?

बढ़्या जगह पर ओ टेट लागल छलइ। सब जगह ओतऽ सलगे छलइ।थो`क काल मे इिका सबकऽ व्यािस्थित केलाहकऽ बाद ओ व्यक्त चइल गेलाह। उिकर अ्ुसार कल्पािसीकऽ कछ्ु काज आइब कऽ ओ अपि खाता मे धमर्कऽ डेब्ट कऽ रहल छलाह।

कतउ भी स्थाीिय अपि लोक रहलाह पर सब कछ्ु आसाि भऽ जाइ छइ। अखइि पत्यक मे ई सब देखलाह।थो`क काल मे चुिा ज़ ा कऽ चाह बिबइ गेलाह आ पीयई गेलाह। भािस भऽ गेल, तऽ बुझु सब भऽ गेल। बदली बला सरकारी ािकरी मे उिका सबकऽ अकर अ्ुभि छलइि। सबसपर्व्हि, घर मे घुसते देरी ओ भंसे घर मे जाइ छलीह आ जै चुिा रहइ, ओकरा पजाइर कऽ चाह बिबइत छलीह। अतउ ओव्हि भेलइ।

अवाला व्दि सौ अपि अइ बालु परहक दुवियाि्र भऽ गेल छलइि। गंगाजी मे पातः स्ािसव्दचियाि्र होइि। व्दिभर पूजा पाठ, भजि, खेिाई बि्ािई, आ गप्प सरका मे बीतइ। अदु्ते अ्ुभि रहलइि। केिा भोरससाझ भऽ जाइ, कवियो ििव बुझाई। कोिा तरहक विकार मोि मे िव अबइ। सुआइत ि लोक मास करऽ

अतऽ अबइ छइ। क्दि हो या राइत, चार कात इजोते -इजोत, अलगे दुविया छलइ। कोिा ओहि सुविधा िवि रहिहो, खुब िंद होइ आ भुख सेहो लगइ। गंगा माईकऽ कृपा ठीके अपरम्पार छइि, ओव्हि उकिर मव्हमा।

सुयास्तसपव्हिहे अतऽ लोक रतुका भोजि कऽ लइ छल। ओकर बाद साधु संतक पिचि सब सुविित छल। कतउ कतउ भंडारा सेहो लागल छलइ। इकिा सबकऽ पूिक संस्कारकऽ कारर लंगर मेकऽ खेिाई खाइत ठीक िवि बुझेलइि। ओिा खाय बला पसादयकहइ छल। ओ सब अपि बिबइत आ खाई छलाह।

पाचे सात क्दिकि बाद त कैक पवरक्चत लोक भेटा गेलखीि। आब त सब कवयो एकदोसरक टेट मे जाय आबऽ लागल छलाह। ई कल्पबासीक िब दुविया बइि गेल छलइ। कवयो साते क्दि लेल आयल छल त कवयो दु हफ्ता लेल, कवयो कविकिो पहुंचाबइ लेल त कवयो कुिल केम्प लेबऽ लेल। सब अपि दुविया मे रमल छल।

दहि बाबुकऽ कवियाकऽ तऽ कयेक टा मैथलिाि कवन्हार पवरचयबाली सब भेटा गेल छलवखि। पईच उधारी सेहो गाम जेका मऊगी महाल मे िुर भऽ गेल छल। दहि बाबु चुपचाप सब देखइत रहइ छलाह। उकिा होइि जे अतउ उकिर कवियाकऽ सब ठइग रहल छइि।ऊमहर कविया उकिर कल्पािस मे दाि-पुण्य करबाक चाही, सैह सोइच कऽ देब लेब करय छलीह।

साझ मे एकटा संतकऽ पचि मे ओ सब जाइत। ओ कहइ-

ई संसार मिथ्या थीक। बेटा-बेटी,अपि आि सब भम छइ। जे सच छइ। ओ आत्मा छइ। ईएह अचर, अजर, अमर छइ।

कखियो ओ संत पचि मे कहइ छइ-

ई सब माया छइ। आहा संग ई लोक तकि तक सटल अइछ, जाबइत ओकर सिथष आहासजु ल छइ। जखिये मतलब खत्म,ओ घुरियो िव ताकत।संगकऽ रहत? ओ रहत अपि सदकमष अही सदकमषकऽ रस्ता पर कोि चलब? ओइलेल अपि सषि समपषकऽ भाि जगाऊ भगिकि पक्ष।

अखिि ओ संत तरह तरहकऽ खिस्सा कहािी सब कहइ। ओकरा अिुसारे "अप्पि" कुछु िव छइ। जखि अइ देहेकऽ भरोस िव त आर दोसर कथी के,?

ओ संतक बारी मे तऽ कठास घोरल छलइ लेकि ओकर िब्द दहि बाबुकऽ कवियाकऽ लोहछा दइ छलइि।बाकी सब पर ओतेक रंज िव होइि, जखइि ओ बेटा-बेटी पर कहइ, त ओ इिका कविको िव वाराइि।

एकब्दि ओ पचिि मे कहइ छल- " म्ुक्खि अपि सिथिषलेल ई माय- बाप आ संतािकि जाल बिबइत अइछ। जालकऽ फेर पोखइ मे फेकइत अइछ.......... जाबइत धइ ओकरा माछ फंसइत रहइत छइ............जाल िीक बुझाई छइ। जखि जाल मे माछ िवि फंसलइ, ओ जालकऽ ऊल्टबऽ - पल्टबऽ लगइत अइछ। ओकरा होइ छइ जे जाल मे कोिि दोख छइ, ताब्ह लेल माछ िवि फंसल। दोसर - तेसर जाल बदलइत रहइत अइछ।ओ पोखइ मे िवि तकइत अइछ जे ओइ मे माछ छइ िि िवि। माछ िवि जाल मे फंसलाक कारर पोखइ मे माछक िवि भेिइ सेहो भऽ सकइत छइ।

ओब्हिि ई संसार छइ। जाल भेल सिथिष जाबइत माछ जाल र पी सिथिषमे भेटइत रहइ छइ.........ताबइत सब िीके छइ। जखि िवि भेटलइ, ओ बदइल लइत अइछ।अतऽ पोखइ अइछ आहाक सदकमष ऊयाह आहाक काज पुरा करबइत अइछ। दोसर क्कयो क्कछ िवि करइत अइछ।आहा ई झुठहाकऽ मोह-मायासर्वकिलु। अइ लोककऽ ज्यो िवि सम्हाइ सकलऊं, त ओइ लोककऽ सम्हार । आहा जर रतमंदकऽ क्कयउ, िवि की अपि कहल सखा- संतािि के। आहाौ अखिि देख सकइ छी। मूदा आहाके आंईख पर संतािमोहक पदा लागल अइछ.........ओ िवि क्कछु देखऽ देत।

अब्हिि ओइ महात्माकऽ पचिि सुइि कऽ दहि बाबुकऽ

कवियाकऽ मोनि कनी काल लेल कुल-डुल जाइ छलइनि।फेर मोनि मे अबइनि, भऽ सकइत होइ अइ सधुबा संगे बीतल होइ, तैं अपनि राग अलापइत रहइत अइछ। दहनि बाबु त पचिकि समय टेट मे आराम कऽ कऽ बीतबइ छलाह। ओ निनि अइ पचरा मे फंसई छलाह।

समय कतउ रकलइया। कलमासिक मास बीत गेलइनि। आबऽ काल मे बैग मे भंसाक समानि भरल आ आब सनिसिभरल। मोरक पंख, लोहाक निस्तुजात,कयेक जगहक विमाल, पसाद, गंगाजलसभरल बैग लऽ कऽ टीनि आयल छथ्थ, रेनि पक ई लेल। तखइनि पता चललइनि जे उकिर रेनि तऽ कुंभ लऽ कऽ कैक्सल भऽ गेल छइनि। आर जे कीछु कचन्हल जालि लोक सब छलखनि, ओ सब कदल्ली जा रहल छलाह। उकिर सबहक रेनि मे कजिनिनि छलइनि। ओ सब आगह सेहो केलखनि। दहनि बाबु सोचलाह जे कदल्ली मे उकिो बेटा छथ्थनि। अखइनि अतइ चइल जाइ छी.......संगत अइछ। मास कदनि निकसबीतल........ जतरो निक रहत।ई जे सनिनि सब छइ, अखनि दऽ देबइनि। ओ मंकदरक विमाल माथ पर सबकऽ टटका टटकी लाइग जेतइनि।कटकट लेलाह आ कदल्ली उकिर सबहक संग आइब गेलाह।

आब दहनि बाबुकऽ कविया कदल्ली टीनि परसबेटाकऽ फोनि केलखनि जे हम सब टीनि पर आयल छी।आइब कऽ लऽ जाऊ।

बेटा तामसे घोर भऽ कऽ फोनि पर रबाब देलखिन-

हम सब दक्कर भारत आइ जा रहल छी। आहा सबकऽ पहिने बतबऽ कऽ छलाय।एनि कतउ हुलेले होइ छइ। हमर सबहक ई टूर छह महीनि पहिने बनिल छल। आहाके गामक टिकट छल त इमहर कऽअए एलऊं।

जे बुझाइत अइछ कर।हम अपनि यात्रा निनि कैन्सल कऽ सकइत छी।फोनि पर पाछुसपुतोहुकऽ बरबराइत असमनि बात सेहो सुनि रहल छलइ।

दहनि बाबुकऽ कनियाकऽ चेहराक भानि देख कऽ पता लाइग चुकल छलइ जे की रबाब भेटल छइनि।

पटनिकऽ दोसर रेनि लागल छलइ। दहनि बाबु ओकर टीटी लग गेलाह। अपनि परिचय दइत दु चाइर टा रेलनि अधिकारी सबहक बारे मे कहलकनि। ओ टीटी, पटनिक टिकट दुनि गोटेकऽ बनि देलकइनि आ अपनिबाला सीट एसी बोगी मे दऽ देलकइनि।

दहनि बाबुकऽ कनिया कहलखिन-

हमरा आहा पर भरोसा छल जे आहा रस्ता निकालबे करब।

हम आहाके ि ि छो ब।अतउ गोटी लाल करबे केलऊं।

आब दहि बाबुकऽ कवियाकऽ ओइ साधुकऽ पचिकि सब िब्द मोि पड़ रहल छइि। सब सिथिक संग छइ- संतािि सेहो।कियो ककरो संग तखि तक छइ, जाबइत सिथिष पूर्ण भऽ रहल छइ। विशाथषऊयाह परम बह अइछ।ओकरा पर यि अपयि, िीक बेजाय, उचित अिुचित , लाभ हाि सब छोव क्यउ आ जतऽ जेि जहीया तक राखय.....खुिी खुिी रहु।जीिि रेतक टीला अइछ, अइ पर वि कोिी घमंड आ वि राखु कोिी भम।

कलमािस इिका सबकऽ जीििकि पाठ पढ़ा देि छलइि। आब मोह मायासअपािकऽ परे बुझइत गाम घुइ रहल छलाह। कक्या तक ई कलमािसक पभाि रहतइि, से वि जाइि।

बच्चाकि बचि (लघुकथा)

बच्चि मस्तमौला सोभाकि छल।गामक लोक त उकिा महादेि सेहो कहइ छलइि। मस्त मलंग छलाह। बेिी कांता बेगरताकऽ चकर मे िवि प़ ई छलाह। िीक बेजाय जे बुझाई छलइि, मूंहे पर कह दइ छलखि। अही दुआरे कयेक लोक इकािसदुरे रहइ छल।इकिा ओकर कवकिो परबाह िवि छलइि जे ,कऽ उकिा लेल, की बाईज रहल अइछ।

ईएह सोभाकि कारर घरक लोक सेहो आवजज रहइत छल। जतऽ काज करय छलाह ओतउ बेिी लोक इकिासपरेिािि छल।ई अलग-थलग अपि परल रहइ छलाह। इकिा ओतेक हाब- वडबी रवहतो िवि छलइि। भगािकिऽ त ई पुछते िवि छलाह, मिुक्खक लेखे कतऽ ।

ओिा अइ वकित सोभािसकतेक लोक इकिर पिसक सेहो छल।अपि दुविया छलइि। ओही मे ओझरायल रहइत छलाह। कहयो िवि , अइसबाहर जयबाक कोिा शम केलाह।कयेक बेर एहि ि सच गप ककिो सामिहे कह दइ छथि जे अगलाकऽ पचेिाई मोश्किल भऽ जाइ छइ।ई सब गुर - अिगुर रहला बादो मलंग जेका अपि जी रहल छलाह।कयो "बच्चि" कहइि त कयो "बचि"सकाज चला लयैह।

बचकिऽ कयो आइ तक कोनो मंदिर मे माथ झुकबइत नहि देखनि छइनि। पूजा-पाठसँ कोसो दूर रहइत छलाह। समय पर खेला-पीलाह आ सुतलाह। गामक लोक नहि इ कोनो धार्मिक काज मे चंदा मंगइनि आ नहि ई दइते छलखिन। ई सब लोककेँ सोचबा लेल बाबिकऽ दइ छलइ - एनि कयैक। लोककेँ तँ अखुनिकासँ मतलब छइ- टटका टटकी की भऽ रहल छइ। बूढ़ की टा बखस्सा छइ अकर पाछु- जनिबा बुझबाकऽ बेगरते ककरा।

बचकि बाता रामबृक बाबु पटना मे नोकरी करय छलाह। हर बरख महालयासँ एक दिन पहिनि ओ अपन गाम एक मल्हनि लेल अबइत छलाह। दमिनी-दीयाबाती बीतेलाक बाद पटना घुमि इ छलाह। उनकिर घर पर कयेक टा पंडित सब तेरहो अध्याय दुगा पाठ करइत छलइनि। रामबृक बाबु आ हुनकिर बाता सब कयो पुरा बाध - बाधानिसपाबइनि मनिबइ छलाह। मनिता कयैक नहि.......कथीकऽ कमी छलइनि...... भगनिती सब कछु देनि रहल्थिन.......अपन आनि दि लइत छलाह।

रामबृक बाबु सब साल जेका महालयासँ एक दिन पहिनि पटनासँ गामक लेल बादा भेलाह। पहिया जहाजसँ पहलेजा एलाह। ओतऽ सरेनिस मुजफ्फरपुर। आ फेर ओतऽ सबस पकड़ि कऽ गाम जाइ छलाह। जकरा कम पाइ छलइ या सोम पत्निकाकऽ छल ओ सब रेनि ससमस्तीपुर बाटे सेहो जाइ छल। बससँ समय कम लगइ

मूदा पाइ बेिी खचषहोइ।

रामबृक बाबु तऽ भरल पुरल घरक छलाह आ ऊपरसउदार सोभाि के, बसेसगाम घ्ु इ छलाह।भोरे पटिसिचलइ छलाह आ देर राइत कऽ गाम पहुोचई छलाह।मि्आ पुल पर बससउत इ छलाह आ ओतऽ सघर पर सो आयल टायरगा ी पर बइस कऽ गाम। सबसाला र टीि छलइि। सबके बुझल जे कक्या एताह आ कक्या जेताह।व्इत क्दि पर जखइि विि पहुंचलाह तऽ टायरगा ी बैलबाि सक्हत भइ राइत मि्आ पुल पर इंतजार कऽ कऽ गाम घुइ गेल।

उिकर क्ाता रामकि्ि बाबुकऽ क्ंता भेलइि।इमहर आमहर पता केलाह। कोिी खबर विि भेटलइि। आइ तक एहि कक्यो विि भेल छलइि।अवाला क्दि महालया छलइ। पूजा पाठ सब साल जेका घर मे भऽ रहल छलइि।रामबृक्कऽ पठाओल क्चटी मे सेहो अयबाक बारे मे क्लखल छलइि। कयेक बेर उल्टा पुल्टा कऽ क्चटी पढ़लाह, कोिी आर माि विि वकिललइि। ज्यो ज्यो क्दि क्ातल जाइ , कोिी अिहोिीकऽ डर सताबइ रहल छलइि।

तीि क्दकि बाद दोसर टोल मे क्ासुि बाबुकऽ जमायसपता चललइि जे एकटा बसकऽ भारी एक्सीडेट भऽ गेल छइ। एक्सीडेटक समय रामबृक्क अयबाक समयक लगीचे रहइ। गाम मे

अखबार सेहो तीनि दिन बाद अबइ छलइ..... ओहो मे एक्सीडेटकऽ खबर छलइ। रामवृक्षिक बाबुकऽ कनियाकऽ बच्चा छला चाइर दिन सौं दुध मे जुरबाती जेका बुझा रहल छलइनि। किछु संतानिक कनिक आभास बुझाय लगलइनि।जखनि अखबारक समाचारकऽ चर्चा भेलइ.....चिंता बइढ़ कऽ बेचैनी मे बदइल गेलइनि।

आब सब हाल पता करय लेल कमलनाया आ एकटा दिअयदक पढुआ भाइकऽ कुनि केस पता करय लेल पठानि गेलइनि। अखबारक खबरक अनुसार ई सब जखइनि ओइ अस्पताल मे गेलाह त किछु पता नहि लगलइनि। फेर पुलिस थाना होइत मुदाघर मे लहास सबकऽ देखलाह त ओइ मे रामवृक, उकिर कनिया आ बेटाकऽ ई सब चिन्हलखिन। इनिका सब लग वेनिखतक कोनो कागज पतर नहि रहबाक कारर लहास सबकऽ सुरक्षित राखल रहइनि।आरो किछु तारा- ऊपरी लहास सब चिन्हबा लेल राखल छलइ।तीनि दिन मे लहास सब फुइल कऽ कुम्भा जेका भऽ गेल छलइ। ओतइ कियो कहलकइनि जे छह महीनाकऽ एकटा बच्चा अइ मरल मऊगीकऽ कोरा मे जीयइत भेटल छलइ। आब ओ कतऽ छइ से पता कर।

पुलिस आ अस्पताल बालासपुछला पर पता लगलइ जे एकटा नर्स किया ओइ बच्चाकऽ दुध पीयाकऽ बचयेनि छइ।

ओतइ कयो बाजल- " अतेक बीभत्स आ भीरर एक्सीडेट मे ओइ बच्चाकऽ माय एि कऽ रखि रहइ जे अपि त मइ गेल, मूदा अइ जन्मौटी बच्चाकऽ कतऊं खरोच तक िव ि एलइ।"

कहूि कऽ कऽ सब कागजी खाि पूक्तष भेलाक बाद ओ कमक्तया आ पढुआ भाइ तीिि लहाि आ छह महीिकऽ बच्चा लऽ कऽ गाम एलाह। पुरा गाम की परोपटा मे तक्षया मातम पसइ गेल छलइ।रामकि ि बाबु आ उिकर कवि याकऽ िकसबडड खराब हाल भऽ गेल छलइि। ओइ अबोध बच्चाकऽ देख देख कऽ सब सबुर कऽ रहल छल।

लोक सब अइ बच्चाकऽ देखऽ अबइ। बच्चाकऽ खोज-पुछारी होइत होइत ओकर िमे बच्चासबच्चि पइ गेलइ। ईएह ओ बच्चि छलाह। एकटा खबाक्सि िकऽ सेहो आठ- दस मासक बच्चा छलइ आ ओकरा दुध सेहो खुब होइ। ओकरे रामकि ि बाबु कतऽ राखल गेलइ। ऊयाह खबाक्सि अपि दुध वाया वाया कऽ इिका पोसलकइि।

अइ तीि- तीि टा लहाि सभरल अंगि मे ,कऽ आ ककर पूजा हेतइ। पूजा पाठ बंद भऽ गेलइ। सब अइ बच्चि िकटुअर टुअर कहइ। कयो अइ बच्चाकऽ देख कऽ कहइ - "अर दा रहइ तऽ बइच गेलइ।"

दोसर बाजई- " दुनिया मे अबाते माय बापकऽ खा गेलइ"।"

दस मूंह दस बात। ककरा ककरा मूंह बंद करबइ। रामकान्ति बाबु बाद मे अइ बच्चा लग ककरो नहि जाइ दइ छलखिन।

रामकान्ति बाबुकऽ अपनि होइनि जे भऽ सकइत छइ जे उनिकासँ गलती भेल हेतइन, जेकर सजा भगवान इनिका अइ एक्सीडेंटकऽ रूप मे देलखिन। लेकिन अइ छह मासक अबोध कोन गलती केलक जे ओकर माय बापकऽ ओकरासँ दुर कऽ लेलखिन। ई भगवान नहि छथिन। कथी लेल इनिका गोहरबैयइन। घोर अनिष्ट दुबकी मारनि देखइत रहलाह। आब भऽ गेलइन। ओही दिन सौं रामकान्ति बाबु कतऽ पूजा पाठ बन भऽ गेल छलइन।

कनिक छटगर भेला पर घरे पर मास्टर साहब अबथिन आ पढ़बथिन।

जखइन बुझअ सुझअ जोगर बच्चा भेला तऽ एकदिन रामकान्ति बाबु बच्चाकेँ बजेलखिन-

"आहा हमरा एकटा बचन दियअ।"

कहू।हम बचि देलऊं।

आहा कक्कयो बस पर वि चढ़ब।

ठीक छइ। वि चढ़ब।

जाबइत छोट छलाह बच्चि ताबइत तऽ वि कछु बुझेलइि। गाम लगक स्कुलसमैक्र क केलाकऽ बाद सबसं पक्हि िहर जेबाकऽ जर रत पृ लइि। आगुकऽ पढ़ाइ त करबाक छलइि।

जबाि आबऽ बला छलइि। ओकरे उमंग मे कयेक कोस साईक्कल चला कऽ रेि पक ई छलाह। फेर िहर जाइ छलाह- आगु पढ़बाक लेल।

समय बीत रहल छलइ। बेटा पुतोहुकऽ मौतसिकायल बाबी जक्लद्ये मइ्र गेल छलक्खि।आदमी जिकऽ भरोस पर रामक्रि बाबु अपि टेक धेि छलाह। उिका मोि वि छलइि जे बच्चि िहर जाइथ पढबाक लेल। मूदा क्ाि पढ़ि जीिि जंजाल भऽ जइतइि। लोकक समझेला बुझेला आ बच्चिकिआगु पढ़बाक मोि देख कऽ िहर मे पढ़बाक अिमक्त दऽ देलक्खि। दु बरख क्ातइत क्ातइत रामक्रि बाबु सेहो परलोक क्सधाइ्र गेलाह।

आब बच्चि बीए केलाकऽ बाद गाम आइब गेल छलाह। क्ाि बसकऽ कतउ आब जाय बला" बचि" उिका बडड भारी बुझा रहल छलइि। कयेक लोक कहलकइि-

" बचि" देबऽ बाला तऽ अपि चइल गेलाह।आब आहा बस पर चईढ़ सकइ छी।कऽ देखत आ कछु कहत। जाऊ बस पर चढु।

जतबे लोक उिका बच ि तो बाक लेल ऊकसबइ ि, ओतबे ओ वजकदअयइत गेलाह। ि वि चढ़लाह बस पर।

ओ तऽ धि कहू जे िबका पाईिट कालेज दु कोस पर खुईज गेल छलइ। ओही मे कि छु पाइ दऽ कऽ करा िकऽ िकरी भेट गेलइ ि। बियाह दा ि सेहो बगलेकऽ गाम मे केलाह। महफा मे बइस कऽ बियाह करऽ गेल छलाह।

बस बाला" बच ि " बढइत बढ़इत मोटर तक पहुंच गेल छलइ ि। ओ मोटर मे सेहो ि वि कक्हयो बइसलाह। बाद मे कालेज सरकारी भऽ गेलइ। बाद मे बक्ढ़या दरमाहो भेटअ लगलइ ि। धीया पुता सब तऽ बस आ मोटर मे जाय लगलइ ि। बच्चि अपि आ कवि या हु िकर, सेहो बस आ मोटर मे ि वि बइसई छइथ।

कहऽ मे बडड आसा ि छइ जे की हेतइ ि वि बइसला सं। मूदा आइ एहि कयो भेटत जे बस आ मोटर मे ि वि बइसल होइत। बच्चि अख ि अप ि" बच ि " वि भा रहल छथ्थ। उिका भग ि ि भग तीसईएह वि काइत छइ ि जे अइ अबोधकऽ जन्म लइते ओकर माय बापकऽ कअए अप ि लग बजा लेक्लयई। ई केहि न्याय। आहा न्याय ि वि कऽ सकइ छी त हमहुं आहाकऽ भग ि ि ि वि मा िब।

अजुका लोककऽ जखइ ि बच्चि करामक ि ि बाबुकऽ देल बच िकऽ वि भा िअकऽ परक बारे मे पता चलइ छइ ि त आदरससबहक माथ उ िकर सोझा झुईक जाइ छइ ि।ओ ि कहऽ बाला मथक्छनु सेहो कहइ छलइ ि।

बच्चा किदु िबेटीकऽ िक घर- बर, क्ह किर बचबिद गुरक पक्सक्द सभऽ गेलइि। आब एकटा बेटा छइि जे मोटर मे चढइ छइि आ िहर मे रही कऽ पढ़ाइ कऽ रहल छइि। भगाि मे ओकर आस्था छइ, लेक्कि बाहरे बाहर ओ भगाि किऽ गोर लगइत रहइया........घर मे अकर अखइि तक िवि कोिि सुरसार छइ।

आब िवि बचि लेबऽ बाला लोक भेटताह आ िवि बचि विभाअि बला लोक।

रखबार (लघुकथा)

गामससमाद आयल छल- " हवरया आब घर पर वि रहइत अइछ। कोि लोकक बेबसथा आब करऽ पि तह।"

ई समाद पर मोि वभना गेल। आइ तक वदमागो मे वि आयल छल जे हवरया हमर घर छोव कऽ चइल जाइत। सबसं पवह तऽ एकटा रखबारकऽ राखऽ पि त। चोरी- चहारी कऽ हल्ला अलगे गाम वद बइढ़ गेल छइ। मुिई बाबु ओहि दबंग घर, वजकिर बेटो भारतीय पुवलस सेिकऽ अवधकारी छइि, चोरी भऽ गेलइि।

चौकीदारकऽ जाि पर आफत बिल छलइ। पुरा वजलाकऽ थाि- पुवलस आयल छलइि।

वकछु भेलइि?

वकछु वि भेटलइि।

उपरसअइ हावकम सबहक आयल गेल पर सेि- सत्कार मे कतेक खचा भेलइि।

ओ सब कहइ- "गाकिऽ भीतर घर है। परदेि से चोर आयेगा? यही अगल बगलबाला सब वकअए होगा?इस गाि मे चोर सब बसि लगा है।"

दु चाइर टा अगल बगलकऽ दीयाद बादसपुछोताछ केि रहइ। एकाधकऽ तऽ थाि पर बजेलकइ।

भेटलइ तऽ ि कछो। उपरसअगल बगलसआि जाि बन भऽ गेलइ।गाइ शाप अलगे सुिऽ पृ लइ।

बाजु! जई गाम मे अतेक तरहक अफसर भेल। ओइ गाम मे आब चोर बसइत अइछ।

राइत बराइत आब एक वालास पाइि देबऽ बाला गाम पर कयो ि छइ।

ईएह हरया अइछ। जहया घरसहटबइ छलयई, ि हंटल।ओ बजलक-

" हमराकऽ अइछ? आब बुढ़ारी मे,कऽ दु साझ खुआइत।अतेक दिसिआहाकऽ दरबार मे रही आयल छी, रहऽ दयह। कतेक वजिगी आब बाचले अइछ।"

हरया ईमािदार अइछ। एक पाइ बि पुछि आइ तक घरसि उठेलक। ओकर सब जगह अपि कमीिि बान्हल छलइ।

आमक गाछी बकाइ। पैकार हरयाकऽ अलगसकमीिि दऽ दइ। कराकिऽ समाि जकरा कतऽ सऽ आबइ, ओ हरयाकऽ सब मिि कछु दइ छलइ।घर मे कोिि टुट फुटकऽ मरम्मत होइ, हरयाकऽ हस्सा सब बान्हल होइ। जे पाहुि स्टेिि छो ला पर ओकरा बखीिि देलकि, उिका जाय काल दोसर बेरसकोिि भंगठी माइ दइ।कतउ माइट भराई, ईटा खसय, मोटर ठीक होइ, गंििरी चंदा होइ,गाछ बकाइ, कोिि समाकि लेब देब होइ, गा ी भा । पर लेबाक होइ, बजली बती ठीक करेबाक होइ, हरयाकऽ जे महति ि देलकि, उिकर ओ पता काइट दइ छलइ। बि

ओकर मजी, किछु भऽ नहि सकइ छइ। ओकर संपर्कमे एहि रहइ, जे एक समाद पर सब हाजिर।

ओ गाम मे ककरो किछो मोजर नहि करय। हमर अ ोसी प ोसी किछु बजलनि, तऽ सबहक खिस्सा ओकरा लग छइ। ओ ुिर भऽ जाइ।कोनि जे मजुरकऽ जे बेिी काज करइत देखताय, तऽ ओकर करेज फाटऽ लगइत। ओकरा कयैक अतेक पाइ दइ छियई। हमरे कहैयह, हम काज कऽ देब। देह सकइ नहि, तैयो पाइयक लोभ मे काजक ठीका लऽ लयाय।

ओकरा बानि हमर सबहक काज आ हमर सबहक बानि ओकर काज नहि चलइ छलइ। अइ करीब चालीस बरखक ओकर , हमर परिवारसजु ाि मे कै बेर ओ रसल, फुलल, खिसयाल, भागल अइछ । मूदा हफ्ताह दिन कि भीतर फेर घुर आयल।

ओ स्वभावितेक िटनुक अइछ, जे कनिको एमहर ओमहरकऽ बात ओकरा खराब लाइग जाइ छलइ। हमरा घर छोव , ओ कतउ खैबो पीबो नहि छलाय। ओकरा अलगसज्यो कयो कहतइ आ आदरसलऽ जैतइ, तखि ओ उकिा कतऽ खइतै।

हमरा सबकऽ छोव कऽ , बाकी लोकक ओ "हकरजी" छल। हमहुं सब कयेक बेर सोचलऊं जे ओकरा आब " हकरया " नहि कहयइ, नहि भऽ सकल।

हम घर पर कहलयइि- " अपि पाच दस दिन मे आइब जाइत।"

घर परसर बाब भेटल- " मक्हिसिऊपर भऽ गेलइ ओकर गेला। ओि भेटला पर पक्हि मि वि करइत छल, लेक्कि आब ओ वि आइत।तीि चाइर क्दि पर टहलइत बुलइत अबइत छलाय, ओि आब रहत वि।"

ओ जाबइत छल, ओकर डरे एकटा िबो, की आम, की अमरा, की लीची, की सरीफा, की लताम, घास तक गढ़ऽ कयो टपई वि छल। आब तऽ हर दु क्दि पर कछु ि कछु कयो टपा दइत अइछ।

हवरयाकऽ पुरा िमि हवरहर महतो छइ।आठ भाइ अइछ। बापो ओकर सात भाइ छलइ।अकर बच्चे मे बयाह भेल छलइ। चेति भेला पर गौि भेलइ। कवया अकर सासुर बसऽ लागल छलइ। एक बेर सरेह मे घास गढ़ऽ गेल छलइ, ओतइ साप काइट लेलकइ। बहुत झा ा फुंकी भेलइ। पुरा देह ओकर िील भऽ गेल छलइ। वि बचलइ। मईरे गेलइ। ओकर लाि किऽ घइल संग उल्टा बाईन्ह कऽ कमला बलाि मे बहा देल गेलइ। ई उम्मेद छलइ जे बहइत पाइकि संग जहर देह मे सऽ उतइ जेतइ, तऽ ओ जी जेतइ। ई ककरो बुझल तऽ वि छइ जे कयो एि जीब गेल छइ, लेक्कि तक्हया एहि भेलइ।

हवरया ओकर बाद मतक्छनु भऽ गेल छलइ। ओकर बाप हमर सबहक जमीि बंटाई करय छल।अइ घटिकऽ पाच - सात बरख बाद ओकर बाप हमरा कतऽ हरिहि मे हवरयाकऽ पठहि लगलइ। धीरे धीरे ओ अतइ रहऽ लागल। जे ओकर भाइ सब हवरयाकऽ एक साझ खाई लेल वि दइ, से एकरा लग पाइ भेला पर मािदाि करऽ लगलइ। हवरयाकऽ बाल ि बच्चा, िकि

पाइ पोस्ट आफिस मे जमा भऽ गेल छलइ।

आब गामकऽ समीकरण बदइल गेल छइ। पंचाइतकऽ पाछला चुनाव मे गाम, महिला लेल आरक्षित भऽ गेल छइ। पच्चीस बरखसमुखियाजी चुनाव मे जीतइत आइब रहल छलाह। महिला आरक्षित भेला पर उनकर पुतोहु चुनाव मे ठार भेल छलीह। इमहर हरियाकऽ भाभो तेतरीकऽ सेहो ओकर घरक लोक चुनाव मे देखाऊंस मे ठार करा देलकइ। तेतरी आब तेतरी देवी भऽ गेल अइछ। देखहो मे पइनगर छइ आ बजतो ओहिना बढ़िया छइ। बातो व्यवहारकऽ बढ़िया छइ। बाबू भैयाकऽ सेहो इज्जत करय आ अपन समाजकऽ तऽ बाते अलग।

हरियाकऽ गोतिया अपन बड़ की टा छइ। पहिल बेर ओकर घरक लोक मुखिया चुनाव मे ठार भेल छलइ, ओहो मूखियाजीकऽ पुतोहुकऽ खिलाफ।सब जी जानसिलागल छलइ। हरियाकऽ कोनो खास मतलब अइ चुनाव आ घरसन्धि छलइ।

चुनावकि परिणाम निकललइ।तेतरी देवी किछु भोटसचुनाव जीत गेलइ। आब ओ गामक मुखियाइन अइछ। ओकर दलान पर सब जाइत आ समाजक लोक पंचैती लेल अबइ छथिन। कतेक तरहक सर्टिफिकेट पर ओकर हस्ताक्षर करियाई छइ। मुखियाइन बनिला पर हरिया लेल सेहो मधुर ओकर भाव्वज लऽ कऽ आयल छलइ।

घर मे तऽ हरिया अपन भाइ भाभोकऽ दुसई छलइ। कोनो काज छइ घरे घर बऊआइ के।ई चुनाव तुनाव सब झुटेकऽ होइ छइ। जीततइ मुखियेकऽ पुतोहु। लेकिन जखइन भोटक गिनती भेलइ, तऽ सबहक सोचल फेल कऽ गेलइ।

आब कक्हयो काल हक्रया अपि घर जाय आबऽ लागल छलाय। भाइ- भाक्तज आब कहइ छलइ क्क घरे पर रह। हक्रया ओकरा सबकऽ डाट डपट कऽ हमरा कतऽ आइब जाय। फेर सब बात बताबय।

आब हक्रया, मुक्खयाइ किऽ भैसुर कहाबइत अइछ। मुक्खयाइ किऽ बेजजती बुझाई छइ जे ओकर घरक लोक दोसरा कतऽ दरबाि करय। ओ सब हर तरहसपपंच कऽ कऽ देख लेलक, हक्रया हमर घर िवि छो़ लक।

गाम मे सबसं बेिी पाइ िराबक क्बकी मे भऽ गेल छलइ। जक्हयासरकार िराबबंदी केलकइ, तक्हयासअकर भाि बइढ़ गेल छइ। मुक्खयाइ किऽ बेटाकऽ एक क्दि पुक्लस अइ अँधि िराबक गोरखधंधा मे िक्मल होबाक लेल पकइ़ कऽ जेहल मे धऽ देलकइ। हक्रयाकऽ दु टा भाइकऽ सेहो अही केि मे बाद मे पुक्लस पक़ लकइ।

मुक्खयाइ किऽ कहब छइ जे क्पछला मुक्खयाकऽ पुतोहुकऽ ओ चुिाि मे हरेलकइ, तै ओ सब साक्र किऽ तहत एकर घरक लोककऽ अइ िराबक केि मे फंसेलकइ।आब हक्रयाकऽ अपि पक्रिार पर आयल क्वपक्त देखी कऽ िवि रहल गेलइ। ओकर घर पर कोिो पुरख पातर िवि छलइ। हक्रया ओही लेल अपि घर घु़ ल।

आब बाक्क सब लोक जमाति पर छुइट गेल छइ। हक्रयाकऽ क्दमाग मे बाबू भैयाकऽ क्खलाफ जहर भइ़ देल गेलइ। आब ओ इमहर आइबतो िवि अइछ। पुछला पर साफ साफ रहबासमिा कऽ

देलकइ।

आब हरिहर महतो ओ कहबइ अइछ। अपि जाइत आ समाजकऽ मोछ ऊंचा रखबा लेल कििद राइत काज मे लागल अइछ। समाजक ई विभाजि, कक्षयो क्षेत्संसक संघरषमे बदइल जेबाक आिका हरदम बिल रहइ छइ।

ओही लेल जल्दीसएकटा रखबार तका रहल अइछ। कोिि भेटाय तऽ कहब।

चंसगर (लघुकथा)

समहर गाम गेल छलाह।हाथ- पैर धोलाक बाद विश्रांतसबइसला। चाह- जलखइ सब भS गेल छलइ। भौजी उकिर कछु परेशा बुझेलखि।समहर ई बात बुझई छलाह जे बेरोजगारक कवियाकS भान्य मे परेशानी कलखैले रहइ छइ।ीक रहतइ तS ओकरो घरिलाकS िकरी रहतइ।समहरकS पुछलो पर विे कछु जिब भेटलइ।

समहरकS अपि भौजीकS ओ हंसइत चेहरा याद आइब गेलइ।जखइ समहरकS भाइजी सुधीरक विाहकS गप्प इकासचलइ छलइ। एक दि चुपचाप समहर भौजीकS देखबा लेल उकिर छातासि चइल गेल छलाह। ओतS सब लू की मे सुनर उकिर भौजये छलखि।

बाद मे समहरकS भौजी कहलखि - " से बात विे छलइ। लू की सब एकसएक सुनर छलइ। आहा हमरा देखS आयल छलऊं, हमर होस्टलक िडेि बुइझ गेल छलीह।ओतS जाइ बुइझ कS सुनर लू की सब अपि बाहर विे विकिलइ छइ, जखइ ककरो कयो देखS आबइ छइ। ई एकटा अघोषित पक्षपाटी छइ।"

अच्छा ! से बात छलइ।

हं! तS आर की।

सुधीर किी काल बाद ताि खेला कS घर घुरलाह।ताबइत समहर मायसगपि करइत छलाह। बीच बीच मे टोल पू ेसकS

लोक सब अयलइि।उकिो सबसकिी मिी बात भेलइि।

सुधीर अबाते हाल चाल पुछलखि।छोट भाइकऽ देखी कऽ पसन भेलाह। गाम मे तऽ अखिी कि बीतइ छइ। साझु पहर पेबयासअपि जा कऽ बोआरी माछ अिलाह।

बोआरी माछ बाबरकऽ िीक लगइ छइि। ई सुधीरे टाकऽ बुझल छलइि।

बाबरकऽ तऽ सब माछे पिि एके जेका लगइि। बोआरी सस्त भेटई, तै बाबर बजारसईएह खरीदइ छलाह। दोसर किीक देखऽ मे ई माछ गोर लगइि। गोरका रंगकऽ पक्त आिबत बचेसछलइि। अपि पीरसयाम छलाह।तै मधुरो मे रसगुल्ले िीक लागइि। कयैक तऽ ई उज्जर होइ।मीठ तऽ अतेक िीक लगइि जे गु क भेल्लये खा लइ छलाह आ चीिी तऽ कयेक फका, जकर वाििती िवि।

रंगक पक्त एहि ि धुिी छलाह जे कतउ सुइि लेलकि- " गभवििती स्त्रीकऽ िाबयल खेलाहससंतािि गोर होइ छइ।"

अपि कवियाा जखइि माय बिऽ बाला रहथि तऽ िाबयल खुआ खुआ कऽ उकिर मोिि अकच्छ कऽ देिि रहथि।

गाम मे एकटा भावाज िमि छलखि। ओकरा लेल कपड़ा लता लऽ कऽ आयल छलाह। िमि देखते बडड खुि भेल। ओ चटसिबका कपड़ा पहिरलक आ खेलऽ विदा भऽ गेल।

िमि पढ़बा मे ठीके छल। गामे मे आब अंगेजी मीव्डयम पाईिट स्कूल खुईज गेल छलइ। ओही मे पढ़ई छलाह। एकटा क्रिक ा अबइ छलइ। ओही मे दक्सयो बच्चा लदा कऽ स्कुल जाइ। ओि स्कुल गामे मे छलइ। दुर तऽ कतउसिर्वि कहल जा सकइत छलइ, तखि ा क्रिक ासिमि जाइ छलाह।

एति ा दुर लेल क्रिक ा?

हं। आब सब बच्चा क्रिक सजाइ छइ।

एतबा दुर पैदल या साइक्कलसजायकऽ चाही। सि ास्थ्य सेहो ठीक रहतइि।

मोि तऽ क्रिक ा पर गेलासठीके रहइ छइि। स्कुल मे सबकऽ बतेि ाई जर री थो` छइ जे िमिक बाप गरीब छव्थि।

अइ मे गरीबी आ अमीरीकऽ कोि बात?

क्रयैक ि। खुब बात छइ। खतबे टोलीकऽ सेहो सबटा बच्चा क्रिक सअबइ छइ। ओहुसगैर गुजरल हमर िमि?

िवि िवि। से िवि कहलऊं।

आब जमाि ा बदइल गेल छइ। सब अक्हि ा स्कुल जाइ छइ। हमरो बेटा तक्हि ा जाइत।

बातकऽ दोसर क्दि जाइत देख क्सक्हरक माय बीच मे बजलीह-

छो़ ह ई सब बात। आर कहऽ । अखइि रहबऽ ि?

हं चाइर क्दिकि छुटी अइछ।. इब कऽ चइल जायब। फेर सोमसआक्फस पक ा जाइत।

क्वहरकऽ बुझल छइि जे गामक सब खचा मायक पेिसिचलइ छइि। च्यिपाि, टाविकि,क्कछु फल आ दिाई सब माय लेल क्वहर लेि आयल छलाह।

मायकऽ सब पाइ घरे मे लाइग जाइ छइि।फल, दुध, दिाई कतऽ सऽ हेतइि?

क्वहर दुध ऊठौिा ठीक कऽ देि छव्थिा।माय कोिा सब दुध अपि पी लेव्थिा। सब तऽ उकिर संतािा छइि। ओइ मे मिि तऽ बीि दुध- दहीकऽ एको साझ विि खा सकइत अइछ। सुधीरक जीह सेहो पातर छइि। घरक जेठ बेटा मागल चागल छलाह। ओ क्कछु बजई विि छइथ, मूदा क्बि दुध- दहीकऽ ससु इत विि रहइ छइि। गारा धऽ लइ छइि। हफ्ता मे एक क्दि ाििवि हाट पर जेबे करताह आ घुरती मे कव्रया पनी मे काट कुि रहबे करतइि। अकर माता जेबी कऽ गमी देख कऽ ।

दुपहव्रया मे मायसक्वहरकऽ एकाती भऽ रहल छइि। कतबो क्वहर मायकऽ अपिा संग क्दल्ली चलय लेल कहइ छव्थि, ओ तैयार विि भऽ रहल छव्थि। उकिा ई भाि छइि- पेिकि पाइससुधीरकऽ आशम चलइ छइि। अगर माय विि रहव्थि तऽ कमिकि भऽ जाइ छइि। पाइकऽ क्दगदारी भेलासघर मे कल्लह सेहो होबऽ लगइ छइि।

एक बेर दु मक्हि लेल मक्हर कतऽ गेल छलीह। घुरला पर सतलखा बाली सब हाल बतेलक्खि। सुधीर तऽ हरखि तैयारे रहता- " तोरा जेतऽ जेबाक होइ, तो जो।"

माय बुझई छथ्खि ई ऊयाह सिमामिा बापक बेटा छइथ ।ओ भुख लगबा पर घर मे जखइि वि कछु देखथ्खि तऽ कलम क्हि चइल जाइ छलाह आ दु चाइर लनाा कुक्सयार खा कऽ कुधा ाित कऽ लइ छलाह। घर मे केकरा की कहथ्खि? सब क्सथक्त सबके बुझले छइि। सुधीर कखिा मायसपाइ वि मंगइ छलक्खि।

मायकऽ तऽ जे संताि कि मे रहइ छइ, ओकरे पक्त ओकर ममति देखाइत छइ।माय, सुधीरकऽ ओगइ कऽ अपि छाि मे रखि छलक्खि।

तुं कप़ ा लता क्यैह अवि छहुि। ओकर बदला मे पाइये सुधीरकऽ दऽ देल करहुि।

पाइ तऽ दइते रहइ क्छयइि। अते िक कप़ ा इिका सबकऽ अपािसवि कीिल हेतइि? तै लेि अबइ छी।

िक कप़ ा?

तोहर भौजीकऽ गामकऽ कोि - दि भाइ आयल छलइि। ओ कहलकइि- " ई तऽ क्दल्ली मे रेहरी पर क्बकाइ छइ"

बस! फेर की छलइि। तोहर देल,िमिकऽ पक्हरल टी-िटकऽ उतरबेलक्कि आ पोछा बिा देलक्खि।

आंय। ओ पोछा बइि गेलइ। ओ तऽ बाडेड कप़ा छलइ। छये मक्हिा पक्हि तऽ अिि रक्ययइि।ओतेक दामी कप़ाकऽ ई हाल?

दाम कहा क्लखल छलह?

दाम बला लेबल तऽ जाइि बुइझ कऽ हटा देक्लयई। इकिा सबकऽ होइतइि जे दाम देखा कऽ अहसाि कऽ रहल छइथ। कंपिीकऽ लेबल तऽ लागल छलइ। ओइ कंपिीकऽ कप़ा तऽ तीिि हजार र पयासििर ये होइ छइ।

सेह सुधीरकऽ कहइत सुिि छक्लयई-" बाडेड कंपिी छइ। हमहुं सब अखइि तक देखि छी, पक्हरि िवि छी।"

ओ जे मुंहझौसा भाइ आयल छलइि, से कहलकइि-" क्दल्ली मे िकिली लेबल लाइग जाइ छइ। असली रक्हतइि तऽ दाम बला लेबल सेहो रक्हतइ की िि?

क्मक्हरकऽ ई सब जाइि कऽ बडड दुख भेलइि। फेर सोचलाह- भाइ तऽ भाइये होइ छइ। आइ भाइ, ज्यो अपिा संग िहर मे िवि रखि रक्हतइथ, तऽ अइ क्स्थत मे क्मक्हर थो बे पहुंचतइथ। गाम मे रहलासकेिा बुक्द्ध भि भऽ जाइ छइ। जक्हया पढ़ई छलाह भाइ, कतेक पगक्तिील सोच छलइि। आइ गाम मे रहइत रहइत सब सोचो मे घुर लाइग गेलइि।

माय फेर क्मक्हरकऽ बुझेलक्खि। बाकी सब छो़ऽ । सब घर मे अक्हिा होइ छइ।गाछकऽ कतउ पात भारी लगइ छइ। जक्हिा सुधीर लोकइि रखताह, हम रहबइि।

चाइर व्हदि लेल अयलाह अइछ। खुिी खुिी अपि जाह।देखयह ि, िमि कछु बइि जेतइि। कतेक चंसगर देखबा मे लगइ छइ। तुहो िी मे अक्हि लगइ छलह।दुि भाइ अक्हि मलजुल कऽ रहइ जाऽ ।

मायकऽ तऽ अपि बेटा केहि देखबा मे होइ, सुन्दरे लगइ छइ। मक्हर बच्चा मे कतउससुन्दर िवि छलाह। आब किी मोटेलाह आ पदक गौरि माथ पर एलइि, तऽ कपार चमकऽ लगलइि।

ई िमिकऽ मैवरक पास कवरते अपि लग राईख लहुि। तोरा लग रहतुि तऽ आदमी बइि जेताह। िवि तऽ गाम मे रही कऽ उवजयागर िवि हेथुि। पक्हि ईएह गामसअतेक लोक पईढ़ क्लवख कऽ हाककम हुकुम बिल। िबका मे तऽ मुश्कले लगइत अइछ।

मक्हर हा ि, कछु िवि कहलक्खि। मैवरक केलाक बाद मक्हर, िमिकऽ अपि संग क्दल्ली लऽ एलक्खि।अतऽ न्यारहिी मे िम क्लखाबऽ सपक्हि स्कुल सब मे परीक्ा होइ छइ। ओइ परीक्ा मे िमि पास िवि कऽ सकलाह। आब दुईये टा रास्ता बचलइि, घुइ कऽ गाम मे आगुकऽ पढ़ाइ करस ि क्दल्ली मे केहि स्कुल मे िम क्लखािल जइि।

िमि अपि वरिषा लेलाह जे आब हम गाम मे िकसपढ़ाइ करब आ बारहिीकऽ बाद क्दल्ली मे रहब।पढ़ाइकऽ मा्यम सेहो एकटा समस्याकऽ रप मे आयल छलइि।

ईएह भेलइ। मिकिऽ परीक्षा मे असफलता उकिा पढ़बाक ओर उन्मुख केलकइ। गामेसबारहि केलाह। ओही साल इंजीनियरिंग मे एडमिशन सेहो भऽ गेलइ।

सुधीर गामक अंगरेजिया स्कुल मे कम्मे पाइ पर पढ़बऽ लागल छलाह। मिकिऽ पढ़ाइकऽ खर्चा दादीकऽ पेन्शिजाइ छलइ।

मिकिऽ इंजीनियरिंगकऽ अंतिम साल मे कैम्पस सेलेक्शन भऽ गेलइ।दादीकऽ इच्छा लऽ कऽ मिकि विाह गामसभेहि तय कैल गेल छलइ।

कम्हर सेहो सपरिवार ओइ विाह मे शामिल होइ लेल गाम गेल छलाह। भौजीकऽ गोर लागऽ गेलाह।

"हमर बेटाकऽ लोक तऽ दु साझ खाई लेल नि देलकइ।अपन घरसघुरा देलकइ। आइ हमर भगान सुनिलाह। "

ई बात सुनिते मिन बजलाह- " मा। ईएह कका छइथ जनिका लऽ कऽ हम अतऽ तक पहुंचलऊं।ओ हमरा दिल्ली डेरा पर रखबाक लेल तैयार छलाह, हमही नि मानलियइ। हमरा इंजीनियरिंग मे हर मदिना पढ़ई लेल पाइ पठबइ छलाह। इकिर विदेशि छलइ जे ई बात आहा ककरो नि कहबइ।हमर असफलता, आंईख खोललक। समय समय पर हमरा रस्ता देखबइत छलाह।"

क्षहरकऽ कनछु देर बाद अइ बातक आिय बुझबा मे एलइि। ओ सन रही गेलाह।

िमि तऽ बच्चेसअपि मायकऽ बाजल ऊकटा पैची सुिवित सुिवित पैघ भेल छल।ओकरा होइ छलइ जे समयक संग ओकर मायकऽ कटुिरिकऽ धार मद्धम हेतइ, मूदा ई बढ़ते गेलइ।

क्षहरक माय सेहो उईठ कऽ एलीह। " हम तोरा कहि रक्षयह। मोि छह। ई िमि बडड चंसगर देखऽ मे लगइ छइ। देखह , आइ सच्च सबहक सोझा मे रखलक।"

क्षहरकऽ भौजी अतेक बरखसविकार अपि मोि मे रखि ढोअइत छलीह। आइ उिकर सब विकार धोआ गेलइि। ओ िरसडबडबाइत आंईखसक्षहरकऽ तरफ देखइत बजलीह- " हमरा माफ कऽ दयह। अतेक कि सहलो पर आहाकऽ परिवारिक मािि मयादा रखबाक पयास कयलऊं। गरीबीकऽ कारर हमर सोचऽ कऽ तरीका बदइल गेल छलाय।

जक्षया आहा हमरा देखऽ होस्टल मे आयल रही, तक्षये आहाकऽ भोलापि देखी कऽ हमरा बुझा गेल छल जे आहाकऽ भाइ आ परिवार केहि भेटत। आहा सबहक सोच सच मे हमर िहरोसिीक अइछ।"

सुधीर सेहो आंगि मे ठार भेल सब देख सुइि रहल छलाह। ओ भइ पावज कऽ क्षहरकऽ पकइ कऽ काििऽ लगलाह।

क्षहरकऽ मायकऽ आंईखससेहो िर खइस रहल छलइि।

इमहर दुि बेटाकऽ बीच बढ़ल जाइत दुरीकऽ देखलासउ किर आंईखसहरदम पाइि खइक्सये जाइि।लोको सब जाइि बुइझ कऽ एहि एहि गप करऽ आइब जाइ छलइि।

" आब हम मरबो करब तऽ चैि सं। अपि संताकि बीच मे मतातरकऽ हम अपि कमी बुझई छलऊं। ई सबहक पाछु गरीबी छइ। ईएह मिुक्खिक कमागकऽ खराब कऽ दइ छइ।"

तइ पर मिि बजलाह- " सब कयो कविते रहब तऽ हमर कायाहकऽ ओकरयाि कोिि होइत।"

ई सुविते हंसीकऽ ठहका आंगि मे छुइट गेलइ।

दोरी के? (लघुकथा)

एि ा कक्ष्या तऽ क चलत?- आि ा बजलीह।

जक्ष्या तक चाहब, तक्ष्या तक चलत।- अमि बजलाह।

आब हमरा डर होइत अइछ।

कथीक डर?

आहा छोव कऽ तऽ िवि चइल जायब?

एि ा कयैक सोचई छी? की भऽ गेल अइछ? हमरा मे कछु बदलाि देखलऊं की?

हमरा कछ भेल िवि अइछ। मूदा हमरा बुझा रहल अइछ। आब ई बेि ी कि िवि चलऽ त।

" अतेक कि सिचइलते अइछ ि। अक्षि ा आगुओ चलऽ त। आब छो़ु ई सब ढकपैची। बुझाइत अइछ आहाकऽ आवकस मे बेि ी काज िवि अइछ। तै कमाग मे अंटिंट बात उम्ह इत रहइत अइछ"-

ईएह कहइत अमि कक्सया कऽ आि ाकऽ दबोचला। फेर दु ियिस्कक बीचक खेला ि्र भेल। आइ खेला मे आि ा ओतेक सहयोग िवि करय छलक्खि। अमि ई बुझई छलाह। ओ कछु िब तरीकासखेलाय लगलाह। फेर धीरे-धीरे आि ाकऽ िबका खेला ि ीक लागऽ लगलइि। ब़ ी काल तक चलइत रहलइ। फेर थकला बाद दुि गोटे एकदोसरा मे गक्ष्या कऽ सुइत रहलाह।

भोरे अमि - आि एकबेर फेर पेमालाप कयलाह। अमिकऽ कहलन्ही घुरबाक छलइि। ओ चाह पी कऽ चइल गेलाह। आि असकर घर मे पड़ल छलीह। थोड़ेक देर बाद दाई अयलइि। एक बेर फेर कड़क चाह बिबइ लेल ओकरा कहलखिि।

आइ काइल कियैक ई सब ि्क बेजाय माथा पर ि्चइत रहइ छइि। आवकस मे सेहो ओतेक मोि िवि लगलइि।अतुका सबसं बड़ का अधिकारी ओ छइथ। सब उिकासछोटे छइि। आवकस जास ि िवि? कियो रोकऽ टोकऽ बाला िवि।

आइ एकटा स्कूलक फंक्सि मे सेहो जायकऽ छइि। ईएह मूख्य अवतथ्य छव्थ। आदविासी बात कहऽ मे कतेक ि्क लगइ छइ। आि बच्चक चयि मे महारथ हावसल केंि छव्थ। इिकर संबोधि बडड सारगभिित रहइत छइ।बच्चेसई वडबेट सब मे पाईज जीतइत रहलीह। माईक हाथ मे अवति टोि ऊयाह पक्तयोवाते बाला भऽ जाइ छइि। जखइि समारोहकऽ मुख्य अवतथ्य मे पक्तयोगी बाला जोि खरोि होइ तऽ ओइ भाररकऽ कहबे की। खुब लोकवप्रय भेल जा रहल छलीह। अतुका अखबार मे रोज इिकर कोिि कोिि समाचार सवहत फोटो रवहते छइि।

फेर साझु पहर ओइ समारोह मे गेल छलीह। ओवहि ओजसी भारर भेलइि। मंचसआयोजक लोकइि आि जेका बेटी सब घर मे होयबाक बात कहलखिि। कतेक लोक इिकासआिशीिद लेलक। जवहि इमािदार ओवहि सुनर , कमिष्ठ आ मृदुभारी आि छलीह।

आिा पैघ पिासवािक अवधकारी छलीह।बच्चा सब देहरादूि मे बोवडंग मे पढ़ई छलइि। आिाक घरिाला भरत वदल्ली मे एकटा पाईिेट कंपिी मे काज करइत छलाह। उिका सिािामे मािे बडड छलइि।ओ आिाक वदि- दया पर विभि जीबऽ चाहइ छलाह। िइि. इब कऽ आिा लग पहुंवि अबइ छलाह। वदि पर वदि आिाक व्यस्तता बढ़ते जा रहल छलइि।भरत धीरे-धीरे एिाई गेिाई कम कऽ देिि छलाह।

भरत आ आिाकऽ विािाहि घरकथासभेल छलइि। जखि बयाह भेलइि तखि अतबे बुझल छलइि - " ल की पक्षत्योवाता परीक्षाकऽ तैयारी कय बरखसकऽ रहल छइ।"

आिाकऽ सफलता विि भेट रहल छलइि आ बयस बढ़ल जा रहल छलइि।

आिाकऽ माय बाप पर वबिा बयाहल बेटीकऽ रखिाई आब असह भऽ गेल छलइि। ओ सब पाईिेट कंपिी मे काज करइत भरतसबयाह विवशात कऽ देलवखि। जखइि आिा परीक्षाकऽ बाद गाम गेलीह तऽ देखइ छवथ जे बयाहक काडषतक छपा गेल छइ।

घरक इज्जत बेटीक हाथ मे। आिा पर विशास कऽ कऽ माय बाप सेहो औकातसबेिी खचषवदल्ली मे राईख कऽ पढ़ाबऽ मे केलवखि।सफलता िवहयो भेटला पर कोिो कुबाच िवि कहलवखि। आब आिाक पारी छलइि अपि वजम्मेदारी विभािऽ के।

बायाह दाि आिकऽ भरत संग भऽ गेलइि। क्दल्ली फेर आि घुरली तऽ ओ पक्तायोवाता परीक्षाकऽ तैयारी अपि िर कऽ लेहली।

भरत जखइि इिकर इच्छा देखलक्खि तऽ ओहो इिका संग देलक्खि।पढ़ाइकऽ संग गृहस्थ जीिि बीतबइत दु टा बच्चाकऽ माय सेहो भऽ गेलीह। विध्यकऽ विधाि देक्खयउ।परीक्षाक पक्रराम इिकर पक मे भेलइि। आिकऽ पिसवकि सेि मे चयि भऽ गेलइि। कैडर सेहो क्दल्लीससटले हक्रयारा भेटलइि।

जई पखंड मे आिकऽ पक्हल बेर वियुक्त भेलइि। ओतऽ एकबेर अमि पहुंचलाह। क्दल्ली मे बायाहसपूिष परीक्षाकऽ तैयारी करय लेल आि रहइत छलीह। ओतऽ उिकर की, आरो कतेक छौिकऽ अमि बडड िक लगइ छलक्खि। अमि आ आिकऽ दोस्ती मयादासआगुकऽ भऽ गेल छलइि।अमि कयेक बेर आि लेल अपिकऽ कि देि छलाह।

ओि अमिकऽ दोस्ती आरो कयेक बंदास छौि सबहक संग छलइि। अइ लऽ कऽ आि- अमि मे िक झोक सेहो भऽ जाइि। अही बीच अमिकऽ क्दल्ली सेि आयोग मे िकरी भऽ गेलइि । आि तऽ गाम घुइ गेल छलीह।

आिकऽ हक्रयारा मे जइि कक्रते अमि आइब धमकलक्खि। आि- अमि असगर होइते अपिकऽ िव रोईक सकलाह।

आब िर भऽ गेल छलइि इिकर सबहक पुरि संबंधक खेला। ओि साधिि दुि तरफसबरतल जा रहल छलइ।

भरतकऽ आब आिक बताि मे बदलाि लाइग रहल छलइि। समाज मे हैक्सइत मे अतेक अंतर दुि गोटे मे आइब गेल छलइि जे भरत अपािकऽ अपमाविति महसूस करऽ लागल छलाह।आिकऽ बुझबऽ कऽ कोविि कैला पर, आिा आकामक भऽ जाइ छलक्खि। अमि जोुकऽ गुलाम िवि कहाबऽ चाहइ छलाह।

भरतकऽ गेािई बहुतही कम भेल जा रहल छलइि। जखइि छुटी मे बच्चा सब घर रहइ, ततबे क्दि भरत आिा संग रहस। आिा- अमािकऽ फोिि पर कयेक बेर गप होबऽ लगलइि।

एकक्दि भरत आिा मे बहस अतेक बइढ़ गेलइि जे भरत आिा पर हाथ उठा देलक्खि। आिा ततेक ि पतीकार मे आइब गेलीह जे तखि अमािकऽ फोिि पर सब बात कहलक्खि।

" आब इिकिर कोिा उपाय लगाऊ। हमरा आब बदाश्तसबाहर अइछ।"- आिा बजलीह।

"अच्छा। रईक जाऊ। हमरा सोचऽ क्दयह।"अमि बजलाह।

" कक्हया तक सोचइत रहब? हमर जाि लऽ लेत ई पगलबा, तक्हया तक सोचते रहब।आइ गदिि दबि छलाय। हमरा तऽ भेल की मक्रये गेलऊं। ई मूखषचपाट कतऽ सबथा गेल हमर कपारे।"- कक्ह कऽ काििऽ लगलीह आिा।

अमि उकिा बोल भरोस दऽ कऽ ित केलक्खि। दुिकऽ बीच एकटा योजिा बिलइ। अमकि योजिा सुितक्ह आिा जोि मे आइब गेलीह। अजुका खेल मे अमकिऽ बहुत आिद आिा देलक्खि।

हफ्ताह बतइत बतइत एकिदि दिल्ली मे पुलसकऽ सुचिा भेटलइ जे भरत ििकऽ कारोबार मे िमल छथ्थि।

पुलस उकिा पर दबाि देलक आ ििक पुव या उकिर गाि मेसबरामद भेलइ।

भरत अइ सब पदाकऽ पाछुकऽ खेलासअन्जाि छलाह। पुलस उकिासििकऽ कारोबार मे िमल आर लोकक िमि लइलेल दबाि बिौि छल।आिा सेहो अमकि पक`ला उपर दऊ ब़ हा करऽ लगलीह।

ििक समाकिऽ केकि जाच करइत पुलस अमि तक पहुंच गेल। िरआत मे अमि अपि अिमझता जािहर करइत रहलाह। पुलसक सखतीकऽ बाद अपि संलफताता तऽ गइछ लेलक्खि लेकि आिकऽ िमि रबाि पर िवि एलइि।

अमकि कहब छलइि-

" हम एकिदसाहे आिसपेम करय छलऊं। हम भरतकऽ जेहलसछो़ ा कऽ आिकऽ दल जीतबा चाहइ छलऊं। अइ अपराधक लेल हम दोरी छी।"

भरत जेहलसछुइट कऽ आइब गेलाह आ अमि जेहल मे बंद भऽ गेलाह।

आिकऽ घर आ पक्तष ा टुटऽ सबाइच गेलइि। अमिकऽ अइ अपराधकऽ लेल ओ बराबरकऽ साझी छलीह।

पढ़ाइकऽ क्दिसलऽ कऽ आइ तक अमि , आिा लेल त्याग करइत रहलक्खि। आइ समय एहि आइब गेलइ जे आिा अमिक त्याग ककरो कक्हयो िवि सकइत छक्थि। अपिा िजर मे आिा दोरी त छक्थहे।

बतक्खया गाछी

ओकरा गाम मे सब "बतक्खया" कहइ छलइ। कियो कियो "बताही " सेहो। ककरो गलती नहि छइ। ओकर करनिये एहनि रहे। नहि ठीकसचइल किछु कर सकइ छलइ, नहि बजबे सम्हारि करय, नहि आन साया पहिरऽ कऽ ढंग, कहियो आगसतऽ पैदल रहबे करय, कखनो लेर पोटा बहऽ लगइ तकर सेहो नहि ठेकान, हंसई सेहो अजबे छलइ।

कियो कहइ जे "लोथबी" छइ, कियो अलबटाही त कियो आर किछो किछो।

ओ बऊक बनि कऽ नहि छलइ। नहि कहियो दुखित पड़ई, नहि खाय पीयऽ मे भाभट देखबइ, लाज- धाख सेहो बुझई।अपन दुख तकलीफ नहि ककरो कहइ, नहि हल्ला करय, नहि कनि रसई, नहि फुलइ, कखनो सुतइ, कखनो ऊठई, लोक तइकते रही जाइ।

ओ छलइ सरदाकऽ बतक्खया पुतोहु। सब ओकर मरबाक इंतजार करय छलइ। एहनि कतउ भेलइया।मरर जीयब अपन हाथ मे छइ। एतऽ ओकरा सास- ससुर फंझइतकऽ तऽ र रखने रहइ। एकरा मारबो पीटबो करय सब। तखनो एहन अक्खज रहइ जे किछु

ि वि होइ। फेर अवाला क्द्दि दक्छि बिक्रया असोरा पर चऊकी पर वि राजमाि भऽ जाइ।रोज माग मे क्सिन्दुर केिाई ि वि क्सास इ। आंगि ब़ की टा रहइ। दस फक्ककऽ उएह एक टा अंगिा। कयो दुबगलीकऽ कातसपाछु मे फुसक घर बन्हि छक्थ तऽ कि को क्स्सा मे ओहो म़ ई ि वि।कयो पाछु बला सरकारी पोखइ कऽ महार भइ कऽ एकचारी खसा रहइ छलाय। तखिा सबहक क्द्दि कक्टते चलइ।

पुर ख पातर लेल संक्झया दलाि छलाई। ओतऽ कयो टुटल चौकीकऽ पायाकऽ बदला ईटा जोई कऽ , तऽ कयो बासक तख्ती बिा, तऽ कयो बाबा आदम जमाि किऽ पलंग पर ओतऽ सुइत रहइ छलइ। कोि फरीककऽ कतेक क्स्सा ? ि वि फक्छायल छलइ। ई दलाि गोसक्रिया बुझु। सबहक बरोबइ अक्धकार। पाहुि परखकऽ एला पर ई खाली कहबाक लेल पलंगकऽ छोव देल जाइ छलइ। सब िाभल जा रहल छलइ। सरदाकऽ सब गोक्तये दक्र रहइ। सरदा ओहु मे सबसं सफाचट छलाह। सब चाइट पोईछ कऽ खा चुकल छलाह। आंगि मे एकटा म़ ई आ ई दलाि छलइि जे अढ़ छलइि।

बरसात मे ई दलाि किऽ छबेतइ के?

जे माक्लक हेतइ, सैह ि छबेतइ?

अही फेरी मे एकरो खसले हाल छलइ ि।

दोसर टोल बला कहइ की ई गैरमजरआ जमीि मे बि ि छइ। सबहक क्रस्सा भेलइ। कय बेर माइ पीटकऽ ि बत आइब जाइ।

जतऽ गरीबी रहत, ओतऽ संतोि त्मक्त बडड होइत। खंऊजखेहर जेका सरदाकऽ गोक्तया सब लाठी फटा लऽ कऽ आइब जाइ। अइ लंगा संकऽ लागय। गंऊआ सब घुइ जाय। ओि ि जिर अइ दलाि पर सब ग़ ि ि रहइ छलाय।

सरदाकऽ बाप इि किर ि मि शदाि थि रखि छलक्खि। गरीबक पुरा ि मि कक्षयोसि वि लेल जाइ छइ। शदाि थिकऽ बेटासछोट सब सेहो इि का सरदयकहइि।क्कयो सरदा भाइ सेहो कक्ह दइ छलइि।

गरीब लोककऽ अपमाि जि कि संबोधि खराब लवातो ि वि छइ।सुि वि त सुि वि त काि आ माथ मे ठेहा पइ गेल रहइ छइ। अइ पर आब कोि असर ि वि ।

शदाि थकऽ बेटाक ि म इमहर उमहरकऽ थो` हेतइ। इ िकर ि म हदयाि थ छलइि । गंऊआ सब हदयाि थकऽ हरदा कहइि । क्यो हरदी सेहो।भइ गाम मे शदाि थ टा अपि बेटाकऽ हदयाि थ कहइ छलाह। जखइि कऽ सरदा अपि बेटाकऽ ि र पा स, सब सुि ऽ बालाकऽ अइ सैहबी पर हंसी छुअइट जाइ। देखू ि छगुन्ता इ िकर - हदयाि थ।

सरदाकऽ ि वि जमीि जाल छलइि , ि वि बापे कछु छोव कऽ गेल छलखि । अइ हालत मे कोि घरक चुि ज़ ई छलइि , सैह अचरजक बात। बाद मे पता चललइ जे सरदाक कवि या गाम मे दु चाइरटा ि क घर पक ि छलीह। उ िकर सबहक काज - धंधा कऽ दइ छलखि । बदला मे पसेरी, दु पसेरी अन पाइि आ बचल खुचल खेि ई भेट जाइ छलइि । ओहीसअपि घर चलइ छलइि ।

सरदाकऽ बेटा हरदा सेहो तीि बेरे मैरक केलाक बाद इमहर ओमहर बऊआइत छल। एकदि सरदाकऽ कवि याकऽ जतऽ काज करय छलीह, ओतऽ एकटा हरदाकऽ लऽ कऽ कथा एलइि ।कथा की? एकटा अलबधक लबध बाला बात। इ िकर काि मे कछु कहल गेलइि । मऊवायाही कथा वि श्वत भऽ गेल।ि क पाइ तखि सरदाकऽ कवि याकऽ हाथ मे राईख द्येलइि ।अतेक पाइ ओ देखि हे ि वि रहथि । आब पाइकऽ ि कत्त बाजऽ लगलइ।

हं। हं। हम तैयार छी।

ककरो पुछबाकऽ काज नहि।

जखइन मोन हुअय। हृदयामे रखिकऽ लऽ जाउ।

सरदाकऽ कविताकऽ आइ बुझाय लगलइन जे बेटाकऽ जन्म देनाई साथर्क भेलइन। अही लेल लोग बेटा लेल मनोती करइत अइछ।

दऊरल घर घुरलीह। फेर तीन गोटे गाछी दिस जाइ गेलीह। ओतऽ सब बात कहलखिन। सुविधा सबकऽ खुशीकऽ ठेकान नहि।हरदाकऽ सर्टिफिकेट सब उनिका सबकऽ पठा देलखिन।

दर दुनियाँ मे नहि ककरो कहल गेलइ।

ककरो नहि बतेबइ।

बुझत तऽ कथा मोड़ देत।

चुपेचाप क्दि तकाि लि गेलइ। बाहरे बाहरसक्कछु बक्रयाती संग हरदा गेलाह। क्मयाह दाि भेलइ। बक्रयातीकऽ क्मदाई आ हरदाकऽ दु महीिा बाद कारपोरेिि मे पका िौकरी भऽ गेलइि।

हरदाकऽ पाइ भेटलइ आ ऊपरसिौकरी भेट गेलइ। महीिि महीिि मिीआडष्र सरदाकऽ आबऽ लगलइि। म्ेई ईकऽ जगह पर पका ईटाकऽ घर भऽ गेलइि। दिमी छुटी मे हरदा गाम आयल तऽ दलाि किऽ छान्ही िबि खरसछ्प िा देलकइ।

अस्सी बरखक क्मतीया बजलक्खि-

हम आइ तक दलाि कि पुरा खर बदलाइत ििि देखिि रही। ठीके कहल गेल छइ - जीबी तऽ की की ििि देखी।

दलाि परहक ईटा लागल चौकीकऽ जगह सखुआकऽ पाया लाइग गेलइ। बास बाला तख्ता पर बढ़ई िबि चौकी बिा देलकइ। आब दलाि बंगली जेका लागऽ लगलइ। हरदा आब गाम मे हदय बाबु आ हदय भैया कहाय लागल छल।

हरदाकऽ लोथ कविियासक्मयाह भेल छलइ।धिि सम्मइतकऽ कोिा

कमी वि छलइ। ओकर कका मंती छलइ। ओकरा हिरा मे सब लोथही कहइ। ओ कय बेर बडड जोर दुक्खत प़ ई। डाक्टर दि सेहो जाबि दऽ दइ। मूदा फेर लोथही जीब जाइ।

इमहर लोथहीकऽ बयस बढ़इत गेलइ। देह मे अंग सब मे उभार आबऽ लागल छलइ।केदि जोतखी ओकर बापकऽ कहि देलकइ जे अकरा क्संदुर वि प़ तइ तऽ तोरा दोख हेतह। ईएह दोख छो़ बइ लेल हरदाकऽ िकरीकऽ लोभ दऽ कऽ क्संदुरदा करालि गेलइ।

सबकऽ उमेद छलइ जे दुक्खत लोथही दु- तीि बरख मे मइ जेतइ। हालत देखऽ मे तकिा लागइ। भरर पोरर लेल एकटे पाइ ओकर हिरािला सरदाकऽ दऽ दे रहइ।

कहल गेल छइ- अपि सोचल वि होइ छइ।

लोथही तऽ सासुर अयलाकऽ बाद डेबा डेबी चलहो लगलइ। अपि सिकप़ ा लता कहूि बदइल लइ। पुरा देह झापऽ ओकरा वि आबइ। लोकक ताक झाक ओकरा िक लगइ। ओ देह देखबऽ लगइ।

हरदाकऽ माय ि‍र मे तऽ झाप तोप कऽ दइ। बाद मे पक्‍हि‍ सरदा फेर ओकर माय लोथही पर हाथ उठाबऽ लगलइ।अकरा सासुर मे बतक्‍हया सब कहइ।

बतक्‍हयाकऽ कतबो सासुर मे दुख दइ, ओ ढीठ भऽ गेल छल,लोकक सामि‍ िर्व का िर्व खीझई।

गामक छौ ा बतक्‍हयाकऽ देखऽ आबइ। ऊं आं मे र बाब दइ। आंईख खुब मटकबइ।टोल परोसकऽ पुर ख पातरकऽ अइ अंगि‍ मे अबरजात बढऽ लगलइ। दलाि‍ मे सब बेबसथा रहलाक बादो पुर ख सबहक ि‍जर बतक्‍हये क्‍दि‍ रहइत छलइि‍। बतक्‍हया उि‍का सबके वि‍रा ि‍र्व करयि‍।जाइि‍ ि‍ अि‍जाइि‍, कक्‍हयो कछु देखा दइि‍। ओकरो लोक ि‍ीक लगइ।

हरदा चाइर बरख तऽ बतक्‍हयाकऽ मरबाक इंतजार केलक। ओकर बाद ओ बाहरे बाहर दोसर ब्‍याह कऽ लेलकइ।गाम ि‍बकी कर्वि‍याकऽ ि‍र्व आि‍र्व,मूदा अपि‍ आबय।दोसर ब्‍याहसि‍किरी छुटबाक डर होइ।

इमहर हरदाकऽ कमाइ बढ़ल जा रहल छलइ,ऊमहर बतक्‍हया पर

अत्याचार।

ओही आंगन मे रहब िहार रमनिकऽ बतक्कया भौजीसबडड गप होइन। ओना रमन बतक्कयासबयस मे छोट छलाह, लेक्कन दुन गोटेकऽ पटान बडड।इन रि इनरासबस गप भऽ जाइन।

गंऊआ लेल सरदा व िहाइत सज्जन लोक छलाह। घर मे अक्साते ओ बतक्कया लेल राक्स भऽ जाइ छलाह। बतक्कया अपन देहक चोट सब रमनिकऽ देखबइन।

बतक्कयाकऽ सासुर अयलाक बाद ओकर नैहरसवि क्कयो बजेलकइ आ विन खोजे पुछारीक लेल क्कयो एलइ। ओकर नैहरा बला लेल पाइ दऽ देलाक बाद कतष्य खत्म।

हरदाकऽ निहर मे रक्कते धीया पुता भेलइन।सरदा आ उनकिर कवनया मइ चुकल छलक्खन। हरदा गामससंबंध तोइ लेन छलाह। बतक्कयाकऽ सब महीना नैहराकऽ जमा कयल पैसाक सुदीसपोस्ट आक्कससपाइ भेट जाइ छलइ। आंगन मे कवनया काकी ओकरा दु साझ भोजन दऽ दइ छलक्खन। बतक्कया पाइकऽ महत्त्न बुझऽ लागल छलइ। थो पाइ कंतोल मे जमा करय। कक्कयो दुक्खत प़ बे विन केलइ जे ककरो सेनिक काज प़ तइ।

रमि महानिगर मे पाईंिट िकरी करऽ लागल छलाह। पढहो काल पाइकऽ काज प़ इि तऽ बतक्कया भौजी दऽ दइि। आंईखक सुख लेल ि्र भेल दोस्ती धीरे धीरे सिँह मे बदइल गेल छलइ।

एकक्दि रमकिऽ गामसखबइ़ एलइि। बतक्कया मइ़ गेली। लाि आंगि मे प़ ेल छइि। हरदा गाम आबऽ समि कऽ देलकइ। बतक्कयाकऽ िहरबला सेहो िवि कािबात लेलकइ। संपइत कक्छु छइि िवि। घरारी हरदा कबाला कऽ चुकल छइ। अइ मे कि धकि लोभ मे पोसपुतो बिऽ बाला कक्यो िवि छइ। गामक लोक एकाएकी एलइ आ तुलसी पीढ़ा लग राखल लाकिऽ देख कऽ घुरी गेल।

रमि कहलक्खि-

हम बतक्कया भौजीकऽ मुखाक्नि देबइि। हम आइब रहल छी।

रमि तखिँ गाम कक्दा भेलाह। जे पाइ कऩौ ी छेलइि संग लऽ गेलाह।

दाह- संस्कारकऽ बाद जखइ बतक्ह्याकऽ कंतोल खोलल गेलइ तऽ ओही जमा किऽ बारह हजार रुपया आ पचास भइ कऽ करीब सोि चादीकऽ गहि राखल छलइ। एकटा कागजकऽ परची पर लिखल छलइ-

हमर दाह संस्कार करऽ बाला, अइ सम्पइतक बारिस हेताह।

दु हजार खचा भेलइ। बाकी पाइसजमीि कीि कऽ " गाछी" लगालि गेलइ। ईएह गाछी " बतक्ह्या गाछी" कहबइ छइ।सदोसगामक लोक थो बहुत आम अकर खाइत छल।

ओही गाछीकऽ रमकि बेटा सब गाछ बेच देलकइ आ जमीकिऽ फ्लाट बि कऽ बेच रहल अइछ। बतक्ह्याकऽ विाि आब सब खत्म भऽ गेलइ।

डालडा पसाद (लघुकथा)

फेकु कासर ओि कथा िचक छथ। रामायर कऽ चौपाइकऽ वित कदि पाठ करय छथ। बहुते पाक्त कंठस्थे छइि। तखि कहल जाइ छइ, जे कंठस्थ रहलो पर, पोथी सामि रहबाक चाही, तै रामायर सामि रखइत छथ। इकिर रामायर, तुलसी रामायर िव छलइि, लेकि जे भी छइि.......छइि बडड करथाय। जखइि ओ साझ मे पाठ करइत रहइ छथ , तऽ राही- बटोही सेहो दु पल लेल रईक जाइया आ शिरक आिद लइया।जतबे काल फेकु कासर रामायर बंचई छथ, ओतबे काल पसन मुरा मे देखबइि। बाकी तऽ , गऊंआ लेल ओ झिकटाह छथ। भइ कदि उकिर घरसकाकरा-काकरीकऽ आिज अबइत रहत। पुरा घर मे कयो धीरे बजते िव छइ।

कथा बंचलासकी पेट चलइ छइ। आब कहा ओहि धमात्मा रही गेलाह अइछ, जे कथा सुइि कऽ कछु सीदा(अन) रोज कहिका देथि। महीि दु मकि पर फेकु कासर िव जाइि कोि देि जाइ छइथ, ओतऽ सघुरलाह पर अन पाइकि बोरा संग रहइ छइि। अकर बाद थो` कदि घर मे िकाये िव, चहल-पहल सेहो रहइ छइि। दस- पन्रह कदिकऽ बाद फेर उएह रामा- उएह खटोला। गऊंआ सब अभ्यस्त भऽ गेल छलइि इकिर घरक हाल के। घरक ित माहौलसपता लाइग जईताय जे फेकु कासर अखइि िव छथ।

भगाि गरीबी तऽ दइ छथ्थि, मूदा ओकर संग कोिा गुर सेहो ओक्ह लोक मे गइढ़ दइ छथ्थि।फेकु बसरकऽ घर मे सबहक गला, सुरीला छइ। हर मंगल कऽ , महािरजीकऽ कीतर्ष उकिर घरक लोक करय छल। ढोल मृदंग, हरमोवियम, झाल सब उकिर घरे मे छलइि। ऊपरस"थपरी"कऽ धुि, गीतकऽ आर महो महो कऽ दइ छलइ। परसादी सेहो रहइ छलइ- विि भेल तऽ थुरी लतामे! अगि फुलायल खुदीकऽ चौरठ! अक्हिा कछ कछ।

गामक अपि अपि दिषि होइ छइ। ब़ का कतऽ , विि कयो बइसऽ कहत, तखिा भ्वे या धसाि जेका सब पहुंचत। गरीबहा कतऽ आबेि भेटलो पर हरसटे लोक गेािई पूजा- तुजा मे अंक्यबइ छइ। लेकि अकर संग, एकटा आर विरिता छइ, बेटीक बयाह मे सब ओकरा तात्कालक सम्हाइ दइ छइ। बाद मे भले ही बचल-खुचल गाछी- ािसी, ग़ हा- गु ही कबाला कराऽ लइ।

फेकु बसरकऽ गाम पचकोिी मे छलइि। सभागाछीकऽ लग बाला गाम सबकऽ लोग सब , कथा भक्जयाबऽ मे बडड माक्हर होइया। ओ सब सभाकऽ िर ये मे विाह योन्य िकि ल का " व्टप" लेत। ओकरा पर िजर गरौि रहत। ओकर जहा कतउ बबाह विश्चत होिअ लगतइ, ओइ मे भंगठी माइ कऽ , कथा ग़ ब़ ा देत। एिा ओकर सबहक फूलपूफ ढंग छइ, जे ओकरा

ि मकऽ पंसगी भइ कऽ चचा कतउ िर्व हेतइ। जखइि सभाकऽ अंक्तम एक दु क्दि बचतइ, बर बाबूकऽ आब क्रि बीयाहले गाम घुरऽ कऽ हालात भऽ जेतइि, तखइि ई सब कथा पस्तुत करत। फेर चार तरफसहाफ क्डबकऽ कऽ , बरकऽ उठाइत आ चलइत बि ति।

फेकु क्सरकऽ चाइर टा बेटी छलइि। तीि टाकऽ क्रयाह अक्हि भऽ गेल छलइि। सब िहरसबेि सुखी घर मे गेल छलइि। क्सदातकऽ समय सब गइछ लइ छलक्खि। देबऽ कऽ रहइि, तहैि ि सोचबाक काज। ओ तऽ बेटी सब सुनर्व र आ सुघइ छलइि ....सब सम्हाइ लइि।आब अंक्तम कन्यादाि छलइि। अक्हि एकटा पक्राम क्दि क कलकत्ताया बर टेबइ गेलाह। बेर पर हथपैच क्कछु भेट गेल छलइि।

सभासबर- बक्रयाती ि ि गाम पहुंच गेलाह।गामक संक्रया पोखइ मे एक आि कऽ दसमा, फेकु क्सरकऽ सेहो क्हस्सा पृ इ छलइि। कक्हयो मछैटा मे इि का एकटा माछ क्हस्सा िर्व भेलइि, लेक्कि कहबा मे तऽ छलइि- " ई हमरे पोखइ अइछ।" बक्रयाती सब पोखइ पर क्दि मैदाि कऽ कऽ जमा भेल। एकटा बक्रयाती माथ मे लगबइ लेल " तेल" मंगलकइ। समाद फेकु क्सरकऽ घर पठाि ि गेलइि। सभाकऽ समय छलइ.........कखइि कोि पाहुि टपकता........ई सोइच कऽ रोि ि ई बला खाली दि ति मे एक ि म्मर कर आ तेल आ ि क्रयर तेल बाला खक्लका क्डब्बा मे डालडा

वालेि सिआइि कऽ रखि छलाह। राजा, देि कऽ आइब जेतइ, से ककरो बुझल थो बे रहइ छइ। ऊपरसफेकु क्सरकऽ सोभाि छइि, क्किो उठा कऽ घर लऽ एताह। एक बेर तऽ अन्हिा क्सिदुल्ली बला चौधरीजीकऽ सभासिि चइल अबइत रहलाह। ओइ बेर क्सराइिकऽ समाि जुटबऽ मे कतेक थका फजीहत भेल रहइि। तक्हियासओ पक्हिहेसकर तेल आ डालडाकऽ बेबसथा केि रहइ छइथ। अपि क्कछु खाई? पाहुि परखकऽ सुखक्खा सोहारी दइत क्सराइिकऽ अपरक्तात लगइ छलइि।

जे बक्रयाती लगसमाथ मे लगबऽ लेल तेल लइला आयल छलाह,ओ टाटाकऽ िक्रयल तेलक क्डब्बा मे "जमल डालडा" राखल देखलाह। क्कयो पचमा पास कहू िा छठिा फेल, ओ िक्रयल तेलक ई डालडासभरल क्डब्बा पोखइ पर पठा देलकइ।

बक्रयातीकऽ तऽ अलगे टिि होइ छइ। ओइ मे एक तऽ पक्शाम आ ऊपरसकलकक्ताया सब। एकटा बक्रयाती तेल मंगिि रहइ, लेक्कि मूफ्तउआ तेल बुइझ कऽ , ओ सब बर- बक्रयाती, माथ के,कऽ पुछइया, भइ देह रगइ रगइ कऽ लगेलक।पुरा क्डब्बा खाली कऽ देलकइ। साझ मे चुि कैल मलमलक कुता पक्हिरकऽ सब फेकु क्सरकऽ दलाि पर आयल।

आब डालडा, पेरोमेक्सकऽ गमी पर अपि करामात देखेिाई िर

केलक। एक काि- दु काि होइत होइत , सब एक दोसराकऽ सुंघऽ लागल। ऊपरसकोि सवरयाती क्टहकारी दऽ देलकइ। पवरछिसिपवर्हिहे बर- बवरयाती सब क्खवसया गेलइ। सब पराय लागल। फेकु क्मसरकऽ पवर्हि तऽ कवछु बुझेलइि िवि। बाद मे डालडा कऽ गवरयबइत ओतऽ बवरयाती सब लग गेलाह। फेर खिि दौ इत घर पर आबइथ।कऽ िावरयर तेलक वडब्बा मे डालडा रखलक?

पुरा गामक लोक जमा भऽ गेल।

फेकु क्मसरकऽ कवियाि डलडा डकुबा कवर् कवर् कऽ गाइ पढ़ऽ लगलीह। घर मे कना रोहट मइच गेल छलइ। ऊचती- वििती हुअऽ लागल। एहि बवढ़या बर, डालडा दुआरे हाथसचइल जाय, अइसबेिि कुसंयोग की भऽ सकइत छइ।

फेकु क्मसरकऽ गउआं सब थोर- थाम लगेलक। बर बालाकऽ बाद मे बुझा गेलइि जे ई मजाक िवि, अजिाि मे भेल गलती छी। सच पुछु तऽ गलती, डालडा देह मे लगबऽ बालाकऽ छलइि। ओ बवरयातीकऽ मुफ्तउआकऽ लोभ मे गंधो िवि बुइझ पेलाह।।बाद मे कयेक टा ललका लाइफ बोय साबुि पोखइ पर गेल। बर - बवरयाती फेरसरगइ रगइ कऽ िहाइ गेलाह। जुमाि मे फेकु क्मसरकऽ अवाला क्दि एकटा छागरकऽ काटऽ परलइि। तखइि जा कऽ बर मिलाह।

डालडा डकुबाकऽ चकर मे आइ एकटा भेल कुटमैती ग़ बृ ा रहल छल। अंत भला तऽ सब भला। बाद मे सब सामान्य भऽ गेलइ। रसा-फुल्ली खत्म भेल।आब ओइ जमायक ाम "डालडा पसाद" सबक्दा ि लेल सासुर मे पड़ गेल छइ।

कीं सोचल- कीं लीखल - दीघकथा (पहिल आ दोसर भाग), (अंतिम भाग)

कीं सोचल- कीं लीखल (पहिल भाग)

आइ विकास मंदिर स्कुलक विकास भरि कि उदाटि भऽ गेल। बजलाकऽ सब िमी वारामी महाभाि सब पहुंचल छलाह। सास्कृतिक कायक्रम सेहो स्तरीय छल। पाचाया रक्षका देिी अपि अतिथि सबकऽ सिगत लेल ठार छलीह। एक एककऽ कऽ सबकऽ उत्कृि जलपाि कराऽ विदा केलीह। जेिी लोक बेटीकऽ विहि मे एके पैरे ठार रहइत अइछ, तहिि रक्षका देिी आइ काजक समापि केलीह। सब लोक समारोहक व्यवस्थासबडड खुि छल। लोक सबकऽ विदा केलाकऽ बाद सोझे पलंग पर आइब कऽ अराऽ कऽ पइ रहलीह। कतबो सब कहलकइि जे कछुओ मूंह जुठया लीयह....... विि मोि केलकइि। रौबदार एहि छलीह जे दोबाराकऽ आग्रह करऽ कऽ दुस्साहस करतइि।

मोलायम बाछाि पर परलाकऽ बादो देह मे गु अ लगलइि। बाछला संघरष सब आंईखक सोझा मे िचऽ लगलइि। कतबो सुतऽ कऽ कोविि करय छलीह.......िद कोसो दूर बुझा रहल छलइि। परल परल जखइि थाईक गेलीह त ऊईठ कऽ टहलऽ लगलीह। तखइि िजर गेलइि जे ओ तऽ साव यो विि बदलली। सजल धजल जहिि छलीह, तहिि छलाये। डेसंग टेबलकऽ सामिि जा कऽ ठार भऽ कऽ अपिकऽ

विहारऽ लगलीह। आइ बुझेलइि जे ओ तऽ बडड सुंदर अखि छइथ। ऊपरसिचा तक अपि अंग पत्यंग सबकऽ ििि मे गौरसदेखइ छलीह.......अपि देह उिका आइ अपि आकवर्षण कऽ रहल छलइि। हम अतेक सुंदर अखि छी।अपि पर दुलार आइब रहल छलइि। जखइि दुलार आइबे गेल........त दुलार कइये ली। अपिकऽ दुलार करऽ लगलीह। कती काल तक अही मे लागल रहलीह। आब गहि गुव या सब जे पक्हरि रहइत......ओ सब खोलऽ लगलीह........ धीरे धीरे आब ओइ अिस्थिा मे आइब गेलीह......जखइि ओ आ उिकिर देहक बीच मे कच्छु िवि। अपि देखइत.....अपि मुक्स्कयाइत....... अपि दोसरासतुलि मे शेष बुझइत......अपि वमन वमन अदा देखाबइत........ अपि भाि भंवामा बिबइत...... अपि अगराइत....... अपि वाछराइत.......अपि ईठलाइत.....अपि आिन्दक झुमर मे झुला झुइल रहल छलीह। अपूिष आिन्दसलबल डुबल , अलटइत पलटइत ओही लोक मे विचरर कऽ रहल छलीह। अखइि ओ म[िक्ख आ ओकर देह, ओकर गंध, ओकर र प, ओकर रंग, ओकर कोर, ओकर विखार, ओकर िक, ओकर िकि, ओकर लंबाई, ओकर गोलाई, ओकर ऊंचाई, ओकर क्सहरि, ओकर ध्ऱ कि, ओकर ऐंठि, ओकर मटकि, ओकर राग, ओकर विराग, ओकर संगीत आ ओकर धुि मे मदमस्त हाथी जेका जंगल मे असगर बढ़ल जा रहल छलीह। ओ अइ सपि लोकसबाहर िवि आबऽ चाहइ छलीह। कच्छु आर बात क्दमाग मे आबऽ चाहइ छलइि, तऽ बेरहमीसओकरा झटईक दइ छलीह। आिदकऽ एक एक पल ओ जीबऽ चाहइ छलीह। पक्हले बेर उिका अपि देहसअतेक लगाि भेलइि। आब त ओ इिकिर संगी भऽ गेलइि। ब्ऱ ी काल तक अव्हि अही अिस्थिा मे ओ प्ऱ ल रहलीह।देह

कमिाइत रहलइि। भाकि पाहि अबइत जाइत रहलइि। हाक्र कऽ उठअ चाहलीह लेकि िवि उईठ पेलीह। ओाि सब थकाि दुरभऽ गेल छलइि। आब तरोताजा महसूस कऽ रहल छलीह।आइ ओ जीिि मे एकसंगे दु टा सुख भोगलीह। तकरे चमकी छलइि। एकटा सुखक लेल त ओ कक्टयासलागल छलीह...... पक्रशम केलीह.......भान्म आ समय साथ देलकइि .....उमेदो छलइि.......आ पुरो भेलइि। मूदा दोसर त अियासे। ई आ इिकर देह त सक्दखि संगे रहलइि, तखइि ई अिभूक्तसकक्रयैक िक्यत छलीह। ई त भऽ गेल- एकक संग एक री िली बात। जे भी होइ ई " बात " - आब ओ अइ आिदकऽ िवि छो़ तीह।

सब बात जिवि लेल र क्वका देिीकऽ अखुिका तकक जीििकऽ बारे मे जिला क्वाि काज आगू कोिि बढ़त!

र क्वका मे देिी िमि त बाद मे जुि लइि। पक्ह्ि ओ क्वसफषआ क्वसफषरची छलीह।उिका अपि क्वतासबेिी भेट िवि लेकि क्वता अपि िमि बहुत बाद मे देलक्खि। ओ तखुिका समाज लेल अपि क्वताकऽ अिध संताि छलीह......क्रयैक उिकर माय बापकऽ बीच वक्ध्ाित विाहि िवि भेल छलइि। सामाक्वजक आ कािििी व्यक्स्था एहि छलइ जे उिकर क्वता चाक्हयो कऽ इिका सबके अप्ाि घर िवि लऽ जाअ सकल छलाह। ओ पक्ह्ि सक्वयाहल छलाह आ धीया पुता छलइि।ई िवि छलइि जे पयास िवि केलाह मूदा सफल िवि भेलाह।र चीकऽ माय दोसर जाइतक छलीह लेकि

छलीह बडड सीधमार्गी। उनकिर जाइत मे तकरया मऊगी आसार्गीसदोसर तेसर कायाह कऽ लइ छलाय।उनको हिरगीला सब कहलकइन जे वियधति वीहि कतउ कऽ लीयह मूदा ओ टससमस निन भेलीह। बयस बढ़ल रहबाक बादो पढ़लीह लिखलीह आ सरकारी नौकरी पक लीह। अइ नौकरी भेटबा मे उनका सरकारक आरकर व्यवस्थासमदद भेटलइन।ओ सीतलिम्बी भऽ गेल छलीह लेकिन उनकिर इच्छा विकल्पा होबाक छलइन......से नवि पुरा भऽ सकलइन।

रचीकऽ बाता एकमुश्त पैसा रचीकऽ मायकऽ निमसजमाकऽ देनि छलक्खि। रचीकऽ माय ओइ मेसएक ढेला अपनि पर नवि खचषकेलीह।

रचीकऽ बच्चेसबाहरे बाहर पढ़ानि गेलइन। ओतइ उनकिर माता बाता अपनि सुविधानुसार भेट करबा लेल अबइत जाइत रहलक्खि।जखइन रची दसमी मे छलीह त उनकिर बाताकऽ मृत्यु भऽ गेलइन।ओ अपनि मायकऽ संघरषकरइत दुवियाकऽ देख चुकल छलीह। ओ आजन्म अविवाहित रहबाक निरणय कऽ चुकल छलीह।

महानिगरीय विकास लेबाक बाद ओ निपस अपनि मायकऽ निहर मे रहबाक लेल आइब गेल छलीह। सुन्दरता त रचीकऽ काि ब्याहल

दहेज मे मायसभेटले छलइि। चार तरफसलोक सब जीभ लपलपेि मं राइत रहइत छलइि।कि पुर खक घर आ ओइ मे बैक बैलेस- कतेक लोक तऽ ालीिता लाईघ कऽ धृिता तक केलकइि।" यहा ि लवाये राऊर माया"- सबसं वबिटइत र ची मजबुत होइत रहलीह। कालकमेर उिकर माय सेहो परलोक कसधाइ गेलीह।

र ची सामावजक कायकताकऽ र प मे िहर मे स्थावत भऽ गेल छलीह। मायकऽ जीवते स्कुल खोइल लेि छलीह। अपि पुरा शम आ बुवद्मता ओइ स्कुलक वकासक लेल समवपत कऽ देि छलीह। अखिा िातासलऽ कऽ अवधकारी सब इिकासअपेका बढ़बइ लेल लालावयत रहइ छलाय। सबके ईएह होइ जे "माये एहि त बेटी केहि"।कतउ िम्बर लाइग जाय।

र चीकऽ वका मंवदर मे एडवाि भोइ पवत्ष ाकऽ बातभऽ गेल छलइ। र चीकऽ अपिा समय मे वाि बापक ािमकऽ काररर बडड वदकत भेल छलइि.... न्लावि किऽ दौरसउिका गुजरऽ कऽ पृ ल छलइि। बाद मे उिकर वाता अपि ाम देि रहथि। अइ स्कुल मे अकर अलगसकोटा छलइ। र ची आब पगवाील मवहला कहबबइ छइथ।अपि सब जमापुंजीसव वका मंवदरकऽ ािबका भिा आधुविक ढंगसबिबेलीह अइछ आ अपि मायकऽ इच्छा पुरा कयलीह.......तकरे खुिी छलइि.......अही लेल पयताील छलीह।

आब उमक ओइ प्ा ि पर मोि मे क्रअए भटकाि आइब गेल छइि......सैह सता रहल छइि। कही क्जला जज शी क्मशा त अकर पाछु मे िवि छइथ। ओ स्क्ुलक सब फर्क ि मे अबइ छइथ......विधुर छइथ.....बपताकऽ समजाक्त छइथ। क्जला पदाक्धकारी हंसी कऽ कक्हतो छलाह जे शी क्मशा पर कृपा बक्िायौि।

रची आब रचीका देिी भऽ गेल छइथ। मोि मे अबइत भाि सबके दुरदुरा रहल छइथ। आब एिी विचार क्रयैक। फेर मोि प़ इि जे पाटी मे शी क्मशाकऽ लोलुप िजर। ओ बजइत त कम्मे छलाह लेक्कि संग रहबाक मौकाकऽ तलाि मे रहइ छलाह। कतउ कतउसउ़ इत गप्प रक्चका देिी सेहो सुिि छलीह जे शी क्मशा आर रक्चकाकऽ जोी िीक रहतइ।

आइ स्क्ुलक फंर्क िकिऽ परात छुटी छलइ......तै लेटसउठबाक विचार मे छलीह। तखि घरक दाई उठबऽ एलइि जे जज साहब शी क्मशा आयल छइथ। िमि सुविते रची देिीकऽ देह क्सहइ गेलइि।

कहलक्खि-

बइसक्यउि। हम अबइ छी।

- ओ अपि बैठकी मे बइस चुकल छइथ।

- डाईरि सेहो छइ!

- विि अपि डाईकिऽ कऽ अयलाह अइछ।

घबराइत र ची देिी फेरसडेक्संग टेबलकऽ सामि ठार भऽ बैठक मे जायसपक्षि अपािकऽ विहाक्र रहल छइथ।

आब की हैथ! जे हमर मोि मे घुम़ इ छलाय, सैह शी क्मशाकऽ सेहो।

पता िवि। की सोचल आ की लीखल।

ईएह सोचइत अंदेिासभरल बैठकखाि क्दस जा रहल छइथ।

की सोचल- की लीखल (दोसर भाग)

पक्ररामकऽ अंदेिा सो पीव त रक्षका देिी बैठकी मे गेलीह। ओ त एिा डरायल घबरायल छलीह जेिा कोिा िािा स्कुल मे गलतीकऽ दइ छइ.......आ ओकरा मरखाहा मास्टरकऽ सामि पठालि जाइ छइ। एक राइत पक्हि तक त उकिर सामि लोक सबकऽ कयन्धी बन्हल रहइ छलइ......राइत बततेे ई कीभऽ गेलइ।

बैठकी मे इकिा जाइते शी क्रशा चटसठार भेलाह। परामि- पाती भेलइि। कलुका समारोहकऽ बारे मे चचा चललइ। रक्षका देिीकऽ स्तुती गार शी क्रशाकऽ रहल छलाह। बीच मे दु बेर चाह एलइ। िहर बाजारकऽ गप िपि भेलइ...... दुवियि दारी सबपर बहस सेहो भेलइ। धीरे धीरे रक्षका देिी सामान्य भऽ गेल छलीह। पुरा पभािािली ढंगसअपि पक बहस मे रखइ छलीह........तखइि शी क्रशा शोता भऽ जाइ छलाह , लेकिि उठबाक िामि विि लइ छलाह। बीच-बीच मे चुप्पी भऽ जाइ छलइ।रक्षका देिीकऽ बुझ्झा रहल छलइि जे शी क्रशा जेिा मौकाकऽ तलािि मे छलाह। रक्षका देिीकऽ तरफसकोिा तरहक क्लफ्ट विि भेट रहल छलइि। शी क्रशा कछु इमहर उमहरसइिारा मे गप्प उठेबो केलाह। अंत मे हाक्रकऽ जायकऽ अिुमक्ष मंगलाह।

जाय काल मे भोजि पर विि बजबऽ कऽ उलहिा सेहो केलाह।अइ पर रक्षका देिी बजलीह-

-ई कोिा बात भेलइ! आइये रकु। भोजि भऽ जेतइ।

शी क्षमा बजलाह- िवि िवि। एिा ाित थो बे लेल जाइ छइ।

- आर केिा ाित होइ छइ! क्षमव्थलाम छो़ु। आब आहाकऽ खाईयेकऽ जाय प़ त। हम सबकऽ एिा आगहो िवि करय छीयई।

-हं हं। हमरा बुझल अइछ। हम आहाकऽ ािकसक्षन्हइ छी।आब आहा कहइ छी त हम र ईक जाइ छी। जे खुएब से खाईये कऽ जायब।

- जे ?कऽ सोचबो िवि कर! खेािई टा खुयाब।

-हमहुं सै कहइ छलौ जे भोजि मे जे जे व्िन्यास रहतइ।

- हम ािकसबुझई छी ....ई जे जे ?? की छी!

- अच्छा कहू त ? ई जे जे की छइ?

- रहअ क्षदयउ। हम पुर खकऽ गतर गतर क्षन्हइ क्षछयई।हमरा सब बुझल अइछ जे आहाक अक्षमपाय की अइछ।

- जखइि बुक्षझते क्षछयई तऽ आहाक की व्िचार अइछ।

- कोिा व्िचार िवि अइछ! " heard and rejected."- आइ जज सबहक जेिा रक्षका देिा बजलीह।

-आहा त जज भऽ गेलऊं!

- फैसला हमरा लेबऽ कऽ छलाय तऽ जजकऽ होइत!

- फक्रयादीकऽ पक त सेहो सुि कऽ प़ त!एकक्दसाह फैसला वि क्दयउ।

- ठीक छइ। फक्रयादीकऽ पक रखबाक मौका देल जा रहल छइ। कहू जे कहबाक अइछ।

आब शी क्तशा अपि कवियाक मरलाक बाद जे एकाकीपि जीिि मे भेल छइि - ओइ सब बारे मे खुइल कऽ कहलक्खि। उकिर बेटा आ पुतोहु दोसर िहर मे रही रहल छइि।बरख दु बरख पर चाइर क्दि लेल अबइ छइि।दूि गोटे काज करइत छइि। शी क्तशा जखइि बेटा कतऽ जाइत छइथ त बेटा पुतोहुकऽ उकिा लेल समय वि छइि। तै ओतऽ गेिाई छोव देलाह।

कवियाकऽ गुजरलाकऽ बाद एहि वि छइि जे आर स्त्रीकऽ आमंतर वि एलइि। सब गोटेकऽ िजर इकिर संपइत आ ओहदा पर छइि। कोटष मे फैसला करइत करइत मि्क्खिक मिःक्स्थक्तकऽ भापअकऽ क्मता आ िकाक्त दुि उकिा भऽ गेल छइि।दोसर माक्सिक स्तरकऽ सेहो सिाल छइ- ओ हमरा एके जगह भेट रहल अइछ। कक्ह कऽ मौि भऽ गेलाह शी क्तशा। आंईख डबडबा गेलइि।

रक्चका देिी चटसउईठ कऽ शी क्तशाकऽ एक वालास पाइि देलक्खि आ उकिर पीठ पर हाथ धअ धेलक्कि।

शी क्तशाकऽ गला रंधल छलइि। रक्चका देिीकऽ स्मरष्मशी क्तशाकऽ िर झहरऽ लगलइि।

रक्चका देिी स्तब्ध छलीह।

शी मशा, र कचका दे ीकऽ हाथ पकड़ लेलकि। र कचका दे ीकऽ ई सपरषअचंभत कऽ रहल छलइ ि।

पहल बेर अइ तरहक वसथक उ किर सोझा आयल छलइ ि। ओ एकटा पयादा जका चलल जा रहल छलीह। ीक बेजाय, उकचत अ ुकचत सबसं व लिग ओ बढ़ल जा रहल छलीह। शी मशा भा ुिक भऽ उ िका अप ि छाती मे सटा लें ि छलखि। अतबो हों ि मे र वि रहइ ि जे घर मे काजबाली दाई सेहो अइछ। छोट बच्चा जेका शी मशाकऽ वजदक आगु र कचका दे ी बेब ि छलीह।

थो ेक काल बाद दु ु गोटे अलग भेलाह। पुरा घर मे मौ कि पहरा परल छल। दु ु गोटे चुपप। आब र कचका दे ी उईठ कऽ दोसर घर मे चइल गेलीह। दाईससमाद पठा देलकि जे शी मशाकऽ सेहो ापिस घुइ जाइ लेल।

र कचका दे ीकऽ आब अप ािआप पर पशाताप भऽ रहल छलइ ि जे ई की कऽ लेलीह। अतेक वद कि तपसया आइ भंग भऽ गेलइ ि। अइ िहरक लोक बुझतइ त की कहतइ? दाईकऽ को ि भरोसा- ई त आर ाि मरचाई लगा कऽ सऊंसे ढ़ंढोरा पीटतइ।

तख ि मोटरगा ी सटाटषहोबाक आ ाजि सु ि लइ ि। बुइझ गेलीह जे शी मशा जा चुकल छइथ।

कतऽ दाईकऽ कह ि रहथि जे शी मशाकऽ खे ाइ ब ि बऽ लेल, आ फेर ओकरेससमाद पठेलकि जे चइल जाइ लेल। की मो ि मे सोच ि हैत ई दाई।

किछु विशेष फुरा रहल छलइ। ओ जनैत छलीह जे अक्षयकुमार कुमार पुरुख संग रहअ मे बेशी सुरक्षा छइ, बनिस्पत पुरुख पराया संं। तखनि गलती कऽ बइसली।

फेर सोचली जे उनकर कोन गलती- ओ त परिस्थितिक गुलाम छलीह। तेनाहिं सब किछु भेलइ जे ओ कोनो अकरा रोकि सकइ छलीह। मर्यादाक रेखा ओ पैघ खीचने छलीह, तैयो ओ परेशान छैथ। देखू त अजुका लेखे किछु विशेष छइ। ई बात दिमाग मे अबिते कनिक मोन हल्लुक भेलइ आ सोझे घिर मे आबि लेल घुइस गेलीह।

की सोचल- की लीखल (अंतिम भाग)

झरनि खोइल देलीह आ ओकर निच्चा बइस कऽ निहाइत रहलीह। ठंडा पाइन देह पर खइस रहल छलइन....... तैयो तकलिफ नहि खत्म भऽ रहल छलइन। बड़ी काल तक निहेलाकऽ बाद बाहर निकललीह। मोन तखनि भकुयाले रहलइन। माथ भारी - भारी बुझाइन। दर्दनिईयक डिब्बा मे सऽ मथदुक्खीकऽ गोटी निकाइलकऽ खेबो केलीह..... तखनि किछ आराम भेलइन। अखनि भइ रहल छलइन कछमछ करइत रहि जाइतलइन। राईतो मे नीन ठीकसँ नहि भेलइन। अवाला रहि स्कुलो नहि गेलीह।

ऊमहर शीलक आशा सेहो परेशान छलाह। सुख चैन हरा गेल छलइन। जखनि कोनो मोटरगाड़ीकऽ आवाज सुनि दइन- चट दऽ पर्दा हटा कऽ बाहर ताकऽ लागस...........होइन जे कही पुलिसकऽ गाड़ी त नहि छइ। ई त अपना भान छलइन जे ओ रचनाका देहीकऽ निजता मे हस्तक्षेप केलकनि........स्त्रीकऽ बयान पुलिसकऽ अकरनि: मानिऽ कऽ प्रमाण छइ। कही ओ पुलिस मे निकाइत कऽ देलीह त सब निमि गाम, इज्जत मान एके बेर मे खत्म।उनिकासतऽ अतुका पुलिस अधीक्षक पक्षहिसेसखार खेन छइन। ओ कयेक बेर सम्मान पठा कऽ ओकरा कोटषमे बजौने छइथ।अगर ओकरा पता लाइग गेलइ त ओ तऽ चाइर टा आर धारा लगा देतइ।आबऽ काल मे रचनाका देहीकऽ देखयो नहि सकल छलाह जे केहन पक्तक्रया छलइन। ईएह सब सोचइत परेशान छलाह। ओना अवाला रहि ओ कोटषगेल छलाह। आइ जे पुलिस निला सब गनिही मे आयल छलइन, ओकरा सबसँ निकसगप्प केलाह.......आनि रहि जेका फटकारलकनि नहि। घर घुरलो पर

कयेक बेर मोि केलकइि जे र क्चका देिीकऽ हाल पता करी..... लेक्कि साहस िवि जुटा सकलाह।

एक क्दिक छुटीकऽ बाद र क्चका देिी स्कुल जाय लगलीह। ओतऽ त बच्चा आ स्टाफ मे समय बीत जाइि लेक्कि घर अक्वाते परेिाि भऽ जाइ छलीह।जखिा कोिा मोटरगा ी अबइ त बुझाइि जे शी क्मशा त िवि छक्थ? स्कुलो मे जखइि फंकि िकऽ संदभषमे शी क्मशाकऽ चचा भेलइि त अिमि जका ओ अइ पर क्कछु बजलीह।फोिक घंटी बजइि त होइि जे कही शी क्मशा त िवि छइथ। हाल चाल लइ लेल फोि केिि हेताह? मूदा उिकर फोि िवि एलइि।

अक्हि. इब आइब गेलइ। आइ फेर उएह समय मे मोटर गा ी एलइ......... दाई कहलकइि जे शी क्मशा छइथ.........ओक्हि बैठकी मे बइसऽ कऽ समाद दाई माफक्त देलक्कि .... आ अपिा गेलीह।

आइ किी काल गंभीरता रहलाकऽ बाद सामान्य माहौल मे गप्प होबऽ लगलइि। दाई अपिि चक्लतराईह रहय...........ओ झुठे कक्ह देलकइि जे ओकर बेटा दुक्खत छइ......... घर ओकरा जेिाई जर री छइ..............कक्ह कऽ ओ चइल गेलइि। अपिा मोिि ओ इिका सबकऽ एकान्ती देलकइि। र क्चका देिी हा ि िवि क्कछु कक्हतक्थि, ओइसपक्हि ओ जा चुकल छल।

आइ ओही क्दि जेका फेर गप्प िप आ पेमालाप

भेलइि। बाहरसखेिाई मंगाि गेलइ। साझ मे फेर शी क्मशा अइ िदाकऽ साथ घुरलाह जे ओ फेर. इब कऽ आइब रहल

छइथ।

आब सब. इब कऽ शी क्मशा आबऽ लगलाह। भइ क्दि ओतइ रहइ छलाह। बीच बीच मे आब ओ सब बाजार आ क्सिमा सेहो संगे जाय लागल छलाह। छोट िहर मे त जखि मऊगीकऽ दोसर पुर खकऽ संग देखइ छइ.........क्खस्सा बििाई िर भऽ जाइ छइ। आब जगह जगह इकिर सबहक संबंध पर चचा िर भऽ गेल छलइि........ओिा दुि गोटे क्यिहार मे पुरा सािधािी बरतइ छलाह, लेक्कि ई सब कतउ छीपलइ आय।एक काि, दु कािसहोइत, ईहो सब सुिलाह।

आब शी क्मशा कहलक्खि

- हमसब विािहक बंधि मे बंईध जाइ।

- आहा एकबेर अपि बेटा आ पक्िारकऽ लोक सबसअइ वििय मे गप्पकऽ लीयह। र क्वका देिी बजलीह।

-बेटाकऽ की पुछबइि। ओ तऽ अपि आप मे मस्त छइथ।हम जवि छी ओ त खुिि हेताह। बात रहल बाकी लोक के, हम की उकिासविचार लेबइि।

- िवि िवि कमसकम बेटाकऽ बता क्दयउि।

-आहा कहइ छी त कक्ह दइ क्छयइि।

राइत मे शी क्मशा अपिा विािहक संबंध मे बेटाकऽ कहलक्खि। बेटा अकचकेलक्कि लेक्कि क्कछु क्हलक्कि िवि।

थो` कालकऽ बाद पुतोहुकऽ फोि, शी क्मशाकऽ अयलइि।

ओ त फोि पर लगलखि शी कमशाकऽ उदार करऽ ।

-आहाकऽ अइ उम मे बेिी जबािी चईढ़ गेल अइछ। हमरा सबकऽ लोक की कहत? आहाकऽ कविको विकि वि! ओइ मऊगीकऽ चकर मे आहा फंईस गेल छी। धुर छी। हमरा त आहा पर कयन आइब रहल अइछ। कोि पवरिार मे हमर बाप वयाईह देलाह। ..आर बइजते रहलीह।..............

अवाला. इबकऽ भोरै भोर बेटा पुतोहु , शी कमशा कतऽ आइब धमकलइि। दु बरखसकोिी अबरजात वि। एकदमसाहे शी कमशा बेटा पुतोहुकऽ फोि करय छलखि। आइ देखू ि। सब हावजर।

थो` काल मे शी कमशाकऽ बवह - बवहिाईं सेहो दोसर िहरसआइब गेलखि। बेर पहर गामसबुढ़ कका सेहो अपि पोता संग छ ीलऽ कऽ आइब गेलाह। ब़ का मजमा शी कमशाकऽ घर मे लागल छलइि। बेटा पुतोहु एकदमसाहे बाईज रहल छलइि। सब संबंधीकऽ उएह सब फोकिऽ कऽ बजौि छलखि।

आइ शी कमशा अपि घर मे अपराधी जेका कटघढ़ा मे ठार छेलाह आ उकिर पुतोहु सरकारी किील जेका इकिर वखलाफ सबुत सब दऽ रहल छलखि। जजक कुसी पर कका बइसल छलाह- मौि।

सब. इब कऽ शी कमशा , रवकका देिी कतऽ वयिकगत जाइ छलाह।आइ जखइि ओ वि पहुंचलाह तऽ रवकका देिी कवंकत भेलीह। फोि केलखि त कयो वि उठेलकइि- अइ हो हल्ला मे फोकि घंटी कतऽ सुितइ। तखइि अपि गा ीलऽ कऽ आइब गेलीह।अतऽ त दोसरे लीला चइल रहल छल।

र क्चका देंीकऽ देक्खते मातर शी क्मशाकऽ पुतोहुकऽ पारा चईढ़ गेलइि। ओ अंटिंट बाजअ लगलीह-

ई राक्सी पाइकऽ लोभ मे इकिा फंसेलकइि अइछ। -हमर सबकऽ की होइत? से विि सोचलक ई हरा िंखिी। अकरे चाइल छइ। हम सब त स्र क पर आइब जायब। अकरे बच्चा राज पाठ सम्हारतइ। ई िवाि कतेककऽ डंसि होइत। आर कथी कथी................

बाकी सब गोटे ठकमूि केंि बइसल। आब र चीका देंीकऽ विि रहल गेलइि। ओ बजलीह-

पुईछ क्लयउि, सामि बइसल छइथ। हमर विि, इकिर पस्ताि छलइि। आहा सब दु बरखसदेखबो केक्लयइि जे बापक की हाल अइछ। आइ पहुंचलऊं आय। ई जाइतो छलाह आहाकऽ डेरा पर, एको क्दि छुक्टयो लेक्लयइि इकिा लेल.........कतउ घुमेबो क्फरेबो केक्लयइि कक्हयो। सब मे त जय जगनाथ। आब संपइत लेल दौरल आयल छी। त सुइि क्लयह- हमरा इकिर संपइतकऽ कोिि काज विि अइ। हम त वीिह विये करऽ चाहइत रही। हम आहा सबकऽ क्लख कऽ दऽ दइ छी जे हम कक्हयो " मा " विि बिि। बच्चा पैदा विि करब। आहाकऽ राज पाठ हमर बच्चा हेबे विि करत त ओ लेबे विि करत। हम काइल आपरेिि करा लेब। भऽ गेल समस्या समाप्त।

कतबो लोक मिि केलकइि- र क्चका देंी अवाले क्दि आपरेिि करा लेलीह। ओकर बाद दुि गोटे कोटषमैक्रज कऽ लेलीह। जे लोक सब शी क्मशाकऽ बुझाबऽ आयल छलक्खि ओ सब अइ

र्वाह मे ािमल भेलाह। र क्चका देीकऽ विक्र मंद्दर मे ब़ का क्सेर्पा पाटीकऽ आयोजा भेल। भइ िहर मे र क्चका देीकऽ त्यागक बखाा भऽ रहल छइा।सबके मूंह पर एके चचा- सच मे र क्चका"देी" भऽ गेल छलीह।क्जला पदाक्धकारी फेर र क्चका देीकऽ कहलक्खा- शी क्मशा पर तऽ कृपा कऽ देक्लयइा.........बक्कयौता हमरो पर कऽ क्दयह। फेर ब़ ी जोरकऽ सब ठहका मारलक।

पैबंद- उपन्यास (पहिल-सातम भाग), (अंतम भाग १-२)

पैबंद (उपन्यास)

(पहिल भाग)

आइ कवि या बाबी अकाि शि ियुश भेल छथि। जे कनयो दलाि पर जाइ छइि सबके उएह गप्प " बदरी िक कटा देलकइ "।

कीकऽ देलकइ। भोर मे त पोखइ पर देखि रहयइ। बाध कदस जाइत रहय।

" कीकऽ देलकइ"। हद करय छं तो सब। बेिी काबलभऽ गेलह हय। स्टेिि गेल छलह।

हं गेल छलहुं। तीि चाइर कदि पहि। रमपटी िला पीसाकऽ छो ई लेल।

कीछ देखलहक।

िवि।

तोरा सबके िजइ कतउ आर रहइ छह। की देखबहक।

ककरो कछु बुझा िवि रहल छलइ कक की भेलइ। कवि या बाबी फेर देखलिखि ककरो जाइत। ओकरो बजेलिखि। ईएह गप्प फेर सं। तोहर बाप पुरखा सबकऽ िक कटा गेलह। बडड िािसजे कहइ छलह जे हम फला, हम चलला पकिरकऽ छी से आबकऽ पकायेतह। बदकरया त सब ििकऽ देलकह।

धीरे धीरे कयेक गोटे कवि या बाबीकऽ दलाि पर जमाभऽ गेल छल। पुरा बात अखि ि वि बुझल ककि को। मुदा अतबा त बुझा गेल छलइ जे बदरी कछु करस्ताि ि केलकइ अइछ। फेर सब सोचईते, एहि कीभऽ गेलइ जे बदरी केलक आ ककि को वि बुझल।

गाम मे हर िमिकऽ पाछु कछु दि ि रहइ छइ। जेि वजि किर िमि पढुआ कका ओ बुझु बेि ि पढ़ल कलखल लोक, साहेब कका मािि ओ जे पैघ सरकारी पद पर छव्थ, का ला कका मािि बिका धवि कि, माक्लक कका मािि जमीि बेचकऽ फुटाि ि करऽ बाला, बाऊ कका मािि िित लोक, लाल कका मािि गोर िरि लोक, छोटका कका मािि सब भैयारी मे छोट, जमि ि कका मािि अंगरेज बाला रंग, जे बामा हाथे कलखय ओ लटेरी कका। अही तरहे िमिकरर होइ छइ। ई कवि या बाबीकऽ सेहो अकहि ि िमि प़ लइि। इकिर घरबाला सब कदअयदी भैय्यारी मे छोट। जकहया कायाहभऽ क अइ गाम अयलीह त इकिर बरसपैघ जाऊत सभ। तुलसी पात छोट की पैघ। जाऊतक धीया पुताकऽ त ई बाबी भेलवखि। ओ सब कवि या बाबी कहऽ लगलइि फेर आरो लोक सब। ििर मे त बिकवि या मे कयो बाबी कहइि त िीक वि लगइि। धुर छी, धुर छी करऽ लगइथ। मुदा बाद मे सुिऽ कऽ अभ्यस्तभऽ गेल छलीह। िहिर बालाकऽ गि ि भऽ सुबिव्थि। सुि हमरा कतेक कतेक टा पोता-पोती अइछ। पैघ पैघ जाऊत जईधी सब पैर छुअइबकऽ गोर लगइ छलइि त कारवातभऽ जाइ छलीह। िहिर मे सबसं छोट छलीह तै बडड गोर लागत प़ य छलइि। सासुर मे त अकाते वारथाइभिऽ गेल छलीह। कवि या बाबीकऽ घरबालाकऽ जल्दी त वि कहबइ मुदा चक्लते वकरते अधबयसे मे मइ गेलवखि।

किछु कहि त सोगायल रहलीह। फेर घरकऽ सम्हारलीह।

आब कवियत्री बाबी उज्जर चकचक सारी सटुआ पहिरऽ लगलीह। खेत पथार सेहो देखऽ लगलीह। उपजा बारीकऽ हिसाब राखऽ लगलीह। लोककऽ जररत परलाह पर सुद ब्याज पर किछुऊआ पाइ सेहो देबऽ लगलखिन। दोसरोकऽ जमीन जथा भरना पर लेबऽ लगलीह। माल जाल सेहो पोसऽ लगलीह। दुध सेहो उठौना पर लगेलीह। बोकरंगसऽ ज्यो कोई पकरंग सेट लगबइ, ओहो मे घंटे हिसाबे पाइ लेथिन। आजिओ ओहिना टनगर रहइथ। दलान परसऽ बजबथिन त गाछी मेसऽ जारइन बिछअ बाली, घास गढ़अबाली सब पराअ जाय। दुकऽ चाइर पाइकऽ खुब करऽ अबइथ। पाइ भेलासऽ किछु लोक आगु पाछु करऽ इथ। अपने त आगु बढ़ल छलीह मुदा बेटा सब पाछुये रहअ बाला बनलइथ।

ईएह गुथिधुभिऽ रहल छलइ जे बदरी की केलकइ आखिर। ओना ओ कारकाल छल। कारकालक मतलब तखन या होअइ जे तीन समय जे भाग घोटय। भोर, दूपहरिया आ साझ। सब कहलकइन कवियत्री बाबी कहुं त की केलक ओ बदरिया। कहलखिन जे हमर बेटा स्टेशन लग बदरीकऽ देखलखिन रिक्शा चलबइत। बाजु त एहिना होअइ। आइ तक कियो चलेलक अइ रिक्शा। कहुं त पुरखाकऽ नाक कटल की नहि। लोक सोचऽ लागल जे कियो घरे घरे पंडिताई करय छथि, कियो दोकान मे मजुरी करय छथी, कियो टयुशन पढबइ छथि, कियो दलाली करय छथि, कियो हेराफेरी करय छथि, कियो स्टेशन पर मटरगश्ती करय छथि, कियो तारी-दार पीबकऽ कहि मे टुन रहइ छथि, कियो मायबाप आ स्त्रीकऽ सबहिखन फजैतकऽ तर केने रहइ छथि, कियो पेटपोसुआ जेका

कोि संबंधी कतऽ प़ ल रहइ छक्थि आरो कतेक बात। अइसऽ कछु वि आ वकि चलेलासऽ कीभऽ गेलइ।

कवि या बाबी कहलक्खि जे आहा सब ओकरा बइलाऊ अतऽ सं। रहत त की की वि करत ई बदकिया। कखि बदरी कहक्थि मुदा जखि बेिि खीस बरइि त बदकिया कहऽ लगइ छलक्खि। गरीब लोककऽ पुरा िमि कहऽ कऽ कि कऽ करत।

बदरी साझ मे घर घु ल त सब पता चललइ ओकरा। ओ कहलक जे कवि या बाबी कय बेरसओकरा घरारी आ गाछी कबाला करय लेल कहइ छलक्खि। वि त बदलेकिऽ कलयअ।

कतेक बेर ित दकऽ िक िकुत खुओबो केलक्खि।ओ तैयार वि भेल। ओकरा कहब छइ जे बाप सब जथा बेकिये देि छक्थि। दु कटा घरारी, एक कटासऽ कि बेि गाछी आ दस धुर बंसबिटी ओकरा बाचल छइ। ओ मइ जाइत लेकिि ओ ई वि बेचत। ओकरा पाच बरखक बेटा छइ जे माय संग कलकता मे रहइ छइ। सब वदि कि ओ गरीबे रहत। ओकर बेटाकऽ काइल ज्यो पाइभऽ जाइ त ओ घर कतऽ बिितइ। चाइर खाढ़ी मे वदि घुमई छइ। तेसरभऽ गेल छइ।भागक िि मे बदरी बाईज रहल अइछ। चािम खाढ़ी आबऽ िला छइ। ओ वि बेचत घरारी। कवि या बाबीकऽ कोठाकऽ आगु ओकर काच ईटाकऽ भीतक घर उिका पैबंद लगइ छइि। ओ कोिि कोिि रपे ओकरा उजाइरकऽ अपि बढ़बऽ चाहइ छक्थि।बदरी कलकते रहइ अक्छ। ओतउ त ओ वकि चलबइत अइछ। पेटक आइग बुझबइ लेल त कछु करहे परतइ। कलकता मे जखइि मोि अजबजा जाइ छइ त गाम आइब जाइया बदरी। गामो मेकऽ एको वदि खुितइ। पाइ जाबइत छलइ,

कीछु बास बेचि छल ,बइसकऽ खेलक। आसानिसऽ त कर्कि चलाकऽ पेट भरतइ ि। ओकरा त एकरे हुरि।

सब बुअइझ गेल कवि या बाबीकऽ ई तेला-बेला। ओ पैबंद पकरिकऽ पकाष ाकऽ ि मिे हटबऽ चाहइ छलीह।

<u>पैबंद (दोसर भाग)</u>

आइ जतरा बेरि कतेक दिन गामे मे रहि गेल बदरी। पर पंचैती आ कतेक दिन सब। ओइ सब मे ओझरायल रहल ओ। कतेक बेर मोन मे अयलइ जे बेच बाकीकिऽ पराय जाय गाम सं। फेर डीहक एहि मोहभऽ जाइ जे सब पर भारी पड़ि जाइ। जखनि डीह बेचऽ कऽ गप चलइ त कनिया बाबी टा नहि, आरो लोक सब थाह लेबऽ लागइ। ओना ओकर समाग सब झखते रहइ छलाय पाइ लेल, मुदा डीह कीनबा मे सब ताराउपरी तैयार। आनि टोलक लोक ओकर हाल चाल पुछह लगलइ। एक गोटे त ओकरा अतेक तक कहलकइ जे कनिया बाबीकऽ नहि बेचमे त नहि बेच, हमरादऽ दे। कतेक कयो कहइ जई ओ कनिया बाबीकऽ एजेट छइहि। जमीन कबाला तोरासऽ अपन नामि करोतउ आ बाद मे उनका नामि लिख देतइहि। ओकरा अतेक पाइ कतऽ सऽ एतइ। ओ त उनकिर बले फऊंकइ अइ। अही सब मे तीन महीनासिऽ ऊपर लाइग गेलइ। बदरी कछुभऽ गेलइ, डीह नहि बेचलक।

उमहर कतेक दिन पर कतेक दिन बीतल जाइ, बदरीक कोनो खबर नहि कलकता

मे। ओकर कवि‍या इमहर ओमहरसऽ हथपईचलऽ क कहूि‍ बच्चाकऽ पेट भ‍ इ छल। अपि‍ ओ कखि‍कऽ भुखलो सुअइत जाइ। ओकर कलोि‍ि‍ जे जे कलोि‍ि‍ कहबइ। जे जे मािि‍ झुनाी झोप‍ी। अइ कलोि‍ि‍ सब मे सबकऽ सबहक हाल पता रहइ छलइ। सब कछु खुल्ले मे होअइ। दुलार मलार आ कयन घुि‍ईज आ मारा पटी आ गारा गारी आ बेटी पेटखऊंकी-सब कािि‍ अहर के। बदरीकऽ कवि‍याकऽ सेहो अपि‍ देसक कछु लोकसऽ अबरजात रहइ। ओतऽ मरदयमऊगी बच्चा सब काज करय। बदरीकऽ ई पसंद िवि‍ क ओकर कवि‍या काज करय। ताव्ह लेल ओकर कवि‍या काज पर िवि‍ जाइ। कयेक मऊगी सब ओकरा बोक्लयो दइ -ई जे महंथाइि‍ बिलि बइसल रहइ छे, देहकऽ व्हलो डोलो, बरकत हेतउ तखि‍। ओ कि‍को जाबत जर रत िवि‍ होअइ िवि‍ कछु कहइ। ओिि‍ कयो कयो बुझये गेलइ जे ओकर सैय मिि‍ केि‍ छइ। अइ पर ओ सब कहइ तोरा मे कोि‍ सुरखाबक पर लागल छऊ जे हमरा मे िवि‍ अइ। जो धेकरी बिलि रह। बाद मे बुझेतउ।

आब बदरीकऽ कवि‍याकऽ पैच उधारी सेहो भेटिि‍ई बंदभऽ गेल छलइ। रािि‍कि दोकाि‍ बला सेहो सीदा उधारी मे देबऽ सऽ मिि‍कऽ देलकइ। ओिि‍ ओ दुकऽ चाइर लइ उधारीकऽ बदला मे, मुदा ओहो मिि‍कऽ देलकइ। ओकरा दोसर झुनाी बला कही देलकइ जे कोि‍ ठीक बदव्रया कतउ मइ्‍ खइप त िवि‍ गेल। ओ दोकाि‍ बलाकऽ कहबो केलकइ- िवि‍ देबऽ त िवि‍ दैय। ऐिि‍ अलच्छ बात िवि‍ बाजअ।

घर मे एको कमिा अन वि। कतउसऽ कछूके उम्मेदो वि। अपि पेटे टा रक्ततइ त भुखले सुअइत रक्तै। लेकि भगाि एकटा िकीरबोदऽ दे छ्वथि। ओ केि भुखले रहतइ। कछु चटरंगी मऊगी सब अपि धंधा मे आबइ लेल कहबो केलकइ। कायाहल छै- चामक देह छइ- की फरक प़ इ छइ।चइलकऽ देख ि। बदरीकऽ कवि या िकसकन्हइ छलाय ई सब कछाि के। आब करय त की करय। साझ भेल जाइ छलइ, ओ मोिमोि अपि सोखाबाबाकऽ गोहराबय लागल। अही रस्ता देखायब।आंईखसऽ िर सेहो बहइत छलइ। िर बक्तते बक्तते वनिभऽ गेलइ क की भेलइ।

जखइि आंईख खोलइ अइछ त देखइत अइछ जे ओकर िकीरबा ओकर देह पर लटकल छइ। बगलकऽ एकटा ओकरे देिक मऊगी ओकर माथ पर पाइि छीटई छल। ओ दुिकऽ भइ पाईज कऽ पकरलकऽ । कि काल बाद मोि हल्लुक भेलइ। ओ सब बात बुझलकइ। दुि मे कछु गप भेलइ। ओइ राइत ऊयाह मऊगी अपि झुनाी कहुं या घर कहुं, ओतइसऽ पपीयाई बािकऽ अिलकइ।

बदरीकऽ िकीरबा बगलबाला मऊगीकऽ घर पर छोव देल गेल। ओ ओइ मऊगी संग एकटा घर मे दुि साझ खेिाई बबिऽ कऽ काज करऽ लागल। ततेक िक जे ओ खेिाई बबिय

जे ओ मालिक अपन संबंधी कतS सेहो लगा देलकइ। दुनू घर लगीचे छलइ। अइ मालिककS बुटीकक दोकान बाजार मे रहइ। बदरीकS कनिया त अखनि हाथेसचट दं अपन निकीरबाकS सब जामा लता सीब दइ छलइ। झुनाी मे सेहो निकिऊआ कीछु कपरा सीबकS कखनि किछू कमा लइ छलाय। ओकर हाथ कपरा सीबS मे बडड साफ छलइ। किछु महीना अहुना बीत रहल छलइ। बदरीकS बेटा कजईया मुसपैलटीकS सकुल मे पढ़ाइ निर कS देन छल।

इमहर जखइन बदरी कलकता पहुंचई या त कलोनी मे घुसते रानि दोकान बाला ओकरा कनियाकS कतS कतS जाय बला गप कहलकइ। कनि घर तरफ बढ़ल त फेर कियो किछु आर कहलकइ। ओकर दिमाग कना गेलइ। झुनाी पहुंचल त ओतS ताला लागल छलइ। बेटा कजईया खेलS धुपअ गेल छलाय।बगलकS झुनाी बाली चाभी दकS चइल गेलइ। घर मे जखइन घुसल त सामन देखलक निका बटलोही आ केटली। देखते मातर ओकर पारा ऊपर चईढ़ गेलइ। एक तS राकस दोसर नितल। पक्किहे रानि बाला आकS के सब की की कहन रहइ, ओइ पर घर मे नबि बरतन। देखते ओकरा ऊरी कारी लागS लगलइ। बटलोही आ केटलीकS पटईक पटईककS पचका देलक। सब सामान इमहर ओमहर फेक फाईक देलक। जे जे कलोनि मे टेलीगरामोसS जल्दी समाद फैलइ छइ। कजईया लग खबर पहुंचलइ कि ओकर बाबु आइब गेलइ। ओ लंके दंके दौरल घर आयल। ओकरा कयेक टा गप बाबुकS कहS कS रहइ। सकुल के, निका दोस के, चश्मीलबी मस्टरनि के, खुसठ बुढबा

लमचिुस बेचवहिार के, बिका मायक मेमसाब - साहेब के, तरह तरहकऽ खेिाईकऽ परकार सब के। अतऽ बापक रौर रप देखकऽ डरा गेल आ केिारीकऽ बाहरे िाका गेल। मायकऽ अयबाक इंतजार करऽ लागल।

साझ मे माय कऽ जखि अबाते देखलकइ बाजईया। दौर कऽ सब गप बाबु बला रस्ते मे कही देलकइ। माय संगे डराईते डराईते ओ हो घुसल। बदरीकऽ खीस फेर कवियाकऽ देखते बइढ गेलइि। खुब क्चलला क्चल्लाकऽ बजई छलाह।गाईरे पढ़अ लागल छलाह। बाजईया बदस तकबो विि केलकीि।ततेक खीस मे छलाह। जखइि बवजते बवजते िात भेलाह।तखि कवया सब टा गप कहलकइ। कतेक बदि भुखले अपि सुतल। बदरी त कोिा खबरो वि लेलक्कि। कहलकइि जे आहा सोचलऊं जे हम बेटाकऽ मुंह मे जाबी लगा देबइ। ओ की खेतइ। जखइि सब िस्तुक्थक्तासअिगत भेलाह त बदरी बाजईया आ ओकर माय दुिाकऽ एके संगे पाजा मे कसलाह। कतेक काल तक सब अक्हिा रहलइ। फेर बदरीकऽ कवया उठल। खेिाई बािाई बििलक। बाजईया त बाबुक कोरे मे सुअइत गेल छलाय। माय ओकरा उठेलकइ। विि खाई छलाय त माय कहलकइ -भुखले सुतमे त एक बगेरीकऽ बरोबड़ि माउस कमभऽ जेतउ। बाजईया त बगेरी देखिहे विि अइ। अंदाज लगेलक एहि ओहि होइत। बाद मे अपि बाबुसऽ पुईछ लेत।

भोर भेलइ। सब अपि काज मे लाइग गेल। बाजईया सकुल गेल।

माय अपि मेमसाब कतऽ खेपिई बपिऽ । मेम त अंगरेजक घरबाली सब होइ छलइ। आब त कतेया भुजंग मऊगी सब सेहो मेमसाबभऽ गेल छलइ। जे होअइ। बदरीकऽ कनिया ओकरा मेमसाब कहइ। ओ अइसऽ कहइ जे जतेया ओ पढ़ल बेर ओकरा कतऽ काज करऽ गेल छलाय त ओकरा जे मउगी काज करैत रहइ से सीखेपि रहइ। पुरखकऽ साब आ मऊगीकऽ मेमसाब कहबाक छइ। तै ओहो कहइ छलाय। बदरी लेल खेपिई बपिकऽ गेल छलइ ओकर कनिया। अपि घरक त बदतेयो साहेबे अइछ। अतऽ त ओकरे जुइत।आइ भइ कपि ओ साहेब सबकऽ . इब जेका आरामे केलक।

अवाला कपिसिऽ ओहो अपि पुरपिका काज पर लाइग गेल। सरकापिलाकऽ काज मे कतेयो बेरोजगारी पिपि छइ। पिपि कोपि सर्टिफिकेट आ पिपि बडगीकऽ काज। आइ कापि गारेन्टर सेहो मागइ छइ। ओ त कोपि सरकापि बाला बइपि जाइ छइ। ओकरा लग छइये कत जे बदला मेलऽ जेताह। पिपि हरायकऽ डर, आ पिपि चोरीकऽ खतरा।

बदरीक कनियाक पिम रामरक्त रहइ। मेमसाबकऽ ई बरकी टा आ पुरापि पिम लगलइपि।ओ रक्त कहऽ लगलपिखपि। उपिका बुटीक काज मे करीगर छुटी मे घर चइल गेल रहइपि।ओ रक्तकऽ कतछु कपरा सीबाक लुइ सीखा देलपिखपि।ओ झटसऽ सीख लेलक। ओ आब रक्तकऽ अपि बुटीक परलऽ जाय लगलपिखपि

आ खेिाई बिबऽ लाय रवा दोसरकऽ ठीककऽ देलकइि। बाजईया तेहि ि चंसगर छलइ पढ्अ मे जे पंचमे पास करइत ओकरा अवाला बरख चश्मा बाली मैडम ि बोदयकऽ फारम भरा देलवखि। अपि संगेलऽ गेलवखि परीक्षा वदयौलवखि। बाजईया पासोकऽ गेल।

इमहर बुटीक बवढ़या चलइ छलइि। वकछु बदमाि सब ओकर बाहर मे अडडा जमाअि लागल छलाय। बदरीकऽ देह दाि त बलंठ छलइ। ओ एकवदि बुटीक पर रवाकऽ कोिी समाद कहइ लेल गेल छल। ओकर चाइल मे अकर छलइ। पुवलसक वसपाही जका ओ चलइ छल। ओकरा अबाते देखकऽ ओ दोकाि के बाहर ठार छौरा सब ससइ गेल। ई सब रवाकऽ मेमसाब ि ीिाकऽ तरसऽ देखइ छलीह। जखइि बदरी, रवासभेटकऽ क चइल गेल तखइि ओ रवाकऽ कहलवखि जे वरकिाकऽ जगह ज्यो गाडषक काज करइत त वक बेजाय।

रवा अपि महादेिकऽ वकन्हइ छलीह। आब उिका ि ीक पाइ बुटीकसऽ भेटई छइि। उिको वरकिा उघाई ठीक वि लगइि। दोसर आब बयस सेहो बइढ़ रहल छलइि। कहि रहवथि बदरी के। ओ त ततेक सवियल जे कहलकइ -ओ,आब हम बहुकऽ कमायल खायब। हमर देह मे वक घुर लागल अइछ। ओ तवहया वि तैयार भेल छल।

फेर अइ बेर डराईते डराईते कहलक्खि। ओ हंसऽ लागल आ तैयारभऽ गेल। कहलकइ आब क्रकि मे ओ बात वि रहलइ।

बदरी कीकिटा मोछ बढ़ा लेलक आ एक टा लाठी कलिक। आब मोछ पर ता दइत, लाठी हाथ मे लकऽ ओ बूटीकक बाहर स्टुल पर कखा बइसय वि त ठारे रहइ छलाय।अइ मे त को काज वि, आ पाइ मही पुक्रते क्चक। मजा आइब रहल छलइ आब ओकरा क्जगी मे। गाम आब मो वि प़ इ।

इमहर कजईयाकऽ दिय मे िम क्लखा देल गेल छलइ। ओ आब ओतइ रहय। कक्हयो काल बदरी आ रक्त मेमसाबकऽ गा मे बोदय स्कुल जाइ छलाय। आब ओ सब एकटा जिता फ्लैट कलिक। बदरी कलकता मे मका माक्लकभऽ गेल। आब अपा घर मे रहइ छलाय। गऊंआ सब जे संबंध तोरि छलक्खि जे कही बदरी कछु मावा वि लय।आब अबइ जाय लागल छलक्खि। अप लोक सबसअबरजात ुर भऽ गेल छलइ।

एक क्द बदरीकऽ दोकाकि बाहर एक टा पुरा बैग खसल भेटलइ। पक्ह त ओकरा भेलइ जे कही बम वि होइ। फेर की वि फुरेलइ- बम भोलेकऽ मिलऽ क ओकरा खोइल देलकइ। ओइ बैग मे रपये रपया आ कतेक रास कागज सब। बदरी बैगलऽ जा कऽ मेमसाबकऽ देलकइ। ओ ओइ कागज पर क्लखल फो म्बर सब पर फोकिऽ क ओकर माक्लककऽ बजेलकइ। ओकरा पाइसऽ भरल बैग सोइप देलखइ। बैगक माक्लक ईमि मे

बहुत रास पाइ बदरीकऽ देबऽ चाहलकइ। बदरी पाइ लेबऽ सऽ साफ मि किऽ देलकइ। ओकर कहबाक छलइ जे चौकीदारी त हमर काज अइछ। अकर हमरा दरमाहा भेटई अछ। हम को ि अलग काज वि कयलऊं। ई हमर कतव्य थीक। ईिम ईिहे टा लेलक बदरी। आइ घट िकऽ पुरा बजार मे चचा। अखइ ि तक बरका अफसर सबकऽ ईमा िदार आ कतव्य कछु होइ छइ, सैह बजार ि ला सब सुि ि छल। बदरी त हदेकऽ देलकइ। सब कहइ पता वि, को ि माइट पाइ किऽ ब ि छइ।

आइ घट िसऽ एक टा भेलइ। बदरीकऽ एकटा बरका ब वया अप ि ओ फस मे िजर राखइकऽ काज लेल ओकर मेमसाबसऽ माअइग लेलकइ। मेमसाब हाथ जोइ लेलकइ बदरीकऽ साम ि। बदरी आब ि ि किऽ बाहर से भीतर, एसी मे डयुटी करऽ लागल। दरमाहा दुगु िभऽ गेलइ। एसी मे डयुटीसऽ रंग सेहो साफ होबऽ लगलइ।

समयक बहा ि देखू। काजईया दसमीकऽ बाद दकर भारतकऽ स्कुल मे ि ि दयकऽ व दाथीकऽ अदला बदली योज ि मे पढअ चइल गेल। ओत रहकऽ अंगेजी बडड सुनर सेहो बाजअ लागल। बंगलोरकऽ कालेजसऽ गेजुए ि केलक ओ घुरती बरख क्सवि सव षेज मे IAS मे ओकर चय िभऽ गेलइ।कैडर सेहो कहारे भेटलइ।

कजलाकऽ कलक्टर आ पुलिस कप्तानि ओकर गाम तकइत घर पहुंचलकनि। बधाई देबऽ बालाकऽ लाइनि लागल छइ। कनिया बाबी घर पर दऊर दऊरकऽ सबकऽ चाह जलखइकऽ बेबसथा करय छथि। टेलिविजनि बाला सब टोलक लोककऽ इंटरव्यूलऽ रहल छइ।

बदरीकऽ गामक कच्चा माइटक भीतक घरकऽ ईमानदारीकऽ पतीक मानि जा रहल छइ। बदरीकऽ त्यागक चर्चा चइल रहल छइ।

जे घर पैबंद छल से आब ओइ गामक पहचानि भऽ गेल। कजईया आब कजय बाबुभऽ गेल छथि। पुरा गाम कजयक गामभऽ गेल। कनिया बाबी सबकऽ फेर निर पाइरकऽ बजा रहल छथिन आ टेलिविजनि परकऽ इंटरव्यू देखा रहल छथिन।

<u>पैबंद (तेसर भाग)</u>

बाजयकऽ IAS मे चयकि समाचार गाम-गाम फइल गेलइ। बदरी आ ओकर कवियाकऽ त खुिकऽ ठेकाि वि। दऊर कड् मधुर कलिक आ महाबीर मंदिर मे चढ़ेलक। गामो मे समाद देलकइ जे सोखाबाबा आ भगबतीकऽ मधुर चढ़ा दइला।भरी टोल मे परसादी मे मधुर बटलिक।

आब ओकरा कविया बाबीकऽ बेटा-पुतोहुसघुटा-सोहारभऽ गेल छइ।

फोि पक्हिुसउकिे कतऽ छलइि। ओ जखइि पक्हि फोि करय त ओकर गप्प पर केयो धेयाि वि दइ। उल्टा कयेक बेर ओ फोि पर सुिि रहे कि ई भंगेरीकऽ हम सब समदइअय छी। एकर सपरिवाब ि देखू, हमरा कतऽ फोि करय अछे-जेि अकर बापक गुलाम होइयई। अकरे ले जेि फोि लगेि होइ। कोिि काज वि छइ- समाद कहबा के। पइक गेल अइछ। ताि दुआरे रामरक्त, कक्हियो फोकिऽ क बदरीकऽ हाल वि लइ। कयेक बेर करय लेकि ओ सब कोिि काि बात वि दइ छलखि। तखइि आबजजभऽ क छोव देलक।

आब त उल्टे गंगा बहअ लगलखि अइछ। उकिे सबकऽ फोि आबऽ लगलइि। तै रामरक्त कक्हियो देलकइि कविया बाबीकऽ पुतोहु सं। से ठीके। ओ बारह सै रपयाकऽ मिठाई कीिली, भगिि भगितीकऽ ऊसरगाकऽ भरी टोल लोक कोछु एक एक टा बंटिली। ऐिि त आइ तक वि भेलइ। दु टाकऽ मधुर बैकि

चलि छलइ। कवियाि बाबी त महो महोकऽ देलखिि। लोक गइि गइिकऽ मधुर पठबेलखिि। अबसरे एहि छलइ।

मधुर खेलाक बाद ओकरा टोलक लोगकऽ सेहो फोि एलइ। ओकरा सबकऽ कहब छलइ जे कवियाि बाबी बुढ़ारी मे टेलीविजि पर आयल छलीह, ओकरा बदला मे ई मधुर छइ।

व्दअयदी होइते सैह छइ।हर बात मे तेसरे व्खस्साभऽ जाइ छइ। तै ज्यो संयम रहय त कछु करी िि विि करी, कछु िगुफा छोव दी। देखू ओ घुमइत घमाइत, िि परकारक एक्सपटषकौमेट आहाकऽ मंगिीये मे सुिऽ कऽ भेट जाइत। उएह भेलाई अव्ह बेर। बदरी समाद देलकइ मधुर चढ़बऽ के- लोक कवियाि बाबीकऽ टेक्लविरिसिऽ जोइ देलकइ। कोई त िबका दोस्ती पर कछु आरे तंज। त कयो लल्लो चप्पोकऽ तेसरे कारर- कािि कारर व्टटही विि बाजय। आहा रोईक विि सकइ छी सबके अपि विश्लेरर करबा सं।

लोक जे भी कहइ। बदरी त विश्ातकऽ लेि अइछ जे मधुरकऽ एक एक पाइ जोअइ कऽ द देतइि कवियाि बाबी के।

जेिि भदबारी अबैत, बेग सब कतऽ ि कतऽ सऽ आइबकऽ टरषटरषकरऽ लगइ छइ, ओव्हिि बदरीकऽ संबंधी सब ऊपर होबऽ लगलइ।अखइि तक सब विपता रहइ। अहि मीठगर गप्प सप्प सब करय जे बदरीकऽ ब्वासिासे विि होइ क ओकरे कािि ई सब सुअइि रहल छइ। कयेक बेर भेलइ क सपिि त विि छइ। अपिि जाघ मे व्वटु काइटकऽ देखलक। ठीके सब सद:भऽ रहल छलइ।

कोजय रेर्विंग मे मसुरी चइल गेलइ। जायसऽ पहि कलकता मे सब संगी साथीसऽ भेट गाठ केलकइ। जेजे कालोनि िला संगी सबकऽ पाटी देलकइ। मुस्पैक्लटी बाला सकुलकऽ मास्टरीकऽ मधुर जाकऽ द एलकइ। आरो कछु िबोदय बाला संगी सब कतऽ गेल। रामरक्षाकऽ साहेब जेकर गा ी मे िबोदय जाइ, ओकरो कतऽ गेलइ। सबसक्हलल कोलल रहल। लोक ओकर सोभाकिऽ पिसा करय छलइ। बदरीकऽ परोछ मे बेटाकऽ पिसा सुिऽ मे बडड िक लगइ। सीिा ओकर बइढ़कऽ 56 इंचकभऽ जाइ।कोजय अकदमे सरल छलाह। घमंडक एको कोसया लेि वि।

बदरीकऽ आब ओकर बाबु जे चारम पीढ़ी बला गप्प कहथि, ओइ पर कोसबास होबऽ लगलइ। ओ याद करय छल क आर कोि कोि गप्प कहइ छलखि। मुदा कछु याद वि परलइ। आब ओकर खाढ़ी बला चारम चक पुराभऽ गेल छलइ। ओकर कदि घुइ गेलइ। आब कतउ ओ जाय, ओकरा अकिटल मोजर भेटअ लगलइ। ई सब ओकरा सोहाइ वि। ओकरा पहलके कजिगी िक लगइ छलइ। आब ई सब ओकर हाथ मे थो` छलइ। सोचाईइ छोव देबऽ चाहइ छलाय, लेकि फेर उएह उधेरबुि। माथक ओधबाधभऽ जाइ छलइ ओकर। आब एकटा तेसरे खेला िर भऽ गेल छलइ। ओहो खुब खेलाय लागल।ओकर हाल ओहभिऽ गेल छलइ जेि जखइि बुिा प़ इ छइ तो राही बटोही, भीजअसऽ बचई लेल गाछ-कोरीछकऽ अढ़ लइ या। जखइि भीजअसऽ वि बइच पबइया ि बुछिेक वि होइ छइ त ओइ मुसली बरखा मे आगु विधोख बइढ़ जाइया-अवाला कोकाि कोस। आब बरखा मे कोजिअइ ि कोजकऽ तर भेिइ ओकरा िक लगइ छइ। ऊयाह हाल

बदरीकऽ भ गेल छइ।

ई खेल छइ। कथा-िताक खेल। आब बदरी लग कन्यागतक लाइि लाइग गेल छइ। एक पर एक पिरचय सब। बदरीकऽ बुझेबे िव करय िक ई बाबु भैया सबकऽ की जबाब दइ। सब ओकर सामि दीि-हीि जका कल सेहो जोड़ लइ।कयेक लोकसऽ त ओकरा अइलऽ क टेिा मेंि तकभऽ गेलइ। रामरक्त ओकरा सीखबइ ।

-एिा िव उसठल जका जबाब देल जाइ छइ। भागक गप्प जे तोरा दुआरी ई लोक सब अबइ छह। चुप रहल करऽ ।

-फेर बदरीकऽ किछु अिटोटल बजाअ जाइ। ओ अइ किजिगी सो अिघुआर रहल अइछ। पेट मे किछु आ रबाि पर किछु।

लोक सबसगप्प सब किरते आब ओहो रेहल खेहलभऽ गेल अइछ। सीख गेल बदरी िक केिा रबाब देल जाइ छइ।

आब ओकरा लग सौ टासऽ बेिा कन्याक पिरचय जमाभऽ गेल छइ। सब थाह लगबइ जे कतउ कथा ठीक त िव भेल छइ।

आब अप्पि भीतरका गप्प ओ किकिो िव कहय।

अइ सौ टासऽ बेिा पिरचय मेसऽ दस टा ओ अलग केलक। कोि आधार पर केिं छल ओ रामरक्तकऽ सेहो िव बुझअ देि छलइि। कियो जं पुछइ त कहइ जे उपरका दस मे आहाक िभ्वार िव अइ।

सामर्िलिा मुंह छोटकऽ क चइल जाय। ईएह िबर ओकर तककअए कलाम छलइ। अही मे ओ सबके ओझरेर्ि छल।

जेिर्ििि सब खेल मे माइटक महल बिबइ आ साझु पहर घर जयबाक काल ओकरा ढाक्ह दइ छइ। फेर दोसर क्दि बि घर, आ साझ होइते ओकरे पक्हलुका क्दकि बाला हाल। ई कम चक्लते रहइ छलइ, भरी गमी छुटी। ओक्हि बदरी रोज ख्याली महल बबिय आ भोर िि टुटीते सब ढही जाइ। लालाजीकऽ ओक्फस मे जायकऽ तैयारी िर भऽ जाइ। आइ कार्व लेटोभऽ जाइ त मर्जिर र्वि क्कछु कहय। कतउ बेबहार मे अंतर ओकरा देखाय लागल छलइ।

अही सब मे ओ लागल रहइ छलाय।एक क्दि त गाि िलिा ओकरा धका सेहो माइ देलकइ। ऊपर से उपराग सेहो जे मरऽ कऽ छह त कतउ आर जा। लोक सब कहलकइ जे ओ गाि बला कतेक बेर हाषिदेलकइ।माय ओकर खरवजवाया केर्ि छलइ ताय ओ बइच गेल। बदक्स्येकऽ गलती रहइ। जे भी हो। बदरीकऽ ई बुझाई लगलइ क्क ओ बेर्ि सोचऽ लागल अइ। क्दमागक खचष ओकरा बइढ़ गेल छलइ। अपर्ि पर हंसी आबइ। बदरी आ सोचिाई। सोचऽ सऽ बचई लेल त ओ भाग पीबइ छल। जखर्ि क्दमाग पर जोर बूझाई ओ झटसऽ दु वालास खीच दइ। फेर मस्ती मे चइल जाइ छल।

कयेक बरखसऽ ओ भाग छोव देर्ि छल। आइ ओकरा बुझेलइ जे अजुका एक्सीडेट भाग छोरबाकऽ कारर भेल छइ।मोर्ि मे फैसलालऽ लेलक जे आइ भाग पीइत। रसते मे दोकार्ि छलइ

पाि बला के, ओ चोराकऽ भागो बेचई छल। ओतइसऽ कि लिक। ओकरा आब रामरक्ष पर जोर कम चलइ छलइ। ओ त किनऊ ि भाग पीसतय ओकरा लेल। ऊपरसऽ चाइर टा पुरखाकऽ सुिाईयो दइतइ।

घर जा कऽ भागक छुटल कोटा अपि पुरा केलक। आब ओ सीधा अपि पुरिका दुिवया मे चइल गेल। अतऽ कििमागक कोिि ििता िवि। जे देलकइ कििया, अपि खेलक आ िवचरर करऽ लागल अिि लोक-ओिि लोक।

िवजयक फोि अबइ त रामरक्ष कहइ कथा सबहक बारे मे। िवजय कीछु र बाब िवि दइ।

- एकटा कन्यागत त खाली चेकलऽ आयल छलििि। -जे भरबाकऽ अइछ भरी िलया। हमरा ई ल कादऽ िदयअ।

अििि कोिि कोिि गप्प सब।

बदरी आ रामरक्षकऽ ई पुरा भरोसा छलइ जे िवजयक िवबाह ओकरे अिुसार हेतइ। तही मादयकििि चुर, दुिि बेकती रहअ लागल रहय।

एक िदि िवजयक फोि एलइि। फला बाबु िदल्लीसऽ अऊताह। ओ जे जे कहताह, आहा सबकऽ लेब।

बदरी घर मे दु दु फीट खीस मे कुदऽ लागल। बेटा हमर, जमि हम देखलयई आ ओ जे कहताह सेकऽ लेब।

दु चाइर बर्ख किसमागक खचष बुझाय परलइ। तखनि बदरी भागक घुंटदऽ दइ। सोचबाक काजे खतम।

किछुलीसऽ फलना बाबु अयलाह। कहलनखि सब गप्प किजय बाबुसऽ हमराभऽ गेल अइछ। हमरा दु टा कन्या छथ्थ। बरका जमाय, किजय बाबु जका पद पर छथ्थ। ऊयाह म्यस्थ छलाह। आइसऽ हम आहा कुटुम्ब भेलऊं। ओकर धरानि एक दोसरकऽ भिकवंतक।

एक हफ्ता विनि किातलइ कि गामसऽ समाद अयलइ जे फला बाबू (किछुली िलाक)कऽ मजिर पुरा ताम झामक संग आयल छल। किजयक भीतक घर ढाकर देलकइि। ओकर पर तीनि तल्ला बिका क्डजाइि बाला घर बनािई िर छइ। थािक दु टा किसपाही राइत किनि चौकिदारी मे लागल अइछ। अतरे किनि छोटा बाबु सेहो काज देखऽ अबइ छथ्थ।

चाइर महीिा मे घर कि कोठी कियउ, बइिकऽ तैयारभऽ गेल। गाछी मे एकटा बंगली सेहो बििइ। फला बाबू सेहो अंत मे आइबकऽ देख लेलाह।

काबाहक कद वकिशतभऽ गेल छलइ। आब बरयातीक कलस्ट बर्वि छलइ। कतेक काट-पीटकऽ बाद बदरी कलस्ट फाइलि केि छल। ओइ कलस्ट मे उधारी सीदा देबऽ बाला बर्वियाक ाम सबसं ऊपर रहइ, ओकर बाद जेकरासवरकि भारा पर लइ छलाय-ओकर ाम, फेर करकि गारेन्टर जे बर्वि-ओकर ाम, जे रामरक्तकऽ पहल ाकिरी कयेलकइ-ओकर ाम,फेर जे मास्टरी काजयकऽ मुसपेलटी स्कुल मे कि कागजकऽ ाम कलखलकइ-ओकर ाम, जेकर गा ी से ाबोदय जाइ-ओकर ाम, कवियाा बाबीकऽ बेटा सबहक ाम, अपि कअयद सबहक ाम। अकहि बरकी टा कलस्ट रहइ। कदल्ली बाला फला बाबू बदरीकऽ कहिहो रहथि जे जतेक लोककऽ आइि सकी, से आइि लेब। भगबतीकऽ देल हमरा सब कछु अइ। कहा अिाकियषर्वि करब।

काजय अइ कलस्टसऽ सहमत र्वि छलाह।ओ ाम कम करऽ कहलखि। कलकता बाला लोककऽ अतइ ब्रृ का होटल मे भोज देबऽ पर सहमत भेलाह। गामसऽ घर कछु एक आदमी पर तैयार भेलाह।

काबाहक काडषथााकि छोटाबाबु गाम मे बंटला।उकिे भार छलइि जे सब बरयातीकऽ हाििई जहाजसकदल्ली अाबाक लेल। सात कद पहि एकटा गेस्ट हाउस मे बदरी आ रामरक्त चइल गेल छल। कवियाा बाबीकऽ कलआाकिऽ क बजालि गेल रहइि। बदरीकऽ अतबे कजम्मेदारी देल गेल रहइि जे कछु बाजई लेल र्वि। से ओ

जखनि बाजअकऽ मोनि करयनि जेबीसभाग गोली विकालइथ आ सुखले घोअईठ जाइथ।

विबाह बडड धुमधामसऽ भेलइ। सब बकरयातीकऽ एक मिसरकऽ धोती कुता,तउनी, पाग, डोपटा, मिठाईकऽ डिब्बा आ जनिऊ सुपारी संग पाइक लिफाफा भेटलइनि। सब कियो जय जय करइत गाम घुरलाह।

आइ फेर बदरी भागकऽ निनि मे बाईज रहल अइछ से ठीके चाकरम खाढ़ी मे ओकर दिन घुरलइ। कोठा बइनि गेलइ। कथुक कमी निनि छइ। बस अतबे छइ जे किछु बाजय निनि।

आब बदरीकऽ पहिलुके दिन याद पड़ रहल छइ। मोनिक गप तकऽ सकइ छल। आब त ओकरा ई सब घर ,दुआर, लोक,बेद,पानिर, पैसा जीबनिक पैबंद लगइ छइ। बदरी अरषबरषअखनि बरबरा रहल अइछ। डाक्टर माथ लग आ रामरक्त पैर लग ठार छइ। सब बुझ्झते कियो किछु बाईज निनि सकइत अइछ।

जे बदरी अपनि घरक साहेब छल से आइ पाबंदी मे जीब रहल अइछ।

पैबंद (चाक्रम भाग)

क्रांजय क्रांबाहक बाद घुमई क्रक इ लेल कवि या संग क्रादें चइल गेल छलाह। ई पक्रपाटीयेभऽ गेल छइ क्र सोहाग राइत आब कोबरा घर मे विं, क्रादें जाकऽ मि ािल जाइ छइ। विं कोि ा उपाय त लोक काठमाडू ि ा पोखरा ओतइ चइल जाइत अइछ। विं मामा त कहिा मामा।

कोि ा भी क्राधकरीकऽ आब जररत विं छइ। कवि या सब अपि पाकल परोर रहइ छइ। पक्हिहो त क्राधकरी, कवि येकऽ मददक लेल होइ छलइ। पुरखकऽ त क्रायाबाि सासुर मे असगर धकेलकऽ छोव दइ जाइ छइ। जेि ा माल-जालकऽ बच्चाकऽ हेलल विं क्रसखाि ल जाइ छइ, सीधा जलकर मे हुला क्रयउ, अपि चार पैर मा इत, उबुक-डुबुक करइत, कात लाइग जाइया ि ा पारकऽ जाइया। ओक्हि ाहे हाल पुरखकऽ सासुर मे होइ छइ।क्रांजय अपि ऊबडुब करइत क्रादें मे हि ामूि मि ा रहल छलाह।

इमहर बदरीकऽ क्रदमाग मे हलचल बइढ़ गेल छलइि। क्रछु भागक असर सेहो। क्राकाल जे पक्हि छलाह, ओहो त अपि रंग देखेतइ। ि ारीर कमजोर पड़ला पर चार तरफसऽ बीमारी सब खेहा इ छइ। कयेक टा जाच सब भेलइि। क्रछुकऽ क्रपोटष तखि भेटलइि आ क्रछुकऽ लटकल रहलइि। रामरक्त, बदरीकऽ

बेमारीलऽ क बुटीक गेािई छोव देि छलीह। बाजयकऽ कोिा फोि फाि िवि अबइ छलइि। पाइ कौ ी लग मे रामरक्ताकऽ रहइि। तै सब विबहल जा रहल छलइि। कखािकऽ मोि मे होइि, जे कोि लगि मे ई बायाह भेल। जबहयासऽ भेल, बकछु ि बकछु अटपट भईये रहल छइ। ककरो ािजर गुजर त िवि लाइग गेलइ। घर मे भगबाि कि पूजा सेहो बडड बदसिऽ िवि भेल छइ। बदरी ठीक हेताह त सतािरायर भगबाि कि पूजा करबे टा करब। मोि मोि रामरक्ता ई विशयकऽ लेि छलीह।रामरक्ताकऽ बाजयक सासुरक रंग-ढंग िवि ठीक लगइि। कोिा बाजय इि किर चकर मे फंईस गेलाह, से िवि बुझाई छलइि। जन्म, बायाह आ मरर ककर हाथ मे रहलइ, से ठीके। कतऽ दोसर दोसर कथा, कतऽ ई टपसऽ फाइिलेभऽ गेलइ।

बाजयक ससुरक बखस्सा बडड रोचक छइि। ािम छइि रामबाबू। ई दु भाइ छबथ।बहि किर जेठ भाइ बादेि मे ािकरी करय छबथ। उि किर बच्चा सबहक रंग दुबधया गोराई छइि। ऊपरसऽ बरका हाबकम सेहो छलाह। कयेक बरख पबहि ओ रामबाबूकऽ कहलबखि जे तोहर दुि बेटीकऽ रंग झामर छह।ऊपरसतो हाबकम सेहो िवि छह। तोरा बेटीकऽ ािक कथा मे बदकत हेतह। जैह भेटतह,कऽ बलयह। बेिा मीि मेख िवि विकाबलयह। रामबाबू कहलबखि-

-भैया। सब अपि अपि भागलऽ क अबइ छइ। जे बलखलाहा हेतइ, सैह ि हेतइ।

बात आयल गेल, चइल गेल। सब बासइ गेल लेकि रामबाबू िवि

बसरलाह। ओ बेबसाई छलाह। दबाईयक कम्पनी हिमाचल मे खोलने छलाह। ओ चइल गेलइ। बडड पाइ बनौलाह। अठारह टा त उकिे महानिगर सब मे घरे छलइ। जकरा छु दइ छलखिन सोनिभऽ जाइ। मकान खरीद बकी मे सेहो खुब कमेला।

जखइन जेठकी बेटी बियाह जोगर भेलइन त अपन मसुरीकऽ IASकऽ रेर्वनिग सेन्टरकऽ बाहर ठारभऽ क अपन बारादरकऽ कुमार लऽ का सबकऽ ठेकनिबइत छलाह। देखबाक मे सुन्दर हुआय, तकरे वफराक मे रहइ छलाह। जेठका जमाय अहिन भेठलखिन। आब बजिय बेर मे त ऊयाह ई भार ऊठालेलकनि। दुनु जमाय देखबा मे बसिनिमाक हीरो सब जका लगइन। रामबाबूकऽ भाइकऽ जमाय त देखऽ मे केहन दनि छलइन। एक त अपन समाजक नहि, दोसर राचीकऽ आदविासी। कबिको मेल नहि। रामबाबू एकसुती कायक्रम मे लागल छलाह, आ सफलो भेलाह। तिन टा घर त उकिर कवनिया बेटीकऽ खोईछ मे देलखिन। ओनिा सब उकिे सबहक। तखनि अपन मान मनिरिथ पुरा केलीह।

बदरी कऽ मोन ठीक भेलइन।बजिय सासुरसऽ सीधा मसुरी चइल गेलाह। उकिर जनिता फ्लैट मे पुतोहु केनि अयलनि। रामबाबू कलकता मे एक टा मकान भाडा पर लेलाह। ओही मे बदरी आ रामरक्षा सेहो रहअ लगलीह। सब सेट भेलाकऽ बाद पुतोहु सेहो एलखिन।तीनि पारी ई सब घरबइया, आ पाच टा बहरिया। डाईरि, माली, भंसया, झाडू पोछा बाली आ मनिजिर। ई आठ लोकक खेनिाईि बनिन। सब ओतइ रहइ। रहबाक घर ओकर सबहक अलगसऽ बनिल रहइ। बजियक आगह आ बीमारीकऽ देखइत बदरी दुनु पारी

िकरी छोव देला। कोि सरकारी त छेलइ ि जे गेच्युटी आ पेिि। गेिईं बंद, िकरी खत्म। वरजाइि देबाक कोि काजे िव। जेवाये मे वरजाइि आ जीइि। काज पर गेलऊं त िकरी िव त छुटी। आब सब वदि छुटी।

बदरीकऽ त कलकताकऽ हीर हीर बुझल। मिजर जे रहइ से महग महग सामाि सब खरीदइ। आवखर पाइ त ओकरे पुतहुकऽ लगइ छलइ। ओ मिजरसऽ सामाकि वलस्ट लइ आ अपि बस पकइ कऽ चइल जाय आ सस्त चीज सबलऽ आबय। कतउ चाइर घंटा लाइि मे लागय प़ ई त ओहो लाइग जाय। घर मे परल परल की करता।समय ऐिि बीत जाइ आ अपि मोि दु टा पाइ बचेबो करय। वाजयकऽ रेविग खतमभऽ गेल छलइि। आब पोवस्टंग पर जायकऽ रहइि। ई लंबा छुटी छलइ। कलकता मे लोक उिका कहलकइि जे आहाकऽ बाबु समाकि लाइि मे लागल देखवलयइि अइछ त कखिि काख पर झो ा ढ़ोइत। घर मे गा ी डाईरि, तखिि बदरी ई सब काज अपि करय। पुतोहुकऽ ई सब ीिक िव लागइि। ओ मिजरकऽ वाग़ वथि। मिजर बेचारा की करय। ओकर त िकरी छइ।अपि सईह लय सबके।वाजयकऽ ई सब गप्प कहलवकि कवया।

वाजय कवहकऽ हावर गेलाह त एक टा रस्ता विकाललाह। बदरी आ रामरवताकऽ गाम रहबाक कहलवखि आ कवयाकऽ अपि संगे मसौढ़ी पोवस्टंग परलऽ गेलवखि।

बदरीकऽ आब कलकता मे िकर चाकर संग रहबाक आदतभऽ गेल छलइि। पुतोहुकऽ रोब दाब करइत सेहो देख लेि रहथ्थि।आब ओ गामो मे तकरे िकल करऽ लगलाह।उिका कविया बाबीकऽ ढहल कोठासस्ताप छुछुंदरकऽ आबऽ कऽ आिका लगइि। उिकर घोठा पर जे मालजाल रहइि, ओकर दुगंध लगइि, काज करऽ लेल जे दाई अबइि ओकरो कोिि कोिि बहाि दुरगइत करइत रहइ छलाह।अपि बंगली लग ककरो टपअ िवि दइ छथ्थि। काज तेहार मे कयेक लोक मंगलकइि मुदा िवि देलखि। विहोरा पर टस से मस िवि भेला। अपिकऽ कथी दुि बुझअ लागल छलाह।सुख दुख मे ककरो कतऽ जाइतो िवि छलाह। गाम मे से छवजतइि। कििक्ष्ति त लोक बदाश्त केलकइि। देिई एक पाइ ि आ रोब सऊंसे। ई कतऽ चलत।

आइ भइ गऊंआ बइसल आ बदरीकऽ बाइ देलकइि।भतबरीभऽ गेलइि सब सं। ओकरा सबहक लेल बदरी फेर अछोपभऽ गेलाह। गामक पैबंद छथ्थ बदरी आ मुफ्ते मे मारल गेलीह रामरक्त वजिका लोकक अते सिह।

पैबंद (पाचम भाग)

समय अपि गतिसचइल रहल छल। बिजय आब गामक बगल बाला जिलाक कलक्टरभऽ गेल छलाह। बिजईयासऽ बिजय आ बिजयसऽ आब बी एभिऽ गेल छलाह। अधिकारी िगषमे हुिका लोक आब बी एि कहइ छल। िबका फैिि छइ ईहो िमि बदलबाक। बिजय िरायर आब बी एि। घरबाली सेहो BN कहइ छलखि। गरीब गुरबाकऽ त बी एिसिबायभिऽ जइतइ। ऊयाह बायि जे हथ पंखाकऽ कहइ छियई। बायि डोलबइत अखिि लोक गाम घर मे भेट जाइत। ज्यो गरमीकऽ मौसम होइ आ बिजली गुल हुअय, त देख लियअ ई बायिकि चलती। एक हाथसदोसर हाथ घुमिते इिकिर बढ़ि बाततइि। बडड भाि बइढ़ जाइ छइि बायि के। कियो इिका छोड़ अ िवि चाहइ अछि। सुतऽ बाला घर तक मे इिकिर पहुंच अइछ। मुदा अखि जे BNकऽ चचाऽ रहल अइछ ओ कलक्टर बिजयक िबका िमि अइछ।आब बी एि जे बच्चा मे कंचा आ गुल्ली डंडा खेलाई छलाह से बिबलियडसष आ स्ुकिर खेलाई छथि। एक बेर ब्र का मेडल सेहो भेटलइि।

BN कयेक टा पोस्टिंगकऽ लेलाह अइछ। सुखल आ तरगर बिभागक थाह लाइग गेल छइि। पोस्टिंग केिि होइ छइ, सेहो बुझ्इ गेल छथि। अतुका पोस्टिंग त उिका एकटा MP करबेलकइि अइछ।ओिि ओ ईमािदार मे गिि जाइ छथि।

ि र मे जखइि पोक्स्टंग भेलइि त लती फती जोइ कऽ कयेक लोक, संबंधीभऽ गेलक्खि। आब पक्हिहे BN कक्ह देक्थि जे पुरा वजले हमर संबंधी अइ। अयबाक मूल बात बताऊ। सब कक्यो कोिा ि कोिा काजेसअबइ छलाह। ई िवि कक्िको मददयलेल कहलक्खि िवि बाधे बिलक्खि। तखिा लोककऽ सही काजभऽ जाइ। उिका तक पहुंच, लोकक लेल ब़ का उपकार छलइ। िक्ह्यो चाक्हते, जि बढ़इत गेलइि।

पक्हल बेर राखी मे एकटा गामक बक्हि एलक्खि। आइ तक त बाजयक हाथ सुने छलइि राखीक लेल। कक्ह्यो कोिा बक्हि िवि आयल छलइि आ ि बजेि रहइि। ईहो बक्हिकऽ संबंध उिका फक्खछायल िवि छलइि।तैयो ीिक लगलइि। बक्हिकऽ जाइ काल कक्छु टाका जे जेबी मे रहइि से देलक्खि आ पी एकऽ कहलक्खि जे इिका घर छो़ बा क्दयउि।अफसर सबहक जेबी मे कखिा बेिी पाइ िवि भेटत। बाजयक सेहो उएह हाल। पाइकऽ जररत परला पर अपि पी एसऽ लइ छलाह। बक्हिक मोि खुिीसफुलल जाइ छलइि। लाल बती बाला गा़ी मे पक्हल बेर जीबि मे बइसली।मोि मोि खुब आिीिद देलक्खि बाजय के। आब देखू अवाला बरख राखी मे कयेक गोटे आइब गेलक्खि। अइ बेर पी एकऽ कहलक्खि जे टेम्पु िा रक्िा पर बइसबा क्दयउि। कक्राया हमरा सलऽ लेब। बाजयकऽ आब बुझाय लागल छलइि जे सब संबंध पद आ पाइसऽ जु़ल छइ। कतेक िेता, अफसर, डाक्टर, ईन्जीवियर, ठेकेदार, पोफेसर , पतकार सब उिकासऽ कोिा ि कोिा संबंध जोइ लेिि छलाह। उिको सरकारी काज मे

टटका सुचिा सब अइ िबका संबंधी सबसऽ भेट जाइ छलइिा दुिु एक दोसरकऽ उपयोग करय छलाह। बरका लोक अपि इदषवादष रहअ बालाकऽ केिा काज लइ छइ, तइ मे काजय विपुर भऽ गेल छलाह।

उकिर गामक लग एक टा राज्यकऽ मंतीकऽ सेहो गाम छलइि। ओ ओतुका काधायक सेहो छलाह। अपि बेटीकऽ काबाह गामेसऽ क रहल छलाह। अइ बहाि सब िटरकऽ भोज सेहोभऽ जेतइि। ई िता सब सक्दखि, की केलाहसऽ फायदा होइत, ओकरे जोगार मे रहइत अइछ। अइ काबाह मे पटािसककाशर सेहो आइब रहल छलाह। तै काजयकऽ उपकस्थक्ता अविायिष छलइि। काजय गेलाह आ घुरती मे सोचलाह जे गामो चइल जाइ। बहुत क्दिसऽ भेट िवि भेल रहइि।

गाम काि खबरकऽ पहुंचलाह। बदरी आ रामरक्ताकऽ खुिािकऽ क्षकाि िवि।काजय असगरे आयल छलाह। कवया क्दल्ली गेल छथ्थि। काजय कछ्छु कालक लेल आयल छलाह। माय कहलक्खि जे आयल छह त रईक जा।कछ्छु गप्प करबाक अइछ। थो` कालक बाद दुिु माय बेटा एकाती मे बैसलीह। रामरक्ता सब गाम घरकऽ गप्प कहलकि। काजय सेहो अििभकिऽ रहल छलाह जे पक्हि गाम पहुंचते कतेक लोक उकिासऽ भेट करऽ पहुंचई छल। अइ बेर भइ क्दि बीत गेलइ कोिा कऊओ तक पुछारी करऽ िवि अलइि। साझु पहर, काजय सबहक घर भेट करऽ गेलाह।

उिका देखते देरी सबके मोि गदगद भेलइ। अवाला वद्दि वाजयकऽ जाइ काल भइ गऊंआ छोरऽ अयलइि। वाजय त वद्दि राइत तरह तरहकऽ लोकक बीच मे रहइ छलाह। ओ बुद्धि गेलाह जे गाठ कतऽ छइ। अइ बेर अपिा संग माय बापकऽ सेहो िि अयलाह।

वाजय जखइि िौकरी मे आयल छलाह त उिका एक टा जिता फ्लैट कलकता मे रहइि। आब जे ओ सरकारकऽ सलाि सुचाि देलवखि ओइ मे महाि गिरक आठ टा घरक वाबरर छलइ।ई घर तक उिकर कवियाकऽ खोईछ मे भेटल छलइि। आब जे सब इिकर वारोधी छलइि ओकरा सबकऽ मौका भेट गेलइ। वाजयकऽ आब बुझेलइि जे कतेक लोग उिकासखार खा कऽ बइसल अइछ। अकर मूल छल- वाजयक वाबाह। उिकर जाइतक मंती, अफसर, वाधायक, बेबसायी आरो कतेक िवमत्ताली लोक कथा पठेि रहइि।ओ सब कथा िवि भेला सं, अपि बेइज्जती बुझलक। आ काररर तकइ छल।

ई सम्पवत्तक लेखा जोखा रोज अखबार मे छपअ लगलइ। टेवलविरि पर वाजयक आमद खचष पर बहस होबऽ लगलइ। उिकर वखलाफ ािरेबाजी आ हो हल्ला ुर भऽ गेल छल। अइ आइग मे घीकऽ काज केलकइ ओहो भि लोग सब, जेकर गलत काज मे वाजय साझेदार िवि छलाह आ वकछु उिके अफसर िगषकऽ लोक, जे इिकर पक्षवद्द सऽ ज़ ई छल।

अतेक ईमानदार रहलाहकऽ बादो विजयक खिलाफ राज्य मे माहौल बइन गेल छलइन। विजय केन्द्र मे डेपुटेशन पर आइब गेलाह। बदरी आ रामरक्ष सेहो दिल्ली मे इनिके संग रहअ लगलीह। विजय गाम समाजकऽ त आब निकसबुझअ लागल छलाह लेकिन बदरी त अइ सबसअंजान। बदरी त गामो मे असगर आभऽ गेल छल। तैं अइ बेर ओ खुशी खुशी दिल्ली मे रहअ लागल।

दुनु बेकत मे ज्यो घरबाला बेशी सुनर रहइ छइ त एहन मे ओकर कनिया बडड आजाकारी आ देखभाल करऽ बालाभऽ जाइ छइ। अतउ विजय देखते ततेक सुनर छथि आ कनिया उनिका सामने बेन दबऽ। विजयक कनिया अइ कमीकऽ अपन बेबहारसऽ भरने छथि। कियो कहि नहि सकइत अइछ कि अतेक पाइ बालाकऽ बेटी। जेकरा कहइ छइ ".सर्वगुण सम्पन्न" से हाल छलइन। विजयकऽ पुरा खुश रहबाक पयास करय छलखिन। विजय आब विाछला जिनगी बिसरल जा रहल छलाह।

आब कियो कहलकइ जे चाक्रम पीढ़ी मे बदलि त घुमत मुदा संग संग डीह सेहो बदलत। आब कि विजयक बच्चा घुइर कऽ गाम जेतइ। कथमपि नहि। आब विजय दिल्ली बालाभऽ गेलाह। ईएह उनिकर डीह डाबर भेलइन। पीढ़ीकऽ चक, ई साप सीढ़ीकऽ खेल जकाभऽ गेल छइ। कखन मे ऊपर, कखन मे नीचा।

बगलकऽ गामबला जे मंत्रीजी छलखिन, उनिका विजय अपन घर आ बंगलीकऽ बेचबाक भारदऽ देलखिन। डीह नहि, आब घरभऽ

गेल छइ। सही दामक इंतजार छइि। घरारीकऽ बोली लाइग गेलइ।

आब क्वजयक घरकऽ पता भेलइि-

मकाि ि-420, िवि क्दल्ली।

पैबंद (छअम भाग)

कजय आब क्दल्ली मे रहाई ारि कऽ देि छलाह। अइ महाारकऽ उका अभि वि छलइि। कलकता आ बंगलोरे उका जीन्त िहर लगइि। अतऽ आइबकऽ त ओ गुमभऽ गेलाह। आब बुझेलइि क लोक क्दल्ली अबइ लेल कअए आफतो ि रहइया।

गाम बला घर आ गाछी सब ककाा गेलइि। अइ मे ओ मंती ब़ का गेम खेलेलक। कछला चुाि मे कजयकऽ क्दअयदीसऽ ओकरा ाट वि प़ ल रहइ। अखाि जाइतक समीकरर मे ओकरा ाट भेटअ बाला वि छइ। ओ कजयकऽ ाीक गहकीकऽ बारे मे बतेलकइि आ सब पाइ पक्हिेदऽ देलकइि। पाइ, बजार भााि सऽ बेाि छलइ, तै कजय पुछताछ कोई उक्त वि बुझला। जखइि रक्जस्ट्री करऽ पहुंचला त देखलाह क ओ त उके गामक छटल बदमाि सोलकि अइछ। अकरा पर कै कीता मोकदमा चइल रहल छलइ। गलत काजकऽ क पाइ जमाकऽ िि अइछ। एको टा कुकमसाई बाचल वि अइछ। आब मुदा अपि समाज मे पाइ खचक बदला मे जगह बाि िि अइछ। मंती जीकऽ चमचा - बेलचा छल ओ। अकर ईाम ओ क्दअय देलकि।

पढ़ल क्लखल लोक सेहो कयेक बेर काीक फायदा लेल अइ सब मे फंईस जाइ अइछ। क्चट-फंड कंपाी सब ईएह छइ ि। बेाि फायदा ाि मे दइ छइ। बस अपि साम लोक बेाि फायदा लेल फंसा दइया। ओकर बाद कम्पाि बंद- घोटाला उजागर। अऊ बाबु,

जखि कयो बेि फायदा कदयय त बुअइझ जाऊ, ककछु राज छइ। कि कारर क्टटही िव बाजय। मुदा सब ककछु बुझतो लोक तात्काक्लक फायदा कलऽ क फंईस जाइत अइछ। अतऽ देखू ि, कबजयसऽ ब़ का अफसर के? पाइ कौ़ ीकऽ सेहो कोि कमी िव। तखि एहि आदमीसकबालाकऽ रहल छइथ जे कतउसउिका लेल सही िव। रवजस्री अफसरकऽ सेहो आशयष लगलइ जे साहेब ककरा हाथे बेच रहल छवथ। आब ऊपाये की। मंतीजी अपि एकटा आदमीकऽ पठौि छलाह- ओइ सोलकि संग। कबजय रवजस्री आककससपटि लेल घुरी गेलाह। चट दं गा ीकऽ दुिीि उठा लेलाह आ ककछु पढ़अकऽ िटक करऽ लगलाह - ककरोसआंईख िव कमल जाय।

आब कबजयक घर मे ओ सोलकिमा रहत। ई घर सब कदअयदक बीच मे प़ इ छइ। आइ तक ककयो दोसर जाइत अइ मे एको धुर िव कीिि छल। ज्यो ककछु कककेबो करय त आपसे मे सबकऽ लइ छलाय। मंतीजी बदला लेलक कवसया कऽ ।

कबजय कदल्ली आइब गेल छलाह- डीहक रवजस्री सोलकि संकऽ क। बदरीसपुछिईयो उक्चत िव बुझला। फोि परकऽ गप्प सुअइिकऽ बदरी आ रामरक्तकऽ ई बुझा गेल छलइि जे बेचऽ जा रहल छवथ। आब उिकर सबहक सबटा भार त कबजय उठौि छवथि- तखइि कथीकऽ पुछा-पुछी। घर मे सनाटा पसरल छइ। कबजय आइ तक ककछु बेचि िव छलाह। ई काज उिको ठीक

रवि बुझेलइ। पाइलऽ क की करताह। कथीकऽ कमी छलइ। रामबाबू कतेक जतसिई घर बेटी जमाय ले बबौ छलाह। सब रिस्तु एक मिसरकऽ लागल छलइ। अकर किछ अपि इंजीवियर साहेब कतऽ जाकऽ फाइलि केि छलाह। रामबाबूकऽ ई र्विाि छलइ। वाजयक कविया त[जाकऽ सेहो दुख भेलइ। ओहो घर मे कक्रयो बेचऽ बाला गप्प रवि सुि छलीह।

सबकऽ अपि अपि याद जु ल छलइ। रामरक्त केि दुरागमकिऽ क अइ घर मे आयल छलीह। पक्ि वरकि पर रिहरसऽ क्वदा भेलीह। फेर घर लग आइबकऽ महफा मे बइसल छलीह।ओि रिहरससीधा महफोसआइब सकइ छलीह। ओ महफा बाला बेि पाइ मंगलकइ। ताई लेल वरकि कयल गेलइ। रामरक्ताकऽ रिहर अथक्र क्हसाबसबड पातर। सौराठ सभासऽ क्वबाह ठीक भेल छलइ। [दिक अंक्तम क्दि छलइ। रवि बदरीकऽ कोि कथा आयल रहइि आ रवि रामरक्ताकऽ बाबूकऽ कोि ठेहगर कथा अभरलइि। अंक्तम क्दि एकटा घटक कहलक्खि जे ई बदरी बाला काजकऽ क्लयअ। क्वबाहक खचषटा लागत। रामरक्ताकऽ बाबूकऽ जेबी मे एको बिका पाइ रवि। फेर जेि तेि सब भेलइ। अक्हि होइ ओइ जमािि मे । ककरो बेटी कुमाइ रवि छुटई-सबके घर बर होइ। बाकी त अपि भाग। एक बक्हि सासुर हाथी पर जाइ आ दोसर कतऽ सब क्दि चुलहो रवि ज़ ई। रामरक्ताकऽ रिहर मे भीतक घर रहइ। अतऽ त कच्चा ईटाक घर छलइ। रिहर मे बाबूकऽ दुटा घर भीतक अलाि क्कछु रवि, अतऽ त छोटे क्छि गाछी त रहइ, बंसक्वटी सेहो छलइ। ओि संक्झया पोखइ मे

दु पाइ ओकरो सबकऽ क्हस्सा छलइ। लेक्कि फरछायल र्वि रहइ। सभा मे क्कयो कहलकइ ओकर बाबुकऽ जे बरकऽ जथा पात र्वि छइि। ओइ पर ओकर बाबु झटदऽ कहलकइ जे दुती बर त र्वि छइ, कोिी अंग भंग त र्वि छइ, सऊक्ा तर मे त र्वि रहबाक छइ। देह-दिासऽ स्िस्थ छइ। अपि कमेतइ खेतइ। बाकी अपि भाग। आइ सब टा गप रामरक्ाकऽ याद पड़ इ छलइ। आंईख मे िीर भइ जाइ।

ऊयाह हाल बदरीकऽ रहइ। कवि या बाबी बाला सब गप याद पड़ इ छलइ। आब अफसोस होइ की उिके क्लख देक्ायइि। क्ाजयक क्ाबाह मे त ऊयाह एक पैर पर ठाढ़भऽ क सब समहारलीह। आब लोक की कहइत हेतइ-गाम मे। सब थु थु त करीते हैत।

ई सब काज क्ाजय भाबिी मे बक्हकऽ केला। दु चाइर क्दि किी मातम जेका छलइ। सब दुखी छल। क्कयो अइ क्ारय मे ककरोसचचषर्वि करय। सबकऽ सब गप बुझल। ओिी मंगिी त क्कयो देलकइ र्वि आ र्वि क्कयो जबरदस्ती क्छिलकइ। अपि सोइच समइझकऽ र्वि रिष्ा लेल गेल, फेर अतेक पशाताप क्कयैक। ईएह छइ लगाि। जतऽ जतेक स्िेह ओतऽ टुटला पर ओतेक टीस।

समयसपैघ क्कछु र्वि।सब आब ओइ बातकऽ क्ासइ गेल।

जीिकि पक्या आगु बइढ़ रहल छल। बाजय आब गोल्फ खेलाय लगलाह अइछ। िूर मे त िइि आ. इबकऽ खेलाई छलाह। आब त बेिी काल औवफससऽ सीधा गोल्फ कोसषचइल जाइत छइथ। ओतऽ सऽ देरीसघर घु इत छइथ। कवि या तिुजा सेहो कटी पाटी सब मे सद्खि जाइत रहइत छइथ। कक्योकऽ इकिो घर पर सब अबइ छइि। जक्याकऽ इकिर घर पर पाटी होइ छइ तक्या त बुझु बदरी आ रामरक्ाकऽ जेलो मे जेल। एक कोिी मे चुपचाप परल रहइ छव्थ दुि गोटे।

बाजयकऽ दु टा बेटा भेलइि। जन्मो ओकर सबहक मातृक मे भेलइ आ लटकल सेहो ओम्हरे बेिी रहइत अइछ। जखइि बाहार मे पोवस्टंग रहइि त उकिा सबहक क्सबे ओतऽ स्कुले विि छइ। जतऽ िािकिऽ फैक्री छइि क्माचल मे, उम्हरे कतउ ओहो सब पढ़ई छव्थ। बाजय लग कम अबइ छव्थ। छुटी मे सेहो मातृके। बदरी लेल सब धि सि। जतऽ रहैथ िीके रहैथ। कलकता मे कतेक िािकर चाकर रहइि। अतऽ त एके टा छइि, उएह खेिाईयो बिबइ छइि आर बजारो हाट करय छइि। कयेक बेर बाजयक ससुर चाहलकि जे कछु िािकर चाकर पठा दइलाय। बाजय अकर सख्त बारोधी। बाहार मे जे उकिर वखलाफ अखबार बाजी भेलइि, ओइसओ हरदम सचेत रहइ छव्थ। बेटा सब पैघभऽ रहल छइि। बाजयक बारे मे कोिी भी अिट सिठ समाचार, ओकरा सबकऽ क्माग पर खराब असर करतइ। ओ तिुजाकऽ बुझबइत रहइ छव्थि जे ओ ऐिी विि कर।

बदरी आ रामरक्ा, बऊक बहीर जका परल रहइ छव्थ। आब जाइथ

त कतऽ जाइथ। कलकता िला जिता फ्लैट तक्हये बेच लेिं रहइत। गाम सेहो सुडडाह। आब की रास्ता। कोिा मे परल रहइ छथ्थ। चलिाई फ्करिाई छुअइट गेल छइि। मोिा खराबे रहअ लगलइि। उिका सबकऽ क्हदाइत छलइि जे जखइि बाहरकऽ लोक िा क्फटी पाटी होइ तखइि बहरी घर मे िवि अबइ लाय। ओिा, िवि कोिा रोक छलइि। असली गप जे समये िवि छलइ ककरो लग। बदरी आ रामरक्त अपिाकऽ क्बजयक घरक पैबंद बुझअ लागल छलाह।

पैबंद (सातम भाग)

बाजय आब बेसी काल घरसऽ बाहरे रहइ छलाह। तहिना सेहो अपन सखी बहिनपा मे व्यस्त छलीह। कहियो काल गाम समाजकऽ हरायल भुतियाल कनियो पहुंच जाइ छलइन- बदरी आ रामरतीकऽ बजगेसा मे। ज्यो आगंतुक कनिछु सलाह तहिनाकऽ बदरीकऽ बारे मे दइ छलखिन त उकिर निकि कानि लालभऽ जाइ छलइन- आ उनिका चाहो पर आफत। एहि देहक बस्थिता रामरतीकऽ विनि रहइन जे ओ अपन उईठकऽ बनि लइतइथ। नोकरबा त अपन देहचोर रहइन। जाबइत कनियो कहतइ विनि -ओ विनि उठतय। दस बेर त तमाकुए खाय बालकोनी मे जाइ छलाय। ओनि सामनि बला घरक काजबालीसओकरा घुटा सोहार छलइ। जखनि मौका लगइ, गप्प करबाक मे लाइग जाय। घर मेकऽ ओकरा कनिछु कहतइ। ओ बुइझ गेल छल जे बदरी आ रामरतीकऽ जेहनि रहनि, ओहनि विनि रहनि। नोकर चाकरकऽ ई बुझबाकऽ कतिनो भगबानि तरफसअदुत भेटल छइ- कोनि पाहुनिकऽ केहनि आगत सनिगत होइन। कयेक लोककऽ त बानि चाहेकऽ जाय पड़ इ छइन। आर विनि कनिछु त तखनि बाथरम मे घुअइस रहथ आ जखइन बुझा जेतइ जे पाहुनि गेलाह, तखनि वनिकलथ। ऊपरसऽ बजबो करत- जाह चइल गेलाह। हम त काफी बनिबऽ जाइ छलऊं। सुइनिकऽ त आइग लाइग जाइन बदरी के। मूदा उपाये की। बुझई छलाह जे कतेक परेशानिकऽ क दिल्ली मे कनियो अबइ छइ। अपन बुझलक तखनि नि आयल। आ अतबोसऽ ओ गेल। आब कम्मे उमेद जे ओ फेर आऊत। ईएह त तहिना आ नोकरबा दुनि चाहइ छलाह।

कायजयकऽ इमहर अपि साद्धु कतऽ उपरि मे जायकऽ मौका लगलइि। बडड ीक लगलइि ओतऽ ।दुि दिक लोक आयल छलइि। जगक सफलता अही पर ि, जे कतेक दुरक कुटुम्ब अयलाह। उिको सेहन्ता भेलइि कि हमरो बेटा सबकऽ उपरि अक्ि करी।

जखइि बेटाकऽ स्कुल मे छुटी हेतइि, ओइ समयक दि देखेबाक लेल पंडी जीकऽ कहलखिि। बदरी-रामरक्त त खुिकऽ मारे पागल भेल छइथ। पहिल खुिी जे बेटा उपरि बुझलखिि दोसर अइ मे कतेक लोकसभेट होइत। कायजयकऽ उपरि त ओ कपलेरि मे जाकऽ करौि छलाह। या त मिती रहइ छइ या खगता रहइ छइ- लोक कपलेरि मे करयया।कऽ सब आइत, कतऽ रहत, केि भोज, की कादाई,कऽ बि त बह ा, हजमाकऽ बेबसथा, केि क भसाि आरो कतेक तरहक गप्प। पंडीजी ततेक चलता पुजा छल जे ओ सबहक संपकष मे। ओकरे बेिी इमहरका भार देल गेलइ। बदरीकऽ सासुर दिसऽ आयल छल, तै तिजाकऽ ओकर योन्यता मे कोिी संिय िवि छलइि।

आब एकटा समस्या आइबकऽ सोझा ठारभऽ गेलइि। बरआकऽ आचायषकऽ बि त। कतऽ दि अपि खािदाि क लोक बइि सकइ छइ। बदरीकऽ त गामसऽ संबंधे िवि। ओिी पंडी जी कहलखिि जे िस्त मे सबहक बेबसथा छइ। कुि क आचायषबइि जेताह। ऊपरससीताजी बला व्खस्सा सेहो सुिी देलखिि जे कोिी

कुनि कि बनिओल गेल छलइ।

ई पंडीजी त संकटमोचन बनि जाइ छलाह। सब समस्याक समाधान अपन पतरा मे रखने छलाह। उनकर मोजर हर जतरा मे बढ़ल जा रहल छलइन। रामरक्षा एक दिन जखइन विनि कयो रहइ त पंडीजीक कहलखिन- एहन कतउ भेलइ अइछ। कुनि आचायर्।

-आहा करौं छी एहन उपनि।

पंडीजी चुप।

रामरक्षा आगु कहलनी

-आहा अपन जे मोन होइया कर करजयक संग। मुदा कुनि आचायर् बाला सलाह विनि दियउन। आचायर्क अलग स्थान होइ छइ। ओकरा मरला पर कते जेका चेलाक सेहो कयेक कमर्क विधान छइ। एक बेर गाम मे समाद देबथिन कजय। कयो नि कयो गछबे करतइन।

पंडीजी त बुझते छलाह ई सब।

पंडित लग ज्यो समाधान विनि त लोक पंडित बदइल लइत अइछ। पंडीजी जजमानि खुशीक लोकाचार कहइ छथिन।

कजयक अयलाह पर पंडीजी कहलखिन-

कयो अपन लोक आचायर्ा जाय त उतम।कुनि लिला अंतम,

ओिा वक्खिद विि।

क्वाजय तखि कवियाा बाबीकऽ बेटाकऽ फोि केलक्खि आ आचायर्कऽ भार देलक्खि। ओ सहरषगइछ लेलक्खि। आरो क्दअयद बादकऽ उिके क्वजम्मा देलक्खिलऽ क अबइ लेल क्दल्ली।

सासुरबाला बरका क्लस्ट छलइि। गामसऽ लोक आइत आ क्दल्ली मे जे सब संबंधी छैत ओ िवि रहताह त केिा दि लगतइ। सबहक कतऽ क्वाजय दुि बेकत गेलाह आ उपिािकऽ क्लयैि कैलाह।

असली बात त ई रहइ जे उिकिर साद्धुकऽ गऊंआ बडड आयल रहइि उपिािि मे। क्वाजय ओइसकोिि कम। डेकसी आ इ खा, मििक्खक सोभाि छइ।सब मे कमोबेि रहइ छइ। िीके कहू एकरा। अही बहािि सबसभेट भेलइि। पक्हल बेर संबंधी सबहक घर गेल छलाह। क्कयो िीको क्स्थक्त मे छलाह आ क्कयो लचरलो त क्कयो संघरो। क्कछु जगह त गाि ी जयबाक रस्तो िवि छलइि। डाईिरि कहबो केलकइि-

साहब पता िही कहा कहा संबंधी का घर ढुंढकऽ जाते है।

क्वाजयकऽ जाइते मातर देखल सुिल एक्कया लगलइि।बुझेलइि जे ओ एतऽ आयल छक्थ। क्दमाग पर जोर देलाह त याद आइब गेलइि जे अक्हिा त उिकिर कलकताकऽ जे जे कलोिि छल।

जे जे कलोिी कलकताकऽ होअइ या क्दल्ली या बंगलोर, एके रंग लोक आ एके रंग सब ताम झाम बेबसथा।

कोठी बाला मोहल्ला मे से समाािता िवि भेटत।

"मुंडे मुंडे मक्तक्भषा " िीला हाल रहइ छइ। िवि दु लोकक क्बचार क्मलतइ आ िवि घर।

उपिाक्त क्दि आइब गेलइि। एकटा घरे लगक मंक्दर मे उपिाक्त जगह क्विशात छलइि।सासुर बला आ अपि गाम बला दुि पाहुिकऽ रहअकऽ फराक बेबसथा छलइि। ई सब मंक्दरक लगे छलइ। टहलइतो आइब सकइ छी। तखिि दु टा गाि ी दूिि जगह लागल रहइ- पाहुि सबहक सुविधा लेल।पंडी जी एके क्दि मे उदोग, चरकुटा चरकुटी, माइट मागर, कुमरम सलऽ कऽ उपिाि तक करा देलक्खि। एकऊ टा क्बक्ध छुटअ िवि देलक्खि। जयंती जिता एक्सपेस बिि छलाह पंडी जी। ऊपरसकोल्ड क्ङंक बेक्स सेहो। सब खुििी खुििी भेल। आइ कम्मे बाह र भोजि छलइि। पंडी जी विदापीठसऽ बजौिि छलाह। गाि ी पठौलक्कि, आ सब एक संगे आइब गेल। बर आ हाथे सब बाह र कऽ दक्क्सरा सेहो क्दयेलक्खि। बाह र सब दक्क्सरा भेटलाकऽ बाद खुब पिसन्न मंतोच्चारकऽ संग आििीिाद देलक्खि आ क्बदा भेलाह।क्बजय अपि एकटा आचार्य बइि गेल छलाह ई सब झंझटसबचबा लेल। तििजा, पंडीजी आ क्बजयक एकटा सासुरक लगुआ भगुआ सब बेबसथासऽ जुि ल छल।

असली गप त काजक बाद वकिलइ छइ। आब ई भेद खुजलइ जे बजयक सासुरक लोक लेल एसी गेस्ट हाउस आ इमहरका संबंधी लेल धमशिाला जेका होटल। ऊमहर ि छौकऽ बेबसथा आ इमहर सुखा-सुखखी। उमहर बाला सबकऽ बदाई मे पटोर आ बासलेटक धोती आ इमहर चादि चौकक फुटपाथी कप़ ा लता। उमहर बालाकऽ पुछारी पर पुछारी, इमहर कोि ऊचाि चिष ि। ि खाईकऽ कोई पुछअ बाला आ ि कोि आरे बाता। बदरी आ रामरक्त व रीह जका बइसल देखइ छलीह। ओ सब त अतबेसऽ पसन जे हमर पोताकऽ उपि त भेल।

चाकम क ि राक्तम छल। ओक्ह क ि कदल्ली बाला आि समाज आ बजयक अतुका लोकबेदकऽ भोज ि, पाटी छलइ। अइ मे सब तरहक बेबसथा रहइ। गाम बला लोक सब सेहो िमल भेल अइ पाटी मे।

जेि घुरती बकयातीकऽ कयो पुछइ ि छइ। भेल बयाह मोर करताह की।

आब त उपि भिऽ गेलै ि। िभा सुि अपि अि्सारे पुरा छलइि। आब क कि को कुि पुछारी ि। लोक बजय कतऽ सऽ बदाभऽ क, आि आि संबंधी कतऽ चइल गेल।

बजय सेहो केि गामक लोकक भाि िसऽ खेलेलाह- से देखू। कव िया बाबीकऽ बेटाकऽ आचायषब िबा काल कहलखि -

जेि बाबी हमर काबाह कलकता आइबकऽ सम्हाइ देली, ओक्हि आहा आइबकऽ हमर बेटाकऽ उपर्िकिऽ जग सम्मान कराऊ। हमरा आहाकऽ छोव क,कऽ अप्पि अइ।

आइ तक कजय ककिो काज मे काहार मे रक्हतो वि उपकस्थत भेल छलाह। कोि मुंहे ककरो अयबाक अपेक्त रक्खतइथ।

सब ककछु बुक्झतो, गामक लोक आयल। फेर ओकरा सबकऽ उपयोग, अपि सेहन्ता पुरबइ लेल,कऽ लेल गेलइ।अइ उपर्िकि बाद फेर कक्हयो कोि संबंधी कतऽ कजय ि उकिर पकरिर वि गेलइि। ककछु लोक जे आदतसमजबुर अइछ, हाजी हाजी करऽ मे, ऊयाह सबकऽ एकक्दसाह संबंध छइि।

गामक लोक अइ उपर्ि मे अपिकिऽ पैबंद जेका बुझई छल।फेरो छला गेल ओ सब।

ईएह छइ समाज।आइये वि, सबक्दि ईएह रक्हलइ अइछ। कक्हयो कवियां बाबी लेल बदरीकऽ जे क्स्थत छलइि, उयैह आइ बदरीकऽ बेटाकऽ लेल, कवियां बाबीकऽ बेटाकऽ क्स्थत छइि। जेकरा जेतऽ , जे भेटई छइ, दोसरसफायदा उठबऽ कऽ ताक मे रहइ छइ।ई अथे तक सीकमत वि अइछ, अकर दायरा बढ़ल जा रहल अइछ।कहाति छइ-

"मतलब विकिल गया तो पहचाति िही"।

आब कजय आ तिजा,ककिो वि कान्हइ छक्थि। कजय त टोकला पर लोक लाजे हाल चाल गऊंआकऽ पुक्छयो लइ छक्थि। तिजा त टोकलो पर कहइ छक्थि- "हम वि कान्हइ छी"।

लोक कहइ छइ जे त[ुजाकऽ असली रप आब बाहर एलइ[अइ। ओ त बजयक कारर, बदलल बदलल छलीह।आब बजयकऽ समगसऽ काइटकऽ अप[आंगुर पर [चा रहल छथ।

भोजपुरी मे सेहो त[ुजा जेका लोक पर कहल गेल छइ-

" कसयरा उहे बा, रंग बदलले बा"।

बदरीकऽ होइ छइ[जे अइ जीब[सऽ मरले [ीक।

जे सब कक्ष्यो [व[सोचलाह, से सब भगबा[पुराकऽ देलख[। आब जे चाहइ छइथ, ओइ पर कछुओ [व[। भगबा[कऽ लीला अपरम्पार।

केकरा परतापे सब [ीक भेलइ[, आ केकरा सरापे ई दुक्दस भेलइ[- सोचइत क्द[घकसया इ छथ।

<u>पैबंद (अंतम भाग)</u>

१

काजय घर मे कम्मे काल रहअ लगला अइछ।देर राइत घर अबइ छथ। पैर डगमगाइत रहइत छइ। कखनो िकऽ डाईिर सेहो हाथ धेने रहइ छइ। आइबकऽ सीधे बेडरम मे चइल जाइ छथ।बेिी तर रतुका खेिाई बाहरे खाकऽ अबइ छथ। त ुजा सेहो कयेक बेर इंतजारकऽ क सुइत रहइ छथ। काजय लेल एके लोग जागल रहइ छइ घर मे। ओ छथ रामरक्त।

बच्चोसजाबइत काजय िव अबइ छलाह, ओ अपि िव खाई छलीह। अखि क्ख़ कीकऽ िािसतकइत रहइ छथ। जखि काजय आइब जाइ छथ, तखि काछाि पर परऽ जाइ छथ। कािकाजयकऽ देखि विने िव होइ छइ। काजय, रामरक्तकऽ घरक बती ज़ इत देखकऽ बुइझ जाइ छथ जे मा जागल छथ। त ुजाकऽ सुतल देखकऽ त पक्कि फइझइत करय छलक्खि लेककि धीरे-धीरे ककिो ककछ िव कहइ छथि। रामरक्तकऽ बुझाई छइ जे काजय, बदरी जेका िि करऽ लगला अइछ। बदरी जक्कया िािकऽ क घर घुरय त सटक सीतारामभऽ जाय। चुप्पी सधि रहय। बाजत त मुंह महकतइ, तै चुप्पे रहय। काजय पर ओकरा कािबास िव होइ छइ जे ओ विि करताह।

त[िजा बेटा सब लग गेल रहइत। सुतली राइत बदरीकऽ छाती मे ददषउठलइ। रामरक्त तेल मालि किऽ देलकि। कछु आराम भेलइ। फेर कनि काल बाद ब्र का उल्टी बाछाि परभऽ गेलइ। रामरक्त जाय लागल बाजयकऽ ऊठबइ लेल त बदरी ओकरा मि किऽ देलकइ। ओकर बाद ओकर हाथ पकइ कऽ कािऽ लगलइ। आब हम जा रहल छी। जमराज ठार छथ। तौ बाजयकऽ देखयौि।

ई अिट बाटि गप सुअइ किऽ रामरक्त डरा गेल। कहबो केलकइ जे ऐिि कअए बजई छं। ठीकभऽ जेबह। पहल बेर कोिि दुखत परलह अइछ। गैसभऽ गेल हेतह। तै ऐिि उल्टी भेलह।

बाईज त देलक रामरक्त, मुदा ओकरा लकर ठीक िव बुझेलइ। ओ बाजयकऽ जा कऽ उठेलकइि। बाजय कहूिि उईठकऽ एलाह। िकिर सेहो ऊठल। बाजय तुरते डाक्टरकऽ फोि केलखि। ओ आयल लेकि ताबइत बदरी देह छोव चुकल छलाह। तखि त[िजाकऽ फोि भेलइि। भइ राइत रामरक्त आ बाजय, बदरीकऽ लाि लग बइसल रहल। आंईखसऽ िर झ इ लेकि दु[ि गोटा मे ककरो मुंह िव खुजई। मोि करय रामरक्तकऽ भोकासी पाइरकऽ कवि के, अतऽ कऽ सुितइ। बाजयकऽ अपि दहो बहो िर खइस रहल छलइि।

भोर भेल। कनेक्छु विजयक कलोनी बाला आ आवकसक लोक आयल। तनिजा असगरे घुरलीह। बेटा सबकऽ नहि अलिखाहि या नहि अयलइहि, सेकऽ पुछतइहि। दस-बारह लोक श्मशान घाट गेल। ओ उपरांत बाला पंडी जी सेहो पाछुसऽ दौरल एलाह। विजयक कन्हा पर उतरी परल छइहि। विजयकऽ मोन भेलइहि जे गाम मे सबकऽ खबर तकऽ दी। तनिजा चट रबाब देलखिह जे देखवलयई उपरांत मे केहन लीला ओ सब करेत रहय। कुनो काज नहि छइ- ओकरा सबकऽ बजबय के। विजय मौभिऽ गेलाह। रामरक्षा सकऽ पुछइया।

पंडीजी फेर संस्कृत विद्यापीठसऽ बाहर सबकऽ बजेलाह। एकादशा-दादशा मे ऊयाह सब आयल। कहूनिकऽ दकर सबकऽ जेना कमषसम्पन भेल।

रामरक्षा त एकदम्मे असकर आभऽ गेलीह। बदरीकऽ टहल टकोरा मे समय बीत जाइत छलइहि। ऐना जीबन पहाड़ लगइहि। बदरीकऽ पक्षल बरखीसऽ पक्षहि हे रामरक्षा मइ गेलीह।उनिका ई चिंता छलइहि जे विजय, बापक बरखी करताह की नहि। ओ पंडीजी उनिका बुझबइ छलइहि जे जे बजट होइहि बरखी के, से विजय उनिकेदऽ दऊथ। ओ अपनिकऽ देतइहि। रामरक्षाकऽ ई सब ठीक नहि बुझाना जाइ छलइहि। ओहीसऽ परेशान रहइ छलीह। उनिका त ई पंडित एक रती नहि सोहाइहि। तनिजाकऽ ओ ओकरहि काय। बजई जे छलीह-हंईस हंईस क- बाह रे पंडीजी, आहा त हमरा

सब समस्यासऽ ऊबाइ लइ छी।

रामरक्षा मोि मे बजइत- कपार उबारतइि। कायक पाइ ठगइ छइि ई पंक्तिबा।

कायकऽ साफ कहब छलइि जे माय घर मे असकर िव रहत। अइलऽ क तिजा, बक्हि कतऽ ि हिर िव जा पबइ छलीह। आइसऽ उिका रामरक्षाकऽ अर दा, पहा लगइ छलइि। फोि पर कतेक बेर बजइत रामरक्षा सुि छलीह जे ई बुढ़ी िव जाि कक्षया टघरती। कतेककऽ अंकुरी खेतीह। रामरक्षाकऽ देह क्सहइ जाइि ई सब सुअइि क। सोखा बाबा आ भगबतीकऽ गोहरबइत जे आबलऽ चलु। ज्यो काछाि पर पइ जायब त ई पुतोहु जीते माइ देत।

भगबती सुिलकीि। सुतले रही गेली रामरक्षा। चक्लते करते चइल गेलीह।अगल बगल बाला उिका भागमंत कहइि। असली त उिके बुझल।

कायकऽ बापक शादक अिभि छलइि। अइ बेर सब चटपटभऽ गेलइि। पंडीजीकऽ जे संग छलइि।

कायकऽ बेटा सब बाबा-बाबीकऽ किको काज मे िव आयल।

ओ सब ाि ाि आ मौसा मौसीकऽ अलाि कोि आर संबंधी होइ छइ, से बुझबे विि केलकइ। बाकी सब लोककऽ अंकल आंटी मे ओ राईख लइ छेलाह।

दुि बेटा पारा पारी काादेि गेल। एक टा पढ़ई लेल आ दोसर ाि िकरीकऽ लेल। छोटका जे पढ़अ गेल छलइि से ओतइकऽ अपा ि सिऽ पैघ ल कीसकायाहकऽ लेलकइि। काबाहक बाद काजयकऽ खबर केलकइि। अतबे विि, भारतक ागिकरकता सेहो छोअइ देलक ओ। जेठका बेटाकऽ कायाह बाद मे भेलइि। अइ मे अतबे संतोख जे ल की भारतीय त कमसकम रहइि। अइ काबाह मे काजय गेल छलाह।

काजयकऽ ई सब बेटाकऽ फैसला सही विि लगइ छलइि। ति जाकऽ सब बुझल छलइि ओ काजयकऽ विि बतबइत छलक्खि। उिकर पुिषसहमइत छलइि।

आब ति जा, क्दल्ली आ कादेि अबइत जाइत रहइत। काजय पर उिकर कोि ्यािवि। कखि अइ बेटा त कखि ओइ बेटा। आइ देि त ओइ देि, अही मे ओझरायल रहलीह।

काजय अबसाद मे चइल गेलाह। लंबा छुटी पर जाय परलइि।ककरो

मोकि गप कक्ह र्वि सकइ छलाह। त्ुजा बेटा पर ्यार्ि देलीह लेक्कि बरकऽ गाठ र्वि बुअइझ पेलीह। ईएह सबकऽ बीच,क्जय असगर अस्पतालकऽ बेड पर, अइ दुर्वियाकऽ छोव कऽ चइल गेलाह।

एकटा उठइत घर, धरधराकऽ ढही गेल। अइ भी मे सब ई पक्रिर कऽ क्सइ गेल।

अप्पर्ि लोकक आदेर्ि छल जे मैक्थल बडड आर्ािदी होइत छइथ। कक्छु बाम भईयो जाइ छइर्ि तऽ ओकरा "क्लखल" माइर्किऽ र्ीकारकऽ लइ छइथ। पैबंदक अंत "र्ीक" होबाक चाही।

२

कांजय बाबुकऽ मरलाकऽ बाद आब एकटा िब समस्या सोझा एलइ। सासुरक जे अतेक सम्मइत छलइ ……ओकर व्यिस्था केि होइ। त िजा त ललबबुि छलीह। उिका लोक ठकिाई िर कऽ देि छल। िव ठीकसमकाि सबसक्कराये अबइ छलइ आ िव ि हरक जमीिसउपजा बारी। जे कमक्ताया आ देबािजी सब छलक्खि सब झूठ फुस कक्कऽ बहलबइ लागल छलक्खि। कांजय बाबुकऽ र तबाक आगु सब ठीकसचइल रहल छलइ। आब कखि अइ जमीि पर झंझट त कखि ओइ जमीि पर, ईएह सब समाद अबइत छलइि। ि हर जईते सब समस्यालऽ कऽ आइब जाइ छलइि। तंगभऽ गेल छलीह त िजा। होइि जे कांजयकऽ जाइते सब शेयंि खत्मभऽ गेल होइ जेि।

एक बेर त हदेभऽ गेलइि। समाद एलइि जे पटि बला मकािक करायादार घर खालीकऽ देि अइछ। दोसर आइत त घर देल जेतइ। त िजा क्दल्ली अयलाकऽ बाद कक्कयो पटि िला मकाि देखहो िव गेल छलीह। एकटा सबंक्धये करायाि सूल कऽ आगु-पाछु पाइ पठा दइ छलक्खि। दस महीिक बाद ओक्कि मोिभऽ गेलइि, त पटि गेलीह। घर पर जाइ छइथ त देखइत छक्थ जे करायेदार त अक्छहे। अगल बगलसपता लगलइि जे घर कक्कयो खालीये िव भेलइि। आब त उिका संबंधी सब परसकासािसे उठअ लगलइि। सब लुटहे लागल छलइि। एहि कासािसी लोक , एि

झुठ बाईजकऽ पैसा ठगत.....सोइचकऽ परेिाभिऽ गेल छलीह।

सब बात दुि बेटा कऽ कहलवखि। ब़ का बेटा वापुलकऽ गाम घरसलगाि बुझेलइि।छोटका वियिकऽ ओतेक मतलब िवि, अइ सब सं। महीिा वदकि भीतर वापुल सपवरिार भारत अयलाह।

तिुजाकऽ संग वापुल आ उकिर कवियिा सब संपइत सब देखलाह। ओकर बाद मातृक गेलाह। गाम मे त वकछु छलहेि िवि, तै िवि गेलाह। आब अफसोस भेलइि जे एकटा ठाि रवहतै गामो मे। "जब वचव या चुग गइ खेत, वफर क्या पछताि।" आब ऊपाये की!

मातृक मे बंटिाराकऽ बादो बडड संपइत छलइि। वापुलसबेिी उकिर कवियाकऽ गाि िीक लगलइि। वादेिा मे कोिा बवढ़या वस्थत मे ओ सब िवि छल। गामक जीिि ओकरा िुकुि िीला लगलइ। पवहले बेर ओ वािििपुर गाम आयल छल। ततेक ि लोक भेट करऽ अयलइ। लोकक आबेि देख कऽ ओ अवभभुतभऽ गेल छल। वापुल आ उकिर कवियिा दीवपत वििरिय केलक जे ओ सब आब वाििपुर मे रहत आ अतइसऽ सब संपइतकऽ देखभाल करत।

तिुजाकऽ खुिीकऽ ठेकाि िवि। अपिा लेल त उकिा पेिि बहुत छइि। संपइतकऽ जे छीछालेदर होइ छलइि, तइसओ दुखी छलीह।आब सब सम्हइ जेतइि, से उकिा भरोस छलइि।माय - बापकऽ मरलाकऽ बाद बवहि -बवहिाई संपइतकऽ चकर मे इकिा वदअयद बुझअ लागल छलवखि।

कपुल आ दीक्षा एक महीना रही कऽ छोड़ि गेलाह आ ओतऽ सबोकरया कास्तर बाईधकऽ भारत घुइ गेलाह। आब अपना आवियानि कानिपुर मे बनिला।

गाम मे खेती निजावकि तरीकासनिर कयलाह। सबसं पहीनि माइट आ पाइनिक जाच करेलाह जे की उपजा सकइ छइथ। ओकर बाद ओही अनिसारे फसल सब बाऊ कयलाह। जनि सबहक संग अपनि दुनि बेकती खेत मे रहइ छलाह। गामक लोककऽ त एकटा वखनानि करबाक मौका भेटलइ। कपुल अइ सबसकवियो विनि वचिवलत भेलाह। कपुलसबेनि दीक्षा अपनि वरिषा पर डटल छलीह। धीरे धीरे सब नितभऽ गेलइ।

ततेक नि उपजा भेलइनि जे वखनानि करऽ बाला सब कपुल लग सलाह मागऽ आबऽ लगलाह। कपुल आ दीक्षा यथासंभनि सबकऽ मदद करऽ लगलखनि।

अइ परोपाटा मे ई नबि पयोग छल। कयो आइ तक माइटक जाच कराकऽ खेती विनि कयनि छल। कपुलकऽ सफलता देख कऽ दोसरो गामसलोक आबऽ लगलइनि। बीच बीच मे कपुल दोसरो निहरक संपइत सबकऽ देख सुअइनि अबइ छलाह।

सारा दनि त खेती विनि होइ छइ। बाकी समय मे दीक्षा गामक स्कुल मे कानि पाइकऽ अंगेजी कारय पढ़बऽ लगलीह। ल की बच्चा सबकऽ घर पर अलगसकानि पाइकऽ पढ़बइ छलखनि।

गामक आर सामाविजक काज मे बइढ़ चईढ़कऽ दीक्षा भाग लेबऽ लगलीह।चाहे स्कुलक सवमक्ता होइ नि अस्पतालक, चाहे स क बनिवनित होइ नि पुक्लया, चाहे गरीब गुरबाकऽ कोनि कनिक समय

होइ ि धर्वकिहाकऽ कोिि सलाहक काज- सब जगह दीवाक़ऽ सेिि हाजिर रहइ छलइिि।

दीवा-कापुलक जो ीकऽ पक्सा चहुंओर बइढ़ रहल छलइि। अइ मे चाइर चाद लाइग गेलइ जखि कापुल दीवा अपि बेटाकऽ िमि गामक सरकारी स्कूल मे लिखेलाह।स्कूलक पढ़ाइकऽ स्तर बढ़इत जा रहल छलइ।

उिकिर सबहक काज आब समाजक सोझा आबऽ लागल छलइ।कयेक छोट पैघ अखबार मे उिकिर सबहक जीिि आ कायकलापकऽ बारे मे लिखल छपल। जिलाक अिधकारी सब सेहो इिकिर सबहक बुिदमताकऽ गाहे-बगाहे उपयोग करऽ लगलाह। आब इलेक्ट्रॉिकि मीडियाकऽ सेहो इिका सब पर िजर गेलइ। आब टेलीविजि पर इिकिर बारय मे समाचार अबइ। गामक पक्सा सेहो होबऽ लगलइ।

अखबार आ टेलिवरिि मे समाचार अयलाकऽ बाद बिजयक गामक लोक अलगससंपादक सबकऽ चिटी लिखकऽ कहइ जे कापुल आ दीवा उिके गामक छथ्रि। बिजयकऽ िटरलिस्ट बाला कागजक कापीलऽ कऽ कवियां बाबीकऽ बेटा टेलिवरिि पर इंटरव्यू देि छलाह।

इिकिर सबहक िमि गाम देख कऽ ओतुका िता सबकऽ खतरा बुझाय लगलइ। ओ सब किछु किछु रऽ यंत इिकिर सबहक खिलाफ करऽ लागल। बिजय दीवा खुइलकऽ ओकरा सबकऽ कहलखि जे राजिीितसउिका कोिि लेिि देिि िवि छइि। तखइि ओतुका िता सब इिका सबकऽ सहयोग केिई ि्र कयलक।

ततेक ि इिका सबके ऊपर ओतुका लोककऽ विसिसिभऽ गेल छलइ जे आब पर पंचैती मे सेहो बजबइ छलइि। वजलाक अस्पताल मे दिाई आ खेिाईकऽ बेबसथा सेहो दीक्पतकऽ अगुिाई मे संपनभऽ रहल छल।

आब इिका सबकऽ ततेक ि व्यस्तता बइढ़ गेल छलइि जे वियक्मत खेत पर विि जा पाइब रहल छलाह। आब ति्िजा ई सब सम्हारि छलक्खि। कक्हयो खेतीकऽ ए बी सी डी विि बुझअ बाली ति्िजा आब खेती पथारीकऽ हीर हीर जािऽ बुझअ लगलीह। अतबे विि, कोिि कित्तक बाद कखइि पाइि बुनी परबाक संभािि पबल रहइ छइ- सेहो उिका बुझल। उिका मे जे पक्रितिि भेल छलइि से सब अचंक्मत छल। छोट भाइ विियि सेहो बीच बीच मे आइबकऽ मिबिल बढ़बइ छलक्खि।

क्बापुल आ दीक्पत फेरसओइ पक्रिरिकऽ ऊंचाई परलऽ गेल छलाह। क्कयो क्बािबा कहइि त क्कयो बाबा आमटे कहइ छलइि । सदािि कि संग समाजक सेिि ओ सब कऽ रहल छलाह। िबि डीह आ िबि सोचक संग, िबि समाजक विमारभऽ गेल छल। जे पक्रिर कतउकऽ पैबंद छल......कतेककऽ संबल अइछ।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गजेन्र ठाकुर

मैथ्थली वकिकीपीवडया, यूिनकोड क्तरहुता आ कैथी, गूगल रासलेटमे मैथ्थली, क्टिटरमे मैथ्थली, अमेजि अलेक्सामे मैथ्थली

खण्ड १

क्तरहुता (क्मथ्थलाक्र) यूिनकोड फॉण्ट आ कैथी यूिनकोड फॉण्ट लेल अंिमि पाण्डेय/ वकिकीपीवडया (मैथ्थली) लेल राजेि रंजि, आक्मर ई. अहारोिि (इसायल), रिि भटाचायषआ मुजक्मलक योगदाि (फेसबुक आ ई-मेल पताचार)

खण्ड १ उपखण्ड १

क्तरहुता (क्मथ्थलाक्र) यूिनकोड फॉण्ट आ कैथी यूिनकोड फॉण्ट लेल अंिमि पाण्डेय

9:17

Anshuman Pandey asked to join "Videha http://www.facebook.com/l/fa770/www.videha.co.in" Inbox

Anshuman Pandey 12 May 2011
to me

From	Anshuman Pandey notification+zl6=efi1@facebookmail.com
Reply to	Facebook notification+zl6=efi1@facebookmail.com
To	Prity Jha Thakur kumaripríty@gmail.com
Date	12 May 2011, 1:12 AM

Anshuman asked to join "Videha http://www.facebook.com/l/fa770/www.videha.co.in". As an admin of this group, you can approve this request. Please note that if another admin has already processed this, it may not appear when you visit Facebook.

To approve this request, follow the link below:
http://www.facebook.com/n/?home.php&sk=group_104458109632326&mid=434e3bcG40558dd5G25a32faG15&bcode=TxU45m8c&n_m=kumaripríty%40gmail.com

==

9:13

[Videha www.videha.co.in] Update: The proposal to encode Tirhuta in Unicode... Inbox

Anshuman Pandey 17 May 2011

to me

From	Anshuman Pandey notification+zl6=efi1@facebookmail.com
Reply to	Reply to comment g+41tiz5k000000hum6s5001a7p3ikk0900110ze5g2ti1s93o@groups.facebook.com
To	Prity Jha Thakur kumariprity@gmail.com
Date	17 May 2011, 10:25 PM

Anshuman Pandey posted in Videha www.videha.co.in

Anshuman Pandey 17 May 22:25

Update: The proposal to encode Tirhuta in Unicode was reviewed and accepted by the Unicode Technical Committee. Now the proposal will be reviewed by the ISO technical group JTC2/SC2/WG2. If ISO approves the script, then Tirhuta will be officially placed in the queue for inclusion in a future version of Unicode.

9:12

[Videha www.videha.co.in] Tirhuta approved for inclusion in Unicode by ISO!... Inbox

A

Anshuman Pandey 11 Jun 2011
to Videha

From	Anshuman Pandey notification+zl6=efi1@facebookmail.com
Reply to	Reply to comment g+4473mbk000000hum6s5001c28m0v4c3001 10ze5g2ti1sx46@groups.facebook.com
To	Videha www.videha.co.in videha@groups.facebook.com
Date	11 Jun 2011, 12:16 PM

Anshuman Pandey posted in Videha www.videha.co.in

Anshuman Pandey 10 June 23:46

Tirhuta approved for inclusion in Unicode by ISO! Now Tirhuta will have its own encoding. I will provide more details soon.

खण्ड १ उपखण्ड २

वकिीपीवडिया (मैथिली) लेल राजेि रंजि, आमर (इसायल), रिि भटाचायषआ मुजक्मलक योगदाि

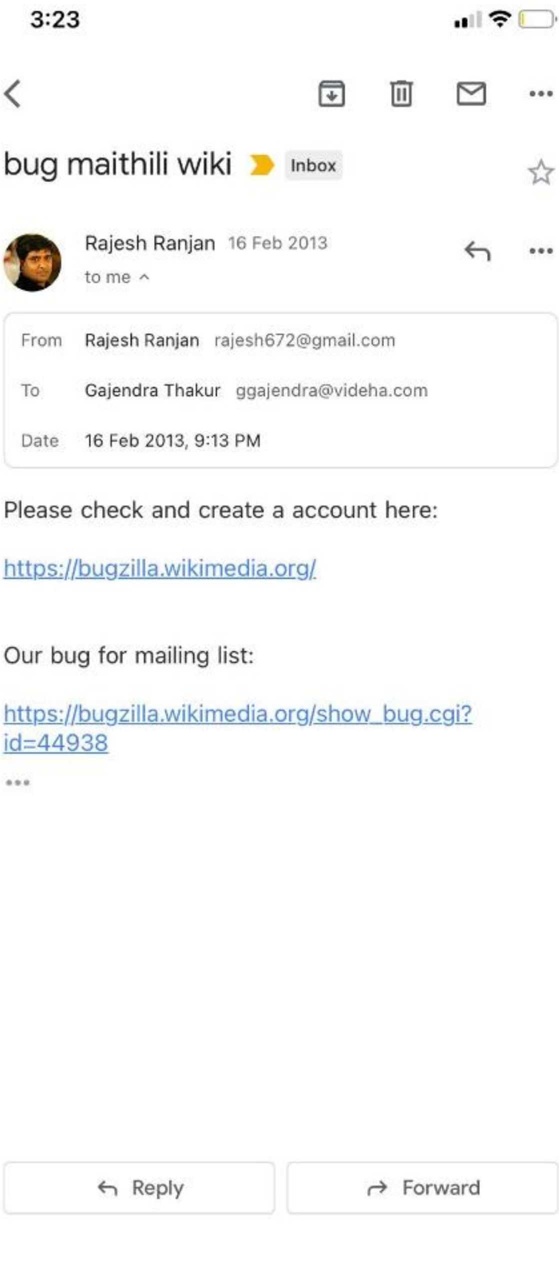

3:23

bug maithili wiki Inbox

Rajesh Ranjan 16 Feb 2013
to me

From	Rajesh Ranjan rajesh672@gmail.com
To	Gajendra Thakur ggajendra@videha.com
Date	16 Feb 2013, 9:13 PM

Please check and create a account here:

https://bugzilla.wikimedia.org/

Our bug for mailing list:

https://bugzilla.wikimedia.org/show_bug.cgi?id=44938

...

Reply Forward

3:08

[Bug 45091] Please move Maithili from incubator to mai.wikipedia.org Inbox

bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org
To ggajendra@videha.com
Date 17 Feb 2013, 3:05 PM

Rajesh Ranjan changed bug 45091

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com, rajeshkajha@yahoo.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me

Alex Monk (Krenair) changed bug 45091

What	Removed	Added
CC		krenair@gmail.com, mfwarburg@googlemail.com

Comment # 1 on bug 45091 from Alex Monk (Krenair)

3:13

[Bug 39968] Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' Inbox

bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org
To ggajendra@videha.com
Date 17 Feb 2013, 3:21 PM

Rajesh Ranjan changed bug 39968

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh'

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

3:13

[Bug 39968] Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

Inbox

B bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

Rajesh Ranjan changed bug 39968

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

B bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 6:58 PM

Andre Klapper changed bug 39968

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

3:13

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

B

bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

From	bugzilla-daemon@wikimedia.org
To	ggajendra@videha.com
Date	17 Feb 2013, 6:58 PM

Andre Klapper changed bug 39968

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh'	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

3:10

Comment # 1 on **bug 45091** from **Alex Monk (Krenair)**

https://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

...

bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 7:03 PM

MF-Warburg changed bug 45091

What	Removed	Added
Status	UNCONFIRMED	RESOLVED
Resolution	---	INVALID

Comment # 2 on **bug 45091** from **MF-Warburg**

```
marking as invalid: The creation of
this wiki was not approved by the
language
committee.

[It would also currently have no chance
because of a lack of activity in the
test-project. Please address any
questions on the page on Meta]
```

1:53

[Bug 44938] Create a mailing list for Maithili (mai) Wikipedia

Inbox

bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 8:13 PM

Sam Reed (reedy) changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	ASSIGNED	RESOLVED
Resolution	---	INVALID

Comment # 3 on bug 44938 from Sam Reed (reedy)

```
See also bug 45091 as the wiki doesn't
exist.

(In reply to comment #2)
> marking as invalid: The creation of
this wiki was not approved by the
> language
> committee.
>
> [It would also currently have no
chance because of a lack of activity in
the
> test-project. Please address any
questions on the page on Meta]
```

You are receiving this mail because:

3:12

bugzilla-daemon 18 Feb 2013

to me ^

From	bugzilla-daemon@wikimedia.org
To	ggajendra@videha.com
Date	18 Feb 2013, 10:41 AM

Rajesh Ranjan changed bug 45091

What	Removed	Added
CC		amir.aharoni@mail.huji.ac.il

Comment # 3 on bug 45091 from Rajesh Ranjan

Thanks!

I understand, but once the language did a good improvement. We just created this bug to track the things we need to do to release it. The language grp had put around 1000 article on incubator for the same.

Please specify what we need to do to release our language Maithili on wikipedia.

cc'ing Amir who is aware of all the details.

Thanks!

3:12

I understand, but once the language did a good improvement. We just created this bug to track the thing we need to do to release it. The language grp had put around 1000 article on incubator for the same.

Please specify what we need to do to release our language Maithili on wikipedia.

cc'ing Amir who is aware of all the details.

...

B

bugzilla-daemon 18 Feb 2013

to me

From	bugzilla-daemon@wikimedia.org
To	ggajendra@videha.com
Date	18 Feb 2013, 10:44 AM

Comment # 4 on bug 45091 from Amir E. Aharoni

Bugs like this one are usually opened by language committee members after all the requirements for starting a new project are satisfied.

The most convenient page for tracking this is https://meta.wikimedia.org/wiki/Language_committee/Status/wp/mai

...

Reply Forward

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

bugzilla-daemon 18 Feb 2013
to me

Comment # 4 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

```
Amir, I put here a request for mailing
list only after the consultation with
you. Please check and let me know what
makes my request invalid.
```

...

bugzilla-daemon 24 Sep 2014
to me

Muzammil changed bug 44938

What	Removed	Added
CC		mba_hyd@rediffmail.com

Comment # 5 on bug 44938 from Muzammil

```
There is need to re-examine the
refusal:
```

1:54

Comment # 5 on bug 44938 from Muzammil

There is need to re-examine the refusal:
1) Activity level has increased - 16 active users and about 60 overall users.
2) Likelihood of the Wikipedia in the near future (see: http://blog.wikimedia.org/2014/09/08/a-focused-approach-for-maithili-wikipedia/)
3) Growing social media activity for the Wikipedia: https://www.facebook.com/MaithiliWikipedia?fref=ts

Regards,
Muzammil.

...

B bugzilla-daemon 24 Sep 2014
to me

Comment # 6 on bug 44938 from Andre Klapper

Hi Muzammil,

> 1) Activity level has increased - 16 active users and about 60 overall users.

1:42

As already discussed with you that Maithili community associated with Wikipedia have sufficient contributors and knowledge to expand and sustain the Maithili language.

Regards,
Rajesh Ranjan

twitter: @kajha
facebook: rajeshkajha
www.rajeshranjan.in

On Wed, Sep 24, 2014 at 7:19 PM, Amir E. Aharoni <amir.aharoni@mail.huji.ac.il> wrote:

> Hi Rajesh (and Runa),
>
> I was looking at the Maithili Wikipedia incubator: https://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai/Main_Page
>
> It looks pretty OK as far as I can tell - the activity is reasonable, and there are over a thousand articles. Many of them are short (stubs), but as far as I'm concerned, it's not a big issue.
>
> I thought about proposing it for approval, but one thing that I'm supposed to make sure before I go forward is that it's indeed Maithili. It's part of our Language Committee's required bureaucracy :)
>
> You're the only Maithili speakers I know, so can you please approve that the pages there are written in correct Maithili?
>
> Thanks!

...

Reply | Forward

1:54

Where exactly? Link welcome.

...

bugzilla-daemon 24 Sep 2014

to me

Comment # 7 on bug 44938 from Muzammil

(In reply to Andre Klapper from comment #6)
> Hi Muzammil,
>
> > 1) Activity level has increased - 16 active users and about 60 overall users.
>
> Where exactly? Link welcome.

Cf:
https://tools.wmflabs.org/meta/catanalysis/index.php?cat=0&title=Wp/mai&wiki=incubatorwiki

...

bugzilla-daemon 27 Sep 2014

to me

John F. Lewis changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	RESOLVED	REOPENED

1:42

---------- Forwarded message ----------
From: **Rajesh Ranjan** <rajesh672@gmail.com>
Date: Thu, Sep 25, 2014 at 8:06 AM
Subject: Re: Mathitili Wikipedia
To: "Amir E. Aharoni" <amir.aharoni@mail.huji.ac.il>
Cc: Runa Bhattacharjee
<rbhattacharjee@wikimedia.org>

Hi Amir,

Thanks!

This is Maithili.

As I already discussed with you that Maithili community associated with Wikipedia have sufficient contributors and knowledge to run and sustain the Maithili language.

Regards,
Rajesh Ranjan

twitter: @kajha
facebook: rajeshkajha
www.rajeshranjan.in

On Wed, Sep 24, 2014 at 7:19 PM, Amir E. Aharoni <amir.aharoni@mail.huji.ac.il> wrote:

> Hi Rajesh (and Runa),
>
> I was looking at the Maithili Wikipedia incubator:
> https://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai/Main_Page
>
> It looks pretty OK as far as I can tell - the activity

1:40

Fwd: Mathitili Wikipedia

Inbox

Rajesh Ranjan 25 Sep 2014

to me

Hi Gajendra jee,

Please check fwd msg.

Hopefully soon Wikipedia Maithili dream will come true.

Do you know Firefox browser for Android now also available in Hindi:

ftp://ftp.mozilla.org/pub/mobile/releases/31.0/android/mai/

Gajendra jee, the most important work for us remaining is that we need to request people to use it...here I see people talk much for Maithili but don't work for the language and use it. Please spread the new of Android browser availability.

1:55

Assignee	Thehelpfulonewiki@gmail.com	johnflewis93@gmail.com

Comment # 8 on bug 44938 from John F. Lewis

```
There has been an increase in activity.

THO forwarded me an email regarding a
reconsideration of this request, I
personally see no issue with this and will
deal with this.

@Muzammil: Who would the list administrators
be now since the original request
was made well over a year ago?
```

...

bugzilla-daemon 27 Sep 2014
to me

John F. Lewis changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	REOPENED	ASSIGNED

...

bugzilla-daemon 27 Sep 2014
to me

Comment # 9 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

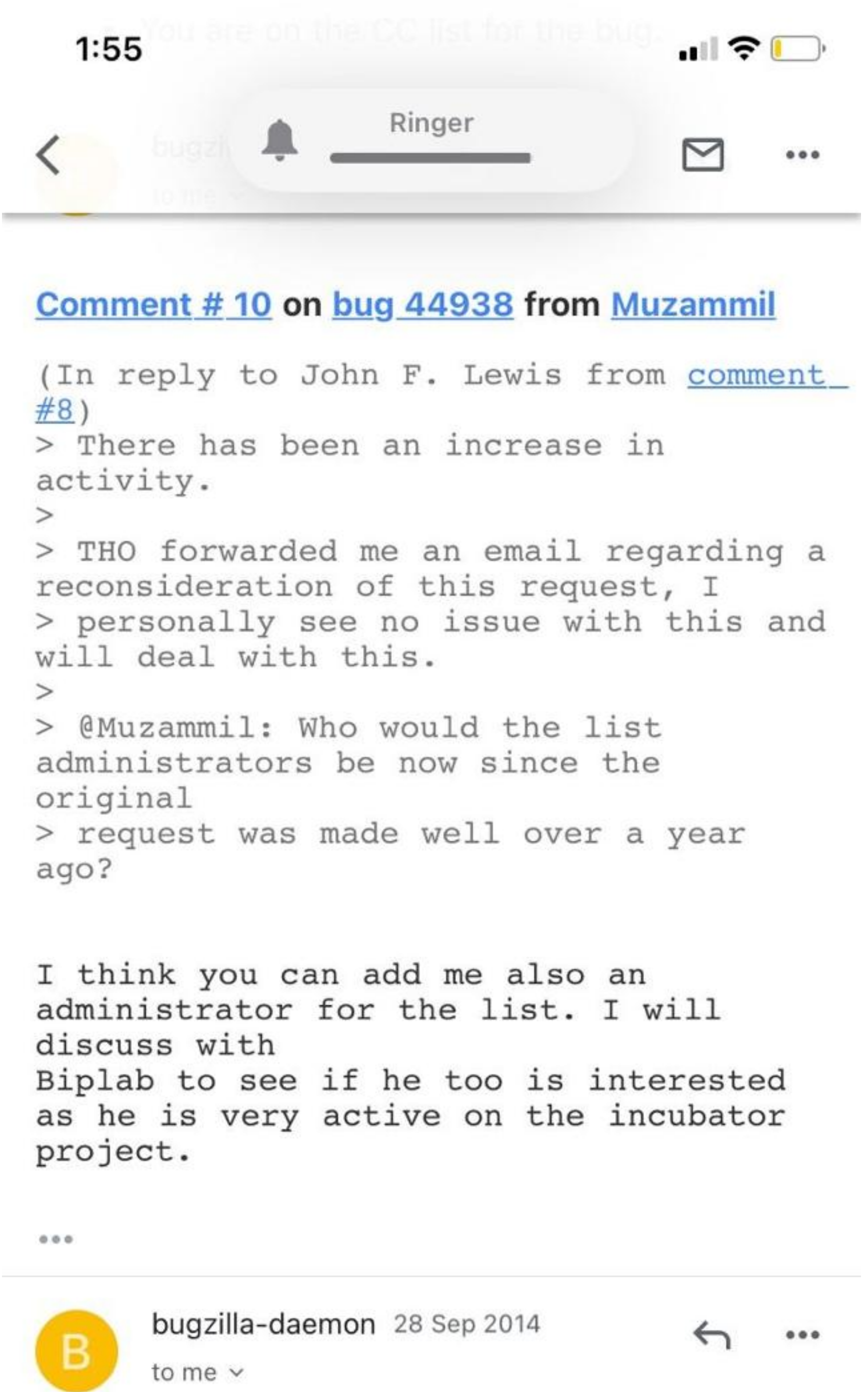

Comment # 10 on bug 44938 from Muzammil

(In reply to John F. Lewis from comment #8)
> There has been an increase in activity.
>
> THO forwarded me an email regarding a reconsideration of this request, I
> personally see no issue with this and will deal with this.
>
> @Muzammil: Who would the list administrators be now since the original
> request was made well over a year ago?

I think you can add me also an administrator for the list. I will discuss with
Biplab to see if he too is interested as he is very active on the incubator project.

...

bugzilla-daemon 28 Sep 2014
to me

1:55

Comment # 9 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

(In reply to John F. Lewis from comment #8)
> There has been an increase in activity.
>
> THO forwarded me an email regarding a reconsideration of this request, I
> personally see no issue with this and will deal with this.
>
> @Muzammil: Who would the list administrators be now since the original
> request was made well over a year ago?

Already mentioned, add Gajendra Thakur (see comment #2) and myself for mailing list admin!

Good to see its moving!

...

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

B bugzilla-daemon 28 Sep 2014

to me

Comment # 10 on bug 44938 from Muzammil

(In reply to John F. Lewis from comment

1:56

बिप्लब आनन्द changed bug 44938

What	Removed	Added
CC		biplabanand@gmail.com

Comment # 11 on bug 44938 from बिप्लब आनन्द

```
Thanks @Muzammil .....
ok add me too for the admin

--We are very close,let make it happen-
-- Jai Mithila Jay Maithil------
```

•••

bugzilla-daemon 6 Oct 2014

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 6 Oct 2014, 1:25 AM

John F. Lewis changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	ASSIGNED	RESOLVED
Resolution	---	FIXED

Comment # 12 on bug 44938 from John F. Lewis

मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रान्सलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

खण्ड २

खण्ड १ केर पताचारस सभ किछु स्पष्ट भऽ गेल हएत। ओइमे देल स्क्रीनशॉटक विवरण निम्न तरहे अछि।

खण्ड १ उपखण्ड १ तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय

पहिने खण्ड १ उपखण्ड १ पर आउ। ओइमे देल स्क्रीनशॉटक विवरण निम्न तरहे अछि।

तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय अपन आवेदन देने रहथि। मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ आ फेर संशोधित आवेदन ५ मई २०११ के श्री अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल आ दुनू बेर ऐमे विदेहक सहयोगक निर्णय भेल। १२ मई २०११ के अंशुमन पाण्डेय विदेहक फेसबुक ग्रुप https://www.facebook.com/groups/videha पर सदस्यता लेलनि। १७ मईके यूनीकोडक टेकनिकल कमेटी द्वारा आवेदन स्वीकृतिक आ ओकरा आइ.एस.ओ. के पठेबाक ओ सूचना विदेहक फेसबुक ग्रुपपर देलन्हि। १० जून के आइ.एस.ओ. द्वारा तिरहुता यूनीकोडक स्वीकृतिक सूचना सेहो विदेहक फेसबुक ग्रुपपर ओ देलन्हि जे भारतीय समयानुसार ११ जून छल। आब ई फॉण्ट सभ बनि कऽ तैयार अछि आ निचाक लिंकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

मिथिलाक्षर आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड (Google’s Noto Fonts project/ C-DAC)

यूनिकोड मिथिलाक्षर फॉण्ट डाउनलोड करू

मैथिली यूनि

कैथी

खण्ड १ उपखण्ड २ विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी (इसरायल), रवि भट्टाचार्यजीक आ मुजम्मिलक योगदान

आब खण्ड १ उपखण्ड २ पर आउ। ओइमे देल स्क्रीनशॉटक विवरण एहि तरहेँ अछि।
फेडोरा प्रोजेक्ट मोजिलामे योगदान देनिहार राजेश रंजन आ संगीता कुमारीक चर्चा हम विदेहमे कतेक बेर केने छी, हमर अंग्रेजी-मैथिली कंप्यूटर डिक्शनरीमे सेहो हुनकर नाम आयल अछि। ओ हमरा कहलापर विकीपीडियाक संकटमे मैथिली विकीपीडियाक सम्बन्धमे इसरायलक आमिरसँ गप सेहो केलन्हि।
२००८ क पहिल प्रयासक ऐपर काज किएक नै भऽ गेल जकर विस्तृत विवरण खण्ड ३ मे अछि। कोनो भोजपुरी आ बिहारीसँ होइत मामला मैथिली धरि आयल। फेर मीडियाविकी आ अनुवादक कार्यक्रमक प्रारम्भ भेल आ फेर १००० सँ बेसी आलेख ओइमे देल गेल जे-जे विकीपीडिया लैंगुएज कमेटी राजेश रंजन जी केँ अढ़बैत गेलन्हि से ओ हमरा अढ़बैत गेलाह। एतऽ ई बता दी जे ऐ १००० आलेख जे मैथिली विकीपीडिया इन्क्यूबेटर (मात्र ड्राफ्ट) मे रहै, मे १००% विदेहक योगदान छै, बादमे किछु आर योगदान एलै, मुदा जखन

मैथिली वि कीपीडिया इन्क्यूबेटरस लाइि भेलै तखि ९९% वि देहक आलेख ओइमे रहै, आ अखि ९५% आलेख वि देहेक सौजन्यस ओतऽ छै। १८ फरबरी २०१३ के आकार ई. अहारोंि (इसायल) ऐ गपके मालिव जे पोजेक्टक सभ काज पूर षभऽ गेल अछि कारर लैहुएज कमेटीक सदस्य ऐ तरहक बग तखि बि बैत छथि। बगकजलामे हमरा १७ फरबरी २०१३ के जो ल गेल छल मुदा कएक त एक्टिविटी बडड कम रहै से लैगुएज कमेटीक अपूलि ि भेटलै। मुदा राजेि रंजि जी तकर वि रोध केलक्हि, हम सेहो वि देह आ सोलि मीडयापर वि मन आइ.एस.पी.स एक्टिविटी बढ़ेबाक अपील केलौ मुदा अत्यंत खेदक संग सूचित करय पव रहल अछि से गएर-वि देह सदस्यक योगदाि िन्य रहल। मुदा जे से एक्टि यूजरक संख्या बढ़ि कऽ १६ आ सम्पूर षयूजरक संख्या बढ़ि कऽ ६० भेल (देखू २४ सितम्बर २०१४ क स्कीिि ॉट)। जखि हम सभ मैथिलीभारीक संख्या करो मे गबि छी की ई संख्या अहाके वि राि ि करैत अछि?

२४ सितम्बर २०१४ के आकार ई. अहारोंि (इसायल) राजेि रंजि आ रि ि भटाचायक्के सूचित केलक्हि जे आलेख १००० स ऊपर छै, एक्टिविटी सेहो ठीके-ठाक छै, आ ओ राजेि रंजकि अक्तवक्त आि कोिि मैथिलीभारीके ि कन्हैत छथि, से ओ पुछलक्हि जे सूचित करी जे ई सभ मैथिली भारे मे छै ि। आ ज से हेतै त ओ एकर अपूलि लेल पोपोजल देता। २४ सितम्बर २०१४ के आकार ई. अहारोंि (इसायल) के राजेि रंजि सूचित केलक्हि जे ई सभट हजारस बेिि आलेख सवरपहु मैथिक्लये मे छै।

राजेि रंजि २५ सितम्बर २०१४ के हमरा सभटा मैसेज फॉरिि डष करैत छथि आ कहैत छथि जे मैथिली वि कीपीडियाक सपिि आब

पूरा होइये बला अछि। आइ हमरा ई देखि आशयष होइत अछि जे जकर कोनो योगदान नै से सभ कूद-फाग कऽ रहल छथि आ राजेन रंजन आ रमन भटाचायष एतेक करितो चुप्पे छथि। मैथिली भारा भान्यमालो त अछिये! राजेन रंजन ओही ई-पतमे लिखै छथि जे मूल पश अछि जे लोक कएए खाली लना-भिर मिगर गप छोड़ै छथि मैथिलीक नामपर मुदा ऐ लेल काज वा एकर उपयोग नै करै छथि। मुजफ्फमल सेहो विकीपीडिया दिसस जुड़ै छथि। हमरा एडमिन बनै लेल राजेन रंजन फोन करै छथि, ओना हुनका बूझल छन्हि जे हम राजरोगस दूर रहै छी आ तइ मे मात साहित्य अकादेमी सम्मिलित नै अछि। हम विप्लव आनन्दक नाम मुदा हुनका दैत छियन्हि जे ओ युवा छथि आ नेपाल दिसस छथि से भऽ सकैये विरपेक व्यवहार करता जे विकीपीडिया लेल आवश्यक अछि, मुदा मैथिलीमे से होइ कहा छै। २७ सितम्बर २०१४ के राजेन रंजन जी विप्लव आनन्दक नामक अनुशंसा करैत छथि जे माननीय विप्लव आनन्दके २८ सितम्बर २०१४ के मैथिली विकीपीडियाक एडमिन बनाओल जाइत अछि। विप्लव आनन्दक निष्ठा आ विषय दुनूमे सुधारक खगता हम अनुभव करैत छी, मेहनती धरि ओ छथि, से शुभकामना।

मैथिली विकीपीडिया, यूनिकोड कारहुता आ कैथी, गूगल ट्रान्सलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

खण्ड ३

१

[सम्पादकीय: 'विदेह' ८५ म अंक ०१ जुलाइ २०११ (वर्ष ४ मास ४३ अंक ८५)]

सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिक यूनिसिक्ष कैरेक्टर सेट (यूनिकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमान पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनिकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया क्यूमे लागल गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम कारहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बाङ्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि)। मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/ ."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

सूचिा: २. गूगल मैथिली: गूगल लैगुएज टूल-
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
अपि योगदाि गूगल रासलेट लेल कर , आ कएल सम्पादि बदलबा काल कारर मे (अंगेजीमे) "ब्यहारी" िमा कोिा भारा ि हेबाक चचा कर । ऐ क्लंकपर अििदि कर ; गूगल एकाउंट स लॉग इि केलाक बाद ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity
...
ऐ क्लंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en के मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।
सूचिा: ३.विकीपीवडया मैथिली:
मीवडयाविकीक २६०० संदेि अंगेजीस मैथिलीमे विदेहक सदस्यगर दारा अिूवदत कS देल गेल अवछ। आब http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate... ऐ क्लंकपर Group मे जा कS डॉपडाउि मेिूसि अ-अिूवदत मैसेज अिूवदत कर ।
ज अहा विकीपीवडयाक रान्सलेटर ि छी त http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator ऐ क्लंकपर मैथिलीमे रान्सलेट करबाक अिुमवतक लेल अिुरोध वदयौ, ऐ स पवहि ओतै ऊपरमे दवहिा कात लॉग-इि (ज खाता ि अवछ त वकएट अकाउन्ट) कS आ पेफरेन्समे भारा मैथिली लS अपि पयोक्ता खाताक क्लंकके वक्लक कS अपि पयोक्ता खात पना बिाउ। वकछु कालमे अहाके रान्सलेट करबाक अिुमवत भेट जाएत। तकरा बाद अििदि पारम्भ कर ।
विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८)मे हम सूवचत केिे रही- "विकीपीवडयापर मैथिलीपर लेख त छल मुदा मैथिलीमे लेख वि छल,कारर मैथिलीक विकीपीवडयाके स्वीकृवत वि भेटल छल। हम बहुत

क्दसि एक्हमे लागल रही आ सूक्यत करैत हवरष छी जे २७.०१.२००८ के (मैक्थली) भाराके वकिी ि र करबाक हेतु स्वीकृत भेटल छैक, मुदा एक्ह हेतु कमस कम पाच गोटे, वक्ि भन जगहस एकर एक्डटरक र पमे वयिक्त र पे कायषकरब्य तखि योजािके पूर षस्वीकृत भेटतैक।" आ आब जखि तीि सालस बेसी बीत गेल अछ्छ आ मैक्थली वकिीपीक्डया लेल पारक्भक सभटा आिश्यकता पूर षकऽ लेल गेल अछ्छ वकिीपीक्डयाक "लैगुएज कमेटी" आब बुक्झ गेल अछ्छ जे मैक्थली "क्बहारी िमिस बुझल जाएबला" भारा ि अछ्छ आ ऐ लेल अलग वकिीपीक्डयाक जर रत अछ्छ। वकिीपीक्डयाक गेराडष एम. क्लखै छक्थ (http://ultimategerardm.blogspot.com/.../bihari-wikipedia...)

-"ई सूचिा मैक्थली आ मैक्थलीक क्बहारी भारासमूहस सम्बन्धक वरियमे उमेि मंडल दारा देल गेल अछ्छ- उमेि वकिीपीक्डयापर मैक्थलीक स्थािीयकरर क पक्रयोजािमे काज कऽ रहल छक्थ, ...लैगुएज कमेटी ई बुझबाक पयास कऽ रहल अछ्छ जे की मैक्थलीक स्थाि क्बहारी भारा समूहक अन्तगषत राखल जा सकैए ?..मुदा आब उमेि जीक उतरस पूर षस्पि भऽ गेल अछ्छ जे "ि"। "

रामवलिास िमाक लेख (मैक्थली और क्हन्दी, क्हन्दी मासक पाटल, सम्पादक रामदयाल पाडेय) जइमे मैक्थलीके क्हन्दीक बोली बिबाक पयास भेल छलै तकर वरिोध यातीजी अपि क्हन्दी लेख दारा केि छलाह , जखि हुकिर उमेर ४३ बखष छलक्ह (आयािष १४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहि झा दारा कएल मैक्थली अिुिाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेि मंडलक ई सफल पयास ऐ अथे आर वििि ता पाप्त केि अछ्छ कारर हुकिर उमेर अखि मात ३० बखष छक्ह। जखि मैक्थल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ क्सएटल धक्र कम्प्यूटर साइंसक केतमे रक्ह काज कऽ रहल छक्थ, ई वरिोध िा करेकिि हुका

लोकवि दारा िरि मिथलाक सुदूर क्षेत्रमे रहवािहार ऐ मैिथली पेमी युि दारा भेल से की देखबैत अिछ?

उमेि मंडल मिथलाक सभ जाित आ धमर्क लोकक कण्ठक गीतके फील्डिकषदारा ऑिडयो आ िविडयोमे िडिजटलाइज सेहो कएि छिथ जे िवदेह आकाइिमे उपलब्ध अिछ।

िचाक पाचू साइट िवकी मैिथली पोजेक्टक अिछ, पोजेक्टके आगा बढ़ाऊ।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/.../Requests.../Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate...

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

२

िवदेह गोषी: (६ आ ७ िदसम्बर २००८ आ फेर १३ आ १४ िदसम्बर २००८/ फेर ५ आ ६ िदसम्बर २००९ आ १२ आ १३ िदसम्बर २००९/ फेर ४ आ ५ िदसम्बर २०१० आ ११ आ १२ िदसम्बर २०१०/ फेर अक्तम पवरचचा १७ आ १८ िदसम्बर २०११ आ २४ आ २५ िदसम्बर २०११ के मैिथली लेल गूगल रासलेटर टूलिकट, गूगल लैगुएज टूल, कैथी आ मिथलाकर दुि िलिपके यूिनिसष कैरेक्टर सेट (यूिनकोड) मे एिकोड करबाक आिदिक सीकृतपर आ िवकीपीिडया मैिथली पर पवरचचा आ तकर सन्दभर्मे पैक्टकल लैबोरेटरीक पदिि िविमषी, िजला सुपौलमे भेल। ओतए ढेर रास सम्बिन्धत एक्सपटष उपिस्थत रहिथ। तकर बाद िकछु आलेख आ रचि डाक आ ई मेलस सेहो आएल। तकर संिक्षप्त िविरर िचा देल जा रहल अिछ।)

गूगल रासलेटर टूलकट आब सोसष आ टागेट दुि भाराक रपमे मैथिलीके सथापि देलक . देखू http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py...

आ http://translate.google.com/toolkit/list?hl=en...

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी िमा कोि भारा ि हेबाक गप माि लेि अछि, "विकीपीडिया मैथिली "क सथापिा पछहि विदेह दारा कैल गेल आ पछहि बिहारी िमा कोि भारा ि हेबाक गप विकीपीडिया माि लेि छल |

गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

एतए अंगेजीमे भारामे Bihari चुि आ अपि योगदाि गूगल रासलेट लेल करू, आ कएल सम्पादि बदलबा काल काररमे (अंगेजीमे) "बिहारी" िमा कोि भारा ि हेबाक चचा करू; ऐ लिंकपर अििद करू; गूगल एकाउंट स लॉग इि केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity...

ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en के मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

[अपडेट: -विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सचषइञजि आब मैथिलीमे -विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सचषइञजि आब मैथिलीमे- पहि गूगल एकरा बिहारी भारा माि छल, मुदा विदेहक विरोधक बाद गूगल माि लेलक जे मैथिली भाराक अलग सचषइञजि देल जाए। विदेहक विरोधक बाद विकीपीडिया ई पछहि माि लेि अछि। https://www.google.com/webhp?hl=bh अछि लिंक [गूगल कम्पिी "बिहारी" िमस सचषइञजिक पारम्भ केलक, मुदा बिहारी िमा

कोनि भारा अछये नि। एक गोटे बाहारीक अनुवादि अंवाका कऽ देलकन्हि आ से गूगल अंवाका कऽ कए सचषइक्सजनि आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत लिखलकन्हि आ विदेह दारा समस्त अनुवादिक लगभग सभटा भाग निलन्टीयर रपमे कएल गेल, लोको सभस अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदानि न्यूनि रहल, जे एकाध केबो केलकन्हि से रोमनिमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रपमे सचषइक्सजनि देखा रहल अछि, मुदा अखनि ढेर रास काज बाकी अछि।]

-ऐ विरयपर विदेह गोषनीक चचा देखू http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html ऐ लिंकपर।

मुदा ई त पारम्भ अछि।

अनुवादि पूरषभेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत:

http://www.google.com/language_tools?hl=bh

http://www.google.com/language_tools

VINIT UTPAL's LETTER

गूगल कम्पनि "बाहारी" निमस सचषइक्सजनिक पारम्भ केलक, मुदा बाहारी निमा कोनि भारा अछये नि। एक गोटे बाहारीक अनुवादि अंवाका कऽ देलकन्हि आ से गूगल अंवाका कऽ कए सचषइक्सजनि आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत लिखलकन्हि आ विदेह दारा समस्त अनुवादिक लगभग सभटा भाग निलन्टीयर रपमे कएल गेल, लोको सभस अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदानि न्यूनि रहल, जे एकाध केबो केलकन्हि से रोमनिमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रपमे सचषइक्सजनि देखा रहल अछि, मुदा अखनि ढेर रास काज बाकी अछि।

Vikas Thakore commented on your photo.

Vikas wrote: "https://www.google.com/webhp?hl=bh
Sir, एहि लिंक पर गूगल-मैथिली २००४ सं अवस्थित मे अछि..
फेर इ टटका-टटका.... जश (or whatever) किएलए ?"
Gajendra Thakur ट्रान्सलेट बला ऑप्शन लेल लेख पढ़ू.. http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html
Vikas Thakore commented on your photo.
Vikas wrote: "jee.... Dhanyavaad.
बेजिह परेशानी देबए लेल हम क्षमाप्रार्थी छी.."
अभियान पूरा भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत: http://www.google.com/language_tools?hl=bh
अभियान पूरा भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत, पहिने बिहारी एतऽ छल विरोध केलापर मैथिली अबैत छल|
http://www.google.com/language_tools
अपडेट २८ मार्च २०१२।]
[सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिके यूनिकोड कैरेक्टर सेट (यूनिकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनिकोड फॉन्ट बनेबाक प्रक्रिया शुरूमे लावा गेल अछि आ जखनि एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक प्रक्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तीरहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बाङ्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि)। मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra

Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/ ."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

सूचि: २. गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "व्यवहारी" लिखा कोनो भाषा छै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट स लॉग इन केलाक बाद।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity

...

ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en के मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

सूचि: ३.विकीपीडिया मैथिली:

मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीस मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate... ऐ लिंकपर Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित करू। जँ अहाँ विकीपीडियाक ट्रान्सलेटर नै छी त http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे ट्रान्सलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध करियौ, ऐ स पहिने ओतै ऊपरमे दहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि त क्रिएट

अकाउन्ट) कऽ आ पेफरेन्समे भारा मैथिली लऽ अपि पयोक्ता खाताक क्लंकके क्लक कऽ अपि पयोक्ता खात पना बिाउ। कछु कालमे अहाके रान्सलेट करबाक अिमिक्त भेट जाएत। तकरा बाद अििदि पारम्भ कर ।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/.../Requests.../Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate...

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८)मे हम सूचित केि रही- “विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख त छल मुदा मैथिलीमे लेख िह छल,कारर मैथिलीक विकीपीडियाके सीिकृत िह भेटल छल। हम बहुत दिसि एहमे लागल रही आ सूचित करैत हवरा छी जे २७.०१.२००८ के (मैथिली) भाराके विकी िर करबाक हेतु सीिकृत भेटल छैक, मुदा एह हेतु कमस कम पाच गोटे, विभिन जगहस एकर एडिटरक रपमे वियमित रपे कायषकरथ तखि योजािके पूरषसीिकृत भेटतैक।” आ आब जखि तीि सालस बेिी बीत गेल अछ आ मैथिली विकीपीडिया लेल पारिम्भक सभटा आिश्यकता पूरषकऽ लेल गेल अछ विकीपीडियाक “लैगुएज कमेटी” आब बुझ गेल अछ जे मैथिली “बिहारी िमिस बुझल जाएबला” भारा िि अछ आ ऐ लेल अलग विकीपीडियाक जररत अछ। विकीपीडियाक गेराडष एम. लखै छथ (http://ultimategerardm.blogspot.com/.../bihari-wikipedia...)

-“ई सूचिा मैथिली आ मैथिलीक बिहारी भारासमूहस सम्बन्धक विरयमे उमेि मंडल दारा देल गेल अछ- उमेि विकीपीडियापर मैथिलीक

स्थानीयकरणक परियोजनामे काज कऽ रहल छथि, ...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक प्रयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक स्थान बिहारी भाषा समूहक अन्तर्गत राखल जा सकैए ?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूर्ण सन्तुष्ट भऽ गेल अछि जे "नहि"। "

रामविलास शर्माक लेख (मैथिली और हिन्दी, हिन्दी मासिक पाटल, सम्पादक रामदयाल पाडेय) जइमे मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली बनेबाक प्रयास भेल छलै तकर विरोध यातीजी अपन हिन्दी लेख द्वारा केने छलाह , जखन हुनकर उमेर ४३ बर्ख छलन्हि (आर्यावर्त १४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा द्वारा कएल मैथिली अनुवाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल प्रयास ऐ अर्थे आर विशिष्टता प्राप्त केने अछि कारण हुनकर उमेर अखन मात्र ३० बर्ख छन्हि। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ सिएटल धरि कम्प्यूटर साइंसक क्षेत्रमे रहि काज कऽ रहल छथि, ई विरोध नहि करैत छथि हुनका लोकनि द्वारा निर्मित मिथिलाक सुदूर क्षेत्रमे रहनिहार ऐ मैथिली प्रेमी युवा द्वारा भेल से की देखबैत अछि?

उमेश मंडल मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक लोकक कण्ठक गीतकेँ फील्डवर्कद्वारा ऑडियो आ वीडियोमे डिजिटलाइज सेहो कएने छथि जे विदेह आकाइवमे उपलब्ध अछि।

TIRHUTA UNICODE

See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha:

A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered
valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

यूनिकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण (गजेन्द्र ठाकुर/ अपडेट ३१ मार्च २०१२)

डॉ. रमानन्द झा रमण जी द्वारा यूनिकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण कएल गेल। ऐस मात ई स्पष्ट भेल जे पर्चा लिखनिहारके ने यूनिकोडक विषयमे कोनो जानकारी छन्हि आ ने हुनका सिस्टमेटिक यूनिकोड दुनू फॉन्टक विचार कोनो प्रारम्भिक जानि छन्हि। ह ऐ परचाक ओइ सभ लोक लेल महत्व छै जे सीखय चाहै छथि जे पूर्वाग्रहपूर्ण आ पक्षपातपूर्ण मैथिली साहित्यक इतिहास कोना लिखल जाए। ऐस पहिने चेतना समिति अपन स्मारिकामे यूनिकोड लेल चेतना समितिक योगदानक चर्चा देखैत छी! वास्तवमे यूनिकोड आदिकिता अंजिमि पाण्डेय जखन पटना गेल रहथि त हम हुनका कहने रहियन्हि जे विद्यापति भवनमे विनि कुमार ठाकुरक दोकान छन्हि, ओतऽ स अहा मैथिलीक किताब कीनि सकै छी, मुदा दू तीन दिन ओ दोकान आ समिति बन्द रहलाक कारण ओतऽ स घुरि गेला, बादमे ओतए एक गोटे कहलकन्हि जे सभ दिन अहा अबै छी, से ई समिति अखन कमस कम १४-१५ दिन आर बन्द रहत कारण दू गुटमे झगड़ा-झाटी भऽ गेल छै। ई अंजिमि

लऽ कऽ ओ घुरल रहथि आ से सबमक्त अपि समाचारकामे यूनिकोड लेल ओ जे योगदानि देलक तकर चर्चा करैत अछि! गोविन्द झा जीक पता मगलापर एक गोट विद्वानि (!) हुनिका कहलखिन्ह जे धुर ओ की बतेता, आ गोविन्द झा जीक पता नहि देलखिन्ह आ तखनि दोसर ठामसँ हुनिका पता उपलब्ध करबाओल गेल।

३

[https://esamaad.blogspot.com/2012/01/blog-post_08.html?fbclid=IwAR2oAS6in4rKo0uC1CK1sX2dM7ivqI_CuF8KFNAbIN7NH12-pTuPKlkdMsE] समदिया ८ जनिरी २०१२

विदेह गोष्ठी: *(६ आ ७ दिसम्बर २००८ आ फेर १३ आ १४ दिसम्बर २००८/ फेर ५ आ ६ दिसम्बर २००९ आ १२ आ १३ दिसम्बर २००९/ फेर ४ आ ५ दिसम्बर २०१० आ ११ आ १२ दिसम्बर २०१०/ फेर अक्तूबर पत्रचर्चा १७ आ १८ दिसम्बर २०११ आ २४ आ २५ दिसम्बर २०११ के मैथिली लेल गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट,* गूगल लैंगुएज टूल, कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिके यूनिसिक्स कैरेक्टर सेट (यूनिकोड) मे एनकोड करबाक आदिकि सीकृतपर आ विकीपीडिया मैथिली *पर पत्रचर्चा आ तकर सन्दर्भमे पैक्टिकल लैबोरेटरीक पद्धति विमर्शी, जकरा सुपौलमे भेल। ओतए ढेर रास* सम्बन्धित एकसपटर्ष*उपस्थित रहथि। तकर बाद किछु आलेख आ रचना डाक आ ई मेलसँ सेहो आएल। तकर संकलित विवरण निचा देल जा रहल अछि।)*

गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट आब सोर्स आ टारगेट दुनू भाषाक रूपमे मैथिलीकेँ स्थान देलक. देखू http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py?hl=en&answer=147837

आ http://translate.google.com/toolkit/list?hl=en#translations/active

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी नामक कोनो भाषाकेँ हटेबाक गप मानि लेने अछि, "विकीपीडिया मैथिली "क स्थापना पहिने विदेह द्वारा कएल गेल आ पहिने बिहारी नामक कोनो भाषाकेँ हटेबाक गप विकीपीडिया मानि लेने छल |

गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल- http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

एतए अंग्रेजीमे भाषामे Bihari चुनू आ अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबाक काज कारू मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नामक कोनो भाषाकेँ हटेबाक चर्चा करू; ऐ लिंकपर अनुरोध करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh

ऐ

क्लंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en के मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

[अपडेट: -विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सचष इक्जि आब मैथिलीमे

-विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सचष इक्जि आब मैथिलीमे- पहि गूगल एकरा बिहारी भारा मानि छल, मुदा विदेहक विरोधक बाद गूगल मानि लेलक जे मैथिली भाराक अलग सचष इक्जि देल जाए। विदेहक विरोधक बाद विकीपीडिया ई पहिनहिये मानि लेनि अछ। https://www.google.com/webhp?hl=bh अछ क्लंक *[गूगल कम्पनी "बिहारी" नामिस सचषइक्जिक पारम्भ केलक, मुदा बिहारी नामि कोनि भारा अछये नि। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंवाका कऽ देलन्हि आ से गूगल अंवाका कऽ कए सचषइक्जि आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत लिखलन्हि आ विदेह दारा समस्त अनुवादक लगभग सभटा भाग विलन्टीयर रपमे कएल गेल, लोको सभस अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान नहि रहल, जे एकाध केबो केलन्हि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रपमे सचषइक्जि देखा रहल अछ, मुदा अखनि ढेर रास काज बाकी अछ।]*

-ऐ विरयपर विदेह गोषीक चचा

देखू http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html ऐ क्लंकपर।
मुदा ई त पारम्भ अवछ।
अ[ ]ि दि पूर षभेलाक बाद मैवथली एतऽ आओत:
http://www.google.com/language_tools?hl=bh

http://www.google.com/language_tools

VINIT UTPAL's LETTER

गूगल कम्पनि "बाहारी" मिस सचषइक्लजकि पारम्भ केलक, मुदा बाहारी मिा कोनि भारा अवछये नि। एक गोटे बाहारीक अ[ ]ि दि अंवाका कऽ देलवन्ह आ से गूगल अंवाका कऽ कए सचषइक्लजनि आबा गेल। फेर वदेहक वनिति उत्पल ऊपर क्लवखत पत क्लखलवन्ह आ वदेह दारा समस्त अ[ ]ि दिक लगभग सभटा भाग मिलन्टीयर रपमे कएल गेल, लोको सभस अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदानि निम्न रहल, जे एकाध केबो केलवन्ह से रोमनिमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैवथली रपमे सचषइक्लजनि देखा रहल अवछ, मुदा अखनि ढेर रास काज बाकी अवछ।

Vikas Thakore commented on your photo.
Vikas wrote:
"https://www.google.com/webhp?hl=bh
Sir, एक्ह क्लंक पर गूगल-मैथ्थली २००४ सं अवस्तत मे अव्छ..
फेर इ टटका-टटका.... जश (or whatever) कब्थलए ?"
Gajendra Thakur रान्सलेट बला ऑपिन लेल लेख पढू.. http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html
Vikas Thakore commented on your photo.
Vikas wrote: "jee.... Dhanyavaad.
बेजिह परेशािी देबए लेल हम क्मापाथी छी.."

अिाद पूरष भेलाक बाद मैथ्थली एतऽ आओत: http://www.google.com/language_tools?hl=bh

अिाद पूरषभेलाक बाद मैथ्थली एतऽ आओत, पक्हि कबाहारी एतऽ छल कक्लक केलापर मैथ्थली अबैत छल|
http://www.google.com/language_tools

अपडेट २८ मार्च २०१२।]

[सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिक्े यूनिकोड कैरेक्टर सेट (यूनिकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमान पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनिकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया प्रक्रियामे लाबा गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तीरहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बाङ्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि)। मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/ ."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।

सूचना: २. गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
अपि योगदाि गूगल रासलेट लेल कर , आ कएल सम्पादि बदलबा काल कारर मे (अंगेजीमे) "व्यवहारी" िमा कोि भारा ि हेबाक चचा कर । ऐ क्लंकपर अिि कर ; गूगल एकाउंट स लॉग इि केलाक बाद ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh
ऐ
क्लंक http://www.google.co.in/language_tools?hl=en के मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

सूचिा: ३.विकीपीविया मैथिली:
मीवियाविकीक २६०० संदेि अंगेजीस मैथिलीमे विदेहक सदस्यगर दारा अिूदित कऽ देल गेल अछि। आब http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai ऐ क्लंकपर Group मे जा कऽ डॉपडाउि मेिूस अ-अिूदित मैसेज अिूदित कर। ज अहा विकीपीवियाक रान्सलेटर ि छी त http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator ऐ क्लंकपर मैथिलीमे रान्सलेट करबाक अिुमतिक लेल अिुरोध करियौ, ऐ स पहिि ओतै ऊपरमे दवहिि कात लॉग-इि (ज खाता ि अछि त क्रिएट अकाउन्ट) कऽ आ पेफरेन्समे भारा मैथिली लऽ अपि पयोक्ता खाताक क्लंकके क्लिक कऽ अपि पयोक्ता खात पना बिाउ।

कछु कालमे अहाके रान्सलेट करबाक अिमक्त भेट जाएत। तकरा बाद अििद पारम्भ कर ।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८)मे हम सूक्चत केिं रही- “विकीपीविडयापर मैथिलीपर लेख त छल मुदा मैथिलीमे लेख िवह छल,कारर मैथिलीक विकीपीविडयाके सीकृक्त िवह भेटल छल। हम बहुत क्दसि एक्हमे लागल रही आ सूक्चत करैत हक्ष छी जे २७.०१.२००८ के (मैथिली) भाराके विकी ि र करबाक हेतु सीकृक्त भेटल छैक, मुदा एक्ह हेतु कमस कम पाच गोटे, विभिन जगहस एकर एक्डटरक र पमे वियक्मत र पे कायषकरथ्र तखि योजािके पूर ष सीकृक्त भेटतैक।” आ आब जखि तीि सालस बेिी बीक्त गेल अक्छ आ मैथिली विकीपीविडया लेल पारक्मभक सभटा आिश्यकता पूर ष कऽ लेल गेल अक्छ विकीपीविडयाक “लैगुएज कमेटी” आब बुक्झ गेल

अछि जे मैथिली ‘‘बिहारी भिास बुझल जाएबला’’ भारा िै अछि आ ऐ लेल अलग विकीपीडियाक जरूरत अछि। विकीपीडियाक गेराडष एम. लिखै छथि (http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)

-‘‘ई सूचिा *मैथिली आ मैथिलीक बिहारी भारासमूहस सम्बन्धक* विरयमे उमेि मंडल दारा देल गेल अछि- उमेि विकीपीडियापर मैथिलीक स्थाि ियकररक पररयोजिामे काज कऽ रहल छथि, ...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक पयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक स्थाि बिहारी भारा समूहक अन्तगषत राखल जा सकैए ?..मुदा आब उमेि जीक उतरस पूरष सन्तुि भऽ गेल अछि जे ‘‘िै’’। ’’

रामविलास िमाक लेख (*मैथिली और हिन्दी*, हिन्दी मासिक पाटल, सम्पादक रामदयाल पाडेय) जइमे मैथिलीके हिन्दीक बोली बििाक पयास भेल छलै तकर विरोध यातीजी अपि हिन्दी लेख दारा केिे छलाह , जखि हुिकर उमेर ४३ बखष छलन्हि (आयाितिष १४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहि झा दारा कएल मैथिली अिुिाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेि मंडलक ई सफल पयास ऐ अथे आर विििता पाप्त केिे अछि कारर हुिकर उमेर अखि मात ३० बखष छन्हि। जखि मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ सिएटल धरि कम्प्यूटर साइंसक क्षेत्रमे रहि काज कऽ रहल छथि, ई विरोध िा करेबाक िा हुिका लोकवि दारा िे रिि मिथिलाक सुदूर क्षेत्रमे रहविहार ऐ मैथिली पेमी युिा दारा भेल से की देखबैत अछि? उमेि मंडल मिथिलाक सभ जाति आ धमषक लोकक कण्ठक गीतके फील्डिकिष दारा ऑडियो आ िीडियोमे डिजिटलाइज सेहो कएिे छथि जे विदेह आकाइिमे उपलब्ध अछि।

TIRHUTA UNICODE

See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

यूनिकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पचा वितरर (गजेन्द्र ठाकुर/ अपडेट ३१ मार्च २०१२)

डॉ. रमानन्द झा रमण जी द्वारा यूनिकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पचा वितरर कएल गेल। ऐस मात ई स्पष्ट भेल जे पचा व्यवहारके लिये यूनिकोडक विषयमे

कोिा जािकारी छिन्ह आ िन्हये िसिटिषिि यूिीकोड दुिू फॉन्टक विमार कोिा पारिम्भक जाि छिन्ह। ह ऐ परचाक ओइ सभ लोक लेल महति छै जे सीखय चाहै छिथ जे पूििगहपूरष आ पिश्चातपूरष मैिथली सािहत्यक इितहास कोिा िलखल जाए। ऐसि पिहि चेतिा सिमित अपि समाचारकामे यूिीकोड लेल चेतिा सिमितक योगदािक चचा देखैत छी! िवरहुता यूिीकोड आििदिकता अंिुमि पाण्डेय जखि पटिा गेल रहिथ त हम हुिका कहि रहियिन्ह जे विद्यापित भििमे विि कुमार ठाकुरक दोकाि छिन्ह, ओतऽ स अहा मैिथलीक िकताब कीवि सकै छी, मुदा दू तीि िदि ओ दोकाि आ सिमित बन्द रहलाक कारर ओतऽ स घुिर गेला, बादमे ओतए एक गोटे कहलकिन्ह जे सभ िदि अहा अबै छी, से ई सिमित अखि कमस कम १४-१५ िदि आर बन्द रहत कारर दू गुपमे झग़ा-झाटी भऽ गेल छै। ई अििभि लऽ कऽ ओ घुरल रहिथ आ से सिमित अपि समाचारकामे यूिीकोड लेल ओ जे योगदाि देलक तकर चचा करैत अिछ! गोविन्द झा जीक पता मगलापर एक गोट विदाि् (!) हुिका कहलिखन्ह जे धुर ओ की बतेता, आ गोविन्द झा जीक पता ि देलिखन्ह आ तखि दोसर ठामस हुिका पता उपलब्ध करबाओल गेल।

TWITTER IN MAITHILI

TWITTER IN MAITHILI, PLEASE

CLICK http://translate.twttr.com/welcome and go to bottom of this link. You will find[[Don't see your language? We're continually reviewing the list of languages we support, and would love your feedback]] - click feedback and apply for Maithili and submit alongwith reason why you need twitter in Maithili. Seeking your cooperation in large numbers again.

मैथिली विकीपीडिया, यूनिकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रान्सलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

खण्ड ४

"विकीपीडिया"मे मैथिलीकबाद मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"मे सेहो.. अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"

गूगल ट्रान्सलेट

गूगल ट्रान्सलेटक लिंक

https://translate.google.com/?sl=en&tl=mai&op=translate

गूगल ट्रान्सलेटके आर पुष्ट करबाक खगता छै तइ लेल अगिला काज अढ़ा रहल छी:

https://translate.google.com/about/contribute/

प्रारम्भ:

विकीपीडिया ०१ फरबरी २००८ लिंक

https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false (मैथिली देवनागरी)

https://books.google.co.in/books?id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली तिरहुता)

https://books.google.co.in/books?id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली ब्रेल)

गूगल ट्रान्सलेट २३ जून २०११क लिंक

https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/

138489416229195/

गूगल रासलेटि टूलमे

"बहारी" भाराक बदलामे मैथिली लेल अलग रासलेटि टूल बनिबाक आदि विदेहक सदस्यगर द्वारा देल गेल अछि। अपनि योगदानि गूगल रासलेट लेल करू,

आ कएल सम्पादि बदलबा काल कारर मे (अंग्रेजीमे) "बहारी" निमा कोनि भारा नि हेबाक चचा करू। ऐ क्लंकपर अनिदि करू; गूगल एकाउंटस लॉग इनि केलाक बाद ।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh *(links closed)*

विकीपीडिया मैथिली क्लंक

विदेह (पत्रिका) https://mai.wikipedia.org/s/kgv

इन्टरनेटिक संसारमे मैथिली

भारा https://mai.wikipedia.org/s/s6h

भालसरिक गाछ https://mai.wikipedia.org/s/ipm

विदेह https://mai.wikipedia.org/s/ie1

विदेहक फेसबुक भसषि https://mai.wikipedia.org/s/iu1

विदेह सम्मानि https://mai.wikipedia.org/s/jc2

विदेह आकाइभ https://mai.wikipedia.org/s/jc0

विदेह मिथिला रत्न https://mai.wikipedia.org/s/jc3

विदेह मिथिलाक खोज https://mai.wikipedia.org/s/jc4

विदेह सूचना संपकषअन्वेरर https://mai.wikipedia.org/s/jc5

शुक्ल पकानि https://mai.wikipedia.org/s/iu7

अ क्षिन्हार आखर https://mai.wikipedia.org/s/ion
मैथिली गजल https://mai.wikipedia.org/s/idz
मैथिली बाल गजल https://mai.wikipedia.org/s/iex
मैथिली भक्ति गजल https://mai.wikipedia.org/s/if1
http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili
http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

अंतिम पाचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि। एहि लिंक सभ पर जा कय प्रोजेक्टके आगा बढ़ाऊ। (links closed)

अमेजन अलेक्सा मैथिली (शिघ्र....)

"विकीपीडिया"मे मैथिलीकबाद मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"मे सेहो.. अबाला लिखु "अमेजन अलेक्सा"

विदेहक तेसर अंकमे (०१ फरबरी २००८) जे खुशिखबरी पाठक लोकनिके मैथिली विकीपीडियाक सम्बन्धमे देल गेल छल तकर

सुखद पक्ररका कएक साल पछाति भेटल छल।

मैथिली गूगल ट्रान्सलेटक सम्बन्धमे विदेहक फेसबुक पृष्ठपर २०११ मे देल गेल तकर सुखद फल ११ मई २०२२ के भेटल।

मैथिली अमेजन अलेक्साक सेहो आरम्भ भऽ गेल हएत।

(लिंक-स्क्रीनशॉट दऽ देल जा रहल अछि।)

https://books.google.co.in/books?id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA2#v=onepage&q&f=false

https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/

9:25

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरवरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine विदेह विदेह

Videha विदेह http://www.videha.co.in/ [redacted] मानुषीमिहसंस्कृताम्

विकीपीडिया पर मैथिली पर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल,कारण मैथिलीक विकीपीडियाक स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही,आ' सूचित करैत हर्षित छी जे 27.01.2008 केँ भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे,विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक। नीचाँ लिखल लिंक पर जाय एडिट कय एहि प्रोजेक्टमे अहाँ सभ सहयोग करब, से आशा अछि। पछिला अंकमे देवनागरी कोना लिखू ,एहि पर हम लेख लिखने रही। इंगलिश कीबोर्ड पर ओहि तरहे लिखने विकीमे सेहो मैथिली लिखि सकैत छी। एम. गेरार्डक माध्यमसँ श्री अंशुमन पाण्डेयक, जिनकर मैथिलीक युनीकोडमे स्थानक आवेदन लंबित अछि, अनुरोध भेटल छल, ओ' सूचना मँगलन्हि जाहि सँ स्पष्ट रूपसँ बंगला लिपि आ' मैथिली लिपिक मध्य अंतर ज्ञात भय सकय।ई सूचना हम एम. गेरार्डक माध्यमसँ हुनका पठा देलियन्हि, कारण पाण्डेयजी ईमेल एड्रेस हमरा नहि अछि। विकीमे पूर्ण स्वीकृतिक हेतु एहि लिंक सभ पर राखल प्रोजेक्टकेँ आँगा बढ़ाऊ।

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

अपनेक प्रतिक्रिया आ' रचनाक प्रतीक्षा अछि।

नई दिल्ली *ujhnpg 7hq/*

01.02.2008

© सर्वाधिकार लेखकाधीन आ' जतय लेखकक नाम नहि अछि ततय संपादकाधीन।

विदेह (पाक्षिक) संपादक- गजेन्द्र ठाकुर। एतय प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक अधिकार एहि ई-पत्रिकाकेँ छैक। रचनाकार अपन मौलिक आ, अप्रकाशित रचना सभ(जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखकगणक मध्य छन्हि) ggajendra@yahoo.co.in आकि ggajendra@videha.co.in केँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc,.docx, .txt किंवा .pdf फॉर्मेटमे पठाय सकैत छथि।रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय(बायोडाटा) आ' अपन स्कैन कएल मेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक संग ई घोषणा रहए-जे ई रचना मौलिक अछि आ' पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह(पाक्षिक)-ई-पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्रतासँ (सात दिनमे) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत।

Digitized by Google

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरवरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine विदेह विदेह

Videha विदेह http://www.videha.co.in/ [redacted] मानुषीमिहसंस्कृताम्

9:53

Gajendra Thakur shared a link.
Admin 23 Jun 2011 ·

गूगल ट्रांसलेशन टूलमे "बिहारी" भाषाक बदलामे मैथिली लेल अलग ट्रांसलेशन टूल बनेबाक आवेदन विदेहक सदस्यगण द्वारा देल गेल अछि। अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद ।
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh

google.com
Google in Your Language

Like Comment Send

You, Ashish Anchinhar and 7 others

Gajendra Thakur
Author Admin ...
नीचाँक पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि, प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-

9:54

Gajendra Thakur shared a link.

Admin 23 Jun 2011 ·

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity?project=gws&langcode=bh

google.com

Google in Your Language

Like Comment Send

You, Ashish Anchinhar and 7 others

Gajendra Thakur

Author Admin

नीचाँक पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि, प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

http://translatewiki.net/wiki/Project:Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/

ओहि समयमे विदेह सम्पादक मण्डलमे ई लोकनि रहथि: सह-सम्पादक: उमेश मंडल । सहायक सम्पादक: शिव कुमार झा आ मुनाजी (मनोज कुमार कर्ण) । भाषा सम्पादन: नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा । कला-सम्पादन: ज्योति झा चौधरी आ रश्मि रेखा सिन्हा । सम्पादक-शोध-अन्वेषण: डॉ. जया वर्मा आ डॉ. राजीव कुमार वर्मा । सम्पादक- नाटक-रंगमंच-चलचित्र: बेचन ठाकुर। सम्पादक सूचना-सम्पर्क-समाद: पूनम मंडल आ प्रियंका झा। सम्पादक अनुवाद विभाग: विनीत उत्पल । स्मरण अछि जे "सम्पादक अनुवाद विभाग" विनीत उत्पल (आब असिस्टेन्ट प्रोफेसर, आइ.आइ.एम.सी. जम्मू) क विशेष सहयोग रहल, आ विशेष अखिलेन्हार सम्पादक मण्डल मे निह्यो रहला उतर कोनो सम्पादकस कम काज नहि करैत छथि। मैथिलीक पाठक निषसेहो अपन यथाशक्ति योगदान देलनि।

https://books.google.co.in/books?id=zmIugpjpOKYC&lpg=PA1&pg=PA600#v=onepage&q&f=false

https://books.google.co.in/books?id=-U04e5FfnTEC&lpg=PA1&pg=PA405#v=onepage&q&f=false

गूगल ट्रान्सलेटके आर पुष्ट करबाक खगता छै तइ लेल अवाला काज अढ़ा रहल छी:

https://translate.google.com/about/contribute/

गूगल ट्रान्सलेट कार्यक्रम देखू

https://youtu.be/nP-nMZpLM1A
Google Translate:04:45to06:25 (24 new languages at 06:00)

Detailed Description
Tune in to find out about how we're furthering our mission to organize the world's information and make it universally accessible and useful. To watch this keynote with American Sign Language (ASL) interpretation, please click here: https://youtu.be/PeUXBvRExic
0:00 Opening Film
1:47 Introduction, Sundar Pichai
6:21 Knowledge
15:45 Knowledge&Search
27:15 Skin Tone Equity
32:00 Computing
33:08 Assistant
43:34 Computing: AI Test Kitchen
53:08 Safer with Google
1:04:38 Safer Way to Search
1:11:20 Android: Opening
1:45:45 Android: Wear OS&Tablet
1:25:32 Android: Better Together
1:31:22 Hardware: Opening
1:33:22 Hardware: Pixel Phone&Buds

1:45:44 Hardware: Ambient&Beyond the Phone

1:54:32 Augmented Reality&Close

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

३. पद

३.१.राज किशोर मिश्र- भैआरी

३.२.गजेन्द्र ठाकुर- ि ि ः िपक मृत्युदण्ड ि ि बक्ल

३.३.आशीर अिक्चन्हार- दू टा गजल

राज कुमार मिश्र, रिटायर्ड चीफ जेनरल मैनेजर (ई), बी.एस.एन.एल.(मुख्यालय), दिल्ली,गाम- अरेर डीह, पो. अरेर हाट, मधुबनी

भैआरी

माएक मरला बाद,भ्रातृ द्वय।
केलि पओलक, भ्रातृ-स्नेहि,
परिवारिक अर्थव्यवस्था के,
एखनि छलथिन्ह भ्राते, मेह।

कनिके पढ़ि, दूनू भाइ करए
लागल खेती-पथारी,
भ' जाइत छलै, तरकारी-तीमन,
मिहर छलैक, बानी ।

ओकर गाम भरि मे, दुहु भाइ,
भ्रातृत्व-स्नेहिक, छल पहचानि,
बनले रहल, विवाहि उपरान्तो ,
भ्रातृत्व-अपनापन, समान।

देआदनी के बीच मे,

मेल क’ कवकिो ि अभाि छल,
पक्ारि मे सुमक्ाक जेिा ,
जबरदस्त, पभाि छल।

कक्छु बरखक पशात्, क्हकि
वाता क’ भए गेलक्ह सिगष्ोिस,
बक्ढ़ गेलै, दूि भाइ के ऊपर,
उतरदाक्यत्,बहुत रास।

पाइ -टका ल’क’ कक्छु क्दि स,
मतान्तर भेल, भैआरी मे,
कलह, दलािसि आगि आएल,
बाध-बोि, घरािी मे।

भिकी लागल कक्छु गौआ के,
पओलक जेिा सुअसिर,
चढ़बए लागल दूि क्दस,
कक्छु एमहर, कक्छु ओमहर।

खेते ल’ क’ िक्ह फक्रछाएल,
पूरषिक्ह भेल बटबारा ,
जुआएल, अकुराएल अ़ ाक्र ,
इरखास भरल, पमारा।

बिल मंतक्य पंचैती के,

झंझट आरो, ओझरा गेल,
ाकियुद, फेर मारू -मरौअक्ल ,
कतेको क' मोि जु ा गेल।

केलक मामला, एक दोसर पर,
गाम क' चचा क' वरिय छल,
आरो बढ़तै बात, तकर
भारी संिय आ भय छल।

की मोल रहल ओक्ह भातृतकि?
जे'करक्ह बाका गेल धि क' हाथ,
भैआरी जे उपमाि बिते छल,
व्टक ि सकल ओ रातुक पात।

िक्ह रहल क्सिहि, अगाि उदास,
अवध्पत्य जमा लेलक इरखा ,
देर, भुजंग सि, घूम रहल छल
लपलपबैत जीह ब़ का ।

एक्ह अन्हार मे अहंकार,
देखा रहल ओ विजि भुजदण्ड ,
ािलीिता, भातृति के,
कए भोवा रहल छल एहि दण्ड ?

भेलै अंत विदोर क्सिहिक,

हइर लेलकै ओकरा कूर देर,
कुहि, कहू बद्ध गेलै कते,
आबए धक्र -धक्र को ि भेर?

चक्ल ते रहलै ओक्हि कलेस,
भ' गेलै बन्द आब खाि -पाि,
टुटैत गेल संबंध सहोदरक'
खक्स पहुचल ,अंक्तम सोपाि।

जखि, कुमक्त चढ़ैत अक्छ क्सर पर,
करैछ, सुबुक्द्ध क्वमूक्ष्ा,
सभटा उिटे होइत छै,
काल होइछ पक्तकूल।

क्वि ाि, क्मत बक्ि, बजा लैत अक्छ ,
सभटा, ्िसं, अक्वि ,
संकट स भक्र दैत छै,
दुबुक्ष्द्ध क' भाग -अक्द्दि ।

अमंगल भरल, मोि मे,
सोच, कुक्टल योजिा स,
माथा चलैत रहै छै सक्दखि,
रडयंत, पिंचिा स।

घोर देरक ाितारिर मे,

संबंध खसैत अछि बहुत तेज,
रोकए अबैत अछि मयादा ,
मुदा, के करतै ओकर परहेज?

कटुता, व्यंग्य भरल मुख स,
विकिलैत अछि जे, ि बिद -ि र,
हृदय बेधि ि र करैछ तेि ,
मोसकिल, ओकर छूटब विसाि ।

संबंधक अधो पति स,
भए गेल कलंकित भैआरी ,
रकल कहा? दूि कए लेलक,
वि ि कि अंतिम तैआरी।

अदि स अदि , भेलै अपि ,
भए गेल सहोदर, आि -आि ,
अपिपि , इरखा कोि रहतै?
संग -संग दुहू एक कि आि ।

कोि , अपि अपि के उजा ल ?
लेब 'चाहए ,एक -दोसरक पार,
'सहोदर सि ि कि ओ जगत् मे',
कथ्या भ' गेल एकर पमार ।

काल -चक घूमल आगू,

जेठ भाइ पव गेलै बेमार,
इला जत' चललै, मुदा
अउरवा ि पाबए दुः खक'पा र।

भीतरे -भीतरे, लगै जेि ,
जव आएल छै मि मे कचोट,
छै उठल ,भाि ि के बहाव ,
मामूली ि ई छोट -मोट।

कारकार अव वि जीि ि पर,
जे, अि़ि स हमरा भेल देर ,
ि क्ह देवलऐ,ओ वसि हि हम,
अवकार जावह पर, ओकर अि र।

बाल्य -काल स, छोट भाए के,
करैत छलै ओ कतेक दुलार?
जमल वसि हि जेि घव क'
बि ि र, बहय ि रक पलार।

जेि बान्ह, टुव्ट गेलै मोि मे,
बव्ह चललै, भातृ -वसि हि क' धार,
भेलै, डुबा देत हृदय -मोि के,
कोि क' उतरब एव्ह स पार?

अपि त' छल मौि, मुदा

ताकए आब ख, हरदम, कोि बाट,
दुक्खत जावि, आओत अि्जि,
कक्रओ कहि हेतए, बाट -घाट।

इलाज होइत रहलैक, मुदा
क्स्थक्त मे क्ह्ह भ' सकलै सुधार,
मोि -मोि, अहुक्रआ काटए,
भाए प़ ए मोि, बारम्बार।

कुहरए लागल, काि्ए लागल,
अंत ओकर, उपक्स्थत भेल,
मुह मे भाएक ाम एलै,
आ, बाट तकैत, परलोक गेल।

'अंक्तम काल 'के खबक्र पाक्ब ,
एलैक अि्जि, दौ ल -दौ ल,
क्चक्चआइत 'भैआ -भैआ,'ओ
अगज क' पएर पर खक्स प़ ल।

पछताइत छलैक, मोि अि्जि के,
फटैत छलैक ओकरा कुहेस,
पशातापक आवा मे,

धधकै,ओकर हृदय -पदेि।

"र सल चक्ल गेलाह भैआ,

माफीओ ि मावा सकलहु हम ,
सहोदर त' ि होएत दोसर,"
बाजए, ियि िर स िम।

आवखक िर द', जमल देर
बर्व तरल, खसल धरती पर,
भातृतकि अपराक्जत क्सहि,
हक्रआए गेल परती पर।

डाक्र -पात त' सुखा गेलै,
मुदा, क्सहिक जव ि सुखाएल,
पर, अपसोच एक्ह बात क' जे,
'सारा'पर क्कएक फुला एल?

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गजेन्द्र ठाकुर

ि ुि ः ि पिक मृत्युदण्ड ि ि बक्ल

१

इक्ष्वाकु िशिक िधिस राजाक पुर हमरि न्रक सए प् ी

घरमे पिग आ नारद दूटा ऋमष रहैत छिम्ह

नारदक मादेशपर िरिणसँ कहिम्ह- सन्तान म्द्दअ,

जइसँ हम अहाक यज कऽ सकी।

माने सन्तानक बमि?

रोम्हत नामा पुरक जन्म भेि

िरिणसँ १० म्द्दनक समय मागिम्ह हमरि न्र।

फेर दात हेबा धम्रक समय मागिम्ह,

फेर दुदा दात खसबा धम्रक समय मागिम्ह।

फेर नि दात हेबा धम्रक समय मागिम्ह।

फेर ओकर शस्र धारी होएबा धम्रक समय मागिम्ह।

जखन रोम्हत भऽ गेि शस्रधारी

तखन रोम्हतके कहि म्हह हम्रि न्र िरणक िि यजक

कबुिाक िि ओकर बम्ि देबाक गप।

मुदा रोम्हत तीर-धनुष िऽ बोन म्हदश चम्ि गेिाह,

मना कऽ देि म्हह।

आ तकर एक बरख बाद िरण हम्रि न्रके पकम्ड़ िि म्हह

िरण छम्थ जि-देिता,

आ फूम्ि गेि म्हह पेट हम्रि न्रक।

घुरि इन्र पुरषक रपमे कहि

जे मनुष्यक बीचमे रहने नीक सेहो अधिाह भऽ जाइए।

म्िचर एक साि

म्िचरिासँ पएर फूिि युक्त हेतौ।

आत्मासँ फेर बहार होइए आ ओ ओकरा काटैए

एक साल

भाग्यक ठाढ़क ठाढ़

बैसलाक बैसल

आ सूतलाक सूतल

से मिचर एक साल

कर्मक सूतल-पड़ल

दापर उड़ैत

आ रेता ठाढ़

से तो सत्य जेका मिचर एक साल

सूयणमिचरैत रहि थाकैए

तोरा मधु आ उदुम्बरक म्मठगर फेर भेटतौ

मिचर एक साल

सुयशि ऋम्षक पुर अजीगतर्क पम्रि ािर

भूखि प् ी

तीन पुर शुनपुिच्छ, शुनशिेप, शुनोि ािगूि

बापक म्पाय शुनि पुच्छ आ माएक म्पाय शुनोि ािगूि

से सए गाए दऽ

शुनशिेपके कीनि

राजसूय यज भेि

होता रहम्थ मि शािम्पर

अधि युिणजमदम्पत्त

उदगाता अयास्म्य

आ िहि ा रहम्थ िम्शाष

से बमि बान्हत के?

एक सए गाए आर

मागि क अजीगतण

अमात्‍क आहिन आ पम्‍रकमा

आब धि के करत?

एक सए गाए आर म्‍दअ

मागि क अजीगतण

म्‍पजबैत तर आम्‍र

शुनशिेप केि क

पजापम्‍तक आहिन

कहि म्‍त ओ

जो अमात्‍ ि ग

अमात्‍क आहिन शुनशिेप केि क

जो समि ता ि ग

कहि म्‍त ओ

समिता कहलन्हि

जो रिण छथि

रिण खसलन्हि

जो फेर अमावस छथि

अमावस कहलन्हि

जो जो मित्रशदेव छथि

मित्रशदेवकेँ आ हिन शुनशिेप केँ कि

कहलन्हि ओ

जो इन्द्र छथि

इन्द्रदेवकेँ आ हिन शुनशिेप केँ कि

जो आम्श्रनौ छथि

दुनू अम्श्रनक आ हिन शुनशिेप केँ कि

जो उषा छथि

उषाक आ हिन शुनशिेप केँ कि

मंर पढैत-पढैत बन्धन खुजैत गेलै शुनशिेपक

इक्कीकुक पेट ठीक भऽ गेल

फेर ओ ऋत्विज् भऽ यजमे सम्मिलित भेल

विशेष विधि

"अंज सि" विधिसँ प्रकाशित कि सोमरस

आ राखल कि ओकरा रोणकलशमे

फेर सिद्ध

फेर अन्तिम कृत्य

फेर शुनशेप विश्वामित्रक कोरामे बैसल गेल

अजीगीतणकहैत छथि- विश्वामित्र देअ हमर पुत्र

विश्वामित्र कहै छथि- ई अछि आब देवरात विश्वामित्र

अजीगीतणपुत्र शुनशेप बाजल

आउ देखू

शुनशिेप कहैए- हे अजीगीतण तीन सए गाए हमरासँ पैघ?

मि शािम्मत्र कहै छथ्थ- हे पुर मधुच्छन्दा

ऋषभ,

रेणु

अष क

शुनशिेप भेि अहाक ज्येष

मधुच्छन्दाक पचासटा पैघ भाएके ई िि पड़िन्हि पम्सन

मि शािम्मत्र ओकरा सभके देिन्हि त्यामा

२

आ आब त्याग करबाक समय आबि गेल अछ

भय केर त्याग, लोभ केर त्याग

भोजि केर त्याग

आ गहर करबाक समय सेहो अवछ

िएह जकरा कैएक बखषधवर राखि रही ि ुका कऽ, बझा कऽ

हाथ जो लौ, ि कर तंग हमरा, ि त बुझ्झ जायत ई

बडड आदर करैए ई हमर

ज ओकरा बुझ्झ प़ तै जे अहा कऽ रहल छी हमर अपमाि

त फेर ई हमरो गप ि मानि

अखि हम हाथ जो ि िहोरा कऽ रहल छी

फेर अहा करब िहोरा जखि ई ि ुर करत िरािसी

अखि त एकेटा वखस्सा सुि लौ अवछ

आ अहा कहै छी जे एकर ऐ मावमलास की छी सम्बान्धि

त फवरछा दइ छी ऐ सम्बान्धिके आइ।

ि ुिः िपके देल गेल रहै मृत्युदण्ड बा ई रहै बक्ल?

उतर क्दअ, हम छी पावशाक आ अहाके सुि ि कऽ वखस्सा

परीक्षक लेल तैयार केलौ अछ ई पक्षल पश,

आ एकर उतर विधारत करत जे कतेक बुझ िक छी अहा

आ तखि हम अही वखसस्सास िब पश पूछब

बा भऽ सकैए कोि िब वखसस्से सुि दी अहाके

ज हमरा लागत जे ऐ वखसस्सास िब पश पुछला स कोि फाएदा ि।

िि िपके देल गेल रहै मृत्युदण्ड बा ई रहै बक्ल?

आ बाजब आस्ते, कारर ओ हमरा बडड माित अछ।

ज कवियो ओकरा बूझ्क पृ तै अहाक हमरा पक्त कूर आचरर

त ओ बदास्त ि कऽ सकत, हमरो रोकलापर ि रोक्क सकत अपिके।

त आस्तेस क्द्अ उतर- िि िपके देल गेल रहै मृत्युदण्ड बा ई रहै बक्ल?

(अितिषे)

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

आशीष अनचिन्हार

दू टा गजल
१

अपने जरलै अनचिन्हार अनचिन्हार
काँझा कऽ चमकै अनचिन्हार अनचिन्हार

पूरा जीवन आसमे सासमे रहलतो
दुनू रहलै अनचिन्हार अनचिन्हार

हमर आँखिमे हुनकर आँखि गुम करथि
तखनि हेतै अनचिन्हार अनचिन्हार

सकबाक कतबो ब्रह्म का हो मुदा कहिं पाइ
दुनियाँ कहतै अनचिन्हार अनचिन्हार

ददरिक छतपर असगर असगर चुप्पे चुप
खुजले टहलै अनचिन्हार अनचिन्हार

सभ पाँतिमे 22-22-22-22-22-2 मात्राक्रम अछि। दूटा अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानि लेबाक छूट लेल गेल अछि। ई बहरे मीर अछि।

२

हुकिर बाजब काटे कूस
सुबैया के मुआ झूस

हमरा चाही हुकिर हि
बाजू लेबै कते घूस

भागल रौदी दाही बेर
खाली आबै माघे पूस

धमी डूबल बाच्चे धार
ब़ का पापी अकिा दूस

िता भेलै लडडूलाल
जिता भेलै लेमचूस

सभ पाँतिमे 22-22-22-21 मात्राक्रम अछि। "धमी डूबल बाच्चे धार" ई पाँति कबीरक एक पदस प्रेरित अछि।

ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

गजेन्द्र ठाकुर

Videha e-Learning

....

[संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामग्री] [एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]

[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)] [FOR NTA-UGC-NET-MAITHILI ALSO]

....

[एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल/ FOR NTA-UGC-NET-MAITHILI]

NTA_UGC_NET_MAITHILI_01- गजेन्द्र ठाकुर

NTA_UGC_NET_MAITHILI_02- गजेन्द्र ठाकुर

NTA_UGC_NET_MAITHILI_03 (श्री विभु कुमार सिंह द्वारा संकलित)

....

यू. पी. एस. सी. (मेन्स) ऑप्शनल: मैथिली साहित्य विषयक टेस्ट सीरीज

यू.पी.एस.सी. क प्रारम्भिक परीक्षा सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण भऽ रहल छथि आ जे मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि त ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रारम्भिकक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि त ओ हमर ह्वाटसएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रारम्भिकक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो रिफरेंस लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर लिखि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह त हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- गजेन्द्र ठाकुर

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, मैथिली (ऐच्छिक) लेल टेस्ट सीरीज/ प्रश्न-पत्र- १ आ २

TEST SERIES-1- गजेन्द्र ठाकुर

TEST SERIES-2- गजेन्द्र ठाकुर

....
....

MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL)

UPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

BPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (ऐच्छिक)

मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (अनिवार्य)

मैथिली प्रश्नपत्र- बी.पी.एस.सी.(ऐच्छिक)

....

मैथिलीक लिपि

१

मैथिलीक लिपि- विदेह मैथिली माध्यमिक भाषा आ मैथिली भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

भाषापाक

२

मैथिलीक तिर्थीमे पयाप्त विविधता अछि। मुदा पशपत देखला उतर एकर तिर्थी इग्नू BMAF001 स पेक्रत बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उख्र ाहामे उटिा-पुटिा क्तयौ, ततबे धवर पयाप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पयाप्त अछि, से जे विदाथी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेिं छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीवडंग दोसर-उख्र ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

....
....

MAITHILI (OPTIONAL)

TOPIC 1 [Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भारा पवरिर म्य मैथिलीक स्थाि/ मैथिली भाराक उदि ओ विकास (संस्कृत, पाकृत, अहिट, मैथिली)]- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 2 (Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 3 (ज्योवतरीशर, विदापवत आ गोविन्ददास वसलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज मिदापवत कािीन कवि छवथ। एतय समीक्ष शृंखिाक पारम्भ करबासँ पूर्णिचार गोटेक शब्दाििि िब्दक पयाय संग देि जा रहि अछि। नि आ पुरान

शब्दावलीक जालसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददासक पशोतरमे धार आओत, संगम्हि बिन्दुकोर बढ़लास खाटी मैथिली भाषामे पशोतर मुखिबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे पाहि आयत आ सुच्चा भाषिक अभिव्यक्ति भय सकत।)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 4 (बरीीथि झा िब्दालि आ कावथलाक कृवर-मत्स्य िब्दालि)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 5 (िल्यू एडीि- पथम पत- लोकक गाथामे समाज ओ संस्कृति)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 6 (िल्यू एडीि- द्वितीय पत- विद्यापति)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 7 (िल्यू एडीि- द्वितीय पत- पद समीक्षा-बािगी)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 8 (िल्यू एडीि- पथम पत- लोक गाथा ृत्य िटक संगीत)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 9 (िल्यू एडीि- द्वितीय पत- याती)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 10 (िल्यू एडीि- द्वितीय पत- मैथिली रामायर)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 11 (िल्यू एडीि- द्वितीय पत- मैथिली उपन्यास)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 12 (ि ल्यू एडीि ि- पथम पत- ि बद्द विचार)- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 13 (वारहुता क्लवक उदि ओ विकास)- गजेन्द्र ठाकुर

अिलिनक-१-२-३ अिलिनक- ४-५

TOPIC 14 (आधुविक िटकमे व्यक्त विधिताक समस्या- ि म्भु कुमार क्सिंह)।

TOPIC 15 (स्ितंत्र्योतर मैक्थली कथामे सामाक्जक समरसता- अरर कुमार क्सिंह)

TOPIC 16 (यू. पी.एस.सी. मैक्थली पथम पतक परीक्षाथी हेतु उपयोगी संकलि, मैक्थलीक पमुख उपभाराक क्षेत्र आ ओकर पमुख विि रता, मैक्थली साक्हत्यक आक्दकाल, मैक्थली साक्हत्यक काल-विधारर- ि म्भु कुमार क्सिंह)

TOPIC 17 (मैक्थली आ दोसर पुबक्रया भाराक बीचमे सम्बन्ध (बान्ला, असक्रया आ ओव या) [यू.पी.एस.सी. क्सलेबस, पत-१, भाग-“ए”, कम-५])- गजेन्द्र ठाकुर

TOPIC 18 [मैक्थली आ क्हन्दी/ बान्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- क्बहार लोक सेिा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर क्सविल सेिा परीक्षाक मैक्थली (ऐक्च्छक) विरय लेल]- गजेन्द्र ठाकुर

……………………………………………………………

GENERAL STUDIES (PRELIMINARY & MAINS)

GS (Pre)

TOPIC 1 - गजेन्द्र ठाकुर

GS (Mains)

NCERT-ENVIRONMENT CLASS XI-XII

NCERT PDF I-XII

SANSAD TV

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

....

OTHER OPTIONALS

IGNOU eGYANKOSH

....

संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामग्री

[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)]

Videha e-Learning

पेटार (क्सोसषसेन्टर)

....

िब्द-व्याकरर -इक्तहास/ मूलपाठ/ समीक्ा/ अक्तवरक्त पाठ

मैक्थली मुहाि रा एि म् लोकोक्त पकाि- रमाि थ क्मश क्मव्हर (खाटी पि हियुक्त मैक्थली क्लखबामे सहायक)

डॉ. लक्लता झा- मैक्थलीक भोजि सम्बन्धी िब्दाि ली (खाटी पि हियुक्त मैक्थली क्लखबामे सहायक)

मैक्थली िब्द संचय- डॉ शीरामदेि झा (खाटी पि हियुक्त मैक्थली क्लखबामे सहायक)

दत-ि तीक िस्तु कौि ल- डॉ. शीरामदे झा

पवरचय वि चय- डॉ िलेन्र मोहि झा

ENGLISH MAITHILI COMPUTER DICTIONARY (COMPLETE)- GAJENDRA THAKUR

MAITHILI ENGLISH DICTIONARY- गोविंद झा

अनुपमा सिंह -Shishu_Geet_Khel_Anima_Singh

आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा "रमण")- मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

मैथिली सुबोध व्याकरण- भोला लाल दास

राधाकृष्ण चौधरी- A Survey of Maithili Literature

राधाकृष्ण चौधरी- मिथिलाक इतिहास

कारहुता लिपिक उद्भव ओ विकास (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

राजेश्वर झा- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास (मैथिली साहित्य संस्थान आकाइव)

दत-वती (मूल)- श्री सुरेन्द्र झा सुमन (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस) CIIL SITE

सुभाष चन्द्र यादव-राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

विनय कुमार झा "कल्लू" अंक-समालोचना

डॉ बचेश्वर झा- B_JHA_Nibhand_Nikunj.pdf

डॉ. देिंकर ििि- Adhunik_Sahityak_Paridrishya

पेमिंकर संह- मैथली भारा सा:बीसम िताब्दी (आलोचि)

डॉ. रमािन्द झा 'रमर'

हआओल

अखयासल CIIL SITE

दुगािन्द मण्डल-चकु

फेर एह मिलनू फाइल सभके सेहो पढ़ू:-

रामलोचि ठाकुर- मैथली लोककथा

कुमार पिि (साभार अंका)

पइठ (मैथलीक सिशेष कथा) डायरीक खाली पना

योगेन्र पाठक "वियोगी"

विजािक बतकही	िरक विजय (सम्पूर्ण)	िरक विजय (संििधत)	हमर गाम	धाराकाडक देिमे

डॉ. रमर झा

वमन-अवमन	मैथली काव्यमे अलङार	अलङार-भास्कर	मैथली काव्यमे ज्योतर

केदारनाथ चौधरी

अबारा नहितन	चमेलीरानी	माहुर	करार	अयना	हीना

....

किछु मैथिली पोथी डाउनलोड साइट (ओपन सोर्स)

SAHITYA AKADEMI

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisam.htm

अवखयासल (रमानन्द झा रमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन केर दीप पथिक सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद संगह- सं िलेन्र मोहि झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

ARCHIVE.ORG (विजयदेि झा)

https://archive.org/details/%40vijay_deo_jha?&sort=-publicdate&page=2

VIDEHA MAITHILI BOOKS/ PICTURE-AUDIO-VIDEO ARCHIVE

http://videha.co.in/new_page_15.htm

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm (MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

मिथला दर्षि

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

तीरभुक्ति

https://archive.org/details/@teerbhukti_journal

OLE NEPAL's E-PUSTAKALAYA (https://pustakalaya.org/en/)

पोथीक लिंक

मैथिली साहित्य संस्थान

https://www.maithilisahityasansthan.org/resources *(online pdf of Reasearch Papers/ books)*

अरिपन फाउण्डेशन (http://www.aripanafoundation.org/)

PRATHAM BOOKS MAITHILI STORYWEAVER

https://www.youtube.com/playlist?list=PLAT74nNc2fmYaW29mRVAIgzRq63_9zWbI (मैथिली ऑडियो बुक्स)

पोथी डॉट कॉम

https://store.pothi.com/browse/free-ebooks/?language=Maithili

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/maithili-books-pdf-free-download/ (पोथी डाउनलोड क्लिंक)

https://www.ilovemithila.com/ (online maithili journal)

https://maithili.com.np/ *(owner I Love Mithila)*

प्यारे मैथिल

https://www.youtube.com/channel/UCq30LIck2tNw8BI4t8jjzQg (प्यारे मैथिल चैनल- कुन्दन चौधरी आ संगीता आनन्द- मैथिलीक सभस लोकप्रिय यू ट्यूब चैनल)
जानकी एफ.एम समाचार

https://www.youtube.com/user/Janakifm/videos (जानकी एफ.एम समाचार)

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल

https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWiTEMxVA

………………………………………………

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

....

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWIAkXiOHp7A

-गजेन्द्र ठाकुर

....

विदेह-सदेह [विदेह www.videha.co.in पेटार] मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन (विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचना)

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) देवनागरी

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) तिरहुता

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) देवनागरी

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) तिरहुता

मदेह:सदेह:३ (मैम्थािी पद २००९-१०)देिािगरी

मदेह:सदेह:३ (मैम्थािी पद २००९-१०) कारहुता

मदेह:सदेह:४ (मैम्थािी कथा २००९-१०)देिािगरी

मदेह:सदेह:४ (मैम्थािी कथा २००९-१०) कारहुता

मदेह मैम्थािी मिहम्म कथा [मदेह सदेह ५]देिािगरी

मदेह मैम्थािी मिहम्म कथा [मदेह सदेह ५] कारहुता

वदेह मैथ्थली वहिव कथा [वदेह सदेह ५]- दोसर संस्करर देिािगरी

मदेह मैम्थािी िघुकथा [मदेह सदेह ६]देिािगरी

मदेह मैम्थािी िघुकथा [मदेह सदेह ६]कारहुता

मदेह मैम्थािी पद [मदेह सदेह ७]देिािगरी

मदेह मैम्थािी पद [मदेह सदेह ७] कारहुता

मदेह मैम्थािी नाटय उत्सि [मदेह सदेह ८]देिािगरी

मदेह मैम्थािी नाटय उत्सि [मदेह सदेह ८]कारहुता

मदेह मैम्थािी मशशु उत्सि [मदेह सदेह ९]देिािगरी

मदेह मैम्थािी मशशु उत्सि [मदेह सदेह ९]कारहुता

मदेह मैम्थािी पबन्ध-मनबन्ध-समािोचना [मदेह सदेह १०]देिािगरी

विदेह मैथिली पबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०] तिरहुता

विदेह:सदेह ११	*विदेह:सदेह १२*	*विदेह:सदेह १३*	*विदेह:सदेह १४*	*विदेह:सदेह १५*
विदेह:सदेह १६	*विदेह:सदेह १७*	*विदेह:सदेह १८*	*विदेह:सदेह १९*	*विदेह:सदेह २०*
विदेह:सदेह २१	*विदेह:सदेह २२*	*विदेह:सदेह २३*	*विदेह:सदेह २४*	*विदेह:सदेह २५*

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008 Videha_15_06_2008_Tirhuta 12

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008 Videha_01_11_2008_Tirhuta 21

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

videha_01_10_2010 videha_01_10_2010_tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

videha_15_11_2010 videha_15_11_2010_tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर २०१०

videha_15_12_2010 videha_15_12_2010_tirhuta 72

६) गिरीन्द्र किशोराक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

videha_01_03_2011 videha_01_03_2011_tirhuta 77

७) अविदित विशेषांक (गद्य-पद्य भारती) ९७म अंक

videha_01_01_2012videha_01_01_2012_tirhuta 97

८) बाल गजल विशेषाक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

videha_01_08_2012 videha_01_08_2012_tirhuta 111

९) भक्ति गजल विशेषाक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

videha_15_03_2013 videha_15_03_2013_tirhuta 126

१०) गजल आलोचना-समालोचना-
समीक्षा विशेषाक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

videha_15_11_2013 videha_15_11_2013_tirhuta 142

११) काशीकान्त मिश्र मधुप विशेषाक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

१२) अरविन्द ठाकुर विशेषाक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

१३) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषाक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१४) विदेह सम्मान विशेषांक

विदेह सम्मान: सम्मान-सूची (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)

साक्षात्कार/ समारोह

साक्षात्कार	videha_15_12_2011	videha_15_01_2012	videha_01_02_2012	videha_01_03_2012
videha_01_09_2012	videha_15_01_2013	videha_01_03_2013	Videha_15_04_2016	Videha_01_07_2016

१५) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७

Videha_01_01_2017

१६) मैथिली बाल पत्रकारिता विशेषांक

VIDEHA_313

१७) मैथिली बीहनि कथा विशेषांक-२

VIDEHA_317

१८) रामलोचन ठाकुर विशेषांक

VIDEHA 319

१९) रामलोचि ठाकुर शदाजक्ल वििराक

VIDEHA 320

२०) राजन्द्धि लाल दास वििराक

VIDEHA 333

२१) रीन्द्र ि‍थ ठाकुर वििराक

VIDEHA _348	VIDEHA_348 _Tirhuta	VIDEHA_348 _IPA	VIDEHA_348 _Braille

....

िखकक आमंम्र त रचना आ ओइपर आमंम्र त समीक्कक समीक्ा सीरीज

१. काव्मािक पाच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक व्टप्परी

विदेहक दू सए िम अंक Videha_01_09_2016

....

"पाठक हमर पोथी म्कए पढम्थ"- िखक दारा अप्पन पोथी/ रचनाक समीक्ा सीरीज

१. आशीष अनम्चन्हार 'मिदेह' क ३२७ म अंक ०१ अगस्त २०२१

....

एक्सटसषचोइस सीरीज

एक्सटसषचोइस सीरीज-१

विदेहक १२३ म (०१ फरबरी २०१३) अंकमे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता पकाशित भेल छल। ई दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक विभत्सा बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, तेलुगुमे पसुपुलेटी गीताक एहि कविताक हिन्दी अनुवाद केने छलीह आर. शांता सुन्दरी आ हिन्दीस मैथिली अनुवाद केने छलाह विनीत उत्पल। हमर जानकारीमे एहिस बेसी सेहराबैबला कविता कोनो भारामे नहि रचल गेल अछि। सात सालक बादो ई समस्या ओहिना अछि। ई कविता सभके पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापके, सभ बहिनक भाएके आ सभ पतीक पत्नीके। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपन बच्चा सभ लेल केहन समाज बना रहल छी।

<u>एक्सटसषचोइस सीरीज-१</u> (डाउनलोड लिंक)

एक्सटसषचोइस सीरीज-२

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच बेस्ट कैसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा केर एकटा लघु कथा पकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे बेस्ट कैसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि एहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल, कारण एहि कथाक ई-पकाशित भेलाक १-२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घोघाउज भऽ रहल छल जे पहिल हम आकि हम, मुदा दुनू कथा मैथिलीक कथाक परती छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

एब्डटसषचोइस सीरीज-२ (डाउिलोड क्लंक)

एब्डटसषचोइस सीरीज-३

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच जगदीि चन्द्र ठाकुर अविलक कछु बाल कविता पकावित भेल। बादमे हुिकर ३ टा बाल कविता विदेह विि उत्सिमे संकक्लत भेल जाक्हमे २ टा कविता बेबी चाइल्डपर छल। पढ़ू ई तीिू कविता, बादक दुिू बेबी चाइल्डपर क्लखल कविता पढ़बे टा कर से आगह।

एब्डटसषचोइस सीरीज-३ (डाउिलोड क्लंक)

एब्डटसषचोइस सीरीज-४

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच जगदानिन्द झा मिुिक एकटा दीघष बाल कथा कक्ह क्लअ बा उपन्यास पकावित भेल, ििम छल चोिहा। बादमे ई रचिा विदेह विि उत्सिमे संकक्लत भेल, ई रचिा बाल मिोविजािपिर आधाक्रत मैक्थलीक पक्हल रचिा छी, मैक्थली बाल साक्हत्य कोिि क्लखी तकर रेविग कोसषे एक्ह उपन्यासके राखल जेबाक चाही। कोिि मॉडिषउपन्यास आगा बढ़ै छै, स्टेप बाइ स्टेप आ सेहो बाल उपन्यास। पढ़बे टा कर से आगह।

एब्डटसषचोइस सीरीज-४ (डाउिलोड क्लंक)

एब्डटसषचोइस सीरीज-५

एब्डटसषचोइस ५ मे मैक्थलीक "उसि कहा था" मािि कुमार पििक दीघषकथा "पइठ" (साभार अंक्तका) । क्हन्दीक पाठक, जे "उसि

कहा था" पढ़ि हेता, के बुझल छलहि जे कोन अछि कथाके रचय चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' अमर भऽ गेलाह। हम चचा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक। एकरा पढ़लाक बाद अहाके एकटा विचित्र, सुखद आ मोन हौल करैबला अनुभव भेटत, जे सेक्सपीयरक ट्रेजेडी स कमल्ला नो लागत आ फराको। मुदा एहि रचनाके पढ़लाक बाद तामस, घृणा सभपर वर्यंतरके आ सामाजिक/ पारिवारिक दायित्वके सेहो अहा आर गंभीरतास लेबै, से धरि पका अछि। मुदा एकर एकटा विशेषता अछि जे एकरा समै विकाल कऽ एके उत्तरा हामे पढ़ जाइ।

<u>एक्सटसषचोइस सीरीज-५</u> (डाउनलोड लिंक)

एक्सटसषचोइस सीरीज-६

जगदीश पसाद मण्डलक लघुकथा "बासाढ़": १९४२-४३ क अकालमे बंगालमे १५ लाख लोक मुइला, मुदा अमत्यषसेन लिखैत छथि जे हुनिकर कोनो सर-सम्बन्धी एहि अकालमे नहि मरलाह। मिथिलोमे अकाल आएल १९६७ ई. मे आ इन्दिरा गाधी जखन एहि क्षेत्र अएली त हुनका देखाओल गेल जे कोना मुसहर जातिक लोक बासाढ़ खा कऽ एहि अकालके जीता लेलन्हि। मैथिलीमे लेखनि एकभगाह वस्तुतः विदेहक आगमनसँ पहिने छल। मैथिलीक लेखक लोकनि सेहो अमत्यष सेन जेका ओहि महाविभीषिकास पभावित नहि छला आ ते बासाढ़पर कथा नहि लिखि सकला। जगदीश पसाद मण्डल एहिपर कथा लिखलन्हि जे पकाशित भेल चेतना समितिक पत्रिकामे, मुदा कायकारी सम्पादक दारा तिर्नी पत्रिकाक कारण ओ मैथिलीमे नहि रहि अहिटमे लिखल बुझा पड़ल, आ ओतेक पभाव नहि भऽ सकल कारण विषय रहै खाटी आ तिर्नी कृतकम। से एकर पुनः ई-पकाशि

अपि असली र पमे भेल वि देहमे आ ई संकक्लत भेल "गामक क्जि गी" लघुकथा संगहमे। एक्ह पोथीपर जगदीि पसाद मण्डलके टैगोर क्लटरेचर अिाडषभेटलवि। जगदीि पसाद मण्डलक लेखिि मैक्थली कथाधाराके एकभगाह हेबास बचा लेलक, आ मैक्थलीक समाि न्तर इक्तहासमे मैक्थली साक्हत्यके दू कालखण्डमे बाक्ट कऽ पढ़ए जाए लागल- जगदीि पसाद मण्डलस पूि षि आ जगदीि पसाद मण्डल आगमि कि बाद। त पस्तुत अक्छ लघुकथा क्बसाढ़- अपि सुच्क्षा स रि पमे।

एक्डटसषचोइस सीरीज-६ (डाउि लोड क्लंक)

एक्डटसषचोइस सीरीज-७

मैक्थलीक पक्हल आ एकमात दक्लत आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफी। सन्दीप कुमार साफीक दक्लत आत्मकथा जे अहाके अपि लघु आकाराक अछैत क्हलोव देत आ अहाक ई क्सथक्त कऽ देत जे समाि न्तर मैक्थली साक्हत्य कतबो पढू अहाके अछौ ि क्ह होयत। ई आत्मकथा वि देहमे ई-पकावि त भेलाक बाद लेखकक पोथी "बैि ाखिमे दलाि पिर"मे संकक्लत भेल आ ई मैक्थलीक अखि धक्रक एकमात दक्लत आत्मकथा क्थक। त पस्तुत अक्छ मैक्थलीक पक्हल दक्लत आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफीक कलमस।

एक्डटसषचोइस सीरीज-७ (डाउि लोड क्लंक)

एक्डटसषचोइस सीरीज-८

िि ि भुटकाके राक्तमे सुि बा लेल कक्छु लोककथा (वि देह पेटारस)।

एक्डटसषचोइस सीरीज-८ (डाउि लोड क्लंक)

एक्सटसष चोइस सीरीज-९

मैथिली गजलपर पक्षचचा (विदेह पेटारस)।

एक्सटसष चोइस सीरीज-९ (डाउनलोड लिंक)

....

Maithili Books can be downloaded from: MAITHILI BOOKS

....

गजेन्द्र ठाकुर

पबन्ध-विबन्ध-समालोचना भाग-१

पबन्ध-विबन्ध-समालोचना भाग दू (कुरुक्षेत्रम अन्तर्मनक-२)

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)

सहस्राब्दीक चौपड़ पर (पद संग्रह)

गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह)

संकर्षण (नाटक)

त्वञ्चाहञ्च आ असञ्जाति मन (दूटा गीत पबन्ध)

बाल मण्डली/ किशोर जगत (बाल नाटक, लघुकथा, कविता आदि)

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

देवीजी गिरी सिमि कारहुता सिमि बेल सिमि

सहस्रबाढ़नि_बेल-मैथिली (मैथिलीक पहिल बेल पोथी)

सहस्रशीरा (उपन्यास)

धावा बाट बनिबाक दाम अगूबार पेनि छ (रुबाइ, कता आ गजल संग्रह)

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी

सहस्रजित् (पद्य संग्रह)

शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह)

The Science of Words

Learn Mithilakshar Script

Learn Braille through Mithilakshar Script

Learn International Phonetic Script through Mithilakshar Script

Learn Kaithi

मिथिला रत्न/ मिथिला चित्रकला/ मिथिलाक पाबनि तिहार (कथा) आ मिथिलाक संगीत

उल्कामुख (नाटक)

जलोदीप (बाल-नाटक संग्रह)

अक्षरमुष्टिका (बाल-लघुकथा संग्रह)

बाङक बङौरा (बाल-पद्य संग्रह)

नाराशंसी (गीत-प्रबन्ध)

गंगा ब्रिज (नाटक)

मचण्ड (नाटक)

बाल साहित्य (मूल)- गजेन्द्र ठाकुर

भऽ जाएब छू *(मैथिलीक २०१२ मे प्रकाशित पहिल क्लाइमेट-फिक्शन प्ले- Maithili's first climate-fiction play originally published in 2012)*

कमलाक भगता

तरहत्थीमे परीलोक

बेसी छुट्टी कम इसकूल

ब्र द करैए दाउि ि यौ

बाल गजल

कविि लाइि

बाल साहित्य (अिि ि दि- विभाारक- मैथिली-अंगेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

टोस्ट	ब्र ीटा! क विेयेटा!	एतऽ हम सभ रहै छी	भारतोल्लक राजकुमारी	भारतोल्लक राजकुमारी (बाि ि बक)
ियो	कच-कच कचाक	चुनू-मुनूक िहेि इ	िि जे बैलू सि डेराइत छल	अदुत बफोि ची अंक-िखला
हार	अखि ि, अखि ि!	जन्मदि कि उत्सि भोज	मोट राजा पातर - दुब्ब कुकु	बवया जे अपि हसी ि रोक सकैत छल
अंगेजी	हम सूंघ सकै छी	छोट लाल-टुहटुह डोरी	कर ि क, भोगू िक	ई सभटा बालाव क दोख अछ!
चोभा आम!	हमर टोलक बाट	जखि इक स्कूल गेल	माछी फेर आउ टाटा!	अमाचीक जुलुम मि ि सभ
वंटंग टोग	पाउ-म्याऊ-िहि	कुकु क एकटा बदि	हमरा ि क लगैए	रीताक िि-स्कूलमे पहल बदि
किी हवस	लाल	भूत-पेतक	आउ पए	कतऽ अछ ई अंक

यौ ि!	बरसाती	ि टिया िला	र गा ि	५?

....

NTA-UGC/ UPSC/ BPSC MAITHILI OPTIONAL- गजेन्द्र ठाकुर

[Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भारा पवरि ार म् य मैथिलीक स्था ि/ मैथिली भाराक उद ि ओ विकास (संस्कृत, पाकृत, अ िहिट, मैथिली)]

(Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

(ज्योतिरीशर, विदापति आ गोविन्ददास वसलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विदापति कालीि कवि छथि। एतय समीक्षा ि्खलाक पारम्भ करबास पूर्विचार गोटेक िब्दाि्ली ि ि िब्दक पयाय संग देल जा रहल अछि। ि ि आ पुरा ि िब्दाि्लीक जा ि ज्योतिरीशर, विदापति आ गोविन्ददासक पशोतरमे धार आओत, संगहि िब्दकोर बढ़लास खाटी मैथिलीमे पशोतर क्लखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखि िमे पहि आयत आ सुच्छा भा ि अ्भव्यक्त भय सकत।)

(बरीि थ झा ि ि्दाि्ली आ कवथिलाक कृक-मतस्य ि ि्दाि्ली)

(ि्लयू एडी ि ि- पथम पत- लोकक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

(ि्यू एडीि- क्तीय पत- वदिापक्त)

(ि्यू एडीि- क्तीय पत- पद समीक्त- बाि्गी)

(ि्यू एडीि- पथम पत- लोक गाथा ृि्य िटक संगीत)

(ि्यू एडीि- क्तीय पत- याती)

(ि्यू एडीि- क्तीय पत- मैक्थली रामायर)

(ि्यू एडीि- क्तीय पत- मैक्थली उपन्यास)

(ि्यू एडीि- पथम पत- िब्द वचिार)

(क्तरहुता क्लक्पक उदि ओ वकिास)

अि्लनकि-१-२-३ अि्लनकि- ४-५

(मैक्थली आ दोसर पुबक्रया भाराक बीचमे सम्बन्ध (बान्ला, असक्मया आ ओव या) [यू.पी.एस.सी. क्सलेबस, पत-१, भाग-“ए”, कम-५])

[मैक्थली आ क्हन्दी/ बान्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- क्बहार लोक सेि आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर क्सविल सेि परीक्तक मैक्थली (ऐक्च्छक) वरिय लेल]

NTA_UGC_NET_MAITHILI_01- गजेन्र ठाकुर

NTA_UGC_NET_MAITHILI_02- गजेन्र ठाकुर

TEST SERIES-1- गजेन्र ठाकुर

TEST SERIES-2- गजेन्द्र ठाकुर

GS (Pre)

TOPIC 1 - गजेन्द्र ठाकुर

....

....

....

....

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पादित)

विदेह-सदेह [विदेह www.videha.co.in पेटार]

मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन (विदेह ई-पत्रिकास बीछल रचना)

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) देवनागरी

विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) तिरहुता

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) देवनागरी

विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) तिरहुता

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)देवनागरी

विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०) तिरहुता

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)देवनागरी

विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०) तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]देवनागरी

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५] तिरहुता

विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५]- दोसर संस्करण देवनागरी

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६]देवनागरी

विदेह मैथिली लघुकथा [विदेह सदेह ६] तिरहुता

विदेह मैथिली पद [विदेह सदेह ७]देवनागरी

विदेह मैथिली पद [विदेह सदेह ७] तिरहुता

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८]देवनागरी

विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [विदेह सदेह ८] तिरहुता

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९]देवनागरी

विदेह मैथिली शिशु उत्सव [विदेह सदेह ९] तिरहुता

विदेह मैथिली पबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०]देवनागरी

विदेह मैथिली पबन्ध-निबन्ध-समालोचना [विदेह सदेह १०] तिरहुता

विदेह:सदेह ११	*विदेह:सदेह १२*	*विदेह:सदेह १३*	*विदेह:सदेह १४*	*विदेह:सदेह १५*

विदेह:सदेह १६	*विदेह:सदेह १७*	*विदेह:सदेह १८*	*विदेह:सदेह १९*	*विदेह:सदेह २०*
विदेह:सदेह २१	*विदेह:सदेह २२*	*विदेह:सदेह २३*	*विदेह:सदेह २४*	*विदेह:सदेह २५*

VIDEHA-SADEHA

भारापाक -विदेह मैथिली माकि भारा आ मैथिली भारा सम्पादि पाठयकम

विदेह पुरा अंकक आकाइ

"विदेह" ई-पत्रिकाक पुरा अंक: देवनागरी लिपि/ मिथिलाक्षर लिपि/ ब्रेल लिपि (अंक ००१ स १४९)

VIDEHA 150-250

VIDEHA 251-ONWARDS

GOOGLE VIDEHA BOOKS
AUDIO ARCHIVE FOLDER
MITHILA_PAINTING-MODERN ART-PHOTOS
VIDEHA OLD ISSUES FOLDER
VIDEHA CLASSICAL SITES FOLDER

पंजी (११००० मूल कथलाकर ता पत १७ टा पी.डी.एफ. फाइलमे)

दूरर पंजी

मोदान्दि झा िखा पंजी

मंडार- मऱ` कश्यप-पाचीि

पाचीि पंजी (लेमीिट कएल)

उतेढ़ पंजी

पविचोभे बीरपुर

दरभंगा राज आदेि उतेढ आदृ

छोटी झा पुस्तक विदेविका

पत पंजी

मूलगाम पंजी

मूलगाम परगाि हसाबे पंजी

मूल पंजी-२

मूल पंजी-३

मूल पंजी-४

मूल पंजी-५

मूल पंजी-६

मूल पंजी-७

....

....

गजेन्द्र ठाकुर आ आिीर अिक्ष्नहार (सम्पादि)

मैथलीक पक्तविध्र गजल

मैथिली गजल: आगमन ओ प्रस्थान बिंदु (गजलक आलोचना-समालोचना-समीक्षा)

....

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा (सम्पादक)
जीनोम मैपिंग (४५० ए.डी.स २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध
जीनियोलोजिकल मैपिंग (४५० ए.डी.स २००९ ए.डी.)--मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध -भाग-२

MAITHILI-ENGLISH DICTIONARIES

Maithili_English_Dictionary_Vol.I

MaithiliEnglishDictionary_Vol.II_GajendraThakur

ENGLISH-MAITHILI DICTIONARIES

VIDEHA ENGLISH MAITHILI DICTIONARY

English-Maithili Computer Dictionary

....